सर्वार्थ चिन्तामणि

श्रीः ।

सर्वार्थचिन्तामणिः ।

राजधानी–टिहरीनिवासि–पं० महीधरशर्मकृत–

भाषाटीकासहितः ।

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,™

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई – ४०० ००४.

संस्करण : नवंबर २०१०, सम्वत् २०६७

मूल्य : १२० रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

भूमिका ।

प्रथम श्रीजगत्कर्त्ता ईश्वरको सप्रणाम धन्यवाद है कि जिसने श्रीगुरुरूप धारणकर मुझ प्राकृत मनुष्यके कुण्ठित हृदयमें किञ्चिन्मात्र श्रुतिषडंगान्तर्गत ज्योतिषफलादेशका बीजारोपण किया जो क्रमशः अंकुरित पल्लवित पुष्पित होकर फलितस्कन्धमें फलित होरहाहै, ज्योतिषके तीन स्कन्धोंमें तात्पर्य प्रत्यक्षफलबोधक गणितानुकूल होरास्कन्ध ही है जिसके विशेष प्रचार एवं सर्व साधारणके उपकारार्थ मैं बहुत कालसे निज स्वामी श्री १०८ मन्महाराजाधिराज केदारखण्ड जिला गढ़वाल टिहरीनरेश कीर्तिशाह देव के, सी, यस्, आई की रक्षामें धर्माधिकारी पदपर रहकर ज्योतिषफलादेशके प्रचारमें तत्पर हूं—मेरा परिश्रम भी गोब्राह्मण प्रतिपालक सेठ **खेमराज श्रीकृष्णदासजी**की सहायतासे बराबर सफल होताआयाहै उन्हींके अनुमोदनसे मैंने इस समय **सर्वार्थचिन्तामणि**नामक जातक फलादेशग्रन्थकी भाषाटीका निर्माण कीहै क्योंकि यह ग्रन्थ बहुत प्रामाणिक एवं सबका मान्य है, सब ज्योतिषज्ञ इसका समादर करतेहैं परन्तु अबतक टीका टिप्पणी इसमें न थी और जो जातकांतर "बृहज्जातक, भावकुतूहल, जातकशिरोमणि, नीलकण्ठी" आदि मेरे भाषाटीकासहित उक्त सेठजीने छापेहैं उनमें एकसे एक गुणविशेष हैं तौभी उनकी अपेक्षा कितने ही विचारविशेष इसमें अन्य ढंगके होनेसे तथा गूढ एवं विशेष स्थल फलादेश विचारोंमें होनेसे उनका सारांश विशेष विद्वान्‌ही जानसकतेहैं सर्वसाधारण इससे लाभ नहीं उठासकते और फलादेशके उपयोगी चमत्कारिक फल इसमें बहुतही विशेषतासे हैं जिनके जाननेसे थोडा ज्योतिष जाननेवाले भी विशेष चमत्कारफल कहसकतेहैं जन्मपत्री आदिकोंमेंभी प्रत्यक्ष मिलने योग्य फल लिखसकतेहैं इसलिये सरलताके हेतु मैंने यथामति इसकी भाषाटीका रचीहै, जहां कहीं त्रुटि, प्रमाद, वा भूल होगई हो विद्वज्जन क्षमा करके परिशोधन करतेरहैं और मेरे परिश्रम पर ध्यान देकर प्रसन्नहों ।

इस ग्रन्थको मैं पूर्ववत् सर्वांगतया सेठ श्रीकृष्णदासात्मज खेमराज महोदयको अर्पण करताहूं । आशा है कि उनकी कृपासे ग्रन्थ शीघ्र प्रकाशित होनेसे मेरा परिश्रम सफल एवं लोकोपकार होगा ॥

निवेदक–

महीधरशर्मा धर्माधिकारी,

राजधानी टिहरी, जिला गढ़वाल ।

हमारे यहां से प्रकाशित अन्य ज्योतिष ग्रन्थ,

श्रीवेंकटेश्वर शताब्दि पंचांग–
विक्रम सं० २००१ से २१०० तक

ज्योतिषश्याम संग्रह–
चक्रोदाहरणयुक्त हिन्दी टीकासहित।

जातकाभरण–
श्री ढूंढिराजकृत। हिन्दी टीकासहित

वसन्तराजशाकुन–
संस्कृत टीका तथा हिन्दीटीकासहित।

लीलावती–
भास्कराचार्यकृत मूल और पं०राम-स्वरूपजी कृत हिन्दी टीकासहित।

वाराही (वृहत्) संहिता–
वराह मिहिराचार्य प्रणीत। स्व० पं० बलदेव प्रसाद मिश्रकृत हिन्दी टीका

शम्भु होरा प्रकाश–
पं० पुंजराचार्यकृत हिन्दी टीकासहित।

बृहज्जातक–
वराहमिहिराचार्यकृत मूल और पं० महीधर शर्मकृत सरल हिन्दी टीकासहित।

बृहत्पाराशरहोराशास्त्र–हिन्दीटीकासहित।

पत्रीमार्गप्रदीपिका और वर्षदीपिका–
पं० महादेव विरचित मूल और श्रीनिवासजीकृत हिन्दी टीकासहित।

प्रश्न शिरोमणि–हिन्दी टीकासहित।

मुहूर्त प्रकाश–हिन्दी टीकासहित।
स्व० पं० चतुर्थीलालजी कृत।

मानसागरी पद्धति–हिन्दी टीका सहित

भावकुतूहल–पं० जीवनाथ विरचित मूल और पं० महीधर शर्मा कृत हिन्दी टीकासहित।

मुहूर्तचिन्तामणि–
पं० महीधर शर्मकृत हिन्दी टीकासहित

ज्योतिर्गणित कौमुदी–हिन्दी टीकासहित

ग्रहलाघव–सान्वय हिन्दी टीका और उदाहरण सहित, स्व० ज्योतिर्भूषण पं० वच्चू द्वारा परिशोधित

भविष्यफलभास्कर–हिन्दी टीकासहित

ज्योतिष कल्पद्रुम–भाषा हिन्दी

रमलगुलजार–हिन्दी भाषा

वर्षप्रबोध–हिन्दी टीकासहित

ज्योतिषसार–हिन्दी टीकासहित।

रमलनवरत्न–
हिन्दी टीका रमलदानियालसहित,

विश्वकर्म प्रकाश–शिल्पशास्त्र पं० मिहिरचन्द्र हिन्दी टीकासहित

केरलीय प्रश्नरत्न–हिन्दी टीकासहित।

जैमिनीय सूत्र- हिन्दी टीकासहित।

समरसार–
संस्कृत टीका–हिन्दी टीका सहित।

प्रश्नज्ञान प्रदीप–हिन्दी टीकासहित।

लग्नचंद्रिका–हिन्दीटीकासहित,

शीघ्रबोध–हिन्दीटीकासहित

जातक चन्द्रिका–हिन्दी टीकासहित।

प्रश्न चण्डेश्वर–
संस्कृत टीका तथा हिन्दी टीकासहित

प्रश्न वैष्णव–हिन्दी टीकासहित।

भुवनदीपक–
संस्कृत टीका तथा हिन्दी टीकासहित.

हायनभास्कर–हिन्दी टीकासहित।

चमत्कार चिन्तमाणि–हिन्दी टीकासहित।

भृगुसूत्र–हिन्दीटीका सहित

केरलतत्वप्रश्न संग्रह–हिन्दी टीकासहित।

जातकालंकार–हिन्दी टीकासहित।

बालबोध ज्योतिष–हिन्दी टीकासहित।

अर्धप्रकाश–हिन्दीटीका सहित।

हनुमान् ज्योतिष–
(प्रश्न ग्रन्थ) हिन्दी टीका व चक्रोंसहित

॥ श्रीः ॥

सर्वार्थचिन्तामणिविषयानुक्रमणिका ।

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ.
प्रथमोऽध्यायः १.		
भाषाकारस्य मंगलाचरणम्	१	१
ग्रंथकारस्यमङ्गलाचरणम्	१	१
जन्म और प्रश्नकाअभेद	५	२
राशियोंके स्वामी	६	”
राशियोंकेअंगविभाग	७	”
राशियोंकेस्वरूप	८	”
द्रेष्काण	१०	३
नवांशक	११	”
होराचक्र		”
द्रेष्काणचक्र		४
सप्तांशचक्र		”
नवमांशचक्र		५
द्वादशांशत्रिंशांश	१२	५
द्वादशांशचक्र	”	६
त्रिंशांशचक्र	”	”
दशांशषोडशांश	१४	”
विंशांशादि		८
सिद्धांशादि		९
चतुर्विंशांशचक्र		११
भांशचक्र		१२
खवेदांशचक्र		१३
अक्षवेदांशचक्र		१५
षष्ट्यंश		१६
षष्ट्यंशचक्र		१८
षष्ट्यंशकेफल	२१	१९
पारिजातादिसंज्ञा	२३	२०
गोपुरादिसंज्ञा	२५	”
क्षणिकग्रहकथन	३२	२१
बालाद्यवस्था	३६	”
राशियोंकेनामांतर	३८	२२
भावोंकेनाम	४१	”
पृष्ठोदयशीर्षोदय	४७	२३
ग्रहोंकीधूम्रादिसंज्ञा	४९	”
केंद्रसंज्ञा	५०	”
जलचरराशिआदियोंकाबल	५१	”

हमारे यहां से प्रकाशित अन्य ज्योतिष ग्रन्थ,

श्रीवेंकटेश्वर शताब्दि पंचांग–
विक्रम सं० २००१ से २१०० तक

ज्योतिषश्याम संग्रह–
चक्रोदाहरणयुक्त हिन्दी टीकासहित।

जातकाभरण–
श्री ढूंढिराजकृत। हिन्दी टीकासहित

वसन्तराजशाकुन–
संस्कृत टीका तथा हिन्दीटीकासहित।

लीलावती–
भास्कराचार्यकृत मूल और पं० राम-स्वरूपजी कृत हिन्दी टीकासहित।

वाराही (वृहत्) संहिता–
वराह मिहिराचार्य प्रणीत। स्व० पं० बलदेव प्रसाद मिश्रकृत हिन्दी टीका

शम्भु होरा प्रकाश–
पं० पुंजराचार्यकृत हिन्दी टीकासहित।

बृहज्जातक–
वराहमिहिराचार्यकृत मूल और पं० महीधर शर्मकृत सरल हिन्दी टीकासहित।

बृहत्पाराशरहोराशास्त्र–हिन्दीटीकासहित।

पत्रीमार्गप्रदीपिका और वर्षदीपिका–
प० महादेव विरचित मूल और श्रीनिवासजीकृत हिन्दी टीकासहित।

प्रश्न शिरोमणि–हिन्दी टीकासहित।

मुहूर्त प्रकाश–हिन्दी टीकासहित।
स्व० पं० चतुर्थीलालजी कृत।

मानसागरी पद्धति–हिन्दी टीका सहित

भावकुतूहल–पं० जीवनाथ विरचित मूल और पं० महीधर शर्मा कृत हिन्दी टीकासहित।

मुहूर्तचिन्तामणि–
पं० महीधर शर्मकृत हिन्दी टीकासहित

ज्योतिर्गणित कौमुदी–हिन्दी टीकासहित

ग्रहलाघव–सान्वय हिन्दी टीका और उदाहरण सहित, स्व० ज्योतिर्भूषण पं० वच्चू द्वारा परिशोधित

भविष्यफलभास्कर–हिन्दी टीकासहित

ज्योतिष कल्पद्रुम–भाषा हिन्दी

रमलगुलजार–हिन्दी भाषा

वर्षप्रबोध–हिन्दी टीकासहित

ज्योतिषसार–हिन्दी टीकासहित।

रमलनवरत्न–
हिन्दी टीका रमलदानियालसहित,

विश्वकर्म प्रकाश–शिल्पशास्त्र पं० मिहिरचन्द्र हिन्दी टीकासहित

केरलीय प्रश्नरत्न–हिन्दी टीकासहित।

जैमिनीय सूत्र- हिन्दी टीकासहित।

समरसार–
संस्कृत टीका–हिन्दी टीका सहित।

प्रश्नज्ञान प्रदीप–हिन्दी टीकासहित।

लग्नचंद्रिका–हिन्दीटीकासहित,

शीघ्रबोध–हिन्दीटीकासहित

जातक चन्द्रिका–हिन्दी टीकासहित।

प्रश्न चण्डेश्वर–
संस्कृत टीका तथा हिन्दी टीकासहित

प्रश्न वैष्णव–हिन्दी टीकासहित।

भुवनदीपक–
संस्कृत टीका तथा हिन्दी टीकासहित,

हायनभास्कर–हिन्दी टीकासहित।

चमत्कार चिन्तमाणि–हिन्दी टीकासहित।

भृगुसूत्र–हिन्दीटीका सहित

केरलतत्वप्रश्न संग्रह–हिन्दी टीकासहित।

जातकालंकार–हिन्दी टीकासहित।

बालबोध ज्योतिष–हिन्दी टीकासहित।

अर्धप्रकाश–हिन्दीटीका सहित।

हनुमान् ज्योतिष–
(प्रश्न ग्रन्थ) हिन्दी टीका व चक्रोंसहित

॥ श्रीः ॥

सर्वार्थचिन्तामणिविषयानुक्रमणिका ।

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ.
प्रथमोऽध्यायः १.		
भाषाकारस्य मंगलाचरणम्	१	१
ग्रंथकारस्यमङ्गलाचरणम्	१	१
जन्म और प्रश्नका अभेद	५	२
राशियोंके स्वामी	६	,,
राशियोंकेअंगविभाग	७	,,
राशियोंकेस्वरूप	८	,,
द्रेष्काण	१०	३
नवांशक	११	,,
होराचक्र		,,
द्रेष्काणचक्र		४
सप्तांशचक्र		,,
नवमांशचक्र		५
द्वादशांशत्रिंशांश	१२	५
द्वादशांशचक्र	,,	६
त्रिंशांशचक्र	,,	,,
दशांशषोडशांश	१४	,,
विंशांशादि		८
सिद्धांशादि		९
चतुर्विंशांशचक्र		११
भांशचक्र		१२
खवेदांशचक्र		१३
अक्षवेदांशचक्र		१५
षष्ट्यंश		१६
षष्ट्यंशचक्र		१८
षष्ट्यंशकेफल	२१	१९
पारिजातादिसंज्ञा	२३	२०
गोपुरादिसंज्ञा	२५	,,
क्षणिकग्रहकथन	३२	२१
बालाद्यवस्था	३६	,,
राशियोंकेनामांतर	३८	२२
भावोंकेनाम	४१	,,
पृष्ठोदयशीर्षोदय	४७	२३
ग्रहोंकीधूम्रादिसंज्ञा	४९	,,
केंद्रसंज्ञा	५०	,,
जलचरराशिआदियोंकाबल	५१	,,

सर्वार्थचिन्तामणिविषयानुक्रमणिका ।

विषय.	श्लोक.	पृष्ट.
ग्रहोंकीउच्चराशि	५२	२३
ग्रहोंकीमूलत्रिकोणराशि	५३	२४
राशियोंकेदिनरात्रिबलउपचयस्थान	५४	”
राशियोंकेरंग	५५	”
वेशिस्थानतयाचक्रार्द्धादि	५६	”
ग्रहोंकीजाति	५७	”
ग्रहमयशरीरकथन	५८	२५
ग्रहोंकेपर्यायनाम	५९	”
ग्रहोंकेवर्णाकारादिज्ञान	६५	२६
ग्रहोंकीजाति	७३	२७
ग्रहोंकेरंगदेवतादिशा	७५	”
ग्रहोंकीशुभपापधातुस्त्रीपुरुषादिसंज्ञा	७६	”
ग्रहोंकेस्थान	७९	२८
ग्रहोंकेवस्त्र	८०	”
ग्रहोंकेधातु	८२	”
ग्रहोंकेऋतु	८६	२९
” रस और फलपाककाल	८७	”
” धातुस्वामितातथाधातुमूलादि	९०	”
” ऊर्ध्वादिदृष्टि	९१	”
” भावोंपरदृष्टि	९२	३०
” मित्रादि	९३	”
” तात्कालमैत्री	९८	”
” षड्बलकथन	९९	३१
” आरोहावरोह	११४	३३
प्राणपदतथागुलिक	११५	”
ग्रहोंकीपाचकादिसंज्ञा	१२०	३४
” स्थानोंसेपाचकादि	१२२	”
पाचकोंके शत्रुमित्र	१२५	३५
” ” फलकथन	१२७	”
गुलिकलग्नस्पष्टविधि	१३५	३६
इनकेशुभाशुभदेनेकाक्रम	१३६	३७

लग्नफलविचाराऽध्यायः २.

ग्रंथकारकीप्रतिज्ञा	१	३८
सामान्यभावशुभाशुभ	२	”
कर्माजीविकाकथन	७	३९
भावनाशकयोग	१८	४१
मृत्युयोग	१९	”
धनभावयोग	२०	”
तृतीयभावसंबंधियोग	२४	४२
चतुर्थभावफल	२७	”
पंचमभावफल	२८	४३
षष्ठभावफल	२९	”

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ.
सप्तमभावफल	३०	४३
अष्टमभावफल	३१	"
नवमभावफल	३२	"
दशमभावफल	३३	"
एकादशभावफल	३४	"
व्ययभावफल	३५	४४
शत्रुमित्रादिजन्यफल	३६	"
आधानलग्नसेजन्मलग्न	३८	"
कन्यापुत्रजन्म	४०	"
पिंडाकृतिजन्म	४१	"
यमलजन्म	४२	४५
पादोत्पन्नसर्पनालवेष्टितादियोग	४३	"
पशुनपुंसकचतुष्पदादिजन्मयोग	४९	४६
वियोनिजन्मयोग	५२	"
पशुजन्मयोग	५३	"
नपुंसकजन्मयोग	५४	"
६ नपुंसकयोग	५५	"
संस्कारहीनयोग	५८	४७
द्विद्वारगृहनीचगृहजन्मयोग	५९	"
गृहद्वारनिर्णय	६०	"
उपसूतिका	६२	"
उपसूतिकाकीजाति	६३	४८
सूतिकागृहमेंदीपविचार	६७	"
लग्नभावविचार	६९	"
देहसौख्ययोग	७१	४९
ऐश्वर्ययोग	७२	"
रोगीनिरोगीयोग	७४	"
देहदुर्बलादियोग	७५	"
ठगचोरभीतियोग	७६	"
शिरोव्रणीयोग	८०	५०
देहकृशत्वयोग	८२	"
शरीरस्थूलयोग	८५	५१
पिशाचबाधायोग	८८	"
संचलनयोग	९०	५२
परदेशमेंभाग्योदययोग	९१	"
स्वदेशमेंभाग्योदययोग	९२	"
बाल्यादिमरणांतसुखयोग	९३	"
आदिमेंसुखीयोग	९६	"
मध्यावस्थासुखीयोग	९७	५३
स्त्रीपुत्रादिसुखमध्यांतावस्थासुख	९९	"
सत्कीर्तियोग	१०२	"
दुष्कीर्तियोग	१०३	"

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ.
ग्रहोंकीउच्चराशि	५२	२३
ग्रहोंकीमूलत्रिकोणराशि	५३	२४
राशियोंकेदिनरात्रिबलउपचयस्थान	५४	”
राशियोंकेरंग	५५	”
वेशिस्थानतयाचकार्द्धादि	५६	”
ग्रहोंकीजाति	५७	”
ग्रहमयशरीरकथन	५८	२५
ग्रहोंकेपर्यायनाम	५९	”
ग्रहोंकेवर्णाकारादिज्ञान	६५	२६
ग्रहोंकीजाति	७३	२७
ग्रहोंकेरंगदेवतादिशा	७५	”
ग्रहोंकीशुभपापधातुस्त्रीपुरुषादिसंज्ञा	७६	”
ग्रहोंकेस्थान	७९	२८
ग्रहोंकेवस्त्र	८०	”
ग्रहोंकेधातु	८२	”
ग्रहोंकेऋतु	८६	२९
” रस और फलपाककाल	८७	”
” धातुस्वामितातथाधातुमूलादि	९०	”
” ऊर्ध्वादिदृष्टि	९१	”
” भावोंपरदृष्टि	९२	३०
” मित्रादि	९३	”
” तात्कालमैत्री	९८	”
” षड्बलकथन	९९	३१
” आरोहावरोह	११४	३३
प्राणपदतथागुलिक	११५	”
ग्रहोंकीपाचकादिसंज्ञा	१२०	३४
” स्थानोंसेपाचकादि	१२२	”
पाचकोंके शत्रुमित्र	१२५	३५
” ” फलकथन	१२७	”
गुलिकलग्नस्पष्टविधि	१३५	३६
इनकेशुभाशुभदेनेकाक्रम	१३६	३७

लग्नफलविचाराऽध्यायः २.

ग्रंथकारकीप्रतिज्ञा	१	३८
सामान्यभावशुभाशुभ	२	”
कर्माजीविकाकथन	७	३९
भावनाशकयोग	१८	४१
मृत्युयोग	१९	”
धनभावयोग	२०	”
तृतीयभावसंबंधियोग	२४	४२
चतुर्थभावफल	२७	”
पंचमभावफल	२८	४३
षष्ठभावफल	२९	”

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ.
सप्तमभावफल	३०	४३
अष्टमभावफल	३१	"
नवमभावफल	३२	"
दशमभावफल	३३	"
एकादशभावफल	३४	"
व्ययभावफल	३५	४४
शत्रुमित्रादिजन्यफल	३६	"
आधानलग्नसेजन्मलग्न	३८	"
कन्यापुत्रजन्म	४०	"
पिंडाकृतिजन्म	४१	"
यमलजन्म	४२	४५
पादोत्पन्नसर्पनालवेष्टितादियोग	४३	"
पशुनपुंसकचतुष्पदादिजन्मयोग	४९	४६
वियोनिजन्मयोग	५२	"
पशुजन्मयोग	५३	"
नपुंसकजन्मयोग	५४	"
६ नपुंसकयोग	५५	"
संस्कारहीनयोग...	५८	४७
द्विद्वारगृहनीचगृहजन्मयोग	५९	"
गृहद्वारनिर्णय	६०	"
उपसूतिका	६२	"
उपसूतिकाकीजाति	६३	४८
सूतिकागृहमेंदीपविचार	६७	"
लग्नभावविचार	६९	"
देहसौख्ययोग	७१	४९
ऐश्वर्ययोग	७२	"
रोगीनिरोगीयोग	७४	"
देहदुर्बलादियोग	७५	"
ठगचोरभीतियोग	७६	"
शिरोव्रणीयोग	८०	५०
देहकृशत्वयोग	८२	"
शरीरस्थूलयोग	८५	५१
पिशाचबाधायोग	८८	"
संचलनयोग	९०	५२
परदेशमेंभाग्योदययोग	९१	"
स्वदेशमेंभाग्योदययोग	९२	"
बाल्यादिमरणांतसुखयोग...	९३	"
आदिमेंसुखीयोग	९६	"
मध्यावस्थासुखीयोग	९७	५३
स्त्रीपुत्रादिसुखमध्यांतावस्थासुख	९९	"
सत्कीर्तियोग	१०२	"
दुष्कीर्तियोग	१०३	"

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ.
पूर्वार्धपरार्धदुःखयोग	१०५	५४
सद्भाग्यादियोग	१०६	"
ऐश्वर्यसहितदीर्घायुयोग	१०७	"
परमायुयोग	१०८	"
युगांतादिआयु	१११	५५
सुखमिलनेकीअवस्था	११४	"
तृतीयोऽध्यायः ३.		
धनभावमेंसुखआदिकाविचार	१	५६
अस्थिभंगयोग	२	"
नेत्रनाशयोग	३	"
कुटुम्बरक्षकयोग	१२	५८
सुखसेआजीवनाभावयोग	१६	"
राजयोग	१७	"
जनाधीशयोग	१८	५९
सुमुखयोग	२५	६०
दुर्मुखयोग	२७	"
वाक्पटुयोग	२८	"
मूक (गूंगा) योग	३०	"
वाचालयोग	३१	"
जडयोग	३४	६१
ज्योतिषज्ञयोग	३५	"
गणितज्ञयोग	३६	"
न्यायशास्त्रज्ञयोग	४०	६२
व्याकरणज्ञयोग	४१	"
वेदान्तज्ञयोग	४२	"
षट्शास्त्रज्ञयोग	४५	"
उपहासकयोग	४७	"
वेदज्ञयोग	४८	"
धनलाभयोग	५०	६३
बाल्यावस्थामेंधनलाभयोग	५२	"
निधिआदिलाभयोग	५४	"
अपनेपराक्रमसेधनलाभ	५५	६४
धनागमकीअवस्था	५७	"
भ्रातृधनयोग	५९	"
अनेकप्रकारधनलाभयोग	६१	"
माताआदिसेधनयोग	६२	६५
पुत्रसेधनयोग	६५	"
पितासेधनयोग	६८	"
धननाशकेकारण	७०	६६
राजदंडसेधनक्षय	७२	"
चोराग्निराजासेधननाशयोग	७७	६७
धनहीनयोग	८०	"

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ.
खर्वनाशयोग	८७	६८
खधोधनीयोग	८९	"
धनसंख्या	९०	"
ऋणदातृयोग	१०७	७०
ऋणग्रस्तयोग	१०९	"
दंतपतनदंतरोग	११३	७१
प्रमाद (पागल) योग	११५	"
तालुरोगयोग	११६	"
नेत्रनाशयोग	११७	"
नेत्रानवधानयोग	११८	७२
कर्णविच्छेदयोग	१२०	"
रौप्यादिपात्रयोग	१२१	"
कच्चेपक्केपात्रयोग	१२९	७३
बहुतथोडाभोजनयोग	१३१	७४
सुखभोजीयोग	१३४	"
अन्नदातृयोग	१३५	"
रुचिभोगीयोग	१४०	७५
परान्नश्राद्धान्नादियोग	१४१	"
कुभोजीयोग	१४३	"
चिरभोक्तादूषकयोग	१४५	"
स्फोटाग्निभीतियोग	१४६	"
रुधिररोगयोग	१४७	७६
कुत्तेकीभययोग	१४८	"
कदन्नभोजीसर्पभययोग	१४९	"
निखिलाभवाक्चलन	१५१	"
हेकला (वाक्चलन) योग	१५२	"
उगजहरआदियोग	१५३	७७

चतुर्थोऽध्यायः ४.

तीसरेभावमेंविचारणीय	१	"
भ्रातृनाशयोग	२	"
भ्रातृलाभभ्रातृवृद्धियोग	१५	७९
भाइयोंकेसाथशत्रुतामित्रताआदि	२४	८०
भाईबहिनकेयोग	२५	"
भाइयोंकीसंख्या	२७	"
धीरपराक्रमीयोग	३०	८१
युद्धमेंपहिलेदृढ	३४	"
युद्धमेंअनभिज्ञ	३६	"
युद्धमेंप्रवीण	३८	८२
सात्विकबुद्धियोग	४०	"
कलहप्रवीणयोग	४१	"
बाहरदृढमनमेंकातरयोग	४२	"
चतुष्पदसर्पादिभीतियोग	४३	८३

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ.
विषभक्षणयोग	४५	८३
सुपात्रभोक्तायोग	४६	"
कंठनेत्रकर्णरोगयोग	४७	"
कर्णभूषणयोग	५०	८४
शुभाशुभकथाश्रवणयोग	५३	"
अथचतुर्थभावफलाऽध्यायः ४.		
भावसंबंधिविचार	५४	"
गृहलाभयोग	५५	"
उत्तमगृहयोग	५६	"
गेहनाशयोग	६३	८५
बंधुपूज्ययोग	६४	८६
बंधूपकारीयोग	६६	"
बंधुत्यक्तयोग	६८	"
बंधुभयकारीयोग	७०	"
बंधूपकारीयोग	७२	"
बंधुद्वेषीयोग	७३	"
बंधुपूज्ययोग	७४	८७
बहुगृहयोग	७५	"
गृहस्थिरतायोग	७६	"
बहुक्षेत्रयोग	७९	"
भ्रातृक्षेत्रयोग	८३	८८
स्वबलसेक्षेत्रप्राप्ति	८५	"
स्त्रीसे खेतीकी प्राप्ति	८६	"
शत्रुसे खेती	८७	"
बहुक्षेत्रयोग	८८	"
भूमिनाशयोग	९०	८९
सुखीयोग	९७	९०
गृहहीनदुःखीयोग	१०४	९१
पापीयोग	१०५	"
पुण्यभोगीयोग	१०८	"
जलमग्नयोग	११०	"
पत्थरसे चोट	१११	९२
मातृगामीयोग	११५	"
मातृतुल्यस्त्रीगमनयोग	११७	"
माताका जारिणीयोग	१२१	९३
जारजातयोग	१२६	९४
मातृदीर्घायुयोग	१३०	"
मातृमरणकाल	१३३	९५
मनमें कपटयोग	१३९	९६
निष्कपटयोग	१४३	"
शुद्धचित्तयोग	१४६	"
अंतःकपटबाह्यशुद्धयोग	१४७	"

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ.
मातृस्नेहशत्रुतादियोग	१४८	९७
वाहनयोग	१५२	"
सिंहासनप्राप्तियोग	१५६	९८
वाहनेशयोग	१५८	"

पंचमोऽध्यायः ५.

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ.
पंचमभावमेंविचारणीय	१	१०२
पितृधनपुत्रलाभयोग	३	"
पुत्रनाशयोग	१५	१०३
पुत्रसिद्धियोग	१९	१०४
वंशविच्छेदयोग	२२	"
पुत्रसुखहानियोग	२९	१०५
बडीउमरमेंपुत्रयोग	३०	"
तीव्रबुद्धियोग	३३	१०६
धारणपटुयोग	३९	१०७
परेंगितज्ञयोग	४२	"
बुद्धिनाशयोग	४५	"
विस्मृतियोग	४६	"
बुद्धिदातायोग	४९	१०८
राजमंत्रीयोग	५०	"
भविष्यज्ञयोग	५२	"
त्रिकालज्ञयोग	५३	"
सुपुत्रजननयोग	५४	"
कन्यानपुंसकादियोग	५५	"
पुत्रसेमित्रताआदि	५८	१०९
पितृसेवायोग	६३	"
अन्नदातायोग	६४	"
हृदयरोगयोग	६५	"

अथ षष्ठभावः।

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ.
छठेभावमेंविचारणीय	१	११०
व्रणयोग	२	"
रोगकेअंग	४	"
कुष्ठादिरोगयोग	६	"
ज्वरगुल्मादिरोगयोग	९	१११
लिंगच्छेदषंढयोग	११	"
हस्तपादादिछेदनयोग	१५	११२
वामनयोग	२१	११३
दुर्मरणादियोग	२२	"
युद्धमेंमरणयोग	२६	"
सद्योमरणयोग	२९	११४
पित्तवातादिसेव्रणयो०	३२	"
विसपेक्षयादिरोगयोग	३६	"

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ.
विषभक्षणयोग	४५	८३
सुपान्नभोक्तायोग	४६	"
कंठनेत्रकर्णरोगयोग	४७	"
कर्णभूषणयोग	५०	८४
शुभाशुभकथाश्रवणयोग	५३	"

अथचतुर्थभावफलाऽध्यायः ४.

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ.
भावसंबंधिविचार	५४	"
गृहलाभयोग	५५	"
उत्तमगृहयोग	५६	"
गेहनाशयोग	६३	८५
बंधुपूज्ययोग	६४	८६
बंधूपकारीयोग	६६	"
बंधुत्यक्तयोग	६८	"
बंधुभयकारीयोग	७०	"
बंधूपकारीयोग	७२	"
बंधुद्वेषीयोग	७३	"
बंधुपूज्ययोग	७४	८७
बहुगृहयोग	७५	"
गृहस्थिरतायोग	७६	"
बहुक्षेत्रयोग	७९	"
भ्रातृक्षेत्रयोग	८३	८८
स्वबलसेक्षेत्रप्राप्ति	८५	"
स्त्रीसे खेतीकी प्राप्ति	८६	"
शत्रुसे खेती	८७	"
बहुक्षेत्रयोग	८८	"
भूमिनाशयोग	९०	८९
सुखीयोग	९७	९०
गृहहीनदुःखीयोग	१०४	९१
पापीयोग	१०५	"
पुण्यभोगीयोग	१०८	"
जलमग्नयोग	११०	"
पत्थरसे चोट	१११	९२
मातृगामीयोग	११५	"
मातृतुल्यस्त्रीगमनयोग	११७	"
माताका जारिणीयोग	१२१	९३
जारजातयोग	१२६	९४
मातृदीर्घायुयोग	१३०	"
मातृमरणकाल	१३३	९५
मनमें कपटयोग	१३९	९६
निष्कपटयोग	१४३	"
शुद्धचित्तयोग	१४६	"
अंतःकपटबाह्यशुद्धयोग	१४७	"

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ.
मातृस्नेहशत्रुतादियोग	१४८	९७
वाहनयोग	१५२	"
सिंहासनप्राप्तियोग	१५६	९८
वाहनेशयोग	१५८	"

पंचमोऽध्यायः ५.

पंचमभावमेंविचारणीय	१	१०२
पितृधनपुत्रलाभयोग	३	"
पुत्रनाशयोग	१५	१०३
पुत्रसिद्धियोग	१९	१०४
वंशविच्छेदयोग	२२	"
पुत्रसुखहानियोग	२९	१०५
बडीउमरमेंपुत्रयोग	३०	"
तीव्रबुद्धियोग	३३	१०६
धारणपटुयोग	३९	१०७
परेंगितज्ञयोग	४२	"
बुद्धिनाशयोग	४५	"
विस्मृतियोग	४६	"
बुद्धिदातायोग	४९	१०८
राजमंत्रीयोग	५०	"
भविष्यज्ञयोग	५२	"
त्रिकालज्ञयोग	५३	"
सुपुत्रजननयोग	५४	"
कन्यानपुंसकादियोग	५५	"
पुत्रसेमित्रताआदि...	५८	१०९
पितृसेवायोग	६३	"
अन्नदातायोग	६४	"
हृदयरोगयोग	६५	"

अथ षष्ठभावः।

छठेभावमेंविचारणीय	१	११०
व्रणयोग	२	"
रोगकेअंग	४	"
कुष्ठादिरोगयोग	६	"
ज्वरगुल्मादिरोगयोग	९	१११
लिंगच्छेदषंढयोग	११	"
हस्तपादादिछेदनयोग	१५	११२
वामनयोग	२१	११३
दुर्मरणादियोग	२२	"
युद्धमेंमरणयोग	२६	"
सद्योमरणयोग	२९	११४
पित्तवातादिसेव्रणयो०	३२	"
वित्तपेक्षयादिरोगयोग	३६	"

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ.
दीर्घरोगश्वासकासादि	३८	११५
मूत्रकृच्छ्रपीनशआदिरोग	४०	"
गुल्मविद्रधिआदिरोग	४२	"
शत्रुपीडायोग	४४	"
शत्रुनाशयोग	४७	११६
शत्रुसेमित्रतायोग	४८	"
ज्ञातिपीडायोग	५०	"
ज्ञातिसेआजीवनयोग	५२	"
ज्ञातिवृद्धिक्षयादियोग	५३	"
ज्ञात्युत्कृष्टतायोग	५५	"
चौराग्निपीडन	५६	"
ज्ञात्युपकारीयोग	५७	११७
क्षारवस्तुप्रिययोग	५८	"
मिष्टादिरसप्रिययोग	६१	"

अथ षष्ठोध्यायः ६.

सप्तमभावमें विचारणीय	१	११८
कामीपरस्त्रीरतयोग	२	"
अपुत्रयोग	८	११९
जारजसंतानयोग	"	"
स्त्रीमरणयोग	११	१२०
स्त्रीसंख्यायोग	१५	"
अन्यस्त्रीयोग	२५	१२१
बहुस्त्रीयोग	२८	१२२
शताधिकस्त्रीयोग	३२	"
कुस्त्रीयोग	३८	१२३
सत्कलत्रयोग	४०	"
पतिव्रतास्त्रीयोग	४३	"
पापीस्त्रीयोग	४६	१२४
कुचरित्रास्त्रीयोग...	४८	"
सुचरित्रास्त्रीयोग	४९	"
कुलघातिनीयोग	५२	१२५
पुण्यात्मस्त्रीयोग	५३	"
दुश्चारिणीयोग	५४	"
गुणवतीयोग	५५	"
कुलदूषकास्त्री	५६	"
सुशीलायोग	५७	"
बाल्यावस्थामेंविवाहयोग	६०	१२६
विवाहोत्तरभाग्योदययोग	६२	"
विवाहोत्तरभाग्यनाशयोग	६३	"
विवाहसेभाग्यपुत्रादिचिरकालमें	६५	१२७
हीनजातिस्त्रीयोग	६८	"
उच्चजातिस्त्रीयोग	६९	"

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ.
अपनीस्त्रीकीउच्चजाति	६९	१२७
स्वबंधियोंसेमित्रतावशत्रुता	७३	१२८
सुगुणादुर्गुणास्त्रीयोग	७६	”
स्त्रीकेपुत्रयोग	७८	”
वंध्याआदिकस्त्रीसंयोग	८०	१२९
स्थाननिरूपण	८३	”
पशुतुल्यमैथुनयोग	८७	”
भगचुम्बनयोग	८८	”
स्तनलक्षणयोग	९३	१३०
भगदीर्घह्रस्वादियोग	९६	”
सूपादिभोजीयोग	१०५	”
दुग्धादिपायीयोग	११०	१३२
मूत्रकृच्छ्रयोग	११२	”

सप्तमोऽध्यायः ७.

अष्टमभावमें विचारणीय	१	१३२
अल्पायुयोग	२	”
दीर्घायुयोग	३	”
अल्पायुवाअनपत्ययोग	१६	१३४
मध्यमायुयोग	२१	१३५
रणादिशस्त्रादिसेमरणयोग	२६	१३६
अजीर्णसेमरणयोग	२८	”
विषोद्बंधनसिंहादिसेमरणयोग	३१	”
पितामाताकासहमरणयोग	३४	१३७
अपस्मारपिशाचादिसेमरणयोग	३५	”
मातुल मातापिताआदिकामरण	३९	”
बालकमरणभ्रातृमातुलमरणयोग	४०	१३८
भ्रातृनाशयोग	४३	”
बालकमृत्युयोग	४४	”
काणांधयोग	४७	१३९
मातापितामरणयोग	४९	”
मातृदुग्धरहितयोग	५०	”
पुत्रसुखासुखयोग	५१	”
जन्ममें पिताकी दूरसमीपता	५४	१४०
पुत्रकेहाथसेदाहादिनहोना	५५	”
मातृविपत्तियोग	५६	”
गुह्यरोगयोग	५७	”
स्थूलान्नमृद्वन्नयोग	५८	”
तिरस्कृतयोग	५९	”
दूरदेशमरणयोग	६०	”
गृहेमार्गेवामरणयोग	६१	१४१

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ.
अथ नवमभावः ।		
नवमभावमेंविचारणीय ...	१	१४१
गुरुदारगामियोग ...	३	"
धर्ममेंदृढबुद्धियोग ...	६	१४२
दंभसेधर्मयोग.... ...	९	"
पापीयोग ...	११	"
पितृसौख्ययोग ...	१३	"
पितृदुःखयोग ...	१७	१४३
पितृसुखयोग ...	२०	"
श्रेष्ठता ऐश्वर्यादियोग ...	२८	१४४
भ्रातृपुत्रादिसेधनादियोग ...	३०	"
स्त्रीतथाशत्रुआदिसेऐश्वर्य ...	३३	"
भाग्यहीनयोग ...	३५	"
पुनर्भाग्ययोग ...	३७	"
जपध्यानसमाधियोग ...	४०	१४६
दानीयोग ...	४३	"
दानाध्यक्षयोग ...	४९	१४७
दानग्राहीयोग ...	५२	"
गुरुभक्तियोग ...	५५	१४८
अष्टमोध्यायः ८.		
दशमभावमेंविचारणीय ...	१	"
कर्माविकलयोग ...	२	"
यज्ञकारकयोग ...	३	"
कर्मनाशयोग ...	"	"
गंगास्नानयोग ...	४	१४९
मंडपधर्मशालायोग ...	८	"
जीर्णोद्धारकारकयोग ...	९	"
कूपादिकारकयोग ...	१०	"
यज्ञकर्तायोग ...	११	१५०
यज्ञविघ्नयज्ञकर्त्तायोग ...	१३	"
आज्ञाकर्तृयोग ...	१५	"
कीर्तिमदयोग ...	२०	१५१
अपकीर्तियोग ...	२५	"
दृढव्रतयोग ...	२६	"
इंङ्गितज्ञयोग ...	२७	"
मानहीनयोग ...	२८	१५२
आययोग ...	२९	"
दासदासीयोग ...	३०	"
दुर्बलजानुयोग ...	३३	"
संन्यासयोग ...	१	१५३

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ.
अथ लाभभावः।		
लाभभावमेंविचारणीय	१	१५३
धनलाभयोग	२	"
धनलाभादिज्ञान	८	१५४
धननाशयोग	१०	"
कर्णाभरणयोग	११	"
कर्णसौख्ययोग	१२	"
कर्णरोगयोग	१३	"
दीर्घायुयोग	१४	"
अथ व्ययभावः।		
व्ययभावमेंविचारणीय	१	१५५
पापखेधनव्यय	२	"
धर्ममेंधनव्यय	४	"
स्त्रीहेतुधननाश	१०	१५६
भ्राताकेकारणधनव्यय	११	"
पुत्रपितृमातृकारणेन०	१२	"
नरकपतनयोग	१७	१५७
स्वर्गप्राप्तियोग	२३	"
नेत्रकाशुभाशुभ	२५	"
दोलापर्यंकादियोग	२८	१५८
उपास्यदेवादेवताआदि	३४	"
उपासनास्वार्थवापरार्थ	३९	"
अथ राजयोगाध्यायः ९.		
राजाधिराजयोग	१	१६०
वर्गोत्तमजन्मफल	६	"
वेशिउभयचारीयोग	७	"
सुनफाअनफादियोग	"	१६१
केमद्रुमयोग	"	"
अधियोग	८	"
नृपतुल्ययोग	९	"
ऐश्वर्यकासमय	१६	१६२
नृपतुल्ययोग	२०	"
राजराजयोग	२३	१६३
राजतुल्ययोग	३२	"
चांडालयोग	१	१६५
विप्रत्वयोग	२	"
भिक्षाशीयोग	३	"
परदासयोग	४	"
श्वासक्षयादिरोगयोग	६	"
तनुशोषणादिरोगयोग	७	"
नेत्ररोगोन्मादादियोग	८	"
जडअन्यधनभोगी	१३	१६६
दुष्कर्मीपरस्त्रीगामी	१४	"

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ.
कुलनाशकाल्पायुर्भिक्षुयोग	१६	१६६
अपवादीभिक्षाशनी	१७	”
अपस्मारियोग	१८	१६७
चांडाळयोगधर्मच्युतयोग	२०	”
कुलघ्नयोग	२२	”
नीचवृत्तियोग	२५	१६८
राजयोगभंग	२९	”
परप्रेष्ययोग	३१	१६९
बंधनयोग	३२	”
मन्दनेत्रअंधयोग	३३	”
जातिच्युतयोग	३५	”
कुष्ठीयोग	३६	”
गुल्मादिरोग	३७	”
हृद्रोगयोग	४०	१७०
भाग्यहीनयोग	४१	”
ज्ञानधनहीनयोग	४२	”
व्रात्ययोग	४३	”
वाहनभीतियोग	४४	”
पित्ताधिकयोग	४५	१७१
बालघातियोग	४७	”
ब्रह्मघातादियोग	”	”
मृगपक्षिहंतृयोग	४९	”
गळरोधक्षेमृत्युयोग	५०	”
नेत्रनाशयोग	”	”
घरमेंकृकलासभययोग	५१	”
मनुष्योंकापातित्य	५३	१७२
रजस्वलावंध्यागमन	५४	”
हीनांगनाप्रादिगमन	५५	”
गमनविहारस्थान	५७	”
पश्वादिमैथुनयोग	५७	१७३
स्तनलक्षणयोग	६०	”
जीर्णादिघर	६१	”

अथ दशमोऽध्यायः १०.

अल्पमध्योत्तमायु	२	१७४
तीनप्रकारबालमृत्यु	४	”
नवविधायुर्निर्णय	१०	१७५
दशावशेनमृत्युतिथि	१३	”
राशिसंधिगडांतविचार	१६	”
एकवर्षभीतरआयु	१८	१७६
सद्योमरणयोग	२०	”
अष्टवर्षायु	२९	१७७
मातासहितमृत्युयोग	३४	”
तीनवर्षमेंमृत्युयोग	३७	१७८

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ.
मासादिआयुयोंग	४०	१७९
शीघ्रमरणयोग	४१	"
सातपांचआदिवर्षमेंमृ.	५६	१८१
ग्यारहवर्षमेंमृत्युयोग	५८	"
सातवर्षतथा ३।४में मृ०	५९	"
द्वादशादिवर्षमेंरणयोग	६४	१८२
१८।१०आदिवर्षोंमेंमृत्यु	७४	१८३
३० वर्षमेंमृत्युयोग	८१	१८४

अथारिष्टभंगाध्यायः ११

अरिष्टभंगयोगाः	१	१८५

अथ मध्यदीर्घयोगाध्यायः १२

३३ वर्षायुयोग	२	१८९
३७।४२।४४ वर्षमृ०	५	१९०
४४ वर्षायुयोग	८	"
राजयोगसहित४८ वर्षायुयोग	११	१९१
वेदांतज्ञ० ५२ व० आ०	१२	"
५८ वर्षायु	१३	"
शास्त्रज्ञ ६० व०आ.	१४	"
कुलनाशकाग्निमरणयोग	१५	"
राजयोगसहित६०वर्षायु	१६	"
राजयोगसहित ६८व०आयु	२०	१९२
धनवान् ६६ वर्षायु	२१	"
ज्ञानियोग ६५ वर्षायु	२२	"
" " ७० वर्षायु	"	"
दीर्घायुयोगकथन	२७	१९३
७० से अधिकायु	"	"
८० वर्षायु	२८	"
४० वर्षपर्यंतक्लेशऊपरसुख	२९	"
ऐश्वर्यसहितदीर्घायु	३०	१९४
राजतुल्यदीर्घायु	३६	"
जितेन्द्रियदीर्घायु	३७	१९५
शतायुर्योगाः	३८	"
परमायु १२० योग	४५	"
अमितायुर्योग	५२	१९६
सहस्रायुर्योग	५३	१९७
द्विसहस्रायुर्योग	५५	"
इंद्रपदयोग	५७	"
युगांतायुर्योग	५९	"
ब्रह्मपदयोग	६२	१९८
असंख्यायुर्योग	६४	"
ब्रह्मपदप्राप्तियोग	६८	"
युगांतायुर्योग	७२	१९९
अयुतादिआयुर्योग	७५	"

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ,
मुनितुल्ययोग	७७	१
देवतुल्ययोग	७८	,,
असंख्याढ्ययोग	८०	२००
मुंनितुल्ययोग	८१	,,

अथ त्रयोदशोऽध्यायः १३.

दीप्तादिदशाकथन	१	२०१
दीप्तग्रहफल	६	,,
स्वस्थ	७	,,
मुदित	८	,,
शांत	९	२०२
हीन	१०	,,
अतिदुःखित	११	,,
विकल	१२	,,
खल	१३	,,
कोपी	१४	,,

अथ दशाफलविचारः ।

तत्रादौरवेःपरमोच्चदशाफल	१	२०३
उच्चदशाफल	२	,,
आरोहीदशाफल	४	,,
अवरोहीदशाफल	५	,,
नीचस्थितदशाफल	६	,,
अत्यंतनीचगतफल	७	,,
मूलत्रिकोणगतद०फल	८	२०४
स्वक्षेत्रगतफल	९	,,
अधिशत्रुगतफल	१०	,,
शत्रुराशिगतफल	११	,,
मित्रराशिगतफल	१२	,,
स्वगृहगतफल	१३	,,
समराशिगतफल	१४	२०५
उच्चगतग्रहयुतदशाफल	१५	,,
नीचगतग्रहयुक्तदशाफल	१६	,,
पापयुक्तदशाफल	१७	,,
शुभयुक्तदशाफल	१८	,,
शुभवीक्षितदशाफल	१९	,,
पापवीक्षितदशाफल	२०	,,
केन्द्रगतसूर्यदशाफल	२१	२०६
त्रिकोणगतद०फ०	२२	,,
उच्चांशकगतद०फ०	२३	,,
नीचांशगतद०फ०	२४	,,
दशाआद्यंतादिफ०	२५	,,
षष्ठस्थद०फ०	२६	,,
अष्टमस्थद०फ०	२७	,,
द्वादशगतद०फ०	२८	२०७

विषय.	श्लोक	पृष्ठ.
धनगतद०फ० ...	२९	२०७
तृतीयगतद०फ० ...	३०	"
चतुर्थगतद०फ० ...	३१	"
सप्तमगतद०फ० ...	३२	"
दशमगतद०फ० ...	३३	"
एकादशगतद०फ० ...	३४	२०८
स्थानबलीद०फ० ...	३५	"
स्थानबलहीनद०फ० ...	३७	"
दिग्वीर्यद०फ० ...	३८	"
दिग्बलहीनद०फ० ...	३९	"
निसर्गबलीद०फ० ...	४०	२०९
चेष्टाबलीद०फ० ...	४१	"
दृष्टिबलयुतद०फ० ...	४२	"
क्रूरषष्ट्यंशगतद०फ० ...	४३	"
मृद्वंशादिगतद०फ० ...	४४	"
पारावतांशगतद०फ० ...	४५	"
प्रथमांत्यफलविचार ...	४६	"
सर्पद्रेष्काणगतद०फ० ...	४७	२१०
उच्चराशिनीचांशकगतद०फ० ...	४८	"
नीचराशिउच्चांशकफ० ...	४९	"
अथचंद्रस्यपरमोच्चादिगतदशाफलानि १ श्लोकसे ४५ पर्यंत ...		"

अथ चतुर्दशोऽध्यायः १४.

भौमस्यपरमोच्चादिदशाफलानि श्लो० १ से ४८ पर्यंत ...		२१७
अथबुधस्यपरमोच्चादिदशाफलानि श्लो० १ से ४८ पर्यंत ...		२२३

अथ पंचदशोऽध्यायः १५.

गुरोःपरमोच्चादिगतदशाफलानि श्लो० १से ४७ पर्यन्त ...		२३०
अथ शुक्रस्य परमोच्चादिगतदशाफलानि ४४ श्लोकैः ...		२३६
अथशनिदशायांपरमोच्चादिगतदशाफलानि ४५ श्लोकैः ...		२४२

अथ षोडशोऽध्यायः १६.

राहुदशाफलानि २८ श्लोकैः ...		२४८
राहोरुच्चनीचादि ...	१	"
राहोरुच्चादिगतदशाफ० ...	२	"
केतुदशाफलानि५८ श्लोकैः ...		२५१
अथांतर्दशाफलानि...		"
तत्रादौसमुच्चयेनांतर्दशाफलानि ३० श्लोकैः...		२५३
सूर्यान्तर्दशा २७ श्लोकैः ...		२५७
चन्द्रान्तर्दशा २४ श्लोकैः ...		२५९

विषय.	श्लोक.	पृष्ठ.
भौमान्तर्दशाफलं २१ श्लोकैः		२६२
राहोरन्तर्दशाफलं १९ श्लोकैः		२६४
जीवान्तर्दशाफलं २१ श्लोकैः		२६६
शनेरन्तर्दशाफलं १७ श्लोकैः		२६८
बुधान्तर्दशाफलं २० श्लोकैः		२७०
केत्वन्तर्दशाफलं २० श्लोकैः		२७२
शुक्रान्तर्दशाफलं२०श्लोकैः		२७४

अथ प्रकीर्णाध्यायः १७.

जन्मनक्षत्रक्षयवृद्धिफल	१	२७६
क्षयादिरोगयोग...	३	२७७
स्त्रीनाशयोग	४	"
मूर्खद्वेषीआदि	५	"
अल्पायुर्योग	६	"
बाल्येमात्रादेर्हानिः	७	"
अंगहानियोग	८	"
सफलराजयोग	९	"
राजयोग	१०	"
खगादिद्रेष्काणकथन	१२	२७८
ग्रहोंकीशुष्कार्द्रसंज्ञा	१३	"
सजलनिर्जलराशिकथन	१४	"

उपसंहाराध्यायः १८.

ग्रहताराकथन	१	"
बाधत्वकथन	२	२७९
कारकग्रहलग्नसे०	३	"
कारकसूत्रकथन...	१	"
भाषाकारश्लोकाः	१	"

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ श्रीः ॥

सर्वार्थचिन्तामणिः ।

भाषाटीकासहितः ।

श्रीनाथं परदेवतां गणपतिं नत्वार्भकज्ञानदां
सद्भाषाविवृतिं तनोति सरलां सर्वार्थचिन्तामणेः ॥
टीहर्य्यां निवसन्महीधरधरादेवः स्वबुद्ध्याल्पया-
ऽटीकत्वादखिलोपयोगरहितत्वादेव गाढश्रमः ॥ १ ॥

टीकाकार ग्रन्थादिमें विघ्नविघातार्थ प्रणामरूप मंगलाचरण करताहै कि, अपने गुरु श्रीनाथ एवं परम इष्ट देवता और गणेशको नमस्कार करके बालक अर्थात् इस शास्त्रके अर्थसे अनभिज्ञोंको इसका ज्ञान देनेवाली, टीका टिप्पणी न होनेके कारण सर्वसाधारणको लाभदायक न होनेसे टीहरी (राजधानी) निवासी महीधरशर्मा बडे परिश्रमपूर्वक अपनी अल्प बुद्धिके अनुसार सर्वार्थचिन्तामणिनामक ग्रन्थकी सरलार्थ भाषाटीका करता है ॥ १ ॥

श्रीमच्छेषगिरेस्तटाधिनिलयं श्रीवेङ्कटेशं गुरुं
नत्वा वेङ्कटनायकं त्वनुदिनं जातोहमार्यात्सुधीः ॥
ज्योतिःशास्त्रमहाब्धिपारगमने वक्ष्यामि पोतात्मकं
ज्योतिश्शास्त्रविवेकपाकविदुषां सर्वार्थचिन्तामणिम् ॥ १ ॥

ग्रन्थकर्त्ता व्यंकटशर्मा निर्विघ्नपूर्वक ग्रन्थसमाप्त्यर्थ मंगलाचरण करताहै कि. श्रीमान् शेषाद्रिके तटपर निवास करनेवाले श्रीवेंकटेश्वर भगवान्‌को तथा जिस श्रेष्ठ गुरुसे मैं व्यंकटशर्मा पण्डित भयाहूं ऐसे वेंकटनायक गुरुको प्रतिदिन नमस्कार करके ज्योतिःशास्त्रविचारका परिपाक (फल) जाननेवाले विद्वानोंको ज्योतिःशास्त्ररूपी महासमुद्रके पार पहुंचनेके वास्ते इस सर्वार्थचिन्तामणि नाम ग्रंथको जहाजरूप कहताहूं ॥ १ ॥

नीलांबुजरुचिं देवं सकृद्ध्यांति मनोरथम् ॥ देवाः प्रणम्य यं सर्वे तं नमामि गजाननम् ॥ २ ॥ वाग्विभूतिप्रदा देवी या श्वेतांबुरुहस्थिता ॥ गोक्षीरधवलाकारा स्वयं तिष्ठतु वाचि मे ॥ ३ ॥

पुनः गणेशजीको वन्दना एवं सरस्वतीसे प्रार्थना करताहै कि, जिस गणेशजीको प्रणाम करके देवता सहजहीमें अपने मनोरथोंको प्राप्त होजातेहैं ऐसे नील कमलके समान कांति-वाले गजाननको नमस्कार करताहूं ॥ २ ॥ जो सरस्वती वाणीरूप ऐश्वर्य देतीहै, जो श्वेत कमलमें बैठीहै जो गोदुग्धके समान श्वेत आकारवती है वह स्वयं मेरी वाणीमें बैठे ॥ ३ ॥

मेषादिराशयः सर्वे दिनेशप्रमुखा ग्रहाः ॥ ये च लोकोपकर्तारः पांतु मामिह ते सदा ॥ ४ ॥

संपूर्ण मेष आदि राशि, सूर्यादि ग्रह और जो संसारके उपकारक, तिथि नक्षत्रादियोंके देवता हैं वे सर्वदा यहां मेरी रक्षा करें ॥ ४ ॥

यज्जातके निगदितं भुवि मानवानां तत्प्राश्निकेपि सकलं कथ-यंति तज्ज्ञाः ॥ प्रश्नोपि जन्मसदृशो भवति प्रभेदः प्रश्नस्य चात्र जननस्य न कश्चिदस्ति ॥ ५ ॥

संसारमें मनुष्योंके वास्ते जातक (जन्मकाल) में विचार कहाहै वही विचार प्रश्नमें भी जातकज्ञ कहतेहैं ऐसेही प्रश्नभी जातकके समान होताहै जातक तथा प्रश्नविचारमें कुछ भेद नहीं है ॥ ५ ॥

भौमाच्छविज्ञचन्द्ररविज्ञशुक्रवक्रेज्यमंदार्कसुतामरेज्याः ॥ मेषादि-भानामधिपाः क्रमेण तदंशकानामपि ते भवेयुः ॥ ६ ॥

अब संज्ञाप्रकरण कहते हैं. कि, मेषादि राशियोंके स्वामी क्रमसे मंगल, शुक्र, बुध, चंद्रमा, सूर्य, बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनि, शनि, बृहस्पति हैं अंशोंके स्वामीभी वही होते हैं ॥ ६ ॥

मेषादिमूर्धा वदनं गलाधोहृत्कुक्षिवासोभृतबस्तिगुह्यम् ॥ ततोरु-जानुद्वयजंघमंघ्री पापान्वितं यत्तदुपैति नाशम् ॥ ७ ॥

राशियोंके अंगविभाग कहतेहैं मेष शिर, वृष मुख, मिथुन स्तनमध्य, कर्क हृदय, सिंह उदर, कन्या कटि, तुला नाभिसे नीचे, वृश्चिक लिंग, धन ऊरु, मकर जंघा, कुम्भ घुटना, मीन पैर, इस प्रकार शरीरराशिचक्र है, कालानुसार राशियोंके फिरनेसे इसी राशिचक्रको कालचक्र भी कहतेहैं ॥ ७ ॥

व्यत्यस्तमत्स्यद्वयमश्वजंघश्चापी मनुष्यः सगदं सवीणम् ॥ नृयु-ग्ममादाय करेऽग्निसस्ये नौस्थाबला मानधरो वणिक् च ॥ ८ ॥ घटी जलादानग्रहीतुकामः शेषाः स्वनामानुगुणा भवन्ति ॥ मेषस्तु मेषो वृषभः स एव कर्की कुलीरस्त्वथ वृश्चिकोलिः ॥९॥

राशियोंके स्वरूप कहते हैं. मीन. मछलीयोंका जोडा एकके मुख पर दूसरेकी पूंछ, धन. जंघा घोडेकेसे. और कटिसे ऊपर मनुष्याकार, मिथुन, स्त्री पुरुषका जोडा गदा और वीणा धारण करता, कन्या. नावमें बैठी एक हातमें अग्नि पात्र दूसरेमें धान, तुला. पुरुष तराजू हातमें लिये, कुम्भ कंधामें जललेनेके लिये घडा धारण करता, अन्यराशि नामसदृश रूप रख लेहैं जैसे मेष मेंढा, वृष बैल, कर्क केकडा, वृश्चिक बिच्छू है ॥ ९ ॥

राशिं त्रिधाकृत्य दृकाणमाहुस्तदीशपुत्रेशशुभाधिनाथाः॥युजी-न्दुसूर्य्यौ भवने रवीन्दू नाथौ त्वयुग्मे भवनस्य चार्द्धे॥ १०॥

द्रेष्काण ,राशिके तीसरेभागको कहतेहैं एक राशिके ३० अंश होतेहैं. प्रथम भाग१० अंश-पर्यंत उसी राशिके स्वामीका द्वितीय भाग ११ अंशसे २० पर्यंत उस राशिसे पंचम राशिस्वामीका तीसरे भाग २१ अंशसे ३० पर्यंत उस राशिसे नवम राशिस्वामीका द्रेष्काण होताहै होरा समराशिकेपूर्वार्द्ध१५अंशपर्यंत चन्द्रमाकी, उत्तरार्धमें सूर्यकी, और विषम राशिके पूर्वार्द्धमें सूर्यकी, उत्तरार्द्धमें चन्द्रमाकी होतीहै ॥ १० ॥

चरेंशकानामधिपास्तदंशाद्राशौ स्थिरे तन्नवमेश्वराद्याः॥ द्विदेह मेतत्सुतराशिनाथाद्वदंति शास्त्रार्थविदो महांतः॥ ११ ॥

नवमांश कहतेहैं, चर राशि १। ४। ७। १० में अपनी राशिसे स्थिर २। ५। ८ ११ में राशिके नवमराशिसे द्विस्वभाव ३। ६। ९। १२ में उसके पंचम राशिसे गिनना। ३० अंशके नवभाग ३ अंश २० कला होते हैं इसी क्रमसे गिनके नवमांश जानना॥ ११॥

होराचक्रम्।

स्वा.	रा.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
देव	१५	सू ५	चं ४	सू ५	चं ४	सू. ५	चं. ४	सू. ५	चं.	सू. ५	चं. ४	सू ५	चं. ४
पितर	१३	च ४	सू. ५	चं. ४	सू. ५	च. ४	सू. ५	च. ४	सू ५	चं. ४	स. ५	चं ९	स ४

द्रैष्काणचक्रमिदम्।

स्वा०	रा.	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
नारद	अ १०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अग.	२०	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
दुर्वा	३०	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८

ग्रंथांतरे चतुर्थांशो यथा ॥ स्वर्क्षादिकेन्द्रपतयस्तुर्यांशेशाः क्रियादितः ॥ सनकश्च सनन्दनश्च कुमारश्च सनातनः ॥

स्वा	अं.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सनक	७ ३०	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	५ सू	६ बु	७ शु	८ मं	९ बृ	१० श	११ श	१२ बृ
सनंदन	१५ ०	४ चं.	५ सू,	६ बृ	७ शु	८ मं	९ बु	१० श	११ श	१२ बृ	१ मं	२ शु	३ बु
कुमार	२२ ३०	७ शु	८ मं	९ बृ	१० श	११ श	१२ बृ	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	५ सू	६ बु
सनातन	३० ०	१० श	११ श	१२ बृ	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	५ सू	६ बु	७ शु	८ मं	९ बृ

सप्तांशचक्रम् ।

स्वा०	लग्नं	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
क्षार	६ १७	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६
क्षीर	८ ३४	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७
दधि	१२ ५१	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८
आज्य	१७ ८	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९
इक्षु	२१ २५	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०
मद्य	२५ ४२	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११
शुद्ध जल	३० ०	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२

नवमांशचक्रम् ।

स्वा०	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	अंशाः
देव	१ मं	१० श	७ शु	४ चं	१ मं	१० श	७ शु	५ चं	१ मं	१० श	७ शु	४ चं	३।२०
नृ	२ शु	११ श	८ मं	५ सू	२ शु	११ श	८ मं	५ सू	२ शु	११ श	८ मं	५ सू	६।४०
राक्ष	३ बु	१२ बृ	९ बृ	६ बु	३ बु	१२ बृ	९ बृ	६ बु	३ बु	१२ बृ	९ बृ	६ बु	१०।०
देव	४ चं	१ मं	१० श	७ शु	४ चं	१ मं	१० श	७ शु	४ चं	१ मं	१० श	७ शु	१३।२०
नृ	५ सू	२ शु	११ श	८ मं	५ सू	२ शु	११ श	८ मं	५ सू	२ शु	११ श	८ मं	१६।४०
राक्ष	६ बु	३ बु	१२ बृ	९ बृ	६ बु	३ बु	१२ बृ	९ बृ	६ बृ	३ बु	१२ बु	९ बृ	२०।०
देव	७ शु	४ चं	१ मं	१० शु	७ शु	४ चं	१ मं	१० श	७ शु	४ चं	१ मं	१० श	२३।२०
नृ	८ मं	५ सू	२ शु	११ श	८ मं	५ सू	२ शु	११ श	८ मं	५ सू	२ शु	११ श	२६।४०
राक्ष	९ बृ	६ बु	३ बु	१२ बृ	९ बृ	६ बु	३ बु	१२ बृ	९ बृ	६ बु	३ बु	१२ बृ	३०।०

तत्क्षेत्रपा द्वादशभागनाथा लग्नस्य वर्गाधिपतिस्तदीशात् ॥
त्रिंशांशपा भौमशनीज्यसौम्यशुक्रा भवंत्योजगृहे समे तु ॥१२॥
विलोमतः पंचशराष्टसप्तबाणाः क्रमादूचुरनेकशास्त्रैः ॥ सप्तांश-
पास्त्वोजगृहे तदीशाद्युग्मे गृहे सप्तमराशिपात्तु ॥ १३ ॥

द्वादशांश एक राशिके १२ भागका होताहै जो प्रत्येक २ राशि ३० अंशका होताहै जिस राशिका द्वादशांश देखना हो उसीसे गिना जाताहै. त्रिंशांशक विषमराशिमें ५ अंशपर्यंत मंगलका, १२ तक शनिका, २० तक गुरुका, २५ तक बुधका, ३०तक शुक्रका और समराशिमें विलोम जैसे ५ अंशतक शुक्रका, १० तक बुधका, १८ तक बृहस्पतिका, २५तक शनिका, ३० तक मंगलका त्रिंशांश होता है—सप्तांशक एकराशि ३० अंशके सातवें भागका होता है विषम राशिमें अपनी राशिसे समराशिमें सप्तमराशिसे गिना जाताहै स्पष्टताके लिये इसका चक्र पहिले लिखदिया द्वादशांश त्रिंशांशका आगे लिखते हैं ॥ १२ ॥ १३ ॥

द्वादशांशचक्रम् ।

स्वामिनः	अं	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
गणेशः	२ ३०	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	५ सू	६ बु	७ शु	८ मं	९ बृ	१० श	११ श	१२ बृ
अश्विनी- कुमारः	५ ०	२ शु	३ बु	४ चं	५ स	६ बु	७ शु	८ मं	९ गु	१० श	११ श	१२ बृ	१ मं
यमः	७ ३०	३ बु	४ चं	५ सू	६ बु	७ शु	८ मं	९ गु	१० श	११ श	१२ बृ	१ मं	२ शु
अहिः	१० ०	४ चं	५ सू	६ बु	७ शु	८ मं	९ बृ	१० श	११ श	१२ बृ	१ मं	२ शु	३ बु
गणेशः	१२ ३०	५ सू	६ बु	७ शु	८ मं	९ गु	१० श	११ श	१२ गु	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं
अश्विनी- कुमारः	१५ ०	६ बु	७ शु	८ मं	९ गु	१० श	११ श	१२ बृ	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	५ सू
यमः	१७ ३०	७ शु	८ मं	९ गु	१० श	११ श	१२ बृ	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	५ सू	६ बु
अहिः	२० ०	८ मं	९ बृ	१० श	११ श	१२ बृ	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	५ सू	६ बु	७ शु
गणेशः	२२ ३०	९ गु	१० श	११ श	१२ बृ	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	५ सू	६ बु	७ शु	८ मं
अश्विनी- कुमारः	२५ ०	१० श	११ श	१२ गु	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	५ सू	६ बु	७ शु	८ मं	९ बृ
यमः	२७ ३०	११ श	१२ बृ	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	५ सू	६ बु	७ शु	८ मं	९ बृ	१० श
अहिः	३० ०	१२ बृ	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	५ सू	६ बु	७ शु	८ मं	९ बृ	१० श	११ श

विषमत्रिंशांशचक्रम्.

स्वा.	अं	मे	मि	सिं	तु	वृ	ध	कुं
वह्निः	५ ०	मं	मं	मं	मं	मं	मं	मं
वायुः	१० ०	श	श	श	श	श	श	श
इंद्रः	१८ ०	गु	गु	गु	गु	गु	गु	गु
धनदः	२५ ०	बु	बु	बु	बु	बु	बु	बु
जलदः	३० ०	शु	शु	शु	शु	शु	शु	शु

समत्रिंशांशचक्रम्.

स्वा०	अं	वृ	क	क	वृ	म	मी
जलदः	५	शु	शु	शु	शु	शु	शु
धनदः	१२ ०	बु	बु	बु	बु	बु	बु
शक्रः	२० ०	गु	गु	गु	गु	गु	गु
वायुः	२५ ०	श	श	श	श	श	श
वह्निः	३० ०	मं	मं	मं	मं	मं	मं

दशांशपानामधिपास्तदीशादोजे समे तन्नवमेश्वराद्याः॥ ओजे कलानामधिपास्तदीशाश्चतुर्मुखो विष्णुहरौ दिनेशः॥ १४ ॥ युग्मे क्रमाद्व्यत्ययमेत्र राशौ षष्ट्यंशपानामधिपास्त्वयुग्मे ॥ १५ ॥

एकराशि ३० अंशको दशम भाग ३ । ३ अंशका होता है इसे दशांश कहते हैं विषम राशिमें अपनी राशिसे सममें उसके नवम राशिसे गिनना इनके स्वामी इन्द्रादि दश दिक्पाल हैं ॥१४॥ षोडशांश राशिके सोलहवें भागको कहते हैं जो अं १ क ५२ वि. ३० का होता है विषमराशिमें ब्रह्मा १ विष्णु २ हर ३ सूर्य ४ इस क्रमसे और समराशिमें विपरीत अर्थात् सूर्य १ हर २ विष्णु ३ ब्रह्मा ४ किसीका मत है कि बारह राशियोंके स्वामी लेकर ऊपर ४ अंशके लिये सूर्यादि ५ हैं. सममें प्रथम ब्रह्मादि नव राशिस्वामी जानने. इसका स्पष्ट चक्रमें लिखते हैं. दशांशभी चक्रमें देखो ॥ १५ ॥

दशमांशचक्रम्.

विषमे स्वा०		मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	समे स्वामिनः
इंद्रः	३	१ मं	१० श	३ बु	१२ शु	५ सू	२ शु	७ शु	४ च	९ गु	६ बु	११ श	८ मं	अनंतः
अग्निः	६	२ शु	११ श	४ च	१ मं	६ बु	३ बु	८ मं	५ सू	१० श	७ शु	१२ गु	९ गु	ब्रह्मा
यमः	९	३ बु	१२ गु	५ सू	२ शु	७ शु	४ चं	९ गु	६ बु	११ श	८ मं	१ मं	१० श	ईशानः
राक्ष०	१२	४ चं	१ मं	६ बु	३ बु	८ मं	५ सू	१० श	७ शु	१२ गु	९ शु	२ शु	११ श	कुबेरः
वरुणः	१५	५ सू	२ शु	७ शु	४ चं	९ गु	६ बु	११ श	८ मं	१ मं	१० श	३ बु	१२ गु	वायुः
वायुः	१८	६ बु	३ बु	८ मं	५ सू	१० श	७ शु	१२ गु	९ गु	२ शु	११ श	४ चं	१ मं	वरुणः
कुबेरः	२१	७ शु	४ चं	९ गु	६ बु	११ श	८ मं	१ मं	१० श	३ बु	१२ गु	५ सू	२ शु	राक्षसः
ईशानः	२४	८ मं	५ सू	१० श	७ शु	१२ गु	९ गु	२ शु	११ श	४ चं	१ मं	६ बु	३ बु	यमः
ब्रह्मा	२७	९ गु	६ बु	११ श	८ मं	१ मं	१० श	३ बु	१२ गु	५ सू	२ शु	७ शु	४ चं	अग्निः
अनंतः	३०	१० श	७ शु	१२ गु	९ गु	२ शु	११ श	४ चं	१ मं	६ बु	३ बु	८ मं	५ सू	इंद्रः

षोडशांशचक्रम्.

सं.	विषम स्वा.	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	सम स्वा.	अ	क	वि
१	ब्र	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	सू	१	५२	३०
२	वि	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	ह	३	४५	०
३	ह	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	वि	५	३७	३०
४	सू	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	ब्र	७	३०	०
५	ब्र	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	सू	९	२२	३०
६	वि	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	ह	११	१५	०
७	ह	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	वि	१३	७	३०
८	सू	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	ब्र	१५	०	०
९	ब्र	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	सू	१६	५२	३०
१०	वि	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	ह	१८	४५	०
११	ह	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	वि	२०	३७	३०
१२	सू	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	ब्र	२२	३०	०
१३	ब्र	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	सू	२४	२२	३०
१४	वि	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	ह	२५	१५	०
१५	ह	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	वि	२८	७	३०
१६	सू	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	ब्र	३०	०	०

अथ प्रसंगाद्विंशांशसिद्धांशभांशचत्वारिंशांशपंचवेदांशाः । तत्रादौ विंशांशः । अथ विंशतिभागानामधिपा ब्रह्मणोदिताः ॥ क्रियाच्चरे स्थिरे चापान्मृगेंद्राद्द्विस्वभावके ॥ १ ॥ काली गौरी जया लक्ष्मीर्विजया विमला सती ॥ तारा ज्वालामुखी श्वेता ललिता बगलामुखी ॥ २ ॥ प्रत्यंगिरा शची रौद्री भवानी वरदा जया ॥ त्रिपुरा सुमुखी चेति विषमे परिचिंतयेत् ॥ ३ ॥ समराशौ दया मेधा छिन्नशीर्षा पिशाचिनी ॥ धूमावती च मातंगी बला भद्रारुणानला ॥ ४ ॥ पिंगला छुछुका घोरा वाराही वैष्णवी सिता ॥ भुवनेशी भैरवी च मंगला ह्यपराजिता ॥ ५ ॥

इन विंशांश आदियोंकी टीका उदाहरणसहित चक्रोंमें लिखा है ॥ ५ ॥

विंशांशचक्रम्.

सं.	वि. स्वा.	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	स. स्वा.	अं. सं.	सि
१	काली	१	९	५	१	९	५	१	९	५	१	९	५	दया	१।३०	१
२	गौरी	२	१०	६	२	१०	६	२	१०	६	२	१०	६	मेधा	३।०	२
३	जया	३	११	७	३	११	७	३	११	७	३	११	७	छिन्ना	४।३०	३
४	लक्ष्मी	४	१२	८	४	१२	८	४	१२	८	४	११	८	पिशाचि	६।०	४
५	विजया	५	१	९	५	१	९	५	१	९	५	१	९	धूमावः	७।३०	५
६	विमला	६	२	१०	६	२	१०	६	२	१०	६	२	१०	मातंगी	९।०	६
७	सती	७	३	११	७	३	११	७	३	११	७	३	११	बगला	१०।३०	७
८	तारा	८	४	१२	८	४	१२	८	४	१२	८	४	१२	भद्रा	१२।०	८
९	ज्वा. मु.	९	५	१	९	५	१	९	५	१	९	५	१	अरुणा	१३।३०	९
१०	श्वेता	१०	६	२	१०	६	२	१०	६	२	१०	६	२	शीतला	१५।०	१०
११	ललि.	११	७	३	११	७	३	११	७	३	११	७	३	पिंगला	१६।३०	११
१२	बगला	१२	८	४	१२	८	४	१२	८	४	१२	८	४	छुछुका	१७।०	१२
१३	प्रत्य.	१	९	५	१	९	५	१	९	५	१	९	५	घोरा	१९।३०	१३
१४	शची	२	१०	६	२	१०	६	२	१०	६	२	१०	६	वाराही	२१।०	१४
१५	रौद्री	३	११	७	३	११	७	३	११	७	३	११	७	वैष्णवी	२२।३०	१५
१६	भवानी	४	१२	८	४	१२	८	४	१२	८	४	१२	८	सिता	२४।०	१६
१७	वारदा	५	१	९	५	१	९	५	१	९	५	१	९	भुवना	२५।३०	१७
१८	जया	६	२	१०	६	२	१०	६	२	१०	६	२	१०	भैरवी	२७।०	१८
१९	त्रिपुरा	७	३	११	७	३	११	७	३	११	७	३	११	मंगला	२८।३०	१९
२०	सुमुखी	८	४	१२	८	४	१२	८	४	१२	८	४	१२	अपराजिता	३०।०	२०

अथ सिद्धांशकम् ॥ सिद्धांशकानामधिपाः सिंहादोजभगे गृहे ॥
कर्काद्युग्मभगे खेटे स्कंदः पशुधरोनलः ॥६॥ विश्वकर्मा भगो मित्रो

मयोंतकवृषध्वजाः ॥ गोविन्दो मदनो भीमः सिंहादौ विषमे क्रमा-त् ॥७॥ कर्कादौ समभे भीमा विलोमेन विचिंतयेत् ॥८॥ यथा--लग्ने ३ । ८ । ४५ कर्कादिगणने मकरागतिः ॥ अथ भांशकम् ॥ नक्षत्रेशाः क्रमाद्दस्रयमवह्निपितामहाः ॥ चन्द्रेशादितिजीवाहिपि-तरो भगसंज्ञिताः ॥ ९ ॥ अर्यमार्कस्त्वष्टमरुच्छक्राग्निमित्रवा-सवाः ॥ निर्ऋत्युदकाविश्वेजगोविंदवसवोंबुपः ॥ १० ॥ ततो-जपादहिर्बुध्न्यः पूषा चैव प्रकीर्तितः ॥ नक्षत्रेशास्तु भांशेशाः भांशसंख्याः स्वभात् क्रमात् ॥ ११ ॥ उदाहरणम्--यथा लग्नं ३ । ८ । ४५ मकराद्गणनया सिंह आगत एवं सर्वत्र ज्ञेयम् ॥ अथ खवेदांशगणना ॥ चत्वारिंशद्विभागानामधिपा विषमे क्रि-यात् ॥विष्णुचन्द्रौ मरीचिश्च त्वष्टा धाता शिवो रविः ॥१२॥ यमो यक्षेशगंधर्वौ कालो वरुण एव च ॥ समभे तुलतो ज्ञेयाः स्वस्वा-धिपसमन्विताः ॥ १३ ॥ उदाहरणम्–यथा लग्नम्. ३।८।४५ तुलादिगणनीयाः कन्या आगतः एवं सर्वत्र ज्ञेयम् ॥ अथाक्ष-वेदांशम् ॥ तथाक्षवेदभागानामधिपाश्चरभे क्रियात् ॥ स्थिरे-सिंहाद्द्विस्वभावे चापाद्ब्रह्मेशकेशवाः ॥ ईशाच्युतसुरेज्येष्टविष्णु-केशाश्वरादिषु ॥ १४ ॥ उदाहरणम् । यथा लग्नम् ३।८।४५। मेषाद्गणनया वृष आगतः एवं सर्वत्र ज्ञेयम् ॥

चतुर्विंशांशचक्रम्.

सं	वि० स्वा०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	स० स्वा०	अं क०	सं
१	स्कंदः	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	भीमः	१।१५	१
२	पशुधरः	६	५	६	५	६	५	६	५	६	५	६	५	मदनः	२।३०	२
३	अनलः	७	६	७	६	७	६	७	६	७	६	७	६	गोविन्दः	३।४५	३
४	विश्वकः	८	७	८	७	८	७	८	७	८	७	८	७	वृषध्वजः	५।०	४
५	भगः	९	८	९	८	९	८	९	८	९	८	९	८	अन्तकः	६।१५	५
६	मित्रः	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	मयः	७।३०	६
७	मयः	११	१०	११	१०	११	१०	११	१०	११	१०	११	१०	मित्र	८।४५	७
८	अन्तकः	१२	११	१२	११	१२	११	१२	११	१२	११	१२	११	भगः	१०।०	८
९	वृषध्वजः	१	१२	१	१२	१	१२	१	१२	१	१२	१	१२	विश्वकः	११।१५	९
१०	गोविंदः	२	१	२	१	२	१	२	१	२	१	२	१	अनलः	१२।३०	१०
११	मदनः	३	२	३	२	३	२	३	२	३	२	३	२	पशुधरः	१३।४५	११
१२	भीमः	४	३	४	३	४	३	४	३	४	३	४	३	स्कंदः	१५।०	१२
१३	स्कंदः	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	भीमः	१६।१५	१३
१४	पशुधरः	६	५	६	५	६	५	६	५	६	५	६	५	मदनः	१७।३०	१४
१५	अनलः	७	६	७	६	७	६	७	६	७	६	७	६	गोविंदः	१८।४५	१५
१६	विश्वकः	८	७	८	७	८	७	८	७	८	७	८	७	वृषध्वजः	२०।०	१६
१७	भगः	९	८	९	८	९	८	९	८	९	८	९	८	अंतकः	२१।१५	१७
१८	मित्रः	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	मयः	२२।३०	१८
१९	मयः	११	१०	११	१०	११	१०	११	१०	११	१०	११	१०	मित्रः	२३।४५	१९
२०	अंतकः	१२	११	१२	११	१२	११	१२	११	१२	११	१२	११	भगः	२५।०	२०
२१	वृषध्व०	१	१२	१	१२	१	१२	१	१२	१	१२	१	१२	विश्वकः	२६।१५	२१
२२	गोविंदः	२	१	२	१	२	१	२	१	२	१	२	१	अनलः	२७।३०	२२
२३	मदनः	३	२	३	२	३	२	३	२	३	२	३	२	पशुधरः	२८।४५	२३
२४	भीमः	४	३	४	३	४	३	४	३	४	३	४	३	स्कंदः	३०।०	२४

भांशचक्रम् ॥

सं.	स्वामि	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	अंशादि	सं.
१	दस्रः ...	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१।६।४०	१
२	यमः ...	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२।१३।२०	२
३	अग्निः ...	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३।२०।०	३
४	ब्रह्मा ...	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४।२६।४०	४
५	शशिः ...	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५।३३।२०	५
६	शिवः ...	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६।४०।०	६
७	अदितिः ...	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७।४६।४०	७
८	जीवः	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८।५३।२०	८
९	सर्पः ...	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	१०।०।०	९
१०	पितरः ...	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	११।६।४०	१०
११	भगः ...	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	१२।१३।२०	११
१२	अर्यमा ...	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१३।२०।०	१२
१३	रविः ...	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१४।२६।४०	१३
१४	त्वाष्ट्रः ...	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११	१५।३३।२०	१४
१५	वायु ...	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	१६।४०।०	१५
१६	शक्राग्निः ...	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	१७।४६।४०	१६
१७	मित्रः ...	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२	१८।५३।२०	१७
१८	इन्द्रः ...	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	२०।०।०	१८
१९	निर्ऋतिः ...	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	२१।६।४०	१९
२०	जलः ...	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५	२२।१३।२०	२०
२१	विश्वेदेवाः ...	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	२३।२०।०	२१
२२	विष्णुः ...	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	२४।२६।४०	२२
२३	इन्द्रः ...	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	२५।३३।२०	२३
२४	वरुणः ...	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	२६।४०।०	२४
२५	अजपात् ...	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	२७।४६।४०	२५
२६	अहिर्बुध्न्याः ...	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२८।५३।२०	२६
२७	पूषा ...	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३०।०।०	२७

खवेदांशचक्रम् ॥

सं.	स्वामि		मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	अं० कं०
१	विष्णुः	...	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१।४५
२	चन्द्रः	...	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२।३०
३	मरीचिः	...	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	२।१५
४	त्वष्टा	...	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	३।०
५	धाता	...	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	३।४५
६	शिवः	...	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	४।३०
७	रविः	...	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	५।१५
८	यमः	...	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	६।०
९	यक्षेशः	...	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	६।४५
१०	गंधर्वः	...	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	७।३०
११	कालः	...	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	८।१५
१२	वरुणः	...	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	९।०
१३	विष्णुः	...	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	९।४५
१४	चन्द्रः	...	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	१०।३०
१५	मरीचिः	...	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	११।१५
१६	त्वष्टा	...	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	१२।०
१७	धाता	...	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	१२।४५
१८	शिवः	...	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	११	६	१२	१३।३०
१९	रविः	...	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	१४।१५
२०	यमः	...	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	१५।०
२१	यक्षेशः	...	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	१५।४५
२२	गंधर्वः	...	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१६।३०
२३.	कालः	...	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	१७।१५
२४	वरुणः	..	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१८।०
२५	विष्णुः	...	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१८।४५
२६	चन्द्रः	...	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	१९।३०
२७	मरीचिः	...	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	२०।१५
२८	त्वष्टा	...	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	२१।०
२९	धाता	...	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	२१।४५
३०	शिवः	...	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	२२।३०

३१	रविः	...	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	२३।१५
३२	यमः	...	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	२५।०
३३	यंक्षेशः	...	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	२४।४५
३४	गन्धर्वः	...	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	२५।३०
३५	कालः	...	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	२६।१५
३६	वरुणः	...	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	२७।०
३७	विष्णुः	...	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	२७।४५
३८	चन्द्रः	...	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२८।३०
६९	मरीचिः	...	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	२९।१५
४०	त्वष्टा	...	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	३०।०

अक्षवेदांशचक्रमिदम्.

	स्वा०	स्वा०	स्वा०	स्वा०	स्वा०	स्वा०	स्वा०	स्वा०	स्वा०	स्वा०	स्वा०	स्वा०		
	ब्रह्मा	शिव	विष्णु	ब्रह्मा	शिव	विष्णु	ब्रह्मा	शिव	विष्णु	ब्रह्मा	शिव	विष्णु		
	शिव	विष्णु	ब्रह्मा	शिव	विष्णु	ब्रह्मा	शिव	विष्णु	ब्रह्मा	शिव	विष्णु	ब्रह्मा		
	विष्णु	ब्रह्मा	शिव	विष्णु	ब्रह्मा	शिव	विष्णु	ब्रह्मा	शिव	विष्णु	ब्रह्मा	शिव		
सं	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मीन	अं	क
१	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	०	४०
२	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	१	२०
३	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	२	०
४	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	२	४०
५	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	३	२०
६	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	४	०
७	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	४	४०
८	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	५	२०
९	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	६	०
१०	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	६	४०
११	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	७	२०
१२	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	८	०
१३	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	८	४०
१४	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	९	२०
१५	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	१०	०
१६	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	१०	४०
१७	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	११	२०
१८	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	१२	०
१९	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	१२	४०
२०	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	१३	२०
२१	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	१४	०
२२	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१४	४०
२३	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	१५	२०
२४	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१६	०

अक्षवेदांशचक्रस्य पूर्तिः.

२५	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१६	४०
२६	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	१७	२०
२७	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	१८	०
२८	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	१८	४०
२९	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	१९	२०
३०	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	२०	०
३१	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	२०	४०
३२	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	२१	२०
३३	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	२२	०
३४	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१२	४०
३५	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	२३	२०
३६	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	२४	०
३७	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	२४	४०
३८	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२५	२०
३९	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	२६	०
४०	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	२६	४०
४१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	२७	२०
४२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	२८	०
४३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	२८	४०
४४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	२९	२०
४५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	३०	०

अथ षष्ट्यंशः ॥युग्मे क्रमाद्व्यत्ययमेव राशौ षष्ट्यंशकानामधिपास्त्वयुग्मे ॥ घोरांशको १।६० राक्षस २।५९ देवभागौ ३।५८ कुबेर४।५७रक्षोगण५।५६किन्नरांशाः ६।५५॥१५॥भ्रष्टः ७।५४ कुलघ्नो ८।५३ गरला ९।५२ ग्निसंज्ञौ १०।५१ मायांशकः ११।५० प्रेतपुरीशभागः १२।४९ ॥ अपां पतिः १३।४८ देवगणेशभागः १४ । ४७ काला १५।४६ हिभागा-१६।४५ वमृतांशु १७।४४ चन्द्रौ १८।४३ ॥१६॥ मृद्वंशकः १९।४२ कोमल २०।४१ पद्मभागौ २१।४० लक्ष्मीश २२।३९

वागीश २३।३८ दिगंबरांशाः २४।३७॥ देवा २५।३६ र्द्रभागौ २६।३५ कलिनाशभागः २७।३४क्षितीश्वरांशः २८।३३कमलाकरांशः२९।३२॥१७॥ क्रमेण मंदात्मज ३०।३१ मृत्य ३१।३० काल ३२।२९ दावाग्नि ३३।२८ घोरा ३४।२७ मय ३५।२६ कंटकाश्च ३६।२५॥ सुधा ३७।२४मृतांशौ ३८।२३ परिपूर्णचंद्र-३९।२२ विषप्रदग्धौ४०।२१ कुलनाशमुख्यौ ४१।२०।४२।१९ ॥ १८ ॥ वंशक्षयो ४३।१८ त्पातक ४४।१७ कालरूपाः ४५। १६ सौम्यश्च ४६।१५ मृद्वंश ४७।१४ सुशीतलांशौ ४८।१३ ॥ दंष्ट्राकराले४९।१२न्दुमुख ५०।११ प्रवीणाः ५१।१० कालाग्नि-५२।९दाण्डायुध ५३।८ निर्मलांशाः५४।७॥ १९॥ शुभा ५५। ६ शुभांशा ५६-५ वतिशीतलांशः ५७।४ सुधापयोधि ५८।३ भ्रमणेंदु ५९।२ रेखाः ६०।१॥ ज्ञेयाः क्रमाद्व्यत्ययमेव युग्मे शुभान्वितांशो यदि शोभनासिः ॥ २० ॥

षष्टयंश विषम राशिमें क्रमसे घोरांशकादि इन्दुरेखापर्यंत और समराशिमें विपरीत क्रमसे इन्दुरेखासे घोरांशपर्यंत गिनना षष्टयंशलानेका प्रकार ग्रथांतरोंमें है यथा "राशीन्विहाय खेटस्य द्विघ्नमंशाद्यमर्कह्रत् ॥ शेषं सैकं च तद्राशिनाथः षष्टयंशपः स्मृतः॥" अर्थात् राशियोंको छोड़के अंशादि द्विगुण करना अंशस्थानमें १२ से नष्ट करना शेषमें १ जोडके उसराशिका स्वामी षष्टयंशेश होताहै यह विषममें क्रमसे सममें व्युत्क्रमसे जानना. जैसे लग्न ३।८।४५ सम है अठारहवां उत्पातांश आया सूर्यांशादि ४।२८।१ द्विगुण ८।५६।२ जब अंशादि १२ से अधिक हो तो १२ से, और कला ३० से अधिक हो तो ३० से, भाग लेकर लब्धि ऊपर जोडनी यहां कला ५६ तीससे भाग लेनेसे १पाया यही ऊपर जोडदिया ८ शेषमें १ जोडना है यहां शेष ९ सैक १० मिथुनसे गिनना है तुलामें सूर्य ७ अग्न्यंशमें है सममें ६० में घटाना इत्यादि सर्वत्र जानना." इसका खुलासे उदाहरण आगे चक्रमें देखना इन ६० में २६ क्रूरांश १ मध्यम और ३३ देवभाग हैं यही देवभाग शुभ होतेहैं विशेष विचार इनका आगे कहेंगे ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

षष्ट्यंशचक्रम्.

सं.	विषमे	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	समे	अं.	क
१	घोरांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	इंदुरेखा	०	३०
२	राक्षसः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भ्रमणः	१	०
३	देवाः	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	सुधायोगः	१	३०
४	कुबेरः	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	अतिशीतः	२	०
५	रक्षोगणः	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	अशुभः	२	३०
६	किन्नरः	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	शुभः	३	०
७	भ्रष्टः	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	निर्मलः	३	३०
८	कुलघ्नः	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	दण्डायुधः	४	०
९	गरलः	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	कालाग्निः	४	३०
१०	अग्निः	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	प्रवीणः	५	०
११	माया	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	इंदुमुखः	५	३०
१२	यमः	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	दंष्ट्राकराः	६	०
१३	वरुणः	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	शीतलः	६	३०
१४	इंद्रः	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	मृदुः	७	०
१५	कालः	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	सौम्यः	७	३०
१६	अहिः	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कालरूपः	८	०
१७	अमृतांशुः	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	उत्पात	८	३०
१८	चन्द्रः	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	वंशक्षयः	९	०
१९	मदुः	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सुख्यः	९	३०
२०	कोमलः	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	कुलनाशः	१०	०
२१	पद्मः	११	१२	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	विष्वप्रदिमा	१०	३०
२२	विष्णुः	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	पूर्णचंद्रः	११	०
२३	वागाशः	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	अमृतः	११	३०
२४	दिगंबरः	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	सुधा	१२	०
२५	दवः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	कण्टकः	१२	३०
२६	आर्द्रः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	मयः	१३	०
२७	कलिना०	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	घोरः	१३	३०
२८	क्षितीशः	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	वादाग्निः	१४	०
२९	कमलाकरः	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कालः	१४	३०
३०	मंदः	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	मृत्युः	१५	०
३१	मृत्युः	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	मदः	१५	३०
२२	कालः	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	कमलाकरः	१६	०
३३	दावाग्निः	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	क्षिताशः	१६	३०
३४	घोरः	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	कालनाशः	१७	०

३५	भयः	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	आर्द्रः	१७	३०
३६	कण्टकः	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	देवः	१८	०
३७	सुधा	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	दिगंबरः	१८	३०
३८	अमृतः	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	वागीशः	१९	०
३९	पूर्णचंद्रः	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	विष्णुः	१९	३०
४०	विषप्रदि०	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	पद्मः	२०	०
४१	कुलनाशः	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	कामलः	२०	३०
४२	मुख्यः	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	मृदु	२१	०
४३	वंशक्षयः	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	चंद्रः	२१	३०
४४	उत्पातः	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	अमृतांशुः	२२	०
४५	कालरू०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	अहिः	२२	३०
४६	सौम्यः	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कालः	२३	०
४७	मृदुः	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	इन्द्रः	२३	३०
४८	शीतलः	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	वरुणः	२४	०
४९	दंष्ट्राकरा०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	यमः	२४	३०
५०	इंदुमुखः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	माया	२५	०
५१	प्रवीणः	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	अग्निः	२५	३०
५२	कालाग्निः	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	गरलः	२६	०
५३	दंडायुधः	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कुलघ्नः	२६	३०
५४	निर्मलः	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	भ्रष्टः	२७	०
५५	शुभः	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	किन्नरः	२७	३०
५६	अशुभः	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	रक्षागणः	२८	०
५७	आतशी	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	कुबरः	२८	३०
५८	सुधापया	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	देवः	२९	०
५९	भ्रमणः	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	राक्षसः	२९	३०
६०	इंदुरेखाः	६	७	८	९	१०	११	२२	१	२	३	४	५	घोरांशः	३०	०

क्रूरषष्ट्यंशगाः सर्वे नाशयंति खचारिणः ॥ यदि पूर्णबलैर्युक्ताः स्वोच्चमूलत्रिकोणगाः ॥ २१ ॥ स्वर्क्षकेन्द्रोत्तमांशस्था मित्रर्क्षत्रिकोणगाः ॥ सप्तवर्गोद्भवाः स्वांशाः स्वाधिमित्रांशकान्विताः ॥ २२ ॥

जो ग्रह अपने उच्च मूलत्रिकोणमेंही पूर्णबलसे युक्त हों और क्रूरषष्टचंशमें हो तो उत्तमवलोक्त शुभफलका नाश करते हैं ॥ २१ ॥ उत्तमादि भेद कहते हैं कि—जो ग्रह स्वराशिकेन्द्र उत्तमांश मित्रराशि त्रिकोणमें हो तथा सप्तवर्गमें स्वांशकस्थ हो अधिमित्रांशका हो वह उत्तमांशक संज्ञक होता है इनका प्रयोजन कहते हैं कि ॥ २२ ॥

वर्गास्तु ये दश प्रोक्ताः पूर्वाचार्यैर्महर्षिभिः ॥ भवंति वर्गसंयोगे पारिजातादिसंज्ञकाः ॥ २३ ॥ दुःस्थारिनीचमूढस्था ग्रहा बलविवर्जिताः ॥ मरणावस्थगाश्चेत्तु पारिजातादिनाशकाः ॥ २४ ॥

पूर्वाचार्य महर्षियोंने जो दशवर्ग कहेहैं उनमें जो ग्रह स्ववर्गमें हों उनकी पारिजातादि संज्ञायें होती हैं शुभ फल पूर्ण देते हैं ॥ २३ ॥ जो ६ । ८ । १२ त्रिक स्थानोंमें अथवा शत्रुराशि नीचराशिमें यद्वा अस्तंगत बलरहित होते हैं यद्वा मरणावस्थामें प्राप्त होते हैं वे पारिजातादि शुभ फल दायकोंका नाश करते हैं ॥ २४ ॥

उत्तमं तु त्रिवर्गैक्यं चतुर्वर्गे तु गोपुरम् ॥ वर्गपंचकसंयोगे सिंहासनमिहोच्यते ॥ २५ ॥ वर्गद्वयं पारिजातं षण्णां पारावतांशकम् ॥ सप्तमं देवलोकं स्यादष्टमं चामरं भवेत् ॥२६॥ ऐरावतं तु नवमं फलं तेषां पृथक्पृथक् ॥ दशवर्गस्य संयोगे विदुर्वैशेषिकांशकान् ॥ २७ ॥

दशवर्गोंमें दोवाला पारिजातकसंज्ञक, तीन वर्गवाला ग्रह उत्तमांशसंज्ञक, चार वर्गवाला गोपुरसंज्ञक, पांच वाला सिंहासनसंज्ञक, छः पारावतांश, सात वाला देवलोक, आठ वाला अमर, नौ वाला ऐरावतसंज्ञक होता है और दशम स्वांशकीय वैशेषिकांशक संज्ञकसे होता है इनके फल अलग अलग आगे कहेंगे ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥

ऐरावते सार्वभौमः सर्वैश्वर्यसमन्वितः ॥ देवलोके महादानकर्त्ता राजा क्षितीश्वरः ॥ २८ ॥ पारावते माण्डलिकः सर्वशास्त्रविशारदः ॥ सिंहासने भवेद्भूमिपतिः सर्वैः स्तुतो महान् ॥ २९ ॥ गोपुरे धनवान्नित्यं सर्वविद्याविशारदः ॥ उत्तमे सकला संपत् पारिजाते धनान्वितः ॥ ३० ॥ स्वांशे यशस्वी मतिमान् सर्वसौख्यसमन्वितः ॥ ३१ ॥

दशवर्गगत ग्रहोंके फल कहते हैं ऐरावतांशवाला चक्रवर्ती राजा होकर समस्त ऐश्वर्योंसे परिपूर्ण रहता है, देवलोकांशवाला महादान देनेवाला संसारमें राजा होता है ॥ २८ ॥

पारावतांशवाला समस्त शास्त्र जाननेवाला राजा, सिंहासनमें समस्त लोकोंसे स्तुत्य राजा॥२९॥ गोपुरांशवाला धनवान् तथा संपूर्ण विद्या जाननेवाला, उत्तमांशवाला संपूर्ण संपत्तियोंसे युक्त, पारिजातांशवाला धनवान् होता है ॥ ३० ॥ यदि स्वांशमें ग्रह होवे तो यशस्वी, बुद्धिमान् और संपूर्ण सुखयुक्त होता है ॥ ३१ ॥

लग्नं क्रमात्सार्द्धघटीद्वयं स्यान्मेषाद्दिनेशस्थितकोणभानाम् ॥
राशीश्वरात्प्राणपदं क्रमेण घटीचतुर्थांशमुशंति तज्ज्ञाः ॥ ३२ ॥
चापाद्विपर्यैति रविस्तु सार्द्धं घटीद्वयं रात्रिकरोपि तस्मात् ॥
क्रमेण सार्द्धद्वयनाडिकालः कुजो वृषाद्व्यत्ययनाडिमात्रम्॥३३॥
चापाद्बुधो व्यत्ययनाडिमात्रं मीनादधः पंचघटीन्द्रपूज्यः॥क्रमेण
युग्माद्भृगुनन्दनस्तु घटीप्रमाणो दिननाथपुत्रः ॥ ३४ ॥ व्यत्यासमार्गेण घटीप्रमाणो मेषादगुः सार्द्धघटीयुगं स्यात् ॥ मीनाच्छिखी तन्मदगो विलोमाच्छास्त्रांतरे तत्फलमाहुरार्याः ॥३५॥

अब क्षणिक ग्रह कहते हैं-यहां क्षण पदसे ढाई घडी २ । ३० का प्रमाण है लग्न मेषादि क्रमसे घटी तीन३पल तीस३०प्रत्येक होता है जिससे एक आवृत्ति दिनमें दूसरी रात्रीमें होती है और जिस राशिमें सूर्य है उससे नवम राशिस्वामीसे एक घटीके चतुर्थांश १५ पलका क्रमसे प्राणपद होता है ॥ ३२ ॥ धनसे उलटे २ घटी ३० पल सूर्य, ऐसेही धनसे घटी २ । ३५ चंद्रमा, मंगल वृषसे विपरीत घटी, १ पल १० पर्यंत, ॥ ३३ ॥ बुध धनसे विपरीत क्रम करके घटी १ । ०, बृहस्पति मीनसे उलटे पांचघडी पर्यंत शुक्र मिथुनसे क्रम करके १ घटी शनि ॥ ३४ ॥ मेषसे विपरीत क्रम करके १ घटी, राहु मीनसे उलटे क्रम अढाई २ । ३० घटी होता है और केतु राहुसे विलोम सप्तममें होता है। इनके फल शास्त्रांतरोंमें श्रेष्ठ आचार्य्योंने कहे हैं ॥ ३५ ॥

बालाद्यवस्थाः क्रमशो ग्रहाणामोजे समे तद्विपरीतमाहुः॥बालः
कुमारोथ युवा च वृद्धो मृतो लवानामृतुभिः क्रमेण ॥ ३६ ॥
बालाद्यवस्थानुगुणं व्रजंति तत्पाककाले दिननाथमुख्याः ॥३७॥

अवस्था कहतेहैं विषम राशिमें क्रमसे सममें व्युत्क्रमसे प्रत्येक राशिके ६ । ६ अंशकी बाल १ कुमार २ युवा ३ वृद्ध ४ मृत्यु ५ अवस्था होती हैं ॥ ३६ ॥ सूर्यादि ग्रह फल देनेके समय बालादि अवस्थाओंके अनुरूपताको प्राप्त होते हैं ॥ ३७ ॥

मेषाजवस्तं प्रथमं क्रियश्च वृषोक्षगोताबुरिशुक्रभं च ॥ ३८ ॥
बौधं नृयुग्मं जितुमं तृतीयं चान्द्रं कुलीरं तु चतुर्थराशिम् ॥ सिंह-

स्य कंठीरवलेपसंज्ञा पाथोनषष्ठी त्ववला च तन्वी ॥ ३९ ॥ जूको वणिक्सप्तमतौलिसंज्ञः कौर्प्योष्टमं कौजमलेस्तु संज्ञाः ॥ जैवं धनुस्तौक्षिकचापसंज्ञं त्वाकेकरं स्याद्दशमं च चक्रम् ॥ ४० ॥ हृद्रोगकुम्भौ घटराशिसंज्ञे मीनो झषश्चांतिमरिष्फसंज्ञः ॥ ४१ ॥

राशियोंकी संज्ञा कहतेहैं अज, वस्त, प्रथम, क्रिय, मेषकी संज्ञ । वृष, उक्षा, गो, ताबुरि, शुक्रभ, वृषकी ॥ ३८ ॥ बौध, नृयुग्म, जितुम, तृतीय, मिथुनकी । चांद कुलीर चतुर्थ, कर्ककी । कंठीरव, लेप, सिंहकी । पाथोन, षष्ठी, अबला, तन्वी, कन्याकी ॥ ३९ ॥ जूक, वणिक्, सप्तम, तौलि, तुलाकी । कौर्प्य, अष्टम, कौज, अलि, वृश्चिककी । जैव, धनु, तौक्षिक, चाप, धनकी । आकेकर, दशम, चक्र, मकरकी ॥ ४० ॥ हृद्रोग, कुम्भ, घट, कुम्भकी । रिष्फ, मीन, झष, अंतिम, मीनराशिकी संज्ञाये हैं ॥ ४१ ॥

होरा तनुर्मूर्त्युदयं शिरश्च वाग्वित्तकौटुम्बमथाक्षिसंज्ञम् ॥ सहोत्थदुश्चिक्यगलं तृतीयं शौर्यं च कर्णं सुखमंबु बन्धुः ॥ ४२ ॥ रसातलं वै हिबुकं च वेश्म पातालहृद्वाहनमातृसंज्ञाः ॥ बुद्धिप्रभावात्मजमंत्रसंज्ञं विवेकशक्ती उदरप्रदेशः ॥४३ ॥ रोगक्षतारिव्यसनं तु चोरस्थानं भवेद्विघ्नमिहाहुराय्र्याः ॥ चित्तोत्थकामो मदनश्च भर्तृस्थानं कलत्रं दधिसूपसंज्ञम् ॥ ४४ ॥ क्षीरं गुडं मूत्रकृच्छ्रनाम गुह्यं च रंध्रं मरणांतकायुः ॥ धर्मो दया पैत्रिकभाग्यभं तु गुरुस्तपोलाभशुभार्जितानि ॥ ४५ ॥ आज्ञा च मानं दशमं च कर्म तदास्पदं खं धनलाभमायम् ॥ व्ययोंत्यभं रिष्फविनाशसंज्ञं लग्नांत्यखण्डः कथितो मुनींद्रैः ॥ ४६ ॥

भावोंकी संज्ञायें कहतेहैं—लग्नकी संज्ञायें होरा, तनु, मूर्ति, उदय शिर ॥ द्वितीयकी वाक्, वित्त, कुटुंब, अक्षि ॥ तृतीयकी सहोत्थ, दुश्चिक्य, गल ॥ चतुर्थकी शौर्य्य, कर्ण सुख, अंबु, बंधु, रसातल, हिबुक, वेश्म, पाताल, हृत्, वाहन, मातृ ॥ पंचमकी बुद्धि, प्रभाव, आत्मज, मंत्र, विवेक, शक्ति, उदर ॥ छठेकी रोग, क्षत, आरे, व्यसन, चोरस्थान, विघ्न ॥ सप्तमकी चित्तोत्थ, काम, मदन, स्त्रियोंका भर्तृस्थान और कलत्र, दधि, सूप ॥ अष्टमकी क्षीर, गुड, मूत्र, कृच्छ्र, गुह्य, रंध्र, मरण, अंतक, आयु ॥ नवमकी धर्म, दया, पैत्रिक, भाग्य, गुरु, तप, लाभ, शुभ, अर्जित ॥ दशमकी आज्ञा, मान, दशम, कर्म

आस्पद, खं ॥ ग्यारहवेंकी लाभ, आय, ॥ बारहवेंकी व्यय, अंत्य, रिष्फ विनाश और अर्यांत्य खंडभी पूर्वाचार्य मुनींद्रोंनें कहे हैं ॥ ५२ । ४३ । ४४ । ४५ । ४६ ॥

दुःस्थाश्च नाशप्रभवा भवंति षष्ठाष्टरिष्फानुगतास्तथैव ॥ उद्यन्ति पृष्ठेन वृषाजचापकुलीरनका बलिनः सयुग्माः ॥ ४७ ॥ ते रात्रिकालेन्हि बलास्तु शेषाः शीर्षोदया मीनमुदेत्युभाभ्याम् ॥ ४८ ॥

दुष्टस्थानस्थित ग्रह तथा ६ । ८ । १२ भावगत नष्टप्रभव होते हैं ॥ वृष, मेष, धन, कर्क, मकर और मिथुन पृष्ठोदय तथा रात्रिबली होते हैं शेष ५ । ६ । ७ । ८ । ११ १२ दिवाबली और शीर्षोदयी हैं परंतु इनमें मीन राशि उभयतोदयी है ॥ ४७ । ४८ ॥

धूमोर्को विश्वभागश्रुतिभवनयुतो मण्डलाच्छोधितोसौ पातः षड्राशियुक्तः परिधिरथ भसंशोधितश्चापनामा ॥ शैलाशाभागयुक्तं धनुरथ च शिखी पंच ते त्वप्रकाशाः प्रादुर्भावे च तेषां फलमिह कथितं जातकप्रश्नयोः स्यात् ॥ ४९ ॥ इति प्रकाशग्रहाः ॥

सूर्य १३ अंश पर धूम ४ राशि युक्त कर अर्थात् ४ राशि १३ अंश पर धूमसंज्ञक--१२ से तष्ट करके पात ६ राशि जोडनेसे परिधि २७ से शोधन करके चापनामक १०७ वां भाग जोडनेसे धनुष. पांचसे शिखी संज्ञक तत्वप्रकाश होते हैं इन तत्वोंके प्रादुर्भावमें फल जन्म तथा प्रश्नमें होते हैं ॥ ४९ ॥

व्योमास्तपातालविलग्नभानां वदंति नामानि मुनीन्द्रजालाः ॥ तत्कंटकं केंद्रचतुष्टयं च वर्गोत्तमास्तत्स्वनवांशकास्तु ॥ ५० ॥

मुनींद्र १० । ७ । ४ । १ भावोंकी संज्ञा कंटक केन्द्र चतुष्टय कहतेहैं, जो राशि वही नवांशक होनेमें वर्गोत्तम कहाताहै ॥ ५० ॥

जलचरपशुनरकीटा बंधौ माने तनौ मदे चापि ॥ क्रमशो भवंति वीर्या विगतबलास्तत्सप्तमे वापि ॥ ५१ ॥

बल कहतेहैं—जलचर राशि (मकर) उत्तरार्द्ध और ११ । १२ । चतुर्थस्थानमें पशुराशि (१ । २ । ५ मकर पूर्वार्द्ध धनका उत्तरार्द्ध) दशम भावमें नर राशि ३ । ६ । ७ धन पूर्वार्द्ध लग्नभावमें और कीट ४ । ८ सप्तम स्थानमें बली होतेहैं अपने सप्तममें बलहीन होते हैं बीचमें अनुपातसे अंक जानने ॥ ५१ ॥

मेषोक्षनक्रांगनकर्किमीनतुलाधराः स्युर्दिनपात्स्वतुंगाः ॥ अत्युच्चभागैर्नयनागदारमत्यामनासारनरैः क्रमेण ॥ ५२ ॥ सिंहोक्षव-

स्तांगनचापतौलिकुंभा भवंत्युच्चसमानभावाः ॥ मूलत्रिकोणानि भवंति तानि किंचिद्विहीनानि बलानि सूर्यात् ॥ ५३ ॥

उच्चराशि सूर्यकी मेष, चंद्रमाकी वृष, मंगलकी मकर, बुधकी कन्या, बृहस्पतिकी कर्क, शुक्रकी मीन, शनिकी तुला हैं। परम उच्चांशक सूर्यके मेषके १० अंश ०। १०, चंद्रमा १। ३, मंगल ९। २८, बुध ५। १५, बृहस्पति ३। ५, शुक्र ११। २७, शनि ६। २० हैं ॥५२॥ सूर्यका सिंह, चंद्रमाका वृष, मंगलका मेष, बुधका कन्या, बृहस्पतिका धनु, शुक्रका तुला, शनिका कुंभ, उच्चके समान हैं। इनको मूलत्रिकोण कहते हैं बलमें उच्चसे थोड़ेही कम होतेहैं ॥ ५३ ॥

दिवाबला मानुषराशयः स्थू रात्रौ बलाढ्याः पशवश्च कीटाः ॥ संध्याद्वये भ्रातृभवास्पदानां सषष्ठभानां तु चयेति संज्ञा ॥ ५४ ॥

मनुष्यराशि दिवाबली, पशुराशि रात्रिबली और कीटराशि दोनों संध्यासमयोंमें बलवान् होतीहैं और ३। ११। १०। ६ भावोंकी चय (उपचय) संज्ञा है ॥ ५४ ॥

रक्तः श्वेतः श्यामकांतिश्च रक्तो धूम्रश्चित्रः कृष्णकांतिः सुवर्णः ॥ स्वर्णाभः स्यात्कर्बुरो बभ्रुवर्णः स्वच्छो वर्णो वर्णितो बुद्धिमद्भिः ५५॥

राशियोंके रंग कहते हैं-मेष रक्त, वृष श्वेत, मिथुन श्याम (हरित), कर्क रक्त, सिंह धूम्र, कन्या विचित्र, तुला कृष्ण, वृश्चिक सुवर्णरंग, धन पीत, मकर कर्बुर, कुंभ बिडाल सदृश, मीन श्वेतवर्ण बुद्धिमानोंने कहेहैं ॥ ५५ ॥

वेशिस्थानं सूर्ययुक्ताद्द्वितीयं चक्रार्द्धेस्मिन्मानमाहुर्मुनींद्राः ॥ वेदघ्नं स्याद्बाणसंख्याधिकं तु वैलोम्याद्वा जूकराशेः क्रमेण ॥५६॥

जिस स्थानमें सूर्य है उसके दूसरे स्थानकी संज्ञा वेशिस्थान है. बारह राशियोंका चक्र है, इसके पूर्वार्द्ध परार्द्ध दो भाग हैं. मेषसे कन्यापर्यंत पूर्वार्द्ध, तुलासे मीनपर्यंत उत्तरार्द्ध. अथवा विलोम गणनासे भी तुलादि मेषादि मान मुनीन्द्र कहते हैं, अथवा लग्नसे छठे ६ पर्यंत, ७ सप्तमसे १२ पर्यंत, चक्रार्द्ध पूर्व पर हैं अथवा ४। ४ करके जानना जैसे ४ पर्यंत, ४से ७ तक, ७ से १० तक, १० से १ तक चतुर्गुण हुये. पांचसे विलोम जानना १२ से ४ और ४ से १० एवं लग्नसे ७ सातसे लग्नचक्रार्द्ध विचारमें काम आतेहैं ॥ ५६ ॥

दिनेशचंद्रौ नरपालमुख्यौ सेना कुजः सोमसुतः कुमारः ॥ शुक्रेज्यपूज्यौ सचिवौ शनिश्च प्रेष्यस्तु तद्वृत्तिमुपैति जातः ॥ ५७ ॥

सूर्य चंद्रमा राजा, मंगल सेनापति, बुध युवराज, शुक्र बृहस्पति मंत्री और शनि प्रेष्य, (प्यादा) है जिसका जो ग्रह बलवान् वा कारक है उसको उसीके अनुरूप आजीवन होता है ॥ ५७ ॥

आत्मा रविः शीतकरो मनस्तु सत्त्वं कुजो भाषणमब्जसूनुः ॥
वाचांपतिर्ज्ञानसुखे मदश्च शुक्रो भवेदर्कसुतस्तु दुःखम् ॥ ५८ ॥

सूय शरीर, चंद्रमा मन, बल मंगल, बुध वाणी, गुरु ज्ञान एवं सुख, शुक्र कामदेव, शनि दुःख, ऐसा ग्रहमय शरीर है ॥ ५८ ॥

सूर्यो हेलिर्भानुमान्दीप्तरश्मिश्चण्डांशुः स्याद्भास्करोहस्करश्च ॥ अब्जः सोमश्चंद्रमाः शीतरश्मिः शीतांशुः स्याद् ग्लौर्मृगांकः कलेशः ॥५९॥आरो वक्रश्चावनेयः कुजः स्याद्भौमः क्रूरो लोहितांगोथ पापी ॥ विज्ज्ञः सौम्यो बोधनश्चंद्रपुत्रश्चांद्रिः शांतः श्यामगात्रोतिदीर्घः ॥ ६० ॥ जीवोंगिरा देवगुरुः प्रशांतो वाचांपतीज्यत्रि दिवेशवंद्याः ॥ भृगूशनोभार्गवसूनवोच्छकाणौः कविर्दैत्यगुरुः सितश्च ॥ ६१ ॥ छायात्मजः पंगुयमार्कपुत्राः कोणोसितः सौरिशनी च नीलः ॥ क्रूरः कृशांगः कपिलाक्षदीर्घौ तमोसुरश्चेत्यगुसैंहिकेयौ ॥ ६२ ॥ राहुस्तु स्वर्भानुविधुन्तुदौ स्यात्केतुः शिखी स्याद्ध्वजनामधेयः ॥ शनेः सुतः स्याद्गुलिकोथ मांदिर्यमात्मजः प्राणहरोतिपापी ॥६३॥ प्राणस्त्वसुः प्राणपदस्य नाम पर्यायमन्यत्प्रवदंति तज्ज्ञाः ॥ ६४ ॥

ग्रहोंके पर्याय नाम कहते हैं-सूर्य, हेलि, भानुमान्, दीप्तरश्मि, चंडांशु, भास्कर, अहस्कर, ये सूर्यके नाम हैं । अब सोम, चंद्रमा, शीतरश्मि, शीतांशु, ग्लौ, मृगांक, कलेश, चंद्रमाके ॥ ५९ ॥ आर, वक्र, आवनेय, कुज, भौम, क्रूर, लोहितांग, पापी, मंगलके । विव, ज्ञ, सौम्य, बोधन, चंद्रपुत्र, चांद्रि, शांत, श्यामगात्र, अतिदीर्घ, बुधके ॥ ६० ॥ जीव, अंगिरा, देवगुरु, मशांत, वाचांपति, इज्य, त्रिदिवेशवंद्य, बृहस्पतिके । भृगु, उशना, भार्गवसुनु, अच्छ, काण, कवि, दैत्यगुरु, सित शुक्रके ॥ ६१ ॥ छायात्मज, पंगु, यम, अर्कपुत्र, कोण, असित, सौरि, शनि, नील, क्रूर, कृशांग, कपिलाक्ष, दीर्घ, शनिके । तम, असुर, अगु, सैंहिकेय, ॥ ६२ ॥ राहु, स्वर्भानु, विधुंतुद राहुके । केतु, शिखी, ध्वज, और शनिसुत, गुलिक, मांदि, यमात्मज, माणहर, अतिपापी ये भी केतुके नाम हैं, गुण शनिराहु केतुके तुल्यहीहैं ॥ ६२ ॥ माण, असु माणपदके नाम हैं, उक्त ग्रहोंके पर्याय नाम और भी ग्रंथांतरोंमें ज्योतिषी कहते हैं ॥ ६४ ॥

भानुर्युगात्म्रांकितदेहरक्तश्यामान्वितः पिंगलनेत्रकांतिः ॥ पित्ता-
त्मकोयं समगात्रयष्टिः प्रतापयुक् सत्त्वगुणोल्परोमा ॥ ६५ ॥
संचारयुक्संकुचितार्थवाक्यः स्वल्पप्रदो दैविकबुद्धियुक्तः ॥ चंद्रः
सितांगः समगात्रयष्टिर्वाग्ग्मी परिध्यंगविवेकयुक्तः ॥ ६६ ॥
क्वाचित्कृशः शीतलवाक्ययुक्तः सत्त्वाश्रयो वातकफानिलात्मा ॥
कोपाग्निनेत्रः सितरक्तगात्रः पित्तात्मकश्चंचलबुद्धियुक्तः ॥ ६७ ॥
कृशांगयुक्तामसबुद्धियुक्तो भौमः प्रतापी रतिकेलिलोलः ॥ दूर्वाद-
लाभः शशिजोतिविद्वान् रजोगुणः सूनृतवाक्यजालः ॥ ६८ ॥
हास्यप्रियः पित्तकफानिलात्मा सद्यःप्रतापी ननु पुंश्चलश्च ॥
बृहस्पतिस्तुंदिलगात्रयष्टिः कफात्मकः श्रेष्ठमतिः सुविद्वान् ॥
॥ ६९ ॥ सत्त्वाश्रयः सर्वगुणाभिरामः पिंगाक्षमूर्द्धन्यकचाभि-
रामः ॥ सुलोचनश्चास्फुजिदात्तकामः सुखी बली सुंदरकांति-
पूर्णः ॥ ७० ॥ आनीलवर्णांकितरोमयुक्तो रजोगुणः सर्वगुणाभि-
रामः ॥ जाल्मस्तु मंदः कृशदीर्घगात्रः पिंगेक्षणः क्रूरकचाभिरामः ॥
॥ ७१ ॥ स्थूलद्विजस्तामसबुद्धियुक्तो वातात्मको वाक्कठिन
स्तु निंद्यः ॥ बलेन निश्चित्य वदेद्ग्रहाणां तत्प्राश्निके जन्मनि
तद्गुणांस्तु ॥ ७२ ॥

अब ग्रहोंके वर्णाकारादि कहते हैं ।

जो ग्रह बलवान् है उसके अनुरूप गुण आकारादि जन्म तथा प्रश्नमें कहे जाते हैं।सूर्य-चतुरस्त्रशरीर, रक्तश्याम रंग, नेत्रकांति पीली, पित्तप्रकृति, समशरीर, प्रतापी, सत्वगुणप्रधान, अल्पकेश ॥ ६५ ॥ फिरनेवाला, वाक्यका अर्थ संकोचयुक्त कहे, थोडा देनेवाला और दैवी बुद्धि होवै । चंद्रमा--श्वेतरंग, समशरीर, बोलनेमें चतुर, गोलाकार अंग, विवेकी, ॥ ६६ ॥ कहीं कृश कहीं स्थूल, ठंडे वाक्य बोले, सत्वगुणी, कफवायुप्रकृति, । मंगल-कोपसे लालनेत्र, श्वेतरक्त (पाटल) रंग शरीर, पित्तप्रकृति, चंचल बुद्धिसे युक्त ॥ ६७ ॥ कृश अंग, तमो-गुणी बुद्धि, प्रतापवान्, और कामके लिये अतिचंचल, । बुध-दूर्वारंग समान, श्यामरंग, अतिविद्वान्, रजोगुणी, सत्यवादी ॥ ६८ ॥ हास्यप्रिय, पित्त कफवायु प्रकृति, तत्कालप्रतापवाला और व्यभिचारी । बृहस्पति-बढापेटवाला, कफप्रकृति, श्रेष्ठबुद्धि; अच्छा विद्वान्, ॥ ६९ ॥

सत्त्वगुणी, संपूर्ण गुणोंका जाननेवाला, शिरके केश नेत्र पीले, प्रसन्न । शुक्र-सुहावने नेत्र पूर्णकाम, सुखी, बलवान्, सुंदरकांति, ॥ ७० ॥ समृद्धिसे पूर्ण नीलेरंगसे चिह्नित, बहुत रोम, रजोगुणी संपूर्ण गुणजाननेवाला । शनि—दुष्टस्वभाव, झूंठ फरेबवाला, कृश, लंबा शरीर, पीले नेत्र, क्रूर स्वभाव, केशशृंगारी ॥ ७१ ॥ मोठे दांत, तमोगुणप्रधान वातप्रकृति, कठोरवाणी निंदाके योग्य । ग्रहोंके बलका निश्चय करके जो बलाधिक हो उसके गुण, प्रश्न तथा जन्ममें कहने ॥ ७२ ॥

विप्रौ भवेतां गुरुदानवेज्यौ दिनेशभौमौ नरपालमुख्यौ ॥ सोमश्च विट्वैश्यकुलप्रसूतो दिनेशपुत्रस्तु चतुर्थवर्णः ॥ ७३ ॥ चाण्डालजातिस्त्वथ सैंहिकेयः केतुश्च जात्यंतरमंत्र मांदिः ॥ ७४ ॥

ग्रहोंके वर्ण कहते हैं बृहस्पति शुक्र ब्राह्मण, सूर्य मंगल राजा, चंद्रमा बुध वैश्य, शनि शूद्रजाति, और राहु चांडाल जाति, मान्दि (केतु) इन जातियोंसे अन्य है ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

रक्तः श्वेतोतिरक्तो हरितकनकरुक्चित्रनीलास्तु नाथा वह्न्यंभस्त्वग्निजातो हरिसुरगणराडिन्द्रभार्याब्जजाताः ॥ भानुः काव्यो धराभूरगुशनिशशिनः सोमपुत्रामरेज्या ज्ञेयास्त्विन्द्रादिनाथाः क्रियवृषमिथुना राशयस्ते सचान्द्राः ॥ ७५ ॥

सूर्य रक्तवर्ण, चंद्रमा श्वेत, मंगल रक्त, बुध हरित, बृहस्पति पीत, शुक्र चित्र, शनि नीलवर्ण है । सूर्यका देवता अग्नि, चंद्रमाका जल, मंगलका अग्निज, बुधका विष्णु, बृहस्पतिका इन्द्र, शुक्रकी इद्राणी, शनिका स्वामी ब्रह्मा है । पूर्वादि दिशाओंके स्वामी क्रमसे पू० सूर्य अ० शुक्र, द० मंगल, नै० राहु, प० शनि, वा० चंद्रमा, उ० बुध, ई० बृहस्पति हैं । मेष वृष मिथुन कर्क क्रमसे पूर्वादि ४ दिशाओंमे रहती हैं पुनः सिंहादि पुनः धन आदि भी ४ । ४ क्रमसे दिशानिवासी होती है ॥ ७५ ॥

क्षीणेंदुभूसूनुदिनेशमंदाः पापा बुधस्तत्सहितस्तु पापः ॥ नपुंसकौ सौम्यदिनेशपुत्रौ शशांकशुक्रौ युवती च शेषाः ॥ ७६ ॥ नरग्रहा भानुकुजामरेज्याः सूतौ बलात्तत्प्रवदंति तज्ज्ञाः ॥ भौमस्य मज्जापि वसा गुरोस्तु शुक्रं भृगोस्त्वक्छशिनंदनस्य ॥ ७७ ॥ चंद्रस्य रक्तं दिनपस्य चास्थि स्नायुः शनेर्धातुवशादुपाधिः ॥ तद्धातुकोपान्मरणं प्रयाति रंध्रस्थितानामिह खेचराणाम् ॥ ७८ ॥

क्षीण चंद्रमा, मंगल, सूर्य, शनि और पापयुक्त बुध, पापग्रह हैं, अन्य ग्रह तथा निष्पाप बुध अक्षीण चन्द्र शुभग्रह है। बुध शनि नपुंसक चंद्रमा शुक्र स्त्रीग्रह ॥ ७६ ॥ शेष सूर्य मंगल बृहस्पति पुरुष ग्रह हैं जन्ममें बलवान ग्रहके तुल्य फल ज्योतिषज्ञ कहते हैं । भौमका धातु चर्बी, बृहस्पतिकाभी चर्बी, शुक्रका वीर्य, बुधका त्वचा ॥ ७७ ॥ चंद्रमाका रुधिर, सूर्यका हड्डी, शनिका नशी, है, रोगादि उपाधि ग्रह अपने धातुके अनुसार करते हैं जो ग्रह अष्टम है वा मृत्युकारक है उसके धातुके कोपसे मरण होता है ॥ ७८ ॥

देवस्थानं भास्करस्यांबुवासं चंद्रस्याग्निस्थानमंगारकस्य ॥
क्रीडास्थानं सोमपुत्रस्य कोशस्थानं जीवस्यैवमाहुर्भृगोस्तु ॥
सुप्तिस्थानं भानुजस्योत्करं तु सर्पस्थानं सैंहिकेयस्य चैवम्
॥७९॥जीर्णं शनेर्वासरनायकस्य स्थूलं गुरोर्मध्यमकं कवेश्च॥८०॥
काठिन्यमब्जस्य तु नूतनं वित् छिन्नं कुजस्याग्निहतं च वस्त्रम् ॥
कंथा फणींद्रस्य तु चित्ररूपा केतोर्महाछिद्रयुता विशेषात्॥ ८१ ॥

सूर्यादियोंके स्थान तथा वस्त्र कहते हैं, सूर्यका देवस्थान, चंद्रमाका जलस्थान, मंगलका अग्निस्थान, बुधका विहारस्थान, बृहस्पतिका खजाना वा भण्डार, शुक्रका शयनस्थान, शनिका पुंज, पृथ्वीका चपटीला आदि, राहुका सर्पस्थान, (बांबी आदि) केतुकाभी वही स्थान है शनिका घर वा वस्त्र जीर्ण, सूर्यका मोटा, बृहस्पति शुक्रका मध्यम, चंद्रमाका कठोर, बुधका नवीन, मंगलका टूटा फटा और अग्निदग्ध, राहुकी गुदडी रंगवर्णकी और केतुका बडेबडे छिद्रोंसे संयुक्त होता है ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥

ताम्रं दिनेशस्य निशाकरस्य मणिर्हिरण्यं तु धरासुतस्य ॥ शुक्ति-
विंदो देवगुरोस्तु रौप्यं मुक्ता भृगोरायसमर्कसूनोः ॥ ८२ ॥
राहोस्तु शीशं शिखिनस्तु नैल्यं धरामणिस्तत्कथयंति तज्ज्ञाः॥
पीतांबरं देवगुरोर्भृगोस्तु क्षौमांबरं भास्करमिन्द्रगोपम् ॥ ८३ ॥
शुक्लं क्षामं रात्रिनाथस्य चांद्रेः श्यामं क्षामं रक्तचित्रं कुजस्य॥
वस्त्रं चित्रं पट्टवस्त्रं शनेस्तु नीलं राहोर्जीर्णचित्रान्वितं च ८४॥
रूपान्वितं तद्वसनं च केतोर्बलान्वितानां तु वदेद्ग्रहाणाम्॥ ८५ ॥

सूर्यका धातु ताम्र, चंद्रमाका मणि(चुन्नी), मंगलका सुवण, बुधका शीप, बृहस्पतिका चांदी, शुक्रका मोती, शनिका लोह ॥ ८२ ॥ राहुका शीशा, केतुका नीलम ये पार्थिव धातु ग्रहोंके ज्योतिषी कहते हैं । बृहसतिका पीतांबर, शुक्रका पशमीना, सूर्यका बीरबहूटीके रंगका,

रेसम ॥ ८३ ॥ चंद्रमाका श्वेत पसमीना, बुधका हरित ऊनी, मंगलका रक्तवर्ण विचित्र, शनिका विचित्र रेशमी वस्त्र, राहुका नीला रंग और चित्र विचित्रभी ॥ ८४॥ केतुका विचित्र रूप वस्त्र है। बलवान् ग्रहके उक्त धातु वस्त्रादि जन्मप्रश्नादिमें कहना ॥ ८५ ॥

भृगोर्वसंतः क्षितिसूनुभान्वोर्ग्रीष्मः शशांकस्य ऋतुः प्रवर्षः ॥ विदः शरद्देवगुरोस्तु हैम्नो ऋतुः शनेः स्याच्छिशिरस्तु-कालः ॥ ८६ ॥

ग्रहोंकी ऋतुकी शुक्रकी वसंत,मंगलसूर्यकी ग्रीष्म,चंद्रमाकी वर्षा, बुधकी शरद्, बृहस्पतिकी हेमंत, शनिकी शिशिर ऋतु है ॥ ८६ ॥

द्रेष्काणपैस्तद्गतवस्तु वाच्यं प्रश्ने प्रसूतावपि नष्टसंज्ञे ॥ भानोः कटुर्भूमिसुतस्य तिक्तं सोमस्य तावल्लवणं विदस्तु ॥ ८७ ॥ मिश्रीकृतं वस्तु सुरेज्यभृग्वोर्माधुर्यमम्लं च शनेः कषायः॥ ऋतु-त्रयं वासरनायकस्य क्षणं शशांकस्य दिनं कुजस्य॥ ८८॥ विदो ऋतुर्देवगुरोस्तु मासः पक्षो भृगोर्वत्सरमर्कसूनोः॥ अष्टौ तु मासा-स्तुहिनांशुशत्रोः केतोस्तु मासत्रयमेव कालः॥ ८९ ॥

प्रश्न जन्म तथा नष्ट वस्तु विचारमें द्रेष्काणेशके अनुसार वस्तु बतलानी, अब ग्रहोंके रस कहते हैं सूर्यका कडुआ, मंगलका तीता, चंद्रमाका लवण, बुधका मिश्रित, बृहस्पतिका मीठा शुक्रका खट्टा, शनिका क्वाथ है फलपाकमें समय संख्या है कि सूर्यके छः महीना चंद्रमाका मुहूर्त मंगलका दिन ॥८७॥८८॥ बुधके दो महीना, बृहस्पतिका एक मास, शुक्रका एक पक्ष, शनिका एक वर्ष, राहुका आठ महीना, केतुका तीन महीना, पाककाल है ॥८९॥

धातुग्रहा राहुशनीन्दुभौमा मूलग्रहौ शुक्रदिनाधिनाथौ॥जीवग्रहौ जीवशशांकसूनू मेषादि दस्रादि यथाक्रमेण ॥ ९० ॥

राहु शनि चंद्रमा मंगल धातुवस्तुके, सूर्य शुक्र मूलवस्तुके और बृहस्पति बुध जीववस्तुके स्वामी हैं और मेषादिराशिक्रमसे धातुमूल जीवसंज्ञक हैं ऐसेही अश्विन्यादि नक्षत्र भी क्रमसे धातुमूल और जीवसंज्ञक हैं ॥ ९० ॥

अथोर्द्ध्वदृष्टी दिननाथभौमौ दृष्टिः कटाक्षेण कवींदुसून्वोः॥शशां-कगुर्वोः समभागदृष्टिस्त्वधोक्षिपातस्त्वहिनाथशन्योः ॥ ९१ ॥

सूर्य मंगल ऊर्ध्वदृष्टि, शुक्र बुध तिर्छी दृष्टि, चंद्रमा बृहस्पतिसम दृष्टिवाले हैं, राहु शनिकी अधोदृष्टि है ॥ ९१ ॥

पश्यत्यसौ भानुसुतस्तृतीयं मानं च पूर्णं चतुरस्त्रमारः ॥ जीव-
स्त्रिकोणं मदनं च सर्वे पश्यंति दृष्ट्या चरणप्रवृद्ध्या ॥ ९२ ॥

दृष्टि कहते हैं-शनि ३ । १० भावमें पूर्ण देखता है मंगल ४ । ८ में बृहस्पति ५ । ९ में अन्यग्रह सप्तम भावमें पूर्ण देखते हैं पूर्णदृष्टिके स्थानसे दाहिने वायें क्रमसे चरणदृष्टि होती है ॥ ९२ ॥

भानोस्तु मित्राणि कुजेंदुजीवाः समो बुधः शुक्रशनी विपक्षौ ॥
इष्टौ शशांकस्य दिनेशसौम्यौ शेषाः समा भूमिसुतस्य मित्रम् ॥
॥ ९३ ॥ रवीन्दुजीवाश्च बुधश्च शत्रुः समौ दिनेशात्मजदानवे-
ज्यौ ॥ सौम्यस्य मित्रे दिननाथशुक्रौ शेषाः समा रात्रिकरः
सपत्नः ॥ ९४ ॥ शुक्रेंदुजौ देवगुरोः सपत्नौ मित्राणि सर्वे रवि-
जस्तु मध्यः ॥ शनीन्दुजाविष्टकरौ भृगोस्तु शेषाः सपत्नाश्च
समौ कुजेज्यौ ॥ ९५ ॥ सौरस्य मित्रे भृगुपुत्रसौम्यौ समो गुरु-
स्ते निखिलाः सपत्नाः ॥ राहोस्तु मित्राणि कवीज्यमंदाः केतो-
स्तथैवात्र वदंति तज्ज्ञाः ॥ ९६ ॥

मित्रामित्र कहते हैं सूर्यके मंगल चंद्रमा बृहस्पति मित्र, बुध सम, शुक्र शनि शत्रु हैं। चंद्रमाके सूर्य बुध मित्र, अन्यसम हैं शत्रुकोई नहीं। मंगलके सूर्य चंद्रमा बृहस्पति मित्र, बुध शत्रु, शनि शुक्र सम हैं । बुधके सूर्य शुक्र मित्र, चंद्रमा शत्रु, अन्य सम, हैं। बृहस्पतिके शुक्र बुध शत्रु, शनि सम, और सब मित्र हैं । शुक्रके शनि बुध मित्र, मंगल बृहस्पति सम, अन्य शत्रु हैं। शनिके शुक्र बुध मित्र, बृहस्पति सम, अन्य शत्रु हैं । राहुकेतुके शुक्र बृहस्पति शनि मित्र, अन्य शत्रु, ज्योतिषज्ञ कहते हैं ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥॥ ९६ ॥

भवंति तात्कालिकमित्रभूताः सर्वे च वाक्सोदरबंधयुक्ताः ॥
स्वात्स्वात्क्रमाद्व्युत्क्रमतस्तथैवमन्यास्थितास्ततसमयारिभूताः ॥
॥ ९७ ॥ तत्कालमित्रं तु निसर्गमित्रं द्वयं भवेत्तत्त्वधिमित्रसं-
ज्ञम् ॥ तथैव शत्रोरधिशत्रुसंज्ञमेकत्र शत्रुः समतामुपैति ॥ ९८ ॥

तत्कालमें अपने स्थानसे पंचम तृतीय चतुर्थ स्थानगत ग्रह मित्र, क्रम एवं व्युत्क्रमसे होतेहैं अन्य राशियोंमें तात्कालिक शत्रु होते हैं ॥ ९७ ॥ एक तत्काल मैत्री दूसरी नैसर्गिक मैत्री (पूर्वोक्त) हैं। दो प्रकार मित्र होनेमें अधिमित्र, दो प्रकार शत्रु होनेमें अधिशत्रु होता है । जो एक प्रकार मित्र दूसरेप्रकार शत्रु है वह सम गिनाजाता है ॥ ९८ ॥

स्वोच्चे सुहृद्भे स्वनवांशकेपि स्वक्षें हकाणे द्विरसांशकेपि ॥
कलांशकाद्येंशयुतेपि चैवमुपाति तत्स्थानबलं ग्रहेन्द्रः ॥ ९९ ॥
लग्ने बुधेज्यौ बलिनौ तु पूर्वे वीय यमे तद्दशमेर्कभौमौ॥कामेर्क-
सूनुर्बलवाञ्जलेशे बंधौ निशानाथकवी कुबेरे ॥ १०० ॥
तत्सप्तमे दिग्बलशून्यमाहुस्तदंतरे चेत्त्वनुपात एव ॥ स्वमास-
होरादिनवत्सरेषु वीर्यान्विता भानुमुखा ग्रहेंद्राः ॥ १०१ ॥

षड्बल कहते हैं-अपने उच्चराशि मित्रराशि, अपने नवांशक अपने राशि अपने द्रेष्काण अपने द्वादशांश षोडशांश आदिमें ग्रह स्थानबली होता है इनसे विपरीत नीच आदिमें बल-शून्य बीचमें अनुपातसे स्थानबल जानना ॥ ९९ ॥ बुध बृहस्पति लग्नमें तथा पूर्वमें सूर्य मंगल दक्षिण दशममें, शनि सप्तम पश्चिम और चंद्रमा शुक्र चतुर्थ उत्तरमें दिग्बली होतेहैं अपनेसे सप्तममें शून्य बीचमें अनुपात करना अपने महीना अपनी कालहोरा स्वदिन अपने वर्षमें ग्रहकालबली होते हैं । १०० ॥ १०१ ॥

रात्रौ बलाढ्या शनिचंद्रभौमास्त्रयो ग्रहाश्चाह्नि रवीज्यशुक्राः ॥
सदा बली वित्सितकृष्णपक्षे सौम्यास्तदन्ये बलिनः क्रमेण ॥
॥ १०२ ॥ शुभेक्षिताः पूर्णबलान्वितास्तु दृष्टेर्बलं पापखगैर-
दृष्टः ॥ सौम्यायने त्वतिबली दिवसाधिनाथश्चन्द्रस्तदन्यसमये
बलपूर्णयुक्तः ॥ १०३ ॥ मंदारसौम्यगुरुशुक्रशशांकसूर्या नैस-
र्गिकाख्यबलिनः खचराः क्रमेण ॥ १०४ ॥ वक्रान्विताः क्षिति-
सुतप्रमुखाः समस्ता युद्धे जयी जलपादिग्गतकांतियुक्तः॥१०५॥

शनि चन्द्रमा मंगल रात्रिमें, सूर्य बृहस्पति शुक्र दिनमें और बुध सर्वदा काल बली होता है शुक्लपक्षमें शुभग्रह कृष्णपक्षमें पापग्रह बली होते हैं॥१०२॥शुभग्रहोंसे दृष्ट ग्रह जो पापदृष्ट न हों तो पूर्णबली होते हैं सूर्य उत्तरायणमें चंद्रमा दक्षिणायनमें ॥ १०३ ॥ भौमादि ग्रह वक्रहोनेमें अथवा ग्रहयुद्धमें विजयी जिसकी कीर्ति तेज हो और पश्चिम शरहो, बृहच्चेष्टा बली होता ह ॥ १०४ ॥ शनि, मंगल, बृहस्पति, शुक्र, चंद्रमा, सूर्य, इस क्रमसे एकसे अधिक दूसरा नैसर्गिक बली होता है ॥ १०५ ॥

लग्नस्य वीर्यमधिपस्य बलं तु सर्वं मुख्यं वदंति खलु षड्विधवी-
र्यमेवम् ॥ १०६ ॥ लग्नं नृभं चेद्बलमत्र रूपमाब्जं चतुष्पाद्भ-

मथार्धसंज्ञम् ॥ चेत्कीटलग्नं किमपीह नास्ति स्फुटं विलग्नस्य बलं तदाहुः ॥ १०७ ॥

इसप्रकार षड्विध बल हैं इनमें लग्न और लग्नेशका बल मुख्य कहते हैं ॥ १०६ ॥ लग्नबलके लिये कहते हैं जो लग्न नर राशि हो तो बल १ जलराशि अथवा चतुष्पदराशियोंमें आधा ० । ३० यदि कीटराशि लग्न हो तो शून्य ० । ० अर्थात् कुछभी नहीं इसप्रकार लग्नका बल स्फुट कहते हैं ॥ १०७ ॥

सार्द्धानि षट् तीक्ष्णकरो बलीयाँश्चन्द्रस्य षट्पंच वसुं धराजः॥ सप्तेंदुसूनोरपि षट् गुरोश्च सार्द्धानि पंचाथ सितो बलीयान् ॥ १०८ ॥ मंदस्तु पंचैव च षड्बलानां संयोग एवापरथान्यथास्युः ॥ रूपत्रयं बलमुशंत्यथ पादहीनं स्थानं तु दिग्बलमथांघ्रिविहीनरूपम् ॥ १०९ ॥ ऋत्वंशहीनबलमत्र तु चेष्टिताख्यमष्टांशहीनयुगमेव तु कालवीर्यम् ॥ पूर्णाबला रविशशांकसुतामरेज्याश्चार्धं बलं त्वयनजं हि पृथग्विभागे ॥ ११० ॥

षड्बलमें सूर्य बलवान् हो तो छः ६ । ३० चंद्रमा ६, मंगल ५, बुध ७, बृहस्पति ६ शुक्र ५।३०॥ १०८॥ शनि ५, बल षड्बलमें पाता है । पूर्ण बल न होनेमें अनुपातसे घटता है। स्थान बलमें २ । ४५ दिग्बलमें पादहीन एक १।४५॥ १०९॥ चेष्टाबलमें षडंशहीन ०।५० कालबलमें अष्टांशहीन दो २।३० पृथक्विभाग अयनबलमें सूर्य चंद्रपुत्र बृहस्पति आधा ० ।३० बल पाते हैं ॥ ११० ॥

रसांशहीनं दिशि वीर्यमाहुः स्थाने तु पादाधिकयुग्मरूपम् ॥ कालं बलं त्र्यंशविहीनयुग्ममर्द्धं भवेच्चेष्टितवीर्यमेव ॥ १११ ॥ त्र्यंशोनमेकं त्वयनं बलं स्याच्छीतांशुदेवेंद्रसपत्नगुर्वोः ॥ चेष्टाबलं त्र्यंशविहीनमेकं साष्टांशरूपं समये बलं स्यात् ॥ ११२ ॥ दिश्यर्द्धरूपं बलमायनं च त्र्यंशं भवेत्स्थानिकमर्द्धयुग्मम् ॥ दिनेशपुत्रस्य वसुंधरायाः सूनोः क्रमाद्वीर्यमुदाहरंति ॥ ११३ ॥

दिग्बल षष्ठांशहीन ० । ५० । कहते हैं स्थानमें सवादो २ । १५ कालबलमें तृतीयांश कम दो १ । ४० चेष्टाबलमे आधा ० । ३० ॥ १११ ॥ अयनबल तृतीयांशहीन एक ० । ४० चन्द्रमा बृहस्पति शुक्रका चेष्टाबल त्र्यंशहीन एक ० । ४०, समय बलमें अष्टांश

सहित एक १।७।३०॥ ११२॥ अयनबल डेढ़ १। ३०, स्थानबल एकका तृतीयांश ०। २०, स्थानबल शनि मंगल कालक्रमसे २। ३० कहते हैं ॥ ११३॥

आरोहवीर्याः प्रभवंति भावसमानपर्यंतमतश्च्युताः स्युः॥ स्वोच्चे सुहृत्क्षेत्रगते ग्रहेंद्रे षड्भिर्बलैर्मुख्यबलान्वितोपि ॥ ११४॥ संधौ स्थितः सन्नफलः प्रदिष्टश्चित्यं विशेषेण दशाविपाके ॥ प्राणत्रिकोणं प्रवदंति लग्नं तदेव मान्द्यान्वितराशिकोणे ॥ ११५ ॥ मान्द्यंशकात्कोणगतं विलग्नं तदंशकामस्थितराशिकोणे॥ शशांकसंयुक्तभकोणराशौ तदंशकात्तन्मदकोणभे वा ॥ ११६ ॥ प्रश्नेपि तज्जन्मसमानकाले लग्नस्य निश्चायकमत्र तज्ज्ञाः॥ तयोर्बलेनापि विकल्पमाहुर्लग्नाब्जयोरित्थमुदाहरन्ति ॥ ११७ ॥

भाव जितने अंशपर है उतने अंश पर्यंत जो ग्रह है वह आरोही, उससे ऊपर अवरोही होता है। संधिगत ग्रह अपने उच्च मित्रराशि स्वक्षेत्रगत हो षड्बलमें मुख्यबलयुक्त भी हो तौभी दशामें पूर्णफल नहीं देसकता है प्राणपदसे त्रिकोण लग्न कहतेहैं मांद्य सहित उसके ५। ९ राशि कोणसंज्ञक होती हैं मांद्य और गुलिक आगे अध्यायके अवसानमें सोदाहरण कहेंगे। मांद्यंशक कोणगत राशिके अंशसे सप्तमगत राशिके कोणको विकल्पसे कहते हैं। चंद्रराशिसे, कोणराशिमें अथवा उस अंशके सप्तमस्थित राशिके कोणमें लग्न कहते हैं। प्रश्नजन्म समयमें इसप्रकार प्राणपद निश्चय करना ज्योतिषज्ञ कहतेहैं. और यहभी कहतेहैं कि लग्न बली हो तो लग्नसे, चन्द्रमा विशेष बली हो तो चंद्रमासे जानना इसप्रकार लग्नचंद्रमें विकल्प है। प्राणपदका खुलासा ग्रंथान्तरसे कहता हूं,—" घटी चतुर्गुणा कार्या तिथ्याप्तैश्च पलैर्युता॥ दिवाकरेणापहृतं शेषं प्राणपदं स्मृतम् ॥ १ ॥ शेषात्पलांताद्द्विगुणीविधाय राश्यंशसूर्यर्क्षानियोजिताय ॥ तत्रापि तद्राशिचरान् क्रमेण लग्नांशप्राणांशपदैक्यता स्यात् ॥२॥ पुनः॥ कोणात्क्रमांतरादीनां तथा प्राणपदादपि ॥ स्वेष्टकालं पलीकृत्य तिथ्याप्तं भादिकं च यत् ॥ ३ ॥ चरागद्विभगे भागे भानौ युञ्ज्नवमे सुते ॥ स्फुटं प्राणपदं तस्मात्पूर्ववच्छोधयेत्तनुम् ॥ ४ ॥ विना प्राणपदाच्छुद्धो गुलिकाद्वा निशाकराद् ॥ तदशुद्धं विजानीयात्स्थावराणां तदैव हि ॥ ५ ॥ द्वयोर्हीनबलेप्येवं गुलिकात्परिचितयेत् ॥ तस्मात्तत्सप्तमस्थानात्तदंशाच्च कलत्रतः ॥ ६ ॥ तत्रैव तात्रिकोणे वा जन्मलग्नं विनिर्दिशेत् ॥ मनुष्याणां पशूनां च द्वितीये दशमे रिपौ ॥ ७ ॥ तृतीये मदने लाभे विहंगानां विनिर्दिशेत् ॥ कीटसर्पजलस्थानां शेषस्थानेषु संस्थितः ॥ ८ ॥ अर्थात् इष्ट घटी ६। १७ चौगुनी २५। ८ पंद्रह १५ से भाग लिया शेष १०। २ पल द्विगुण १०। ४ यहां सूर्य चर राशिमें हो तो उसीसे यदि सूर्य स्थिर द्विस्वभाव राशिमें हो तो उसके त्रिकोण ५। ९ से गिनना उनमें भी जो चर राशि हो उससे क्रमगणनासे १५ पलात्मक प्राणपद होता है।

जैसे सूर्य २ । ४ । २८ । १ द्विस्वभाव राशिमें है तो ३ । ७ । ११ इस त्रिकोणमें चर तुला है इसीसे गिना ३ । ४ माणपद आया सूर्यांश ४ और लग्नांशकी एकता आवै तब लग्न आता है यहां उदाहरणार्थ सूर्य कहा है, ऐसेही चंद्रादि जानना । गुलिक लग्नसे वा चंद्रमासे त्रिकोण शुद्ध किये विना अशुद्ध माणपद स्थावरोंका होता है, उक्त दोनोंमेंसे जो बलवान् हो उससे माणपद साधन करना दोनों निर्बल हों तो उसके सप्तम अथवा उसके अंशके सप्तमसे गिनना उसमें वा उसके त्रिकोणमें जन्मलग्न कहना यह मनुष्योंके लिय प्रश्न वा जन्मसे कहा. पशुओंका २ । १० । ६ । ३ । ७ । ११ से पक्षियोंका भी इन्हींसे और शेषस्थानोंसे कीट सर्प जलचर जीवोंका जानना ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥

लग्ने बले मांदिवशाद्विलग्नं चंद्रे बले चंद्रवशाद्विलग्नम् ॥
ओजे तदंशे पुरुषस्य जन्म लग्ने स्त्रियस्तद्विपरीतभांशे ॥११८॥

लग्न बलवान् हो तो गुलिक मांदिवशसे उपरोक्त त्रिकोण शोध करके लग्न जानना यदि चंद्रमा बलवान् हो तो चंद्रमासे जानना विषमराशि अंशमें पुरुष, जन्म, सम राशि हो तो उसके विपरीत स्त्रीमें जन्म जानना ॥ ११८ ॥

क्रमाद्ग्रहः पाचकबोधकश्च सकारको वेधकसंज्ञकश्च ॥ मंदारजीवामरशत्रुपूज्याः शुक्रारसूर्यात्मजवासरेशाः ॥ ११९ ॥ रवीन्दुसूर्यात्मजचन्द्रपुत्राः शशांकजीवाच्छधरासुताश्च ॥ सूर्यात्मजारेंदुदिनाधिनाथाः सौम्येंदुपुत्रार्कदिनेशपुत्राः ॥ १२० ॥ शुक्रेंदुदेवेज्यधरासुताश्च भवंति तत्पाकमुखा ग्रहेंद्राः ॥ १२१ ॥

ग्रह क्रमसे, पाचक १ बोधक २ कारक ३ वेधक ४ संज्ञक होता है । शनि, मंगल, बृहस्पति, शुक्र॥१॥ शुक्र, मंगल, शनि, सूर्य॥२॥११९॥सू० चं०श० बु० ॥३॥चं० बृ० शु० मं० ॥ ४ ॥ श० मं० चं० सू० ॥ ५ ॥ बु० बृ० सू० श० ॥ ६ ॥ १२० ॥ शु० चं० बृ० मं० ॥ ७ ॥ इसक्रमसे ग्रह पांच बोधक कारक वेधक होते हैं ॥ १२१ ॥

स्थानानि वक्ष्ये क्रमशो ग्रहाणां षट्सप्तधर्मायगताः क्रमेण ॥
भानोः शशांकान्मदभाग्यलाभयुक्तास्तृतीयेन धरासुताच्च॥१२२॥
धनारिलाभांत्यगताब्जसूनोर्द्वितीयवध्वात्मजसोदराश्च ॥ गुरोस्तु षष्ठात्मजकामरिष्फाः शुक्राद्धनारिव्ययबंधुयुक्ताः ॥ १२३॥
तृतीयलाभारिकलत्रगास्तु दिनेशसूनोः प्रवदंति तज्ज्ञाः ॥१२४॥

क्रमसे सूर्यादि ग्रहोंके स्थान कहते हैं, सूर्यसे ६ । ७ । ९ । ११, चंद्रमासे ७ । ९ । ११ । ३, मंगलसे २ । ६ । ११ । १२, बुधसे २ । ७ । ५ । ३, बृहस्पतिसे ६ । ५

७। १२, शुक्रसे, २। ६। १२। ४; शनिसे ३। ११। ६। ७, स्थानोंमें पूर्वोक्तसंज्ञा वाले ज्योतिषज्ञ कहते हैं ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥

शत्रुर्दिनेशस्य तु पाचकः स्यान्मित्राणि शेषाः शशिनस्तु वैरी ॥ व्यये तु भौमस्य च वेधकश्च शत्रुर्बुधस्यांतकरो गुरोस्तु ॥ १२५॥ पाकग्रहो वेधकसंज्ञकश्च शत्रुर्भवेदास्फुजितश्च वैरी ॥ सकारको वेधकसंज्ञकश्च शनेस्तु तत्कारकखेचरोरिः ॥ १२६ ॥

सूर्यका पाचक शत्रु, अन्य मित्र होतेहैं। चंद्रमाका व्ययगत ग्रह वैरी, मंगलका वेधक शत्रु, बुधका वेधक, बृहस्पतिका पाचक ग्रह, शुक्रका वेधक ग्रह, शनिका कारक ग्रह शत्रु, अन्य मित्र होते हैं ॥ १२५ ॥ १२६ ॥

मिष्टान्नपानांबरभूषणाप्तिं राज्यार्थभूलाभमतीव सौख्यम् ॥ धैर्यं महोत्साहमतीव शक्तिं कुर्याद्ग्रहः पाचकसंज्ञकोयम् ॥ १२७ ॥ मित्रे यथान्यायफलं तदन्ये ग्रहे तदन्यत्फलमातनोति ॥ सनग्र-भाग्यं बहुराजपूज्यं विद्यां विनोदांकितराजगोष्ठीम् ॥ १२८ ॥

पाचक संज्ञक ग्रह मित्र संज्ञक हो तो मिष्टान्न, मिष्टपान, श्रेष्ठवस्त्र भूषणकी प्राप्ति, राज्य-लाभ, धनलाभ, अतिसौख्य, धैर्य, मनमें उत्साह, बडी सामर्थ्य करता है ॥ १२७ ॥ यदि वही पाचकग्रह शत्रुसंज्ञक हो तो उक्त फल विपरीत करता है। और भाग्योदय करना राज्यपूज्यत्व विद्या आनंदसहित सभामें प्रवेशकरना यह इसका स्वाभाविक गुण है परंतु मित्रसंज्ञक होनेमें यथायोग्य फल और शत्रुसंज्ञकमें विपरीत करता है बली हो तो विपरीत तो नहीं परन्तु उक्तफल कम करता है ॥ २८ ॥

दयातपःप्राप्तमचिन्त्यभाग्यं कुर्यात्फलं बोधकसंज्ञकश्च ॥ ग्रहे तु तस्मिन् फलमातनोति समग्रपर्याप्तफलं तदन्ये ॥ १२९ ॥

बोधक संज्ञक ग्रह मित्रसंज्ञक हो तो दया तपसे प्राप्त अविचारित भाग्य करता है मित्र-संज्ञक होनेमें उक्त फल पूर्ण और शत्रुसंज्ञक होनेमें अन्यथा करता है ॥ १२९ ॥

भाग्यं क्वचित्क्षीणफलं क्वचिच्च दारार्थबंध्वात्मजरोगपीडा ॥ चोराग्निपीडा कलही जनैस्तु सकारको मित्रसमो यदि स्यात् ॥ १३० ॥ सकारको वैरिसमो न तत्तु वदंति व्यत्यासफलं विशेषात् ॥ चोराग्निबंधुक्षितिपालसंघैरतीव दुःखं स्वपदच्युतं च ॥ १३१ ॥

कारक ग्रह मित्र सम हो तो कभी भाग्यवृद्धि, कभी भाग्यहानि, कभी स्त्री, धन, बंधु, पुत्रोंको रोगपीड़ा, चौरभय, अग्निपीडा, एवं अग्निपीडा लोगोंसे कलह करताहै ॥ १३० ॥ वही बकारक शत्रुसम हो तो औरोंके तरह विपरीत फल नहीं करता विशेषतः चौरभय, अग्निभय, बंधुभय, राजाओंसे अतिदुःख और अपने पदकी भी च्युति करता है ॥ १३१ ॥

विदेशयानं धननाशनं च वेधग्रहस्तत्फलमन्यथान्यः॥ १३२ ॥

वेधसंज्ञक ग्रह मित्रसम हो तो विदेशगमन धननाश करता है शत्रुसम हो तो उक्तफल अन्यथा करता है ॥ १३२ ॥

तरुखरजयनृपतनुखानिनाड्यो भास्करादिवारेषु ॥ दिनमानघटीगुणिता नागहृता गुलिकनाडिकाः स्पष्टाः ॥ १३३ ॥ स्फुटगुलिकनाडिकाभिस्तत्कालार्केण सायनेनापि ॥ लग्नवदानेतव्यो राश्यंशकलादिरूपको गुलिकः ॥ १३४ ॥

रविवारमें २६ चंद्रमें २२ मंगलमें १८ बुधमें १४ गुरुमें १० शुक्रमें ६ शनिमें २ अंक दिनमान घटिकासे गुणाकर ३० से भाग लेनेसे गुलिक घटी होती है स्पष्ट गुलिक घटियों करके तत्काल सूर्य तथा सायनसूर्यसे भी लग्नस्पष्टकी रीतिसे राशि अंश कलादि गुलिक लग्न स्पष्ट होता है ॥ १३४ ॥

चंद्ररुद्रजयवैद्यनृपातोनाखुनाडिनिहितादिनमानात् ॥ नागलब्धमितमांदिघटी स्याल्लग्नवत्स्फुटमिहानयनं हि ॥ १३५ ॥

मांद्य कहतेहैं रविवारमें २६ चंद्रमें २२ भौममें १८ बुधमें १४ बृहस्पतिमें १० शुक्रमें ६ शनिमें २ से दिनमान गुणाकर ३० से भाग लेकर मांद्य घटी होतीहैं तब लग्न स्फुटकी रीतिसे राश्यादि बनायके मांद्यलग्न स्पष्ट होता है गुलिक जन्म कालिकैष्टलग्न निश्चयार्थ ग्रंथांतरमें इसप्रकार है कि " रविवारादि शन्यन्तं गुलिकादि निरूप्यते ॥ दिवसानष्टधा कृत्वा वारेशाद्गणयेत्क्रमात् ॥ १ ॥ अष्टमांशो निरीशः स्याच्छन्यंशो गुलिकः स्मृतः ॥ रात्रिरप्यष्टधा भक्ता वारेशात्पंचमादितः ॥ २ ॥ गणयेदष्टमः खंडो निष्पत्तिः परिकीर्तिता ॥ शन्यंशे गुलिकः प्रोक्तो गुर्वंशे यमघंटकः ॥ ३ ॥ भौमांशे मृत्युरादिष्टो रव्यंशे कालसंज्ञकः ॥ सौम्यांशेर्द्धप्रहरकः स्पष्टकर्मप्रदेशकः ॥४॥" सूर्यादि ७वारोंमें दिनमानके ८ भाग करके तद्दिनवारेश प्रथम खण्डाधिपति तदनंतर उस ग्रहसे आगे क्रमसे खंडेश जानने अष्टमखंड निरीश होता है सातही वारोंमें शन्यंश गुलिक होता है जैसे रविवारमें सप्तमखंडेश शनिका गुलिक, चंद्रमें छठा, मंगलमें पंचम, बुधमें चतुर्थ, गुरुमें तीसरा, शुक्रमें दूसरा, शनिवारमें प्रथम खंड, रात्रिकेवास्ते रात्रिमानके ८ भाग करके तद्वारेशसे पांचवा आदिखंडाधिपति होतेहैं अष्टमखंड यहां भी निरीश होताहै

गुलिक जैसे रविरात्रिमें तीसरा, चंद्रमें दूसरा, भौममें प्रथम, बुधमें सप्तम, गुरुमें छठा, शुक्रमें पंचम, शनिमें चतुर्थखंड गुलिक होता है। ऐसेही दिनरातमें गुरुखंड, यमघंट, बुधखंड, अर्द्धयाम, सूर्यांश कालसंज्ञक, भौमांश मृत्युनामा होता है उदाहरण- दिनमान ३३ । १४ अष्टमांश ४ । ९ । १५ बुधवारका जन्म है इसके गुणक ४ से गुण१६ । ३७ गुलिकेष्ट हुआ. लग्नस्पष्टकी रीतिसे गुलिक लग्न ५ ।६ स्पष्ट हुआ ॥१३५॥

गुलिकगुणकध्रुवांकाः

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
७	६	५	४	३	२	१	दि.
३	२	१	७	६	५	४	रा.

पाकेशाद्वसुभांत्यशत्रुभवने युक्तोपहारेश्वरस्तच्छत्रुर्भवतीह लाभधनभे सोत्थात्मजे बंधुभे ॥ भाग्ये वा दशमे समन्वितग्रहस्तच्छोभनाख्यस्ततस्तत्कामान्वितखेचरस्त्वशुभदः प्रोक्तो ग्रहाणां क्रमः ॥ १३६ ॥

फल देनेवाला ग्रह पाकेशसे ८ । १२ । ६ स्थानोंमें शत्रु होताहै । ११ । २ । ५ । ४ । ९।१० । ३ । १ शुभ (मित्र) संज्ञक होताहै और सप्तम ७ स्थानगत ग्रह अशुभ देनेवाला होताहै यह ग्रहोंका क्रम है ॥ १३६ ॥

पापग्रहादिसहितो द्युचरस्तु शत्रुः स्यात्स्थानतोपि शुभदस्त्वतिशोभनाख्यः ॥ स्थानानुरूपफलमेव विचिंत्य मार्गं ज्ञात्वा वदंति मुनयो जगतां सुसिद्धयै ॥ १३७ ॥

ग्रह पापग्रहादिसे युक्त शत्रुसंज्ञक होताहै जो शुभयुत है और शुभस्थानमें भी है वह अतिशुभ होताहै इसप्रकार स्थानके अनुसार फलको मार्ग विचारके शुभाशुभत्व जानके मुनि लोक जगत्के सिद्धिके लिये कहतेहैं ॥ १३७ ॥

संज्ञाध्यायो वर्णितः सर्वशास्त्रात्सारं बुद्ध्वा सर्वलोकोपकारम् ॥ यद्यत्सर्वं वेंकटेशेन बुद्ध्वा तत्तत्पाके योजयेत्तत्फलानि ॥ १३८ ॥

इति सर्वार्थचिन्तामणौ संज्ञानिरूपणो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

वेंकटेशनामा ग्रंथकर्त्ता आचार्यने सब शास्त्रोंसे सार जानके सर्वलोकोपकारार्थ यह संज्ञाध्याय कहाहै जो जो इसमें कहा गया है उनउन ग्रहोंका फल पाकसमयमें योजित करना ॥ १३८ ॥ इति श्रीसर्वार्थचिंतामणौ महीधरकृतायां भाषाटीकायां संज्ञाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथ लग्नफलविचाराध्यायः ।

भावोद्भवानि विविधान्युचितानि यस्माच्छास्त्रांतराद्दृषिगणा दृढबुद्धयस्तु ॥ यान्येव तानि खगयोगवशाद्वदंति बुद्ध्या समीक्ष्य विदुषां तु मुदे करोमि ॥ १ ॥

ग्रंथकर्ताकी उक्ति है कि दृढबुद्धि ऋषिजनोंने शास्त्रांतरसे जो नानाप्रकार भावफल कहेहैं वही पक्वबुद्धि ऋषिगण ग्रहयोगोंके अनुसार जो फल कहते हैं उन्हीको अपनी बुद्धिसे विचारके मैं भावफलाध्याय विद्वानोंके प्रसन्नतार्थ करताहूं ॥ १ ॥

भावाः सर्वे शुभपतियुता वीक्षिता वा शुभैशैस्तत्तद्भावाः सकलफलदाः पापदृग्योगहीनाः॥ पापाः सर्वे भवनपतयश्चोदिहाशु स्तथैव खेटैः सर्वैः शुभमपि फलं निम्नमूढारिहीनैः ॥ २ ॥

समस्तभाव शुभग्रह स्वनाथ युक्त वा दृष्ट, पापग्रह योग दृष्टि हीन, संपूर्ण फल देते हैं । पापयुक्त, पापपति, पापदृष्ट, नीचगत, अस्तंगत, हीनबल, शुभफलको छोडके अशुभफल करते हैं ॥ २ ॥

लग्नादिभावाद्रिपुरन्ध्ररिष्फे पापग्रहास्तद्भवनादिनाथाः ॥ सौम्यास्तु नात्यंतफलप्रदास्तद्भावादिकानां फलमेवमाहुः॥ ३ ॥

लग्नादि सभी भावोंसे भावेश ६ । ८ । १२ में तथा पापग्रह इन भावोंमें अशुभ फल देते हैं, शुभग्रह शुभफल नहीं देते परंतु अशुभफल भी नहीं करते, प्रत्येक भावोंके फल ऐसेही कहतेहैं ॥ ३ ॥

यद्भावनाथो रिपुरंध्ररिष्फे दुःस्थानपो यद्भवनस्थितो वा ॥ तद्भावनाशं कथयंति तज्ज्ञाः शुभेक्षिते तद्भवनस्य सौख्यम् ॥ ४ ॥

जिस भावका स्वामी ६ । ८ । १२ में हो तथा दुष्टस्थानाधीश जिस भावमें हो तो उसभावका उक्तफलनाश ज्योतिषज्ञ कहते हैं । शुभग्रहकी दृष्टि उस भावपर होनेसे उस भावसंबधी सुख होता है ॥ ४ ॥

तत्तद्भावात्त्रिकोणे स्वसुखमदनभे चास्पदे सौम्ययुक्ते पापानां दृष्टिहीने भवनपसहिते पापखेटैरयुक्ते ॥ भावानां पुष्टिमाहुः

सकलशुभकरीमन्यथात्वे प्रणाशं मिश्रं मिश्रग्रहेन्द्रैः सकलमपि तथा मूर्तिभावादिकानाम् ॥ ५ ॥

जिस जिस भावसे त्रिकोणादि ५ । ९ । २ । ४ । ७ । १० भावोंमें शुभग्रह हों पापदृष्ट न हों अथवा भावेशयुक्त हों पापयुक्त न हों तो उसउस भावकी पुष्टि कहते हैं संपूर्ण शुभफल की पुष्टि होती है । इससे विपरीत होनेमें उस भावका नाश मिश्रित होनेमें फलभी समस्त मिश्रही होता है । यह विचार लग्नादि सभी भावोंका है ॥ ५ ॥

नाशस्थानगतो दिवाकरकरैर्लुप्तस्तु यद्राशिपो नीचारातिगतोथ वा यदि भवेत्सौम्यैरयुक्तेक्षितः ॥ तद्भावस्य विनाशनं मुनिगणाः शंसंति खेटैर्युतश्चेदत्रापि फलप्रदो न हि तदा मूर्त्यादिभानां क्रमः ॥ ६ ॥

जो ग्रह नाशस्थान (८) गत है, जो अस्तंगत है, जिस भावका स्वामी नीच वा शत्रुराशिमें हो, शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट न हो उस उस भावका नाश मुनिगण कहतेहैं जो भाव ग्रहयुक्त भी है वह भी उक्तप्रकार होनेमें शुभफल देनेवाला नहीं होता है यह लग्नादि सभी भावोंका क्रम है ॥ ६ ॥

अर्थाप्तिं कथयेद्विलग्नशशिनोः प्राबल्यतः खेचरैर्मानस्थैः पितृमातृशत्रुससुहृद्भ्रात्रादिभिः स्याद्धनम् ॥ भृत्याद्वा दिननाथलग्नशशिनां मध्ये बलीयांस्ततः कर्मेशस्थनवांशराशिवशतो वृत्तिं जगुस्तद्विदाः ॥ ७ ॥

कर्माजीविका कहते हैं—लग्नचंद्रमामेंसे जो विशेष बली हो उससे दशममें सूय हो तो पिता वा पितृवृत्तिसे, चंद्रमा हो तो मातासे, मंगल हो तो शत्रुसे, बुध हो तो मित्रसे, बृहस्पति हो तो भाईसे, शुक्र हो तो स्त्रीसे, शनि हो तो भृत्य आदिसे धन मिले । जब दशममें कोई ग्रह लग्नचंद्रमामेंसे न हो तो सूर्य चंद्रमा लग्नमेंसे जो बलवान् हो उसके दशमभावका स्वामी जिसके नवांशकमें हो उसके उक्तकर्मसे आजीवन ज्योतिषी कहते हैं ॥ ७ ॥

भैषज्यचामीकरतोययानपण्येन मुक्तामणिविप्रलंभात् ॥ अन्योन्यदूतागमवृत्तिमार्गाज्जीवत्यसौ वासरनायकांशे ॥ ८ ॥ मंत्रोपदेशरसवादविनोदमार्गैर्वृत्तिं जगुः सकलशास्त्रपुराणमार्गैः ॥ ज्ञानोपदेशपार्थिभिः क्षितिपालपूज्यो जीवत्यसौ क्षितितले दिननायकांशे ॥ ९ ॥

ग्रहोंकी पृथक् कर्माजीविका कहते हैं कि उक्त प्रकारसे सूर्यके अंशकमें वह दशमेशस्थित नवांशेश हो तो औषधी, सुवर्ण, जल, सवारी, दुकान, मोती, मणिके आश्रयसे, तथा पराये दूतकर्म, गमनागमन, वृत्तिकेद्वारा, तथा मंत्रोपदेश, रसक्रिया, विवाद, विनोदद्वारा ज्ञानोपदेश मार्गसे आजीवन, और राजपूज्यता मिलती है ऐसा ज्योतिषज्ञ पुराण समस्त शास्त्रानुसार कहतेहैं ॥ ८ ॥ ९ ॥

जलोद्भवानां क्रयविक्रयेण कृषेश्च मृद्वादविनोदमार्गात् ॥ राजां-
गनासंश्रयवृत्तिरूपान्निशाकरांशे वसनक्रयाद्वा ॥ १० ॥

चंद्रमाके अंशकमें होवै तो जलसे उत्पन्न वस्तुओंके व्यापारसे, कृषिकर्मसे, मिट्टी, वाद वा खेलके द्वारा, राजरानीके आश्रयवृत्तिसे अथवा वस्त्रव्यापारसे, आजीवन होताहै ॥ १० ॥

धातोर्विवादेन रणप्रहारात्स्तब्धाग्निवादात्कलहप्रवृत्त्या ॥ जीव-
त्यसौ साहसमार्गरूपैर्धरासुतांशो यदि चोरवृत्त्या ॥ ११ ॥

मंगलके अंशकमें हो तो धातुवाद यद्वा धातुकर्म तथा कलहमें वादविवादसे, रणमें प्रहार करनेसे, स्थिर अग्निवाद अग्निकृत्य कलह वृत्तिसे साहसके कामोंके द्वारा और चोरवृत्तिसे आजीवन करताहै ॥ ११ ॥

शिल्पादिकाव्यागमशास्त्रमार्गाज्ज्योतिर्गणज्ञानवशाद्बुधांशे ॥
वरार्थवेदाध्ययनाज्जपाच्च पुरोहितव्याजवशात्प्रवृत्तिः ॥ १२ ॥

बुधके अंशकमें हो तो शिल्पविद्या, काव्य, वेदशास्त्रद्वारा ज्योतिषज्ञान, श्रेष्ठ अर्थ, वेद पाठ, जप, अनुष्ठान, पुरोहिताईके मिषसे आजीविका होवै ॥ १२ ॥

जीवांशके भूसुरदेवतानामुपासकाध्यापकमार्गरूपात् ॥ पुराण-
शास्त्रागमनीतिमार्गाद्धर्मोपदेशेन कुसीदमाहुः ॥ १३ ॥

बृहस्पतिके अंशकमें हो तो ब्राह्मण एवं देवताओंके उपासनासे यद्वा उनके उपासकोंसे, पाठन वृत्तिद्वारा पुराण, शास्त्र, वेद, नीतिद्वारा तथा धर्मोपदेशसे धनप्रयोगसे आजीवन होवै ॥ १३ ॥

सुवर्णमाणिक्यगजाश्वमूलाद्गवां क्रयाज्जीवनमाहुरार्याः ॥ गुडौ-
दनक्षीरदधिक्रयेण स्त्रीणां प्रलोभेन भृगोः सुतांशे ॥ १४ ॥

शुक्रांशकमें हो तो सुवर्ण, मणि, हाथी, घोडाओंके कारणसे, गौके व्यापारसे, गुडौदन दूध दहीके व्यापार और स्त्रियोंके आश्रयसे आजीवन श्रेष्ठ आचार्य कहते हैं ॥ १४ ॥

शन्यंशके कुत्सितमार्गवृत्त्या शिल्पादिभिर्दारुमयैर्वधाद्यैः ॥
विन्यस्तभाराज्जलविप्रलंभादन्योन्यवैरोद्भवमूलमार्गात् ॥ १५ ॥

शनिके अंशकमें हो तो निंद्यमार्गकी वृत्तिसे, लकडी आदि शिल्पसे, मारणकर्म आदिसे भार ढोनेसे, जलके आश्रयसे, परस्पर वैर करने करानेसे आजीवन होवै ॥ १५ ॥

स्वक्षेत्रे स्वनवांशके सुहृदि वा स्वीयोच्चभागे यदा स्वद्रेष्काणचतुष्टयेषु सहिता मूलत्रिकोणेषु वा ॥ तत्तत्कालबलान्वितास्तु खचरा वर्गोत्तमांसेपि वा ते सर्वे शुभदा भवंति हि तदा स्वांतर्दशादावपि ॥ १६ ॥

जो ग्रह अपनी राशि, अपने नवांश, मित्रराशि, उच्च राश्यंशक अपने द्रेष्काणादि चारमें अथवा मूलत्रिकोणोंमें हों, तत्काल बली हों, अथवा वर्गोत्तमांशमें हों वे सब अपनी दशांतर्दशादिमें शुभफल देनेवाले होतेहैं जैसे शनिकी कर्माजीविका भार ढोनेसे है तो शनि नीचादिमें हो तो स्वयं भार ढोवेगा। उच्चादिमें हो तो रेल जहाज गाड़ी आदियोंके किरायासे धनवान् होगा अर्थात् भार ढोनेके कामोंसे ऐश्वर्य करेगा ॥ १६ ॥

तत्तद्भावाद्रंध्रपो वा खरेशो द्रेष्काणानां चापि नाथोर्कपुत्रः ॥
मांदीशो वा तन्नवांशाधिपो वा तेषां मध्ये यो ग्रहः क्रूरभावः १७॥
तद्भावेशस्याधिशत्रुग्रहो वा यो वा खेटो बिंदुशून्यर्क्षयुक्तः ॥तत्तत्पाके मूर्तिवित्तादिकानां नाशं ब्रूयाद्दैववित्प्राश्निकश्च ॥ १८ ॥

अपने अपने भावसे अष्टमेश वा खरांशेश वा द्रेष्काणेश शनि हो वा मांद्यशेश अथवा उस नवांशका स्वामी इनमेंसे जो ग्रह क्रूरभावमें हो अथवा उस भावेशका अधिशत्रु ग्रह हो वा शून्यबिंदु राशिमें हो तो उनउन ग्रहोंके दशादि पाककालमें ज्योतिषी प्रश्नकर्त्ताने लग्नधनादिभाव जिनमें उक्त ग्रहहैं विनाश कहना ॥ १७ ॥ १८ ॥

मंदमांद्यगुखरेशरंध्रपास्तन्नवांशपतयोपि ये ग्रहाः ॥ तेषु दुर्बलदशा मृतिप्रदा कष्टभे चरति सूर्यनन्दने ॥ १९ ॥

मंदांश, मांद्यंश, राहु खरांशेश, अष्टमेश, और उनके नवांशकेश जो ग्रह हैं उनमें निर्बलकी दशा मृत्यु देती है तथा अष्टमादि कष्ट राशियोंमें जब शनि जाताहै तब मृत्यु होतीहै ॥ १९ ॥

धनाधिपः पापखगो यदि स्याच्छन्यारभोगीन्द्रदिनेश्वराणाम् ॥
अंतर्दशायां धननाशमाहुः पापान्विते तद्भवने तथव ॥ २० ॥
धनाधिपः पापखगस्तदीशः स्याच्चेद्दशायां क्षितिपालकोपात् ॥
नानार्थनाशं निगदेन्नराणां स्थानच्युतिं स्वेष्टजनैर्विरोधम् ॥२१॥

धनाधीश पापग्रह होवै तो वह शनि मंगळ सूर्यके अंतर्दशामें धननाश करता है जो धन भाव पापयुक्त हो तो वही फल करताहै ॥ २० ॥ यदि धनेश पापग्रह हो वहभी पापराशिमें होवै तो राजकोपसे धननाश होवै तथा अनेक प्रकार अर्थनाश, स्थानभ्रंश, इष्टजनोंसे विरोध मनुष्योंको कहना ॥ २१ ॥

पापग्रहाणामपहारकाले पापग्रहस्यैव दशासु काले ॥ भुक्त्यर्थमानात्मजसोदराणां नाशं समायाति शुभैर्न दोषः ॥ २२ ॥ वित्ते शुभे शोभनखेचरेशे तत्पाककाले धनलाभमेति ॥ शुभग्रहाणामपहारकाले तथाभवेदात्मजवाग्विलासः ॥ २३ ॥

पापग्रहोंके दशाकालमें पापग्रहोंका अनिष्ट फलकारक समय (अंतर्दशादि) में भोजन, धन, मान, संतान, भाइयोंका नाश होताहै शुभग्रहोंका दोष नहीं है पाप शुभमिश्रितमें मिश्र फल जानना ॥ २२ ॥ धनभवामें शुभग्रह हो भावेश शुभग्रह हो तो उसकी दशांतर्दशा समयमें धनलाभ होता है शुभग्रहोंके योगकारकादि परिपाक कालमें पुत्रसुख वाग्विलास होताहै ॥ २३ ॥

पापग्रहे विक्रमभावनाथे पापान्विते पापवियच्चराणाम् ॥ अंतर्दशायामनलास्त्रचोरैर्दुःखं समायाति शुभप्रदेपि ॥ २४ ॥ कलिप्रकोपानलचौरभूपैर्दुःखं मनोजाडयमतीव कष्टम् ॥ सोत्थेशपापग्रहदायकाले शुभेक्षिते तादृशमत्र नास्ति ॥ २५ ॥

तृतीयभावेश पापग्रह हो तृतीयमें पाप ग्रह हों तो उन पापग्रहोंकी दशांतर्दशामें अग्नि शस्त्र चोरोंसे दुख, शुभफलप्रद ग्रह हो तो भी होतेहैं ॥ २४ ॥ तृतीयेश पापग्रह दशामें कलह, कोप, अग्नि, चोर, राजासे दुःख, मनो जडता, अतिकष्ट होतेहैं. उसपर शुभग्रहकी दृष्टि होवै तो नेष्टफल नहीं होताहै ॥ २५ ॥

दुश्चिक्यभावाधिपदायकाले सौम्येतराणामपहारकाले ॥ नाशं वदेत्तत्र सहोदराणां भवेद्विरोधः सहजैर्विशेषात् ॥ २६ ॥

तृतीयभावेशदशा समयमें पापग्रहोंका अपहारकाल होनेमे भाइयोंका नाश तथा विशेषतः भाइयोंसे विरोध होताहै ॥ २६ ॥

क्षेत्राधिपस्यैव शुभेतरस्य पापग्रहाणामपहारकाले ॥ स्थानच्युतिं बंधुविनाशमेति नीचास्तगानामपहारकेपि ॥ २७ ॥

चतुर्थेश पापग्रह होवें तो पापग्रहोंके अपहारकाळ अंतर्दशादिसमयमें स्थानहानि बंधुविनाश होताहै जो ग्रह नीचराशिमें हों अथवा अस्तंगत हों उनकेमेंभी वैसाही फळजानना ॥ २७ ॥

बुद्धिभ्रमं कुत्सितभोजनं च पापग्रहाणां हि सुतेशकाले ॥ अंतर्दशायां प्रवदेन्नराणां शुभग्रहश्चेन्न तथा भवेत्तु ॥ २८ ॥

पंचमेश पापग्रह हो उसकी दशादिमें पापग्रहांन्तरादि हो तो बुद्धिभ्रम कोदवादि कदन्न भोजन मिले शुभग्रह हो तो उक्त अनिष्ट फल नहीं होता ॥ २८ ॥

राजाग्निचौरैर्व्यसनं व्रणेशदशाविपाके तु शुभेतराणाम् ॥ अतर्दशयामपि कष्टमेति प्रमेहगुल्मक्षयपित्तरोगैः ॥ २९ ॥

षष्ठेश पापग्रहकी दशा अतर्दशामेंभी राजा, अग्नि, चोरोंसे क्लेश मिलताहै पापदशा पापांतरमेंभी प्रमेह, गुल्मरोग, क्षयरोग, पित्तरोगसें कष्टको प्राप्त होताहै ॥ २९ ॥

दारेशपापग्रहदायकाले स्त्रिया विरोधो मरणं च तस्याः ॥ विदेशयानं च पुरीषमूत्रकृच्छ्रं भवेद्भूपतिकोपएव ॥ ३० ॥

सप्तमेश पापग्रह दशासमयमें स्त्रीमरण, स्त्रीसे विरोध तन्मृति फल होतेहैं तथा विदेशगमन, मलरोग, मूत्रकृच्छ्र और राजकोप होताहै ॥ ३० ॥

रंध्रेशकाले फणिनाथभौमशनैश्चराणामपहारकाले ॥ आयुर्यशोवित्तविनाशनं च दारात्मबंध्विष्टसहोदराणाम् ॥ ३१ ॥

अष्टमेशकी दशामें मंगल, शनि,, राहु के अंतर्दशादिमें आयु, यश, और वित्त कानाश तथा स्त्री, अपना शरीर बंधुवर्ग, सगे भाइयोंकी हानि होती है ॥ ३१ ॥

स्थानच्युतिर्बन्धुविरोधिता च विदेशयानं सहजैर्विरोधः ॥ भवेच्छुभेशस्य दशाविपाके शनैश्चराराहिदिनाधिपानाम् ॥ ३२ ॥

नवमेश शनि, मंगल, राहु सूर्यकी दशादिमें स्थानहानि, बंधु जनोंमें विरोध, परदेशगमन, झगडा होताहैं ॥ शुभग्रह नवमस्वामी हो तो शुभांतरादिमें शुभही होता है ॥ ३२ ॥

कारागृहप्राप्तिरनेकदुःखं दुःस्वप्नशोकानलदग्धदेहम् ॥ कर्मेश्वरस्योत्तरभुक्तिकाले पापग्रहाणामपकीर्तिमेति ॥ ३३ ॥

दशमेश पापग्रहके दशादिमें कैदखानेका वास अनेकप्रकार क्लेश, दुष्ट स्वप्न, शोकरूप अग्निसे देहसंताप और अपयश मिलतेहैं शुभोंके शुभ जानना ॥ ३३ ॥

दशाविशेषे त्वथ लाभपस्य भुक्त्यंतरे द्रव्यविनाशनं च॥ रव्यारभोगींद्रशनैश्चराणां कार्यार्थकृच्छ्रं क्षितिपालकोपात् ॥ ३४ ॥

लाभेश, सूर्य, मंगल, राहु, शनिकी दशामें धननाश, कार्यार्थमें कठिनता राजकोपसे मिलती है ॥ ३४ ॥

व्ययेशदाये रविसूनुभुक्तौ दिनेशभूम्यात्मजयोर्विरोधः ॥ कलिक्षयौ मानधनक्षयौ च राहोस्तु भुक्तावरिसर्पपीडा ॥ ३५ ॥

व्ययेश शनि सूर्य मंगलकी दशामें विरोध, कलह, धनादिक्षय, मानक्षय, होताहै, राहुदशामें शत्रु एवं सर्पकी भय होती है ॥ ३५ ॥

तत्कालशत्रुप्रभवात्फलं तन्मित्रे यदि स्यात्फलमर्द्धमाहुः ॥
अन्योन्यषष्ठाष्टमदायकाले स्थानच्युतिर्वा मरणं विशेषात् ॥ ३६ ॥
स्पष्टी करिष्यंति दशाविभागे विस्तारमार्गेण मुनीन्द्रजालाः ॥
आपाततः संकुचितार्थवाक्यैरुक्ता ग्रहाणां फलपाकपंक्तिः ॥ ३७ ॥

जो तत्कालशत्रुसे उत्पन्न फल है वह अन्यप्रकार मित्र होनेमें आधा होजाताहै षष्ठेशाष्टमेशोंके दशांतर्दशा परस्पर होनेमें स्थानहानि, विशेषतः मरण कहते हैं ॥ ३६ ॥ इस प्रकार मुनीन्द्रसमूह दशासमयमें विस्तारपूर्वक फलपंक्ति स्पष्ट करतेहैं ॥ समस्तफल थोडी सी वाक्यों करके फलपाकपंक्ति कहीहै ॥ ३७ ॥

निषेकलग्नाद्दिनपस्तृतीये राशौ यदा चारवशादुपैति ॥ आधानलग्नादथ वा त्रिकोणे रवौ यदा जन्म वदेन्नराणाम् ॥ ३८ ॥
आधानलग्नात्सुतभे तु जन्मलग्नं भवेच्छास्त्रविदो वदन्ति ॥
आधानलग्ने शुभदृष्टियोगे दीर्घायुरैश्वर्यधनान्वितः स्यात् ॥ ३९ ॥

आधानलग्नसे यदि सूर्य तीसरी राशीमें होवै उसी लग्नमें जन्म अथवा आधानलग्नसे सूर्य ९।५ में हो तो उस लग्नसे जन्म कहना ॥ ३८ ॥ शास्त्रवेत्ता कहते हैं कि आधान लग्नसे पंचमलग्नमें जन्म होता है ॥ आधानलग्नमें शुभग्रह हों अथवा उसपर शुभदृष्टि होवै तो बालक दीर्घायु एवं धन ऐश्वर्यसे युक्त होताहै ॥ ३९ ॥

धर्मार्थपुत्रेषु निषेकलग्नाद्दृष्टेषु सौम्यैः पुरुषग्रहैर्वा ॥ पुत्रांशकैर्वापि निषेककाले पुंजन्म बालाजननं विलोमात् ॥ ४० ॥

आधानलग्नसे ९।२।५ भावों पर शुभग्रह अथवा पुरुष ग्रहों की दृष्टि हो अथवा तत्समयमें पुरुषांशक होवै तो पुत्रजन्म कहना इसके विपरीत उन भावों ५।९।२ पर विपरीत स्त्रीग्रह दृष्टि हो वा तत्काल समराश्यंश होवै तो कन्याजन्म कहना ॥ ४० ॥

निषेकलग्ने शशिनंदनो वा रव्यात्मजो वा यदि पापदृष्टः॥पिंडाकृतिं जन्म वदेत्तदानीं शुभेक्षितश्चेन्न तथाविधं तत् ॥ ४१ ॥

आधानकुंडलीमें बुध अथवा शनि पापदृष्ट होवै तो उस गर्भसे पिंडाकार बालक जन्मे उक्त बु० श० पर शुभदृष्टि भी होवै तो पिंडाकार नहीं होगा ॥ ४१ ॥

निषेकलग्नेशतृतीयनाथौ लग्नस्थितौ चेद्यमलोद्भवः स्यात् ॥ तृतीयनाथेन युतो निषेकलग्नेश्वरस्तत्सहजे तथैव ॥ ४२ ॥

आधानलग्नेश और तृतीयस्वामी लग्नमें हो तो यमल (दो बालक) उत्पन्न होंगे आधानलग्नेश तृतीयेशसे युक्त होकर तीसरे स्थानमें हो तोभी वही फल जानना ॥ ४२ ॥

लग्नेश्वरे कर्मगते विलग्ने भोगीन्द्रयुक्ते सति पादजातः ॥ रंध्रेश्वरे राहुयुते विलग्ने जातोरगैर्वेष्टितसंभवः स्यात् ॥ ४३ ॥ केंद्रे सराहौ गुलिकेन युक्ते लग्नेश्वरे वा निधनेशयुक्ते ॥ क्रूरग्रहाणां तु दृकाणलग्ने जातोरगैर्वेष्टितसंभवः स्यात् ॥ ४४ ॥ लग्नत्रिभागेंद्रजसर्पकाले तन्नाथयुक्ते तु तथा त्रिभागे ॥ शुभग्रहाणां तु दृशा विहीने जातोरगैर्वेष्टितसंभवः स्यात् ॥ ४५ ॥ छागोक्षकंठीरवलग्नभूते भौमान्विते वा रविजेन युक्ते ॥ राश्यंशसादृश्यसमानदेहो नालेन संवेष्टितसंभवः स्यात् ॥ ४६ ॥

लग्नेश दशममें राहु लग्नमें होवै तो बालक पैरोंसे उत्पन्न होवै यदि अष्टमेश लग्नमें राहु सहित होवै तो बालक सर्पवेष्टित होवै सर्पवेष्टितका तात्पर्य सर्पाकारनशोंसे वा तदाकार नाल से भी है ॥ ४३ ॥ केंद्रमें राहु गुळिकमें लग्नेश्वर अथवा लग्नेश अष्टमेश युत हो. तथा लग्नमें पाप ग्रह द्रेष्काण होवै तो बालक सर्पवेष्टित होवै ॥ ४४ ॥ लग्नमें सर्प वा अंडज द्रेष्काण होवै तथा द्रेष्काण तत्स्वामियुक्त हो और शुभदृष्टिरहित हो तो वही फल होताहै ॥ ४५ ॥ मेष वृष सिंह लग्न शनि वा मंगलसे युक्त होवै तो राशिविभागके समान अंगमें बालक नालसे वेष्टित होवै ॥ ४६ ॥

लग्ने सपापे बहुपापदृष्टे राहुध्वजाभ्यां सहितेथ वात्र ॥ पापग्रहाणां तु विलग्नभे वा जातो नरो नालनिवेष्टितांगः ॥४७॥ क्रूरांतरे लग्नगते सराहौ लग्ने कुजे वासरनाथदृष्टे ॥ लग्ने शनौ भूमिसुतेन दृष्टे जातो नरो नालनिवेष्टितांगः ॥ ४८ ॥

लग्नमें पापग्रह हों बहुत पापग्रहोंसे दृष्ट हो अथवा राहु वा केतुसे युक्त हो अथवा लग्नमें पापग्रह राशि हो तो बालक नालसे वेष्टित अंग होवै ॥४७॥ लग्न पापग्रहोंके बीच हो लग्नमें राहु हो अथवा लग्नमें मंगल सूर्य दृष्टहो अथवा लग्नमें शनि मंगलसे दृष्ट हो तो राश्यंशसमान गात्रमें नालवेष्टित होवै ॥ ४८ ॥

परस्परक्षेत्रसमाश्रितौ वा देहांबुपौ जन्म वदेत्तदानीम् ॥ लग्नेश्वरे वा हिबुकेश्वरे वा ध्वजाहियुक्ते जननं पशोस्तु ॥ ४९ ॥ पापा बलाढ्या विबलास्तु सौम्या नपुंसकौ केंद्रगतौ तदानीम् ॥ दृष्टि-स्तयोर्वाथ वियोनिलग्ने चतुष्पदां जन्म वदंति तज्ज्ञाः ॥ ५० ॥

पापा बलाढ्याः स्वगृहं प्रपन्नाः सौम्याः स्वगेहेतरराशियुक्ताः ॥ चतुष्पदां जन्मतनौ वियोनौ वदंति शास्त्रांतरपारगम्याः ॥५१॥

लग्नेश और चतुर्थेश परस्पर राशियोंमें होवै अथवा लग्नेश वा चतुर्थेश राहु वा केतुसे युक्त हो तो पशुका जन्म होवै ॥ ४९ ॥ पापग्रह बलवान् शुभग्रह निर्बल हों और नपुंसक ग्रह बु० श० केंद्रमें हों अथवा उनकी दृष्टि हो वियोनि लग्न हो तो ज्योतिषज्ञ पशुका जन्म कहतेहैं ॥५०॥ जो पापग्रह बलवान् हों तथा अपनी राशियोंमे हों शुभग्रह शत्रुराशि आदिमें हों और लग्नमें चतुष्पदराशि होवै तो शास्त्रांतर पारग लोक वियोनिका जन्म कहतेहैं ॥ ५१ ॥

पक्षी दृकाणे तु विलग्नभूते बलान्वितेनैव ग्रहेण दृष्टे ॥ राशौ चरे वा यदि तन्नवांशे वियोनिजन्मेति बुधांशके वा ॥ ५२ ॥

लग्नमें पक्षी द्रेष्काण हो उसे बलवान् ग्रह देखे अथवा चरराशि वा चरनवांशक हो अथवा बुधका अंशकहो तो वियोनिजन्म जानना ॥ ५२ ॥

शुक्रेक्षिते गोजननं महिष्याः सूर्यात्मजेनापि युतः स दृष्टः ॥ राहु-ध्वजाभ्यां सहितोथ दृष्टो मेषस्तु जातोन्यपशुस्तथान्यैः ॥५३॥

पूर्वोक्त योग शुक्रसे दृष्ट हो तो गौका जन्म, शनिसे युक्त वा दृष्ट हो तो महिषी, राहु केतुसे युक्त वा दृष्ट हो तो मेष (मेंढा) का जन्म, अन्यग्रहोंसे अन्यपशुओंका जन्म कहना॥५३॥

लग्ने बुधक्षेत्रगतेरिनाथे लग्नेश्वरे सोमसुतर्क्षसंस्थे ॥ जातस्तु सस्त्रीकनपुंसकस्याच्छन्यारयोगात्पुरुषस्तु षंढः ॥ ५४ ॥

षष्ठेश लग्नमें बुधकी राशिका हो और लग्नेश बुधकी राशिमें होवै तो स्त्रीसहित पुरुष नपुंशक होवैं उक्तयोगमें शनि मंगल भी सामिल होवैं तो पुरुषही नपुंसक होगा ॥ ५४ ॥

अन्योन्यदृष्टी शशिवासरेशौ युग्मौ च गाविंदुजभानुपुत्रौ ॥ ओजर्क्षगो भानुसुतो दिनेशं पश्यत्यसौ युग्मगतस्तथैव ॥ ५५ ॥

ओजे तु लग्ने कुमुदात्मबंधुस्तत्र स्थितो युग्मगभौमदृष्टः ॥ युग्मौजगाविन्दुसुतौ कुजेन दृष्टौ विलग्नश्च निशाकरश्च ॥५६॥

षट् क्लीबयोगाः पुरुषांशयुक्ताः प्रोक्ता महद्भिर्बहुशास्त्रविद्भिः ॥
लग्नेश्वरश्चंद्रसुतेन युक्तः षंढो भवेत्सौम्यखगेन युक्तः ॥ ५७ ॥

सूर्य चंद्रमाकी परस्पर दृष्टि हो १, बुध शनि द्विस्वभाव राशियोंमें हो २, विषम राशिमें बैठा शनि सूर्यको देखे अथवा युग्म राशिमें हो ३, अथवा विषम लग्नमें चंद्रमा हो उसके साथ मंगल हो अथवा युग्मराशिगत मंगल उसे देखे ४, तथा सम विषम राशियोंमें चंद्रमा बुध हों उन्हें मंगल देखे ५, लग्नेश बुधसे युक्त हो पुरुषांशकमें शुक्र लग्न चंद्रमा हो ६, ये छः नपुंसकयोग बहुशास्त्रज्ञ बडे आचार्य कहते हैं ॥ ५५ । ५६ । ५७ ॥

दुःस्थानगो कर्मशुभाधिनाथो बली विलग्नाधिपतिस्तदानीम् ॥
सीमंतकर्मादि विनैव जातो भवेन्नरः प्राथमिकोपि तत्र ॥ ५८ ॥

नवमेश दशमेश दुष्टस्थानोंमें हों और लग्नेश बलवान् होवे तो वह बालक सीमंत जात कर्मादि संस्कारोंसे रहित ब्राह्मणपुत्र होनेपरभी रहै ॥ ५८ ॥

लाभे सपापे त्वथ तद्गृहे वा जातो नरः प्राथमिकोपि तत्र ॥
सिंहोदये द्वारयुगं गृहं तत्कन्योदये नीचगृहेपि जन्म ॥ ५९ ॥
नवांशपुत्राधिपतिः सराशेर्द्वारं जगुर्लग्नदृक्काणराशेः ॥ द्वारं विलग्नाधिपतिः सराशेः केंद्रस्थितैर्वीर्यसमन्वितैर्वा ॥ ६० ॥

लाभस्थानमें पापग्रह वा पापराशि होनेमें भी वही पूर्वोक्त फल है । अब सूतिका गृहद्वार कहते हैं कि सिंह लग्न हो तो उस घरमें दो द्वार होंगे, कन्यालग्न हो तो नीचके घर वा नीच कर्मोपयोगी घरमें जन्म होगा ॥ ५९ ॥ नवांशेश तथा पंचमेशकी राशिके दिशामें द्वार अथवा बलवान् ग्रहकी दिशामें यद्वा केन्द्रगत ग्रहकी दिशामें द्वार कहना अथवा लग्नमें जो द्रेष्काण है उस राशिकी दिशा वा लग्नेशकी दिशा में कहना इतने विकल्पोंमें मुख्य विचार बलका है उक्तोंमें अधिकबलीकी दिशा कहनी ॥ ६० ॥

ग्रहैर्धनान्त्यास्पदवेश्मगैर्वा वाच्यास्तदानीमुपसूतिकास्तु ॥ तत्र स्थिते भानुसुते तु शूद्रा रवौ स्थिते क्षत्रियभामिनी सा ॥ ६१ ॥
राहुध्वजाभ्यामथ जातिहीना त्वन्यैर्ग्रहैर्जातिसमा प्रदिष्टा॥धनांत्यबंधुस्थितखेचरेन्द्रैर्वाच्यास्तदानीमुपसूतिकाश्च ॥ ६२ ॥

जो ग्रह २ । १२ । १० स्थानमें हो उसके अनुसार उपसूतिका (जो बालकको जनातीहै) कहनी तहां शनि हो तो वह स्त्री शूद्रा, सूर्य हो तो क्षत्रिया ॥ ६१ ॥ राहु केतु हों तो हीनजातिकी और अन्यग्रहोंसे समान जातिकी कहनी और २ । १२ । ४

स्थानोंमें जैसे और जितने ग्रह हों वैसी तथा उतनी अन्य उपसूतिका उस सूतिकागृहमें कहनी ॥ ६२ ॥

तत्स्थानपैः संयुतखेचरेन्द्रैः किंचिद्वदंत्यत्र सहस्थितैश्च ॥ जीवेंदुपुत्रासुरदेवपूज्यैस्तत्र स्थितैर्ब्रह्मकुलाभिरामाः ॥ ६३ ॥ एतेषु पापांशकसंयुतेषु तासां तु वैधव्यमुदाहरन्ति ॥ राहुध्वजाभ्यां सहितेषु तेषु शुभास्त्रियस्तत्र शनेस्तु योगात् ॥ ६४ ॥ कृष्णा च कुब्जा विधवा भवेत्सा योगाद्ग्रहाणां प्रवदेच्च संख्याम् ॥ बहिःप्रदेशे ग्रहमध्यभागे दृश्यार्द्धभागस्थितखेचरेन्द्रैः ॥ ६५ ॥ संख्या वदेत्तत्र तदन्ययुक्तैस्त्वेकर्क्षगैस्तत्र बहुत्वमाहुः ॥ ६६ ॥

उक्त भावेशोंके अनुसार अथवा उनके स्थानगत बली ग्रहोंके अनुसार उपसूतिकाका वर्णाकारादि कहने । बृहस्पति, बुध, शुक्र, वहां हों तो उपसूतिका ब्राह्मणी होगी ॥ ६३ ॥ ये ग्रह पापांशकोंमें हों तो वह ब्राह्मणी विधवा होगी इन भावोंमें राहु केतु हों तो भी विधवा और सुंदर स्त्री होगी, शनिके संयोगसे कृष्णा कुबडी विधवा आदि होगी जितने ग्रहोंका योग हो उतनी संख्या स्त्रियोंकी कहनी दृश्यार्द्धभागमें जितने ग्रह हों उतनी स्त्री घरके बाहर जितने ग्रह दृश्योत्तरार्द्धमें हों उतनी स्त्री घरके भीतर कहनी, बहुत ग्रह एकस्थानमें हों तो बहुत स्त्री होंगी इनमें भी कोई ग्रह स्वोच्च स्वगृहादिमें हों तो भी बहुत होंगी ॥ ६४ । ॥ ६५ । ६६ ॥

दीपस्य चांचल्यमुदाहरंति चरे स्थिरे तद्दृढमत्र काले ॥ विदेहराशौ सधृतः करेण तत्संयुतैर्व्योमचरैस्तु संख्याम् ॥ ६७ ॥ तैलं वदेत्तत्र निशाकरेण वर्तिर्विलग्नादिति केचिदाहुः ॥ ६८ ॥

चरलग्न हो तो दीप चंचल, हातमें चलता फिरता होगा स्थिर हो तो दीप स्थिर और द्विस्वभाव हो तो हाथहीमें होगाः लग्नमें जितने ग्रह हों उतने दीप होनेभी बलवान् होनेमें संभव होतेहैं, दीपकमें तेल चंद्रमाके अनुरूप क्षीण, पूर्ण सपाप जैसा हो वैसा, और ऐसेही लग्नके अनुरूप वत्ती कहनी ६७ । ६८ ॥ इति जन्मफलम् ॥

अथ तनुभावः ।

लग्नेशे स्वोच्चमित्रांशे स्वनवांशगतेपि वा ॥ शुभग्रहयुते दृष्टे देहसौख्यं विनिर्दिशेत् ॥ ६९ ॥ लग्नेशे बलसंयुक्ते केन्द्रकोणगते शुभे ॥ पापग्रहैरसंदृष्टे देहसौख्यं वदेद्बुधः ॥ ७० ॥

लग्नेश अपने उच्च, मित्र, अपने नवांशमेंसे किसीमें होवै और शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट होवै तो सर्वदा देहसौख्य कहना ॥ ६९ ॥ लग्नेश बलयुक्त होकर केंद्र कोणमें हो तो शुभग्रह हो वा शुभयुक्त हो पापग्रह उसे न देखें तों पंडित उस मनुष्यका सर्वदा देहसौख्य कहैं ॥ ७० ॥

देवलोकांशगे सूर्ये लग्नेशे बलसंयुते ॥ भाग्येशे स्वोच्चराशिस्थे बहुसद्भाग्यकीर्तिमान् ॥ ७१ ॥

सूर्य देवलोकांशकमें हो लग्नेश बलवान् हो भाग्येश अपनी उच्च राशिमें हो तो बहुत और अच्छा भाग्यमान् कीर्तिमान् होवै ॥ ७१ ॥

लग्नाधिपोतिबलवाञ्शुभवर्गयुक्तः स्वोच्चे सुहृद्ग्रहयुतः स्वनवांशके वा ॥ लग्नाधिनाथसहिते यदि केंद्रनाथे सद्भाग्यकीर्तिधनधान्यचिरायुरेति ॥ ७२ ॥

लग्नेश अतिबलवान् शुभवर्गसे युक्त हो अपने उच्चमें वा स्वनवांशकमें हो शुभग्रहयुक्त हो केन्द्रेश लग्नेशके साथ हो तो, उत्तम भाग्य (ऐश्वर्य), कीर्ति, धन और अन्नसमृद्धिको प्राप्त होता है ॥ ७२ ॥

लग्नेश्वरः क्रूरसमन्वितश्चेद्देहस्य सौख्यादिविनाशमाहुः ॥ ताहक्फलं नाशगतोपि तस्य शुभेक्षितश्चेत्फलमन्यथा स्यात् ७३ ॥
दुःस्थानपेनापि युते विलग्ननाथे विलग्ने सति रोगभाक्स्यात् ॥ बलैर्विहीने सति लग्ननाथे केन्द्रत्रिकोणे न तु रोगभाक्स्यात् ७४॥
लग्नेश्वराधिष्ठितराशिनाथो दुःस्थानगो दुर्बलदेहभाक्स्यात् ॥ लग्नादिभावेश्वरराशिनाथैर्दुःस्थैर्विलग्नादिविनाशमाहुः ॥ ७५ ॥

लग्नेश क्रूरग्रहसे युक्त होवे तो शरीरके सौख्यादि नष्ट होजावें। लग्नेश अष्टम होनेमें भी वही फल कहते हैं, परंतु उसपर शुभग्रहकी दृष्टि हो तो वैसा फल नहीं होता कुछ शुभभी होता है ॥ ७३ ॥ लग्नेश दुष्ट स्थान(त्रिकमारक) के स्वामीसे युक्त होवै, तथा दुष्ट स्थानेश लग्नमें होवै तो मनुष्य रोगी होवै; यदि लग्नेश बलहीन हो तोभी वही फल है लग्नेश केंद्र त्रिकोणमें होवै तो मनुष्य रोगी न होवै सुखी होवै ॥ ७४ ॥ जिसभावमें लग्नेश है उसका स्वामी दुष्ट स्थानमें होवै तो देह दुर्बल रहे, ऐसेही लग्नादि जिस भावका स्वामी दुष्ट स्थानमें होवै तो उस भावका विनाश कहते हैं ॥ ७५ ॥

पापैर्विलग्ने गुलिके त्रिकोणे लग्नेऽहिनाथे गुलिकेन युक्ते ॥ लग्नेश्वरे पापयुतेऽथ लग्ने राहौ यदा वंचनचोरभीतिः ॥ ७६ ॥ शनेस्तु

योगात्प्रविलोकनाद्वा भीतिर्ध्रुवा वंचनचोरभूपैः ॥ राहौ विलग्ने सकुजेर्कपुत्रे राहौ बृहद्वीजमिहाहुरार्याः ॥ ७७ ॥ लग्नेश्वरे मृत्युगते सराहौ रंध्रे समांदौ तु तथैव वाच्यः ॥ लग्ने सराहौ गुलिके त्रिकोणे रंध्रे कुजे मांदियुते तथैव ॥ ७८ ॥

पापग्रह लग्नमें हो गुलिक त्रिकोणमें लग्नमें, राहु गुलिकसे युक्त हो अथवा लग्नेश पापयुक्त हो, लग्नमें राहु होवै तो ठग चोरोंसे भय होवै ॥ ७६ ॥ लग्नेश शनिसे युक्त वा दृष्ट होवे तो निश्चय ठग, चौर तथा राजासे भय होवै । जो राहु लग्नमें शनि मंगल सहित होवै तोभी वही फल है "शनि मंगल युक्त राहुको श्रेष्ठ आचार्य बृहद्वीज कहते हैं" ॥ ७७ ॥ लग्नेश अष्टम स्थानमें राहुयुक्त अथवा अष्टममें लग्नेश केतुयुक्त हो तौ भी वही फल कहना जो लग्नमें राहु, त्रिकोणमें गुलिक और अष्टममें कुज केतुयुक्त हो तौ भी वही फल कहना ॥ ७८ ॥

लग्नेश्वराक्रांततदंशनाथो राह्वारमांद्यादिभिरन्वितश्चेत् ॥ तस्मिन् बृहद्वीजमिहाष्टमेशसंयुक्तराश्यंशपतिः सराहुः ॥ ७९ ॥

लग्नेश जिस राशिके जिस अंशमें है उसका स्वामी यदि राहु, मंगल, केतु, शनिसे युक्त होवै अथवा उसमें बृहद्वीज हो यद्वा अष्टमेशस्थित राश्यंशेश राहुयुत हो तो वही फल होगा ॥ ७९ ॥

लग्नेश्वरे भूमिसुते तनुस्थे पापान्विते पापविलोकिते वा ॥ शिलाप्रहारैर्व्रणमुत्तमांगे खड्गादिभिर्वा कथयंति तज्ज्ञाः ॥ ८० ॥ शनिस्तथा चेद्व्रणमुत्तमांगे वाताग्निशस्त्रैः पतनेन वापि ॥ यदा भवेत्पंचघटीविलग्ने तदा बृहत्को न तदर्द्धलग्ने ॥ ८१ ॥

लग्नेश मंगल लग्नमें पापयुक्त वा पापदृष्ट होवै तो पत्थरकी चोटसे शिरपर व्रण (खोट) होवै अथवा ज्योतिषज्ञ खड्ग आदिसे व्रण कहते हैं ॥ ८० ॥ ऐसेही शनि होवे तो अग्निशस्त्र अथवा गिरनेके चोटसे शिरमें व्रण होवै, जब पांच घटीवाला लग्न हो तो बडाशिरवाला होता है उसके आधे लग्नमें नहीं ॥ ८१ ॥

आहुर्बृहत्कं मुनयस्तदूनलग्ने शिरः संकुचितं तु तज्ज्ञाः ॥ शुष्के खगे लग्नगते विलग्ने शुष्के यदा देहकृशत्वमाहुः ॥ ८२ ॥ लग्नेश्वरे शुष्कयुते तथैव शुष्कग्रहाणां भवनस्थिते वा ॥ लग्नाधिपे नाशगते तु शुष्कराशौ तनौ शुष्कमतीव कष्टम् ॥ ८३ ॥ लग्नाधिपस्यांशपराशिनाथः शुष्कग्रहस्थस्तनुशुष्कमाहुः ॥ शुष्के विलग्नेबहुपापयुक्ते तत्रापि देहस्य कृशत्वमाहुः ॥ ८४ ॥

पंच घट्यात्मक लग्नमें बडाशिर उसके आधा लग्नमें छोटा शिर कहा, जो लग्न मध्यम है उनमें संकुचित गोळ और छोटा शिर ज्योतिषज्ञ कहते हैं निर्बल ग्रहलग्नमें तथा लग्न निर्बल होवै तो देह कृश (माडा) कहते हैं यहां शुष्कपदसे जलचरसे अतिरिक्त राशिग्रहोंकाभी बोध होताहै ॥ ८२ ॥ लग्नेश निर्बलग्रहोंसे युक्त,तथा निर्बलग्रहके घरमें हो तो भी वही फल, और लग्नेश अष्टम निर्बल तथा लग्नमें निर्बल राशि होवै तो शरीर कृश तथा अतिकष्टयुत होवै ॥ ८३ ॥ लग्नेश जिस ग्रहके राशि अंशक में है वह निर्बलराशिमें हो वा स्वयं निर्बल हो तो शरीर सूखासा रहे निर्बल लग्न बहुत पापोंसे युक्त हो तो भी शरीरमें कृशता कहते हैं ॥ ८४ ॥

लग्ने जलर्क्षे शुभखेचरेंद्रैर्युक्ते तनुस्थौल्यमुदाहरंति ॥ लग्नाधिपस्तोयखगो बलाढ्यः सौम्यान्वितश्चेत्तनुपुष्टिमाहुः ॥ ८५ ॥ लग्नाधिपश्चेज्जलराशिसंस्थः शुभान्वितस्तोयखगेन दृष्टः ॥ लग्ने शुभक्षेत्रगतेपि चैवं लग्नेश्वरस्यांशपतौ जलर्क्षे ॥ ८६ ॥

लग्नमें जलराशि हो उसमें शुभग्रह हों तो शरीर स्थूल होवै ऐसा कहतेहैं, तथा लग्नेश जलग्रह बलवान् हो शुभग्रहयुक्त भी होवै तो शरीर पुष्ट कहते हैं ॥ ८५ ॥ लग्नाधिप यदि जल राशिमें शुभग्रह युक्त हो जलग्रह उसे देखे तो शरीर स्थूल होवै लग्नमें शुभग्रह राशि होनेमें तथा लग्नेश जिस राशि अंशकमें हो उसका स्वामी जलराशिमें हो तो भी वही फल जानना ॥ ८६ ॥

पापग्रहाणां च दृशा विहीने लग्ने शुभक्षेत्रगतेपि चैवम् ॥ लग्ने गुरौ तेन निरीक्षिते वा जलर्क्षगेणापि जले विलग्ने ॥ ८७ ॥ सौम्यान्विते शोभनखेचरेन्द्रैर्दृष्टे त्वतिस्थौल्यमुदाहरंति ॥ लग्ने शनौ राहुयुतेथ वा स्यात्पिशाचबाधा प्रवदंति संतः ॥ ८८ ॥

लग्न शुभग्रहकी राशि हो उस पर पापग्रहकी दृष्टि न हो तौ भी वही फल कहना लग्नमें बृहस्पति हो अथवा लग्नको बृहस्पति देखे, अथवा जलराशि लग्नको जलराशिगत बृहस्पति देखे तो भी वही फल कहना ॥ ८७ ॥ लग्नमें शुभग्रह हो शुभग्रहोंकी दृष्टि भी हो तो अतिस्थूल देह कहतेहैं, लग्नमें शनि राहुयुक्त होवै तो पिशाचकी पीडा,यों विद्वान् कहते हैं॥८८॥

लग्ने रविर्भूमिसुतेन दृष्टः श्वासं क्षयं विद्रधिगुल्मभाजम् ॥ भौमे विलग्ने शनिसूर्यदृष्टे खड्गादिभिः पीडितदेहभाक्स्यात् ॥ ८९ ॥

लग्नके सूर्यको मंगल देखताहो तो श्वासरोग, क्षयरोग, विद्रधिरोग, भोगनेवाला होवै, लग्नके मंगलको सूर्य शनि देखते हों तो तलवार आदिसे पीडित शरीरवाला होवै ॥ ८९ ॥

केतौ विलग्ने बहुपापदृष्टे पिशाचचौरैर्भवति ध्रुवं भीः ॥ लग्ने चरे तद्भवनेश्वरे वा चरस्थिते संचरति प्रजातः ॥ ९० ॥

लग्नमें केतु बहुत पापग्रहोंसे दृष्ट होवै तो निश्चय पिशाच तथा चौरोंसे भय होवै लग्नमें चरराशि हो अथवा लग्नेश चरराशिमें हो तो मनुष्य चलनेमें तत्पर रहे ॥ ९० ॥

संचारशीलश्चरभे विलग्ने लग्नांशके चैवमुदाहरन्ति ॥ विदेशभाग्यं चरभे विलग्ने चरे तदीशे चरखेटदृष्टे ॥ ९१ ॥

जैसा चरराशि लग्नमें होनेसे चलने फिरनेमें तत्पर कहाहै ऐसेही चरांशकमें भी कहते हैं चर लग्न लग्नेश चर राशिमें चर ग्रहसे दृष्ट होवै तो परदेशमें ऐश्वर्य होगा ॥ ९१ ॥

स्थिरे स्वदेशे बहुभाग्ययुक्तः स्थिरग्रहैर्भूरिधनान्वितः स्यात् ॥ मिश्रग्रहैः संयुतभाग्यकीर्तिर्नानाप्रदेशे प्रचरन्कुमार्गी ॥ ९२ ॥ लग्नेश्वरे वीर्ययुते स्वतुंगे गंभीरगामी पुरुषोन्यथा स्यात् ॥ हीने तदीशे स जडः शुभैस्तु दृष्टे युते वा न तथाविधे तत् ॥ ९३ ॥

स्थिर लग्न स्थिर ग्रहयुक्त हो लग्नेश स्थिरराशिमें होवै तो अपनेही देशमें बहुत ऐश्वर्य युक्त होवै स्थिर ग्रहभी इस योगके कर्ता हों तो बहुत धनसे युक्त होवै, चर स्थिरग्रह मिलकर योगकारक हों तो ऐश्वर्य तथा कीर्तिसे युक्त होकर अनेक देशोंमें फिरता रहै और कुमार्गी भी होवै ॥ ९२ ॥ लग्नेश बलवान् हो अपने उच्चमें हो तो पुरुष गंभीरतासे चलनेवाला होवै इसके विपरीत फलभी विपरीत होताहै, लग्नेश हीनबल नीचास्तंगतादि हो तो जड (मूर्ख) होवै परंतु उसपर शुभग्रहोंकी दृष्टि युक्त हो तो वैसा फल न होगा ॥ ९३ ॥

लग्ने शुभे शोभनदृष्टियुक्ते बाल्यात्सुखं तन्नहि पापयोगात् ॥ दुःखी भवेत्पापबहुत्वयोगे लग्ने तु बाल्यान्मरणांतकालम् ॥ ९४ ॥ वर्गोत्तमांशे यदि लग्ननाथे स्वोच्चांशके वा स्वसुहृद्दृकाणे ॥ शुभान्विते वा शुभदृष्टिपाते नरो भवेदामरणांतसौख्यः ॥ ९५ ॥

लग्नमें शुभ ग्रह हों तथा शुभ ग्रह लग्नको देखें तो बाल्यावस्थाहीसे सुख पावै पापग्रहोंसे सुख नहीं होता ऐसे योग दृष्टि आदिपापोंकी होवै तौ बाल्यावस्थासे मरणसमय पर्यंत दुःखी होवै ॥ ९४ ॥ लग्नेश वर्गोत्तमांशमें अथवा उच्चांशकमें वा मित्रद्रेष्काणमें शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट होवै तो मनुष्य मरणपर्यंत सुखी रहे ॥ ९५ ॥

लग्नांत्यलाभे शुभखेचरेंद्रे लग्नेश्वरे केन्द्रगते बलाढ्ये ॥ सिंहासनांशे यदि देवपूज्ये जातो भवेदादिममध्यसौख्यः ॥ ९६ ॥

लग्नार्थसोत्थे शुभदृष्टियोगे लग्नेश्वरे शोभनखेचरेंद्रे ॥ पारावतांश यदि दानवेज्ये जातो भवेदादिममध्यसौख्यः ॥ ९७ ॥

लग्न, बारहवें, ग्यारहवेंमें शुभ ग्रह हो लग्नेश बलवान् होकर केंद्रमें हो और बृहस्पति सिंहासनांशमें होवै तो प्रथम और मध्य अवस्थामें सौख्य मिले ॥ ९६ ॥ १।२।३ भावोंमें शुभ ग्रह हों वा इनको शुभग्रह देखें लग्नेश शुभग्रह हो. और शुक्र पारावतांशमें होवै तो प्रथम और मध्यम अवस्थामें सुख मिले ॥ ९७ ॥

बाल्ये सुखी स्यात्रिदशेंद्रपूज्ये केन्द्रे यदा लग्नपतिर्बलाढ्यः ॥ पारावतांशे यदि लग्ननाथे स्त्रीपुत्रमित्रार्थसुखान्वितोयम् ॥९८॥ देवलोकांशगे शुक्रे लग्नेशे गोपुरांशके ॥ लग्ने शुभग्रहैर्दृष्टे मध्यांते सुखमाप्नुयात् ॥ ९९॥ लग्ने शुभे धने पापे केंद्रे पापसमन्विते ॥ लग्नेश्वरे तूत्तमांशे आदौ दुःखं ततः सुखम् ॥ १०० ॥

यदि बृहस्पति केन्द्रमें हो लग्नेश बलवान् होकर पारावतांशमें होवै तो स्त्री, पुत्र, मित्र और धनके सुखसे युक्त रहे ॥ ९८ ॥ शुक्र देवलोकांशमें लग्नेश गोपुरांशकमें हो और लग्नमें शुभ ग्रहोंकी दृष्टि होवै तो मध्य और अंत्य अवस्थामें सुख पावै ॥ ९९ ॥ लग्नमें शुभ ग्रह धन स्थानमें पापग्रह केंद्रोंमेंभी पापग्रह हो और लग्नेश उत्तमांशकमें होवै तो प्रथम दुःख पीछे सुख मिले ॥ १०० ॥

लग्ने पापे धने सौम्ये भाग्ये कश्चिच्छुभग्रहः ॥ लग्नेशे देवलोकस्थे बाल्ये सौख्यमतोन्यथा ॥ १०१ ॥

लग्नमें पापग्रह, धन स्थानमें शुभग्रह तथा नवम स्थानमें कोई शुभग्रह हो और लग्नेश देवलोकांशकमें हो तो बाल्यावस्थामें सुख मिले अन्यथा नहीं मिले ॥ १०१ ॥

लग्नेश्वरे कर्मगते दिनेशे लग्नान्विते शोभनखेचरेंद्रैः ॥ योगे प्रदिष्टे तनुपे स्वतुंगे सत्कीर्तिमाहुर्मुनयोत्र तज्ज्ञाः ॥ १०२ ॥

लग्नेश दशम, सूर्य लग्नमें शुभ ग्रहों सहित हो ऐसे योगमें लग्नेश उच्चका होवै तो सत्कीर्तियुक्त होवै ऐसा ज्योतिषज्ञ मुनिजन कहतेहैं ॥ १०२ ॥

पापे विलग्नेशपतौ सराहौ केंद्रस्थिते कर्मणि पापखेटे ॥ नीचग्रहे लग्नगतेर्कदृष्टे दुष्कीर्तियुक्तः स भवेत्तदानाम् ॥ १०३ ॥

लग्नमें पापग्रह, अंशेश राहुयुक्त केंद्रमें, पापग्रह दशम स्थानमें और नीचग्रह लग्नमें सूर्यसे दृष्ट होवै तो मनुष्य दुष्कीर्तियुक्त अर्थात् दुष्टकर्मोंसे ख्यात होवै ॥ १०३ ॥

आरोहवीर्ये तु विलग्ननाथे भाग्याधिपे तादृशवीर्ययुक्ते ॥ विख्यातकीर्तिः प्रभवो नरस्तु शुभग्रहेणापि समन्विते स्यात् ॥ १०४ ॥

लग्न आरोहवीर्यसे युक्त हो नवमेशभी ऐसाही हो और शुभग्रहसे युक्त भी होवै तो मनुष्य विख्यात कीर्तिवाला होवै ॥ १०४ ॥

आदौ वयसि पूर्वार्द्धे सौख्यं लग्ने भृगोः सुते ॥ दुःखं तु परभागे च बंधौ पापे सुते तथा ॥ १०५ ॥

लग्नमें शुक्र होवे तो उमरके पूर्वार्द्धमें सुख मिले, चतुर्थ वा पंचममें पापग्रह होवै तो उत्तरार्द्ध उमरमें दुःख होवै ॥ १०५ ॥

लग्नाधिपे शुभयुते यदि तुंगभागे केंद्रत्रिकोणसहिते शुभदृष्टियुक्ते ॥ कर्माधिपेन सहिते यदि वा स्वगेहे सद्भाग्यकीर्तिधनधान्यचिरायुरेति ॥ १०६ ॥

यदि लग्नेश शुभग्रह युक्त उच राशिका केंद्र त्रिकोंणमें शुभग्रहोंसे दृष्ट हो अथ वा दशमेशसे युक्त हो यद्वा अपनी राशिमें होवै तो उत्तम ऐश्वर्य, उत्तम कीर्ति, धन, अन्नयुक्त और दीर्घायु होवै ॥ १०६ ॥

लग्नाधिपोतिबलवानशुभैरदृष्टः केंद्रस्थितः शुभखगैरवलोक्यमानः ॥ मृत्युं विधूय विदधाति सुदीर्घमायुःसार्द्धं गुणैर्बहुभिरूर्जितया च लक्ष्म्या ॥ १०७ ॥

लग्नेश अतिबलवान् हो, पापग्रह उसे न देखें, केंद्रमें हो, शुभ ग्रह उसे देखते हों तो मृत्युयोगको हटायके दीर्घायु, बहुत गुण, तथा श्रेष्ठ लक्ष्मीसहित करै ॥ १०७ ॥

केंद्रत्रिकोणनिधनेषु न यस्य पापा लग्नाधिपः सुरगुरुश्च चतुष्टयस्थौ ॥ भुक्त्वा सुखानि विविधानि सुपुण्यकर्मा जीवेच्च वत्सरशतं स विमुक्तरोगः ॥ १०८ ॥

।जिसके केन्द्र १।४।७।१० त्रिकोण ५।९ अष्टम ८ स्थानोंमें पापग्रह न हों और लग्नेश-तथा बृहस्पति केन्द्रमें हों तो अनेक सुखभोग करके वह पुण्यकर्मा निरोग रहकर सौ वर्ष जीवै १०८

लग्नेश्वरादतिबली निधनेश्वरोसौ केन्द्रस्थितैर्निधनरिष्फगतैश्च पापैः ॥ तस्यायुरल्पमथ वा यदि मध्यमायुरुत्साहसंकटवशात्परमायुरेति ॥ १०९ ॥

अष्टमेश लग्नेशसे अधिक बली हो केंद्र अष्टम छटे स्थानगत पाप होवैं तो अल्पायु अथवा मध्यमायु होवै अथवा अनेक संकट क्लेश भोगके अनेक उत्साहोंसे परमायु होव ॥ १०९ ॥

एकांशकस्था बुधशुक्रमन्दा धर्मे स्थिता लग्नमुपागता वा ॥
षष्ठाष्टमे वा हिमगुश्च यस्य सहस्रवर्षद्वयमस्य जन्तोः ॥ ११० ॥

नवम स्थानमें बुध, शुक्र, शनि एकही अंशकमें होवैं अथवा एकांशकहीमें लग्नस्थ होवैं छटे वा आठवे में चंद्रमा होवे तो दो हजार वर्ष आयु होवे ॥ ११० ॥

जीवांशकस्थाः सकला ग्रहेंद्राःकेंद्राश्रिता धर्मधनाश्रिता वा ॥
जातो नरः प्रव्रजितः स बाल्ये युगांतमाहुर्बहुशास्त्रकर्ता॥१११॥
मंदांशकस्था रविभौमजीवाः कर्माश्रिता धर्मयुता बलाढ्याः ॥
राशेः समाप्तौ हिमगौ विलग्ने युगांतमायुः श्रियमादधाति॥११२॥
धर्मेश्वरे धर्मगते च यस्य भौमांशकस्थे हिमगौ च दृष्टे ॥ मुनी-
श्वरोयं मुनियोगजातः शास्त्रार्थकर्त्ता युगमादधाति ॥ ११३ ॥

सभी ग्रह बृहस्पतिके अंशकमें केंद्र अथवा नवम वा द्वितीय भावमें हों तो मनुष्य बाल्यावस्थाहीसे योगी होकर युगांतपर्यंत जीवै और बहुत शास्त्र बनानेवाला होवै ॥ १११ ॥ सूर्य मंगल बृहस्पति शनिके अंशकमें हों नवम वा दशम स्थानमें स्थित हों बलवान् भी हों और राशिके अंत्य नवांशकका चंद्रमा लग्नमें होवै तो लक्ष्मीसहित रहे युगांत आयु हावै ॥११२॥ जिसका नवमेश नवममें हो उसे मंगलके अंशकमें स्थित चंद्रमा देखे तो इस मुनियोगमें जन्मवाला मनुष्य मुनीश्वर होकर शास्त्रकर्त्ता और युगांतजीवी होगा ॥ ११३ ॥

लग्नेशे धनराशिस्थे लग्नेशस्थांशपेपि वा ॥ तथा स्थिते लाभ-
नाथे विंशद्वर्षात्परं सुखम् ॥ ११४ ॥ लग्नेशस्थांशनाथे तु
केंद्रकोणोच्चसंयुते॥ लाभेशे वा तथा युक्ते त्रिंशद्वर्षात्परं सुखम्॥
॥ ११५ ॥ लग्नेशे शुभराशिस्थे शुभग्रहनिरीक्षिते॥ गोपुरांश-
गते वापि षोडशाब्दात्परं सुखम् ॥ ११६ ॥

लग्नेश अथवा जिस अंशकमें लग्नेस है उसका स्वामी दूसरे भाव में हो तथा ऐसेही लाभभावेश होवै तो वीस २० वर्षसे ऊपर सुख मिले ॥ ११४ ॥ लग्नेश जिस नवांशकमें है उसका स्वामी केन्द्र त्रिकोण अथवा उच्च राशिमें हो तैसेही लाभेश

भी युक्त होवै तो तीस ३० वर्षसे ऊपर सुख मिले ॥ ११५ ॥ लग्नेश शुभ ग्रहकी राशिमें हो उसे शुभ ग्रह देखे अथवा गोपुरांशमें होवै तो सोळह १६ वर्षसे ऊपर सुख होवै॥११६॥

ग्रहयोगेक्षणाभ्यां तु बलाबलवशादपि ॥ लग्नस्यैवं फलं प्रोक्तं श्रीमद्व्यंकटशर्मणा ॥ ११७ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिंतामणौ लग्नफलवर्णनो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

ग्रहयोग दृष्टिके तथा बल निर्बलके भी अनुसार लग्नका इसप्रकार फल श्रीमान् वेंकटशर्मानें कहा है ॥ ११७ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिंतामणौ महीधरभाषायां लग्नफलाध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ धनभावफलाध्यायः ।

कौटुंबाद्वर्त्तव्यान्मुखं च वाग्दक्षिणाक्षिपूर्वार्थान् ॥
विद्याभुक्तिविशेषान् दासान्मित्राणि च प्रवदेत् ॥ १ ॥

दूसरे स्थानसे निजपालनीय कुटुंबी मनुष्य,मुख, वाणी, दाहिना नेत्रादि, धन, विद्या, भोगविशेष, दास, मित्र इतनोंका विचार करना ॥ १ ॥

लग्नेश्वरेण सहिते यदि वित्तनाथे दुःस्थेऽस्थिनाशनमथास्फुजिदिन्दुयुक्ते ॥ नेत्रेश्वरे तनुगते यदि नैशिकांधः स्वोच्चे शुभग्रहयुते न तथा वदंति ॥ २ ॥ भान्वच्छलग्नपतिभिः सहिते तदीशे जात्यंधको भवति रंध्रव्रणांत्यगेपि ॥ रिष्फे धरासुतगते नयनं हि वामं नाशं तदा व्रजति सूर्यसुते तदन्यत् ॥ ३ ॥

द्वितीयेश लग्नेशसहित दुष्ट स्थानमें होवै तो हड्डी टूटे । शुक्र चंद्रमा सहित द्वितीयेश लग्नमें होवै तो रात्र्यंध होवै. यदि उच्च राशिमें हो यद्वा शुभग्रहसे युक्त होवै तो वह फल नहीं होवै ॥ २ ॥ द्वितीयेश, सूर्य, शुक्र और लग्नेश सहित होवै तो जन्मांध होवै तथा ८।६।१२ में हो तो भी यही फल है बारहवां मंगल होवै तो वामनेत्र शनि होवै तो दाहिना नेत्र नष्ट होवै ॥ ३ ॥

चंद्रार्कसंयुक्तहरौ विलग्ने शन्यारदृष्टेक्षिविनाशमाहुः ॥ शुभाशुभैर्बुद्बुदलोचनः स्याच्छुभैर्न दोषः सहितेक्षणाभ्याम् ॥ ४ ॥

सिंह लग्नके सूर्य, चंद्रमा, मंगल शनिसे दृष्ट हों तो नेत्रनाश कहतेहैं यदि योग एवं दृष्टि-कर्त्ता ग्रह शुभ अशुभ मिश्रित हों तो (बुद्बुदाक्ष) अधीरनयन होवे शुभ ग्रहोंके योगदृष्टिसे उक्त दोष नहीं होता ॥ ४ ॥

निमीलिताक्षश्च धनेशपापे तदीश्वरे शोभनदृष्टियुक्ते ॥ लग्नाधिपे पापबहुत्वयोगे यमेन दृष्टे स तु रोगिनेत्रः ॥५ ॥ नेत्रे शुभे तद्भवनेश्वरे वा सौम्यान्विते कारकखेचरेंद्रे ॥ लग्नेश्वरेणापि युतेऽथ दृष्टे विशालदृष्टिः स नरो विशेषात् ॥ ६ ॥

धनस्थानमें पापग्रह धनेशपर शुभग्रहकी दृष्टि होवै तो नेत्र मीचेसे रहे । लग्नेश बहुत पापग्रहों सहित होवै उस पर शनिकी दृष्टिभी होवै तो नेत्रोंमें रोग रहे ॥ ५ ॥ नेत्रस्थानमें शुभग्रह हो द्वितीयेश शुभयुक्त हो तथा कारक ग्रह शुभयुक्त हो लग्नेशसे भी युक्त वा दृष्ट होवै तो वह मनुष्य विशेषतासे बडी दृष्टिवाला होवै ॥ ६ ॥

शन्यारयोगे गुलिकेन युक्ते नेत्रेश्वरे तत्र तु नेत्ररोगः ॥ नेत्रे यदा पापबहुत्वयोगे यमेन दृष्टे सति रुग्णनेत्रः ॥७ ॥ नेत्रेश्वरस्यांशपतौ सपापे पापग्रहक्षेत्रगते तथैव ॥ नेत्राधिपे वासरनायके तु धरासुते वा गुलिकार्कदृष्टे ॥ ८ ॥

द्वितीयेश शनि मंगलसे युक्त तथा गुलिकसे भी युक्त होवै तो नेत्ररोग होवै द्वितीय स्थानमें बहुत पाप हों शनिकी दृष्टि होवै तो नेत्ररोगी होवै ॥ ७ ॥ द्वितीयेश जिसके अंशकमें है वह पापयुत हो तथा पापग्रहके राशिमें हो अथवा द्वितीयेश सूर्य वा मंगल हो गुलिक पर सूर्यकी दृष्टि होवे ॥ ८ ॥

उष्णोद्भवेनाप्यथ पित्तकासैर्नेत्रस्य रोगो भवति प्रमादैः ॥ अव्याजरोगैर्नयनस्य रोगस्तत्स्थानपे दुःस्थगते ससौम्ये ॥९ ॥ सहोदरात्मोद्भवशत्रुगेहे कलत्रमित्रादि लभेत्तथैव ॥ रव्यारयुक्ते सति नेत्रनाथे दृष्टे तु ताभ्यां नयनांतरक्तः ॥ १० ॥

तो गर्मीसे अथवा पित्त कफसे प्रमादोंसे नेत्ररोग होवै द्वितीयेश दुष्टस्थानमें शुभयुक्त होवै तो विना प्रमादसे नेत्ररोग होवै ॥ ९ ॥ ऐसेही भ्रातृस्थानसे भाईको पुत्रस्थानसे पुत्रको शत्रुस्थानसे शत्रुको सप्तम स्थानमे स्त्रीको नेत्ररोग कहना द्वितीयेश सूर्य मंगलसे युक्त वा दृष्ट होवै तो नेत्रोंके किनारे रक्तवर्ण रहे ॥ १० ॥

सौम्यग्रहौ कारकभावनाथौ स्यातां शुभा दृष्टिरसौम्यता तु ॥
पापग्रहैर्वीक्षणयोगतश्च पित्रादिकानां फलमेवमाहुः ॥ ११ ॥

कारक भावेश दो शुभ ग्रह हों शुभग्रह उन्हें न देखें पापग्रह देखें तो क्रूरदृष्टि होव ऐसे ही योगमें पापग्रहोंके योग एवं दृष्टिसे जिस स्थानसंबंधी वह कारक ग्रह हैं उसके अनुसार पिता आदियोंको वह फल कहते हैं ॥ ११ ॥

कुटुंबराशेरधिपे ससौम्ये केंद्रस्थिते स्वोच्चसुहृद्गृहे वा ॥ सौम्यर्क्ष-
युक्ते यदि जातपुण्यः कुटुंबसंरक्षणवाग्विलासः ॥ १२ ॥

द्वितीयेश शुभग्रह सहित केंद्रमें हो अथवा अपने उच्चमें वा मित्रराशिमें हो शुभराशिमें होवै तो वह पुण्यवान् कुटुंबका रक्षक होवै वाणीमें विलास उत्तमता होवै ॥ १२ ॥

स्वोच्चस्थिते शोभनखेचरेंद्रे कुटुंबराशौ शुभवीक्षिते वा ॥ अने-
कसंरक्षणजातपुण्यो लग्नेश्वरे वीर्ययुते स्वतुंगे ॥ १३ ॥ गुरौ कुटुं-
बे स्वपतौ यदि स्याद्भृगौ बुधे तादृशभावनाथे ॥ स्वोच्चे सुहृत्क्षे-
त्रगतेथ बंधौ परोपकारी जनरक्षकः स्यात् ॥ १४ ॥

द्वितीयभावमें शुभग्रह दृष्ट शुभग्रह अपने उच्चमें हो तो अनेकोंकी रक्षा करनेसे पुण्यवान् होवै, लग्नेश बलवान् हो अपने उच्चमें हो तो भी वही फल जानना, द्वितीय बृहस्पति द्वितीय स्थानमें हो अथवा ऐसे ही द्वितीयेश द्वितीयमें शुक्र वा बुध हो अथवा अपने उच्चमें वा मित्रराशिमें चौथे स्थानमें हो तो पराया उपकार करनेवाला लोगोंकी रक्षा करनेवाला होवै ॥ १३ ॥ १४ ॥

पापे तु तद्राशिपतौ तदानीं पापेक्षिते पापयुते स्वतुंगे ॥ लग्ने-
श्वरे हीनबले सपापे स्वजीवनोपायसहायको न ॥ १५ ॥ पापे
बहुत्वे स्वकुटुंबराशौ पापेक्षिते हीनबले तदीशे॥ दुःस्थे विलग्ना-
धिपतौ सपापे स्वजीवनं नास्ति सुखेन तस्य ॥ १६ ॥

द्वितीयेश पापग्रह पापयुत दृष्ट हो और अपने उच्चमें हो लग्नेश पापयुक्त हीनबल होवै तो अपने आजीवनके उपायमें दूसरा सहायक न होवै अर्थात् अपने गुजरका उपाय आपही करे ॥ १५ ॥ द्वितीय स्थानमें बहुत पापग्रह हो द्वितीयेश हीनबली पापग्रहसे दृष्ट हो लग्नेश पापयुक्त दुष्ट स्थानमें होवै तो उसका जीवन सुखपूर्वक न होवै ॥ १६ ॥

पत्यौ कुटुंबस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे ॥ शुभ-
स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुंगगे सर्वजनावनीशः ॥ १७ ॥

द्वितीयभावेश तीसरे शुभग्रह तथा पुरुषग्रह सू० मं० बृ० से दृष्ट हो शुभग्रहकी राशिमें वा अपने उच्चराशिमें होवै तो सब मनुष्योंका एवं पृथ्वीका राजा होवै ॥ १७ ॥

तन्नाथे गोपुरांशस्थे कुटुंबेशांशपे शुभे ॥ सिंहासनांशके वापि पंचाशज्जनरक्षकः ॥ १८ ॥

द्वितीयेश गोपुरांशकमें हो अथवा द्वितीयेश जिस ग्रहके अंशकमें हो वह शुभग्रह हो और सिंहासनांशकमें होवै तो पचास मनुष्योंकी रक्षा करनेवाला होवै ॥ १८ ॥

स्वोच्चत्रिकोणायगते कुटुम्बराशेः पतौ लग्नपतेबलाढये ॥ कुटुंबनाथस्थितराशिनाथे केंद्रस्थिते सर्वजनावनीशः ॥ १९ ॥

द्वितियेश अपने उच्च वा मूलत्रिकोणके ग्यारहवें भावमें यद्वा उच्च वा त्रिकोण लाभ स्थित ५। ९। ११ में हो लग्नेश बलवान् हो तथा जिसराशिमें द्वितीयेश है उसका स्वामी केंद्रमें होवै तो सर्व मनुष्योंका राजा होवै ॥ १९ ॥

द्वितीये पापसंयुक्ते कुटुंबेशे तथा स्थिते ॥ पापग्रहेण संदृष्टे दुर्घटे भावनं लभेत् ॥ २० ॥ आविंशते रक्षकः स्यात्कुटुंबेशे शुभैर्युते ॥ पारावतांशके तस्मिन् धने चंद्रसमन्विते ॥ २१ ॥

द्वितीय स्थानमें पापग्रह हो तथा द्वितीयेश पाप वा पापयुक्त दृष्ट होवे तो आजीविका कठिनतासे होवै ॥ २० ॥ यदि द्वितीयेश शुभग्रह युक्त होकर पारावतांशकमें हो द्वितीय स्थानमें चंद्रमा होवै तो बीस मनुष्योंका पालन करे ॥ २१ ॥

स्वोच्चे सुहृद्भे स्वगृहे तदीशे सिंहासने तद्भवनेश्वरे वा ॥ पारावतांशे गुरुदृष्टियुक्ते शतत्रयं शास्ति च जातपुण्यः ॥२२ ॥ कुटुंबनाथे परमोच्चयुक्ते देवेंद्रपूज्येन समीक्षिते वा ॥ तथाविधे तद्भवनेपि जातः सहस्ररक्षो भवति प्रतापैः ॥ २३ ॥

द्वितीयेश अपने उच्चमें, मित्रराशिमें अपने राशिमें सिंहासनांश वा पारावतांशमें, हो उसपर गुरुदृष्टि होवै तो वह पुण्यवान् तीन शत मनुष्योंके ऊपर हुकूमत चलावै ॥ २२ ॥ द्वितीयेश परम उच्चमें गुरुसे दृष्ट हो अथवा द्वितीय स्थानमें सिंहासनांश वा पारावतांशमें होवै तो अपने प्रतापोंसे एक सहस्र मनुष्योंका स्वामी होवै ॥ २३ ॥

सिंहासनांशे त्रिदशेशपूज्ये शुक्रे पुनर्गोपुरसंयुते तु ॥ ऐरावतांशे धनपे बलाढये जातस्त्वसंख्यातनृरक्षकः स्यात् ॥ २४ ॥

बृहस्पति सिंहासनांशमें और शुक्र गोपुरांशकमें तथा बलवान् द्वितीयभावेश ऐरावतांशमें होवै तो असंख्य मनुष्योंका स्वामी होवै ॥ २५ ॥

सुखेशे केंद्रभावस्थे शुभग्रहानिरीक्षिते ॥ सुखे सौम्ययुते वापि सुमुखः स नरो भवेत् ॥ २५ ॥ प्रफुल्लवदनः श्रीमान्केंद्रे सुखपतौ यदा ॥ स्वोच्चमित्रस्ववर्गस्थे तन्नाथे गोपुरांशके ॥ २६ ॥

द्वितीयेश केन्द्रमें शुभ ग्रहोंसे दृष्ट हो और द्वितीय भावमें शुभ ग्रह होवे वह मनुष्य सुमुख (सुवाणी) वाला होवै ॥ २५ ॥ द्वितीयेश केन्द्रमें अपने उच्च वा मित्रराशि वा अपने अंशकमें हो अथवा द्वितीयेश गोपुरांशमें होवे तो प्रफुल्लमुख श्रीयुक्त होवै ॥ २६ ॥

पापैर्युते सुखस्थाने तन्नाथे पापसंयुते ॥ नीचराशिगते वापि दुर्मुखः पापवीक्षिते ॥ २७ ॥ क्रोधयुक्तस नरः पापी तदीशे गुलिकान्विते ॥ पापयोगबहुत्वेस्मिन्नीचशत्रुवशं गतः ॥ २८ ॥

द्वितीय भाव पापयुक्त उसका स्वामी भी पापयुक्त हो अथवा नीच राशिमें पापग्रह उसे देखे तो (दुर्मुख) दुर्वाणीवाला होवै ॥ २७ ॥ द्वितीयेश गुलिकसे युक्त हो बहुत पाप द्वितीय स्थानमें हों तो वह मनुष्य पापी और क्रोधयुक्त होवै ॥ २८ ॥

वाक्स्थानपे सौम्ययुते त्रिकोणे केन्द्रस्थिते तुंगसमन्विते वा ॥ शुभेक्षिते पुंग्रहयोगयुक्ते वाग्मी भवेद्युक्तिसमन्वितोसौ ॥ २९ ॥

द्वितीयेश त्रिकोण वा केन्द्रमें शुभग्रहयुक्त हो अथवा उच्चराशिमें हो शुभग्रह उसे देखें पुरुष ग्रहसे युक्त हो तो चतुर युक्तियुक्त बात कहनेवाला होवै ॥ २९ ॥

वाक्स्थानपे देवपुरोहितेन युक्ते यदा नाशगतेत्र मूकः ॥ पित्रादिकानामियमेव रीतिरुक्ता मुनींद्रैर्बहुशास्त्रविद्भिः ॥ ३० ॥

द्वितीयेश बृहस्पतिसे युक्त अष्टम स्थानमें होवै तो गूंगा होवै ऐसेही पित्रादि भावोंका स्वामी होवै तो पित्रादियोंको मूकता (गूंगापन) बहुत शास्त्र जाननेवाले कहते हैं ॥ ३० ॥

वाचालकः केन्द्रगते तदीशे पारावतांशे परमोच्चभागे ॥ सिंहासने देवगुरौ भृगौ वा वर्गोत्तमे सोमसुतेन युक्ते ॥ ३१ ॥ वागीशस्यांशपे सौम्ये स्वोच्चे शुभसमन्विते ॥ गोपुरांशगते वापि वाग्मीपटुतरो भवेत् ॥ ३२ ॥

द्वितीयेश केन्द्रमें पारावतांशक और परम उच्चांशकमें हो बृहस्पति अथवा शुक्र सिंहासनांशमें हो वा वर्गोत्तमांशमें हो बुधसे युक्त होवै तो वाचाल (बहुत बोलनेवाला) होवै ॥ ३१ ॥ द्वितीयेश जिसके नवांशकमें हो वह शुभग्रह हो, अपने उच्चमें शुभग्रह युक्त हो अथवा गोपुरांशकमें हो तो बोलनेमें चतुर युक्तियुक्त बात करनेवाला होवै ॥ ३२ ॥

वागीशोपि बलान्वितः शुभयुतो वर्गोत्तमांशेपि वा वाग्ग्मी स्या-द्भवनेश्वरो गुरुयुतः पारावतांशेपि वा॥तन्नाथो भृगुणा बुधेन सहितस्त्वैरावतांशे तथा स्वोच्चे स्वे सुहृदां गृहे धनपतौ वाक्स्थान-कोलाहलः ॥ ३३ ॥

वागीश (द्वितीयेश) बलवान् शुभग्रहयुक्त वर्गोत्तमांशास्थित हो तो बोलनेमें चतुर होवै द्वितीयेश बृहस्पति युक्त हो अथवा पारावतांशमें हो, उस स्थानका स्वामी शुक्र वा बुधसे सहित यद्वा ऐरावतांशमें हो, तथा धनेश उच्च वा मित्रकी राशिमें होवै तो बहुत बोलने-वाला होवै ॥ ३३ ॥

सभाजडो वागधिपः सपापः कर्मस्थितो नीचगतोर्कयुक्तः ॥ मांद्यन्विते वाग्भवनेर्कयुक्ते पापैस्तु दृष्टे स जडोत्र जातः॥३४॥

द्वितीयेश पापयुक्त कर्मस्थित, नीचराशिगत, अस्तंगत हो द्वितीय स्थानमें केतु हो अथवा सूर्य हो पापग्रह उसे देखें तो वह मनुष्य सभाजड (मूर्ख) होवै ॥ ३४ ॥

केन्द्रे बुधे वागधिपे बलाढ्ये शुक्रे धनभ्रातृगते ससौम्ये ॥ स्वोच्चे धने दानवपूजिते वा ज्योतिर्विदां श्रेष्ठतमो नरः स्यात् ॥ ३५ ॥

बुध केन्द्रमें हो द्वितीयेश बलवान् हो शुक्र शुभयुक्त दूसरे वा तीसरे भावमें होवै अथव शुक्र अपने उच्चका दूसरे भावमें होवै तो मनुष्य ज्योतिषियोंमें श्रेष्ठ होवै ॥ ३५ ॥

गणितज्ञो भवेज्जातो वाग्भावे भूमिनन्दने ॥ ससोमे बुधसंदृष्टे केन्द्रे वा सोमनंदने ॥ ३६ ॥ वाग्भावपे बुधे स्वोच्चे लग्ने देवेंद्र-पूजिते ॥ शनावष्टमसंयुक्ते गणितज्ञो भवेन्नरः ॥ ३७ ॥ केंद्रत्रि-कोणगे जीवे शुक्रे स्वोच्चगते सति ॥ वाग्भावपेंदुपुत्रे वा गणितज्ञो भवेन्नरः ॥ ३८ ॥ वाग्भावपे रवौ भौमे गुरुशुक्रनिरीक्षिते ॥ पारावतांशगे सौम्ये तत्तद्युक्तिपरायणः ॥ ३९ ॥

द्वितीय स्थानमें मंगल चंद्रमासहित हो उसे बुध देखे वा बुध केन्द्रमें होवै तो मनुष्य गणित जाननेवाला होवै ॥ ३६ ॥ द्वितीयेश बुध अपने उच्चमें हो लग्नमें बृहस्पति और अष्टममें शनि होवै तो मनुष्य गणित विद्या जाननेवाला होवै ॥ ३७ ॥ बृहस्पति केन्द्र वा त्रिकोणमें हो शुक्र मीनका हो अथवा बुध वा द्वितीयेश अपने उच्चका होवै तो मनुष्य गणित विद्या जाननेवाला होवै ॥ ३८॥ द्वितीयेश सूर्य वा मंगल गुरु शुक्रसे दृष्ट हो बुध पाराव-तांशमें होवे तो मनुष्य ज्योतिषकी युक्ति जाननेमें तत्पर होवै ॥ ३९ ॥

गुरुशुक्रौ धनेशौ चेद्रविभौमनिरीक्षितौ ॥ मूलत्रिकोणतुंगे वा तर्कशास्त्रविदां वरः ॥ ४० ॥ संपूर्णबलसंयुक्ते गुरौ तद्भवनेश्वरे ॥ दिनेशभृगुसंदृष्टे शाब्दिकोयं नरो भवेत् ॥ ४१ ॥

द्वितीय भावेश बृहस्पति वा शुक्र हो उसे सूर्य मंगल देखें और मूल त्रिकोण वा उच्चमें होवै तो न्यायशास्त्र जाननेवालोंमें श्रेष्ठ होवै ॥ ४० ॥ द्वितीयेश बृहस्पति संपूर्ण बलयुक्त होवै उसको सूर्य शुक्र देखें तो वह मनुष्य वैयाकरण होवै ॥ ४१ ॥

वाग्भावपे बुधे स्वोच्चे गोपुरांशगते शनौ ॥ सिंहासने गुरौ वापि वेदांतज्ञो भवेन्नरः ॥ ४२ ॥ वेदांतपारिशीलः स्यात्केंद्रकोणे गुरौ सति ॥ बुधेन गुरुणा दृष्टे शनौ पारावतांशके ॥४३॥ उत्तमांशे भृगौ लग्ने केन्द्रे वा तद्विधे भृगौ ॥ देवलोकगते चंद्रे वेदांतज्ञानपारगः ॥ ४४ ॥ षट्शास्त्रवल्लभः केंन्द्रे जीवे दानवपूजिते ॥ सिंहासने गोपुरांशे वाग्भावस्थांशके बुधे ॥ ४५ ॥

द्वितीयेश बुध अपने उच्चमें शनि गोपुरांशमें हो अथवा बृहस्पति सिंहासनांशमें होवै तो मनुष्य वेदांत शास्त्र जाननेवाला होवै ॥ ४२ ॥ केन्द्र अथवा त्रिकोणमें बृहस्पति होवै और शनि पारावतांशकमें बुध बृहस्पतिसे दृष्ट होवै तो वेदांतशास्त्रमें अत्यंताभ्यासी होवै ॥ ४३ ॥ लग्नगत शुक्र उत्तमांशमें हो अथवा उत्तमांशका शुक्र केंद्रमें हो चंद्रमा देवलोकांशकमें होवैं तो वेदांतज्ञानमें पारंगत होवै ॥४४॥ बृहस्पति केंद्रमें शुक्र सिंहासनांशमें और द्वितीयभावगतांशकेश बुध गोपुरांशकमें होवै तो छओं शास्त्रोंका जाननेवाला होवै ॥ ४५ ॥

विप्रलंभो धनेशस्य राशीशस्थांशपे शनौ ॥ सपापे केंद्रकोणे वा भौमेप्येवं विनिर्दिशेत् ॥ ४६ ॥ परिहासकरो नित्यं भानुस्थितनवांशपे ॥ वाग्भावस्थे बलाढ्ये तु तस्मिन्वैशेषिकांशके ॥४७॥

धनभवेशकी राशिको स्वामीके स्थित नवांशका स्वामी शनि पापयुक्त होकर केंद्र वा कोणमें होवै तो अंगीकार करके प्रतिवाद करनेवाला होवै ऐसाही मंगल हो तो भी वही फल जानना ॥ ४६ ॥ सूर्य जिसराशिनवांशमें हो उसका स्वामी द्वितीय स्थानमें बलवान् तथा वैशेषिकांशमें होवै तो ठठोली करनेवाला (खुश मसकरा) होवै ॥ ४७ ॥

गुरौ बलाढ्ये धनराशियुक्ते तदीश्वराक्रांतनवांशनाथे ॥ केंद्रत्रिकोणे शुभवीक्षिते वा क्रमान्तविच्छास्त्रपरायणश्च ॥ ४८ ॥

बलवान् बृहस्पति द्वितीय स्थानमें हो द्वितीयेश जिस नवांशमें हो उसका स्वामी केंद्र वा त्रिकोणमें शुभ ग्रहसे दृष्ट होवै तो क्रमांत वेद तथा ६ शास्त्रोंमें निपुणभी होवै ॥ ४८ ॥

लग्नेश्वरे धनस्थे लग्ने वा सौम्यसंयुते तुंगे ॥ पारावते तदीशे जातो निगमांतविद्व्यये शुक्रे ॥ ४९ ॥

लग्नेश धनस्थानमें अथवा लग्नहीमें हो परंतु शुभयुक्त एवं अपने उच्चमें हो उसका स्वामी पारावतांशमें होवै और शुक्र बारहवे होवै तो मनुष्य वेद वेदांत शास्त्रपारग होवै ॥ ४९ ॥

लग्नेश्वरस्यांशपतिस्थराशिनाथस्थितांशाधिपतौ बलाढ्ये वैशेषिकांशे शुभदृष्टियुक्ते योगे बहुत्वे धनलाभमाहुः ॥ ५० ॥ वित्तेश्वरेण सहिते भवराशिनाथे कर्माधिपस्थनवभावपदृष्टियुक्ते ॥ वैशेषिकांशकयुते परमोच्चभागे योगे बहुत्वधनलाभमिहाहुरार्याः ॥ ५१ ॥

लग्नेश जिस ग्रहके नवांशमें हो वह जिसकी राशिमें हो वह जिसके नवांशमें हो वह बलवान् तथा वैशेषिकांशगत और शुभग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त होवैं तो बहुत धनलाभ होवै ॥ ५० ॥ ग्यारहवें भावका स्वामी धनेशसे युक्त हो उसे कर्मेशस्थित नवांशेश देखे वैशेषिकांशमें हो, परमोच्चांशकमें होवै तो बहुत धनलाभ होवै ऐसा फल श्रेष्ठ आचार्य कहते हैं ॥ ५१ ॥

धर्माधिपेन सहिते धनराशिनाथे लग्नेश्वरस्थितनवांशपतीश्वरेण ॥ दृष्टे चतुष्टयगते शुभदृष्टियोगे जातस्तु भूरिधनलाभमुपैति बाल्ये ॥ ५२ ॥

द्वितीयेश नवमेंशसे युक्त हो, लग्नेशके नवांशेशसे दृष्ट हो, केंद्रमें हो, शुभग्रह उसे देखे तो बाल्यावस्थाहीमें बहुत धन पावै ॥ ५२ ॥

लग्नार्थलाभभवने शुभखेचरेंद्रे स्वोच्चे सुहृद्गृहगतेत्र विशेषितांशे ॥ तुंगांशके धनपतिस्थनवांशनाथदृष्टेऽथ भूरि धनलाभमुपैति बाल्ये ॥ ५३ ॥

लग्न द्वितीय और लाभ भावोंमें शुभ ग्रह उच्च मित्र राशियोंमें तथा वैशेषिकांशमें हों अथवा उच्चांशकमें हों तथा द्वितीयेशस्थितनवांशेशसे दृष्ट हों तो बाल्यही में बहुत धन पावै ॥ ५३ ॥

लग्नेशे धनराशिस्थे धनेशे लाभराशिगे ॥ लाभेशे वापि लग्नस्थे बहुनिध्यादिकं भवेत् ॥ ५४ ॥

लग्नेश धनस्थानमें धनेश लाभ स्थानमें हो अथवा लाभेश लग्नमें होवै तो बहुत निधिवस्तु आदि होवैं ॥ ५४ ॥

सर्वग्रहादतिबली यदि लग्ननाथः केंद्रे स्थितस्त्रिदशपूजितसंयुतश्च ॥ वैशेषिकांशकयुते धनराशिनाथे वित्तं स्ववीर्यबलतोर्जितमाहुरार्याः ॥ ५५ ॥ लग्नेशसंयुतनवांशपतिस्थराशिनाथे बलेन सहितो धनपस्य मित्रम् ॥ केंद्रत्रिकोणसहितः स्वगृहेथ यद्वा जातः स्ववीर्यधनमेति बहुप्रकारैः ॥ ५६ ॥

लग्नेश सभी ग्रहोंसे बलवान् होकर बृहस्पतिसे दृष्ट केंद्रमें हो द्वितीयेश वैशेषिकांशकगत होवै तो अपने बल पराक्रमसे कमाया धन होवै ऐसा श्रेष्ठ आचार्य कहतेहैं ॥ ५५ ॥ लग्नेश जिस नवांशमें है उसका स्वामी जिस राशिमें है उसका स्वामी बलवान् हो तथा धनभावेशका मित्र होवै केंद्र वा त्रिकोणमें हो अथवा स्वराशिमें होवे तो अपने बल पराक्रमसे बहुत प्रकारका धन पावै ॥ ५६ ॥

वित्तेश्वरो लाभविलग्नपाभ्यां युक्तास्त्रिकोणे यदि केंद्रराशौ ॥ शुभेक्षितः कालबलान्वितश्च जातः स्ववीर्याद्धनमेति मध्ये ॥ ॥५७॥ अंते धनं याति धनेशयुक्तराशौ विलग्नेशयुते ससौम्ये ॥ तदीश्वरे लग्नगते बलाढ्ये लाभेश्वरादेवमुदाहरंति ॥ ५८ ॥

धनभावका स्वामी लाभेश और लग्नेशसे युक्त त्रिकोण ५।९ अथवा केन्द्र १।४।७।१० में हो शुभ ग्रह उसे देखें तथा कालबलसे युक्त होवें तो मनुष्य मध्यावस्थामें अपने पराक्रमसे धन पावै ॥ ५७ ॥ जिस राशिमें द्वितीयेश है उसीमें लग्नेश और बुध भी होवैं उस भावका स्वामी लग्नमें बलयुक्त होवै तो पिछली अवस्थामें धन पावै लाभेशसे भी यह योग होता है अर्थात् जैसे धनेशके साथ कहा वैसाही लाभेशसे भी जानना ॥ ५८ ॥

तृतीयराशौ धनलग्ननाथौ बलान्वितौ पुंग्रहदृष्टियुक्तौ ॥ तदीश्वरेणापि युतौ प्रदृष्टौ भ्रातुर्द्धनं याति विशेषितांशे॥५९॥तृतीयभावाधिपतौ धनस्थे तत्र स्थिते कारकखेचरेंद्रे ॥ दृष्टे युते वा तनुपेन जातो भ्रातुर्द्धनं याति विशेषितांशे ॥ ६० ॥

धनेश तथा लग्नेश तीसरे भावमें बलवान् और पुरुषग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हों तृतीयेशसेभी युक्त वा दृष्ट होवैं और वैशेषिकांशकमें होवैं तो भाईसे धन पावै॥५९॥तृतीयेश धनस्थानमें हो,और तहां कारक ग्रहभी होवैं, लग्नेशसे युत वा दृष्ट हो वैशेषिकांशकमेंभी होवै तो भाईसे धन पावै॥६०॥

परस्परं वित्तपलग्ननाथौ निरीक्षितौ केंद्रयुतौ शुभांशे ॥ निरीक्षितौ लग्नशुभेश्वराभ्यां जातो धनं याति बहुप्रकारः ॥ ६१ ॥

वित्तेश्वरं पश्यति लग्ननाथे युते स्ववीर्याद्धनमेति मर्त्यः ॥ तृतीयभावाधिपकारकाभ्यां दृष्टे युते तादृशमेति वित्तम् ॥ ६२ ॥

लग्नेश धनेश केंद्रोंमे तथा शुभांशकोंमें बैठे आपसमें देखते हों लग्नेश नवमेश उन्हे देखें तो बहुत प्रकारसे धन पावै ॥ ६१ ॥ लग्नेश धनेशको देखे अथवा एक भावमें दोनहूं होवैं तो मनुष्य अपने बलसे धन पावै तथा तृतीयभावेश और कारक ग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त हो तो वही फल होगा ॥ ६२ ॥

दृष्टे युते वित्तपतौ बलाढचे सुखेश्वरेणापि धनं जनन्याः ॥ बंधोः सकाशादथ वा कृषेश्च धनं प्रयात्यत्र विशेषितांशे ॥६३॥ दृष्टे युते वित्तपतौ धनस्थे तत्र स्थिते कारकखेचरेंद्रे ॥ दृष्टे युते वा तनुपेन जातो भ्रातुर्धनं याति विशेषितांशे ॥ ६४ ॥

धनेश चतुर्थेशसे युक्त वा दृष्ट हो बलवान् भी होवै तो मातासे धन पावै, वैशेषिकांशकमें भी होवै तो बंधु (ज्ञाति) से अथवा कृषिकर्मसे धन पावै ॥ ६३ ॥ धनेश धनभावमें तृतीयेशसे युक्त वा दृष्ट हो तहां कारक ग्रहभी होवै, अथवा लग्नेशसे दृष्ट वा युक्त होवें वैशेषिकांशकमें भी होवें तो भाईसे धन पावै ॥ ६४ ॥

पुत्रेशतत्कारकखेचराभ्यां तथाविधे वित्तपतौ बलाढचे ॥ दृष्टे युते लग्नपतौ बलाढचे वैशेषिकांशे सुततो धनं स्यात् ॥ ६५ ॥ वैशेषिकांशे यदि लग्ननाथे जातः स्वपुत्रार्जितमेव वित्तम् ॥ षष्ठेशतत्कारकखेचराभ्यां तथाविधे वित्तपतौ बलाढचे ॥ ६६ ॥ शत्रोः सकाशात्तु धनं प्रयाति वैशेषिके लग्नपतौ बलाढचे ॥ कलत्रतत्कारकयोस्तथैव वित्तं कलत्राल्लभते हि जातः ॥ ६७ ॥

पंचमेश और पुत्रकारक ग्रहसे युक्त वा दृष्ट बलवान् धनश बलवान् लग्नेशसे युक्त वा दृष्ट होवै वैशेषिकांशमें होवै तो अपने पुत्रका कमाया धन पावै ॥ ६५ ॥ लग्नेशभी वैशेषिकांशकमें होवै तो भी वही फल होगा वैसाही धनेश षष्ठेश और शत्रु कारक ग्रहसे युक्त वा दृष्ट होवै ॥ ६६ ॥ और लग्नेश बलवान् वैशेषिकांशमें होवै तो शत्रुसे धन पावै उक्त प्रकार वाला धनेश सप्तमेश तथा स्त्रीकारक ग्रहसे युक्त वा दृष्ट होवै तो स्त्रीसे धन पावै ॥ ६७ ॥

पितुर्धनं कारकभावपाभ्यां गुरोः सकाशादपि धर्ममूलात् ॥ कर्मेशतत्कारकदृष्टियोगाद्धनं स्वदानग्रहणात्स्वकीर्त्या ॥ ६८ ॥ लाभेशतत्कारकदृष्टियोगादेवं वदंत्यत्र धने बहुत्वम् ॥ ६९ ॥

वैसाही धनेश दशमेश, एवं तत्कारक ग्रहसे युक्त दृष्ट होवै तो पितासे तथा उपलक्षणसे राजासे धन पावै और यहां लक्षणसे धर्ममूल धनप्राप्ति, धर्मेश तत्कारक दृष्टि योगसे जानना. कर्मभावेश राज्यकारक ग्रहसे युक्त वा दृष्ट होनेमेंभी धन अपने देने लेनेसे तथा अपनी कीर्तिसे होवै. ॥ ६८ ॥ एवंविध धनेश लाभेश तथा लाभभावकारकग्रह युक्त दृष्ट होनेमें बहुत प्रकार धनकी प्राप्ति कहतेहैं ॥ ६९ ॥

धने पापग्रहाः प्रोक्ता बलाढ्यास्ते तथा भवेत् ॥ नीचारिमूढभावस्थैर्दृग्योगात्खेचरैरपि ॥ ७० ॥ तत्तद्भावाधिपैर्वित्तनाशस्तन्मुखतो भवेत् ॥ सहोत्थबंधुपुत्रारिकलत्रादेरयं क्रमः ॥ ७१ ॥

धन भावमें पापग्रहभी बलवान् होवैं तो धनवान् करतेहैं जो ग्रह धन भावमें नीच, शत्रु भाव, अस्तंगत हों उनसे भी लग्नेशादि वैशेषिकांशगत बलवान् ग्रहोंके योग वा दृष्टिसे धन होताहै ॥ ७० ॥ जैसे धन भावमें भाई, बंधु, पुत्र, शत्रु, कलत्र आदि भावेशोंके शुभ संबंध तथा उनके बलवान् होनेसे उनके द्वारा वा उनसे धनप्राप्ति कही है वैसेही उन उन भावोंके स्वामियोंके निर्बल क्रूरांशादिगत संबंध होनेसे उनके द्वारा धननाश भी होताहै ७१

लग्नाधिपे हीनबले सपापे रिष्फे धनेशे दिननाथयुक्ते ॥ नीचस्थिते वा शुभदृष्टियुक्ते जातस्य वित्तं हरति क्षितीशः॥७२॥व्ययेशे धनभावस्थे रिष्फस्थे लाभनायके ॥ दुःस्थे धनेशे नीचे वा राजदंडाद्धनक्षयः ॥ ७३ ॥ धनेशे नाशराशिस्थे सपापे नीचराशिगे ॥ राजकारकसंयुक्ते राजदंडाद्धनक्षयः ॥ ७४ ॥

लग्नेश हीनबल पापयुक्त होवै, धन भावेश छटे भावमें सूर्ययुक्त होवै अथवा नीचराशिमें होवै उसे पापग्रह देखें तो मनुष्यका धन राजा हरलेवै ॥ ७२ ॥ व्ययेश धनभावमें लाभेश बारहवें धनेश त्रिकस्थानमें हो अथवा नीच राशिमें होवै तो राजदण्डसे धनक्षय होवै ॥ ७३ ॥ धनेश अष्टम राशिमें हो पापयुक्त नीचका होवै उसके साथ राजकारक ग्रहसे युक्त होवै तो राजदण्डसे धनक्षय होवै ॥ ७४ ॥

धनव्ययेशौ व्ययवित्तसंस्थौ लग्नेश्वरेणापि निरीक्षितौ चेत्॥लग्नाधिपे नाशगते सपापे राज्ञां प्रकोपाद्धननाशमाहुः ॥ ७५ ॥कर्मेश्वरे लाभगते विलग्ननाथेन युक्ते यमकंटकांशे ॥ दंष्ट्राकरालांशगतेथ वापि राज्ञां प्रकोपाद्धननाशमाहुः ॥ ७६ ॥

धनेश व्ययेश धन व्यय स्थानोंमें परस्पर अर्थात् धनेश व्ययमें व्ययेश धनमें लग्नेश उन्हें देखै और लग्नेश पापयुक्त अष्टम स्थानमें होवे तो राजाओंके कोपसे धननाश कहतेहैं ॥ ७५ ॥ दशमेश लाभ स्थानमें लग्नेशसे युक्त यमघंटकांश अथवा दंष्ट्राकरालांशमें होवे तो वही पूर्वोक्त फल राजाओंके कोपसे धननाश कहते हैं ॥ ७६ ॥

धनायपौ भूमिजदृष्टियुक्तौ क्रूरांशगौ हीनबलौ सपापौ ॥ चौरादि-भावाधिपदृष्टियुक्तौ चौराग्निभूपैर्द्धननाशमेति ॥ ७७ ॥ कर्मेश्वरे नाशगते सपापे क्रूरादिषष्ट्यंशगते विशेषात् ॥ धनायपाभ्यां सहिते तदानीं लोकापवादाद्धननाशमाहुः ॥ ७८ ॥ वित्तेश-संयुक्तनवांशनाथयुक्तांशकस्थानपतौ सपापे ॥ दुःस्थे विलग्ने-श्वरदृष्टियुक्ते चौराग्निभूपैर्द्धननाशमेति ॥ ७९ ॥

धनेश लाभेश मंगलसे दृष्ट, क्रूरांशगत, हीनबल, पापयुक्त और अष्टमेशादि (त्रिकेश) युक्त होवें तो चौर अग्नि अथवा राजासे धननाश पावै ॥ ७७ ॥ दशमेश पापयुक्त अष्टम स्थानमें. विशेष करके क्रूर आदि षष्ट्यंशकमें होवै, धनेश लाभेशसे युक्त होवे तब लोकापवाद (झूठेकलंक) से धननाश कहते हैं ॥ ७८ ॥ धनेश जिस नवांशकमें हो उसके स्वामीका अंशनाथ सपाप त्रिकस्थ हो लग्नेश उसे देखे तो चोर अग्नि राजासे धननाश पावै ॥ ७९ ॥

धनेशस्थनवांशस्य नाथो दुस्थोथ पापयुक् ॥ क्रूरांशकगतो वापि निर्धनोयं भवेन्नरः ॥ ८० ॥ धने क्रूरादिसंयुक्ते तदीशे पाप-संयुते ॥ तथैव लाभराशीशे धनहीनो भवेन्नरः ॥ ८१ ॥

धनेश जिस नवांशकमें है उसका स्वामी दुष्ट स्थानमें तथा पापयुक होवे अथवा क्रूरांशकमें होवे तो मनुष्य निर्द्धन होवै ॥ ८० ॥ धन स्थानमें क्रूरग्रह धनेश पापयुत होवै ऐसा ही लाभेशभी पापयुक्त होवै तो नर धनहीन रहे ॥ ८१ ॥

व्ययेशसंयुक्तनवांशनाथो युक्तो धनेशेन निरीक्षितो वा ॥ नीचा-र्कगो हीनबलः सपापः केंद्रस्थितश्चेदपि निर्द्धनः स्यात् ॥ ८२ ॥

व्ययभावेश जिस नवांशकमें हो उसका स्वामी धन भावेशसे युक्त, अथवा दृष्ट हो, नीच अथवा अस्तंगत हो, बलहीन, पापयुक तथा केंद्रमें होवै तो मनुष्य धनरहित होवै ॥ ८२ ॥

धनेशाश्रितराशीशसंयुक्तांशपतिर्यदि ॥ कालदण्डाद्यंशयुक्ते नि-र्धनोयं भवेन्नरः ॥ ८३ ॥ यत्किञ्चिद्धनसंयुक्तो धनेशे केंद्रको-णगे ॥ क्रूरषष्ट्यंशसंयुक्ते नीचस्थेर्कयुतेपिवा ॥ ८४ ॥ यत्किं-

चिद्वित्तमायाति लाभेशस्थांशराशिपे ॥ गुरुणा भृगुणा दृष्टे क्रूर-षष्ट्यंशसंयुते ॥ ८५ ॥

धनेश जिस राशिमें है उसके स्वामीके स्थित नवांशका स्वामी यदि कालदंडादि अंशक युक्त होवै तो यह मनुष्य निर्धन होवै ॥ ८३ ॥ धनेश केंद्र वा त्रिकोणमें क्रूरषष्ट्यंशयुक्त होवै तथा नीच राशिमें अथवा अस्तंगत होवै तो थोडे धनसे युक्त रहे ॥ ८४ ॥ लाभेश जिस नवांशकमें है उसका स्वामी बृहस्पति शुक्रसे दृष्ट होवै और क्रूरषष्ट्यंशमें होवै तो थोड़ा धनलाभ होवै ॥ ८५ ॥

लाभलग्नधनेशानां युक्तांशाः क्रूरसंज्ञकाः ॥ केंद्रत्रिकोणयुक्ता-नामुत्पन्नो धनिको भवेत् ॥ ८६ ॥ वैशेषिकांशे धनपे स्वोच्चमू-लत्रिकोणगे ॥ क्रूरषष्ट्यंशसंयुक्ते लाभेशे सर्वनाशभाक् ॥ ८७ ॥ उत्पन्नो धनिको लग्ने नाशे वैशेषिकांशके ॥ धनेशे क्रूरषष्ट्यंशे चोक्तौ केंद्रगतौ तथा ॥ ८८ ॥ सद्यो धनी धनेशेन कर्मनाथो यतो यदि ॥ कर्मेशस्थांशपतिना लाभनाथस्तथा विदुः ॥ ८९ ॥

लाभ, लग्न, धन भावोंके स्वामी जिन २ नवांशकोंमें होवें क्रूरसंज्ञक होवैं परंतु वे ग्रह केंद्र कोणमें होवैं तो मनुष्य धनवान् होवै ॥ ८६ ॥ धनेश वैशेषिकांशमें अपने उच्च वा मूल-त्रिकोणका हो तथा लाभेश क्रूरषष्ट्यंशमें होवै तो सर्वनाश होवै ॥ ८७ ॥ लग्नमें विनाश वा वैशेषिकांश होवै धनेश क्रूरषष्ट्यंशमें होवै ये दोनों केंद्रमें होवैं तो मनुष्य धनवान् होवै ॥ ८८ ॥ धनेशसे दशमेश युक्त होवै तथा दशमेशस्थित नवांशेशसे लाभेश युक्त होवै तो तत्काल धनी होवै यह दो योग हैं ॥ ८९ ॥

लग्नेशे धनराशिस्थे लाभेशे कर्मसंयुते ॥ धनेशस्यांशपे सौम्ये धनिको नामतो भवेत् ॥ ९० ॥ सहस्रनिष्कभर्त्ता स्याल्लग्नेशस्थ-नवांशपे ॥ धनेशस्यांशपे सौम्ये गुरुणा वा निरीक्षिते ॥ ९१ ॥ लग्नेशे धनराशिस्थे लाभेशे कर्मसंयुते ॥ लाभाधिपेन संदृष्टे गुरुणा वा निरीक्षिते ॥ ९२ ॥ सहस्रनिष्कभर्त्ता स्याल्लग्नेशस्थ-नवांशपे ॥ गोपुरांशगते कर्मनाथेन सति वीक्षिते ॥ ९३ ॥

लग्नेश दूसरे. लाभेश दशममें होवै और धनेश शुभग्रहके अंशकमें होवै तो नाम उसका सेठ होवै धन पास न रहे ॥ ९० ॥ लग्नेश तथा धनेश शुभग्रहोंके अंशकोंमें होवैं अथवा बृहस्पति उनको देखे तो एक हजार रुपयाका स्वामी होवैं ॥ ९१ ॥ लग्नेश दूसरे

लाभेश दशमें होवै तथा लग्नेशको लाभेश यद्वा बृहस्पति देखे तो एक हजारका स्वामी होवै तथा जिस नवांशकमें लग्नेश है उसका स्वामी गोपुरांशकमें हो उसे दशमेश देखे तो भी वही फल होगा ॥ ९२ ॥ ९३ ॥

कर्मेशसंयुक्तनवांशनाथसंयुक्तसप्तांशपतौ बलाढ्ये ॥ शुक्रेण देवेन्द्रपुरोहितेन दृष्टे सहस्रद्वयनिष्कभर्ता ॥ ९४ ॥ सौम्यषष्ट्यंशसंयुक्ते धनलाभे बलान्विते ॥ तदीशेपि तथा युक्ते सहस्रत्रयनिष्कयुक् ॥ ९५ ॥ वैशेषिकांशगे वित्तनाथे गुर्विंदुभास्करे ॥ तथा विधो भवेशोपि बलवाँश्चेत्तथा धनी ॥ ९६ ॥ धनेशस्थदृकाणेशसंयुक्तनवभागपः ॥ सर्वोत्तमबलोपेतस्त्वष्टसाहस्रनिष्कयुक् ॥ ९७ ॥

दशमेश जिस ग्रहके नवांशकमें है वह भी जिस ग्रहके सप्तांशकमें है वह बलवान् होवै शुक्रसे बृहस्पतिसे दृष्ट होवै तो दो हजारका स्वामी होवै ॥ ९४ ॥ वही उक्त ग्रह सौम्य षष्ट्यंशमें २ । ११ भावमें हो बलवान् होवै जिसके राशिमें बैठाहै वहभी सौम्यषष्ट्यंशसंयुक्त होवै तो तीन हजारका स्वामी होवै ॥ ९५ ॥ धनेश, बृहस्पति, चंद्रमा, सूर्यमेंसे कोही वैशेषिकांशकमें हो ऐसाही लाभेशभी बलवान् होवै तो वैसाही धनवान् होवै ॥ ९६ ॥ धनभावेश जिस द्रेष्काणमें हो उसका स्वामी नवांशेश सहित तथा समस्त उत्तम बलयुक्त होवै तो आठ हजार मुद्राका स्वामी होवै ॥ ९७ ॥

लग्नेशस्थदृकाणेशसंयुक्तमुनिभागपः ॥ वैशेषिकांशकगतस्त्वयुतं धनमाप्नुयात् ॥ ९८ ॥ व्यये शुक्रे धने जीवे स्वांशे वैशेषिकांशके ॥ लग्नेशेपि तथा युक्ते तदूर्ध्वमुपयाति सः ॥ ९९ ॥

लग्नेश जिसके द्रेष्काणमें हो उसके साथ सप्तांशेश हो और वैशेषिकांशकमें होवे तो दशहजार धन पावै ॥ ९८ ॥ बारहवां शुक्र दूसरा बृहस्पति अपने वा वैशेषिकांशकमें हो लग्नेशभी ऐसाही होवै तो उससेभी अधिक धन पावै ॥ ९९ ॥

गुरौ लग्नेशसंयुक्ते धने वैशेषिकांशके ॥ केन्द्रत्रिकोणगे वापि तदूर्ध्वं वित्तमश्नुते ॥ १०० ॥ कर्मेशस्थदृकाणस्य नाथसंयुक्तसप्तपः ॥ ऐरावतांशसंयुक्तो धनलक्षं समश्नुते ॥ १०१ ॥ लक्षद्वयं धनं याति चतुष्केंद्रे शुभान्विते ॥ सिंहासने धनेशेपि सति पारावतांशके ॥ १०२ ॥

बृहस्पति लग्नेशसे युक्त धन भावमें वैशेषिकांशकगत होवै अथवा केन्द्र त्रिकोणमें होवै तो दश हजारसे भी अधिक धन पावै ॥ १०० ॥ सप्तांशेश दशमेशगतद्रेष्काणेशके साथ होवै तथा ऐरावतांशयुक्त होवै तो एक लक्ष धन भोगता है ॥ १०१ ॥ जिसके चारों केन्द्रोंमें शुभ ग्रह होवैं धनेश सिंहासनांशमें वा पारावतांशमें होवै तो दो लक्ष धन पावै ॥ १०२ ॥

लक्षत्रयाधिकारी स्याल्लाभलग्नधनाधिपे ॥ वैशेषिकांशकगते मृद्वंशाद्वियुतेथ वा ॥ १०३ ॥ तदूर्ध्वं वित्तपः स्यात्तु धनलाभपती यदा ॥ वृद्धिकेंद्रगतौ तौ चेद्बलिनौ भाग्यपस्तथा ॥१०४॥ केंद्रत्रिकोणमे वीर्यस्त्वथ वा भवनाथयुक् ॥ वैशेषिकांशगश्चेत्तु धनलक्षं समश्नुते ॥ १०५ ॥

लाभेश लग्नेश धनेशमेंसे कोही वैशेषिकांशमें अथवा मृद्वंशकमें होवै तो तीन लक्षका स्वामी होवै ॥ १०३ ॥ यदि धनेश लाभेश उदयी यद्वा आरोही हों केन्द्रमें हों बलवान् होवैं तो लक्षसे ऊपर धन पावैं, ऐसेही भाग्येश हो तो वही फल जानना ॥ १०४ ॥ भाग्येश केन्द्र त्रिकोणमें बलसहित होवै अथवा लाभेश युक्त होवै और वैशेषिकांशमें होवै तो एक लक्ष पावै ॥ १०५ ॥

लग्नांशनाथभाग्येशाः परमोच्चांशसंयुताः ॥ वैशेषिकांशे लाभेश तदा कोटीश्वरो भवेत् ॥ १०६ ॥ ऋणप्रदो विलग्नेशसंयुक्तनवभागपः ॥ दृष्टो देवेन्द्रगुरुणा मृद्वंशादिसमन्वितः ॥१०७॥ वित्तलाभपसंयुक्तत्र्यंशकेशनवांशपः ॥ वैशेषिकः केंद्रकोणे ऋणदाता भवेन्नरः ॥ १०८ ॥

लग्नका थंशेश तथा नवमेश परम उच्चांशकोंमें होवैं और लाभेश वैशेषिकांशकमें होवै तो एक करोड धनका स्वामी होवै ॥ १०६ ॥ जिसके नवांशकमें लग्नेश है उसे बृहस्पति देखे तथा मृद्वंश आदि शुभांशकमें होवै तो ऋण देनेवाला (साहुकार) होवै ॥ १०७ ॥ धनेश लाभेश जिस द्रेष्काणमें हों उनके स्वामी जिस २ नवांशकमें हों उस२ के स्वामी वैशेषिकांशोंमें केन्द्रगत होवै तो ऋणदाता होवै ॥ १०८ ॥

ऋणग्रस्तो घने पापे लग्नेशे व्ययसंयुते ॥ कर्मेशे लाभनाथेन युते दृष्टे विशेषतः ॥ १०९ ॥ दिनेशकरलुप्तस्तु धनेशो नीचराशिगः ॥ पापान्विते धने रंध्रे ऋणग्रस्तो भवेन्नरः ॥ ११० ॥

धन स्थानमें पापग्रह हो लग्नेश बारहवां हो विशेष करके नवेश लाभेशसे दृष्ट वा युक्त होवै तो मनुष्य ऋण (कर्जा) से ग्रस्त रहे ॥ १०९ ॥ धनेश अस्तंगत नीचराशिगत होवै धनाष्टम भाव पापयुक्त होवै तो मनुष्य ऋणग्रस्त रहे ॥ ११० ॥

धनेशे नीचराशिस्थे क्रूरषष्ट्यंशसंयुते ॥ लाभेशेपि तथा युक्ते ऋणग्रस्तो भवेन्नरः ॥ १११ ॥ लाभेशास्थितभांशेशनाथे दुःस्थे शुभान्विते ॥ क्रूरषष्ट्यंशसंयुक्ते ऋणग्रस्तो भवेन्नरः ॥ ११२ ॥

धनेश नीचराशिमें क्रूरषष्ट्यंशयुक्त होवै, लाभेश भी ऐसाही होवै तो मनुष्य ऋणसे दबा रहे ॥ १११ ॥ लाभेश जिसकी राशि नवांशकमें है उसका स्वामी दुष्टभावमें पापयुक्त होवै तथा क्रूर षष्ट्यंशमें होवै तो मनुष्य ऋणग्रस्त होवै ॥ ११२ ॥

वाक्स्थानपे षष्ठगते सराहौ राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा ॥ दंतस्य रोगं पतनं च तेषां भुक्तौ तयोर्वा प्रवदंति तज्ज्ञाः ॥ ११३ ॥ वाक्स्थानपेनापि युतोऽरिनाथस्तद्भावपस्थांशपयुक्तनाथः ॥ षष्ठे-श्वरेणापियुतः स्वभुक्तौ दंतादिरोगः पतनं च तेषाम् ॥ ११४ ॥

द्वितीयेश राहुयुक्त छठे भावमें हो अथवा राहु जिस राशिमें है उसके स्वामीसे युक्त होवै तो उनकी दशा अंतर्दशामें दांतोंका रोग होवै और दांत गिरजावें ऐसा फल ज्योतिषज्ञ कहते हैं ॥ ११३ ॥ षष्ठेश द्वितीयेशसे युक्त होवै तथा जिस भावमें है उसका स्वामी जिसके नवांशकमें है वह षष्ठेशसे युक्त होवै तो दंतादिरोग होवै तथा दांत गिरजावैं ये फल उक्त योग कर्त्ताओंके दशादिमें होते हैं ॥ ११४ ॥

वाक्स्थानपेनापि युतोर्कपुत्रः पापैर्युतो वातभयात्प्रमादः ॥ सूर्यस्तु कोपाद्भवति प्रमादो राज्ञां कुजे चोष्णभयात्प्रमादः ११५॥

शनैश्चर द्वितीयेशसे तथा पापग्रहोंसे युक्त होवै तो वातरोगसे प्रमाद अनवधानता एक प्रकार उन्मत्तता होवै, ऐसा सूर्य होवै तो राजाके कोपसे, मंगळ होवै तो गर्मीके भयसे प्रमाद होवै ॥ ११५ ॥

तदीश्वरेणापि युतेंदुपुत्रे सराहुकेतावरिभावयुक्ते ॥ राहुस्थितर्क्षा-धिपसंयुते वा भुक्तौ तदा तालुभवः स रोगः ॥ ११६ ॥

द्वितीयेशसे युक्त बुध राहु वा केतु सहित छठे भावमें होवै अथवा जिस राशिमें राहु है उसके स्वामीसे युक्त होवै तो तालुस्थानमें रोग द्वितीयेशकी दशामें होवै ॥ ११६ ॥

राजारिनाथौ तनुभावयुक्तौ साच्छाक्षिपौ भूमिपतेः प्रकोपात् ॥ उत्पाटनं नेत्रमुशंति तज्ज्ञा नीचांशगौ पापयुतौ तथैव ॥११७॥

राजारिनाथस्थितभांशकेशौ दुःस्थौ विलग्नेशयुतौ तथैव ॥
साच्छाक्षिपौ नाशगतौ तथैव शुभैर्न दृष्टौ नयनप्रमादः ॥११८॥

दशम तथा छठे भावके स्वामी लग्नमें शुक्र और धन व्ययेशसे युक्त होवै तो राजाके कोपसे नेत्र उखाडे जावैं ऐसा ज्योतिषज्ञ कहते हैं वही १० । ६ भावोंके स्वामी नीचांशक स्थित तथा पापयुत हों तो भी वही फल जानना ॥ ११७ ॥ दशमारिभावेश जिन ग्रहोंके नवांशकोंमें होवैं यदि दुष्ट स्थानोंमें होवैं तथा लग्नेशसे युक्त होवैं तथा शुक्र और २ । १२ भावेशोंसे युक्त होकर द्वादश स्थानमें होवैं, शुभ ग्रह उन्हें न देखें तो नेत्र अनवधान रहैं ११८

तद्भावपाभ्यामथ कारकाभ्यां पित्रादिकानां फलमेवमाहुः ॥
॥ ११९ ॥ कर्णस्य विच्छेदनमाहुरार्याः सौरे सभौमे धनपे विलग्ने ॥ रोगाधिपे वित्तपतौ विलग्ने नाशस्थिते मंदसुतारयुक्ते॥
॥१२०॥पित्रादिकानां फलमेवमूह्यं तत्स्थाननाथग्रहकारकेभ्यः॥
भुक्तीश्वरे[1] ह्यच्छनिशाकराभ्यां केंद्रे युते राजतमत्र पात्रम्॥१२१॥

जैसा विचार उक्त २ भावोंका कहा वैसाही पिता, भ्राता, पुत्र, स्त्री आदि भावेशोंसे भी विचार करना जिस भावमें उक्त योग मिले उसीको अर्थात् पित्रादिको धनलाभ, ऋणी, दंतरोग, नेत्र कर्ण रोग आदि कहना ॥ १९ ॥ शनैश्चर मंगल सहित होवे धनेश लग्नमें होवै तथा षष्ठेश और धनेश लग्नमें, शनि मंगल द्वादश भावमें होवै तो कान कटे वा फूट जावैं. ये दो योग हैं ॥ १२० ॥ ऐसेही विचार पित्रादि भावोंका भी करना उन भावेश एवं उन उन भावों के कारक ग्रहोंके साथ उक्त योग होनेमें पित्रादियोंका कर्णविच्छेद फल कहना अब पात्र कहते हैं धनेश शुक्र चंद्रमा युक्त केंद्रमें होवै तो चांदीके पात्र उसके घरमें होवैं ॥ १२१ ॥

सचंद्रपुत्रामरनाथपूज्ये केंद्रस्थिते स्वर्णमयं हि पात्रम्॥ तदीश्वरे कोणचतुष्टये वा वैशेषिकांशे यदि तादृशं तत् ॥ १२२ ॥ मृद्वंशके वा परमोच्चभांशे स्थिते तदीशे यदि तादृशं तत् ॥ स्वांशादिकानां परमोच्चराशौ शशांकजीवाच्छविदां यदंशे ॥ १२३ ॥ वीर्यान्वितो भुक्तिपतिस्तदंशे भुक्तेस्तु पात्रं सदृशं हिरण्यम्॥१२४॥

बुध सहित बृहस्पति केंद्रमें होवै तो स्वर्णपात्र होवैं, धनेश त्रिकोण केंद्रमें अथवा वैशेषिकांशकमें होवै तो सुवर्णपात्र होवै ॥ १२२ ॥ ऐसेही धनेश मृद्वंशकमें अथवा परमोच्च

---

१ भुक्तीश्वरसे यहां धनेश लिया है, मतांतरसे दशमेशका बोधकभी है ।

राश्यंशकमें होवै तो वैसाही फल होगा। अपने अंशोंमें यद्वा परमोच्च राश्यंशकोंमें चंद्रमा, बृहस्पति, शुक्र, बुधके जिन अंशोंमें बलवान् धनेश होवै, उसके अनुसार सुवर्णादि पात्र होंगे ऐसा कहना ॥ १२३ ॥ १२४ ॥

मृद्वंशके भुक्तिपतौ विशेषात्पारावतादौ बलपूर्णयुक्ते ॥ केन्द्रस्थिते मित्रशुभेक्षिते स्याच्छंसंति पात्रं बहु भुक्तिकाले ॥१२५॥ विचित्रपात्रं प्रवदंति तज्ज्ञा भुक्तीश्वरे केंद्रगते बलाढये ॥ शुक्रामरेज्येंदुसुता बलाढ्यास्तैरेव युक्तेत्र विशेषितांशे ॥ १२६ ॥

भुक्तीश्वर मृद्वंशकमें विशेषतः पारावतादि अंशकोंमें पूर्ण बलयुक्त होवै, केन्द्रमें हो, मित्र एवं शुभग्रहोंसे दृष्ट होवैं तो भोजन कालमें बहुत पात्र होवै ॥१२५॥ भुक्तीश्वर केंद्रमें बलवान् हो तथा शुक्र बृहस्पति बुध बलवान् होवैं इनसे भुक्तीश युक्त होवै वैशेषिकांशमें होवै तो ज्योतिषज्ञ भोजनकालमें अनेक प्रकारके पात्र होवैं ऐसा कहते हैं ॥ १२६ ॥

लग्नेश्वरेण सहितौ यदि भुक्तिनाथौ षष्ठस्थितौ यदि तदा प्रवदंति लौहम् ॥ पात्रं तदीश्वरयुतौ यदि वा विनाशस्थानर्क्षगौ सुदृढमत्र सुलोहपात्रम् ॥ १२७ ॥ कांस्यं वदंति किल भुक्तिपतौ बलाढये वैशेषिकांशसहिते यदि सौम्यदृष्टे ॥ भुक्तीश्वरस्थितनवांशपतिर्यदंशे तद्राशिपः शुभयुतोति तथैवमाहुः ॥ १२८ ॥

दशा दशांतरेश यदि लग्नेशसहित छटे भावमें होवैं तो लोहेके पात्र मिलें यदि वह तीनों षष्ठेश सहित द्वादश स्थानमें होवैं तो वही लोहपात्र दृढ और सुंदर मिले ॥ १२७ ॥ दशेश बलवान् होवै वैशेषिकांशकमें शुभग्रह दृष्ट होवै तो कांशीके पात्र विशेष होवैं, जिसके नवांशकमें दशेश बैठा है वह जिसके अंशके नवांशकमें है वह शुभ ग्रहयुक्त हो तोभी वही फल कहते हैं ॥ १२८ ॥

पापग्रहेण सहिते यदि भुक्तिराशौ तद्राशिनाथयुतभागपतौ तदंशे॥ तद्राशिपे गतबले च शुभैरदृष्टे भुक्तौ कृतौ समदृढं कथयंति तज्ज्ञाः ॥ १२९ ॥

भुक्तिराशि (धनस्थानराशि) पापग्रहसहित होवै उसके स्वामीसे युक्त जो नवांश है उसका स्वामी भुक्तिराशीके अंशमें होवै, भुक्तिराशीश हीनबल शुभग्रहोंसे अदृष्ट होवै तो भोजन समयमें, अदृढ (कच्चे) पात्र होवैं ॥ १२९ ॥

धातुद्वययुतं पात्रं भुक्त्यंशे नाथराशिगे॥ पापग्रहेण संदृष्टे कालके बलवर्जिते ॥ १३० ॥

भुक्ति स्थानमें जो अंश है वही भुक्त्यंश राशि होवै अर्थात् भुक्त्यंश वर्गोत्तमांशमें होवै उसे पाप ग्रह देखे कालसंज्ञक अंशमें. तथा बलरहित होवै तो दो धातुके पात्र होवैं ॥ १२० ॥

बह्वाशनं भुक्तिपतौ सपापे दावाग्निदंडायुधकालभागे ॥ नीचांशके पापनिरीक्षिते वा शुभैर्न दोषः सहितेक्षणाभ्याम् ॥ १२१ ॥

भुक्तिपति पापयुक्त दण्डायुध वा दावाग्नि अथवा कालअंशकमें होवै तो वहुत भोजन करे अथवा नीचांशकमें पापदृष्ट होवै तो भी वही फल होगा शुभग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त यह योग होवै तो वह बह्वाशी फल नहीं होगा ॥ १२१ ॥

भुक्तिस्थाने शुभयुते तदीशे शुभसंयुते ॥ शुभग्रहेण संदृष्टे सुखभुक्स नरो भवेत् ॥ १२२ ॥ भुक्तिसौख्ययुतः श्रीमांस्तदीशे बलसंयुते ॥ विशेषितांशके वापि गुरुशुक्रनिरीक्षिते ॥ १२३ ॥ भुक्तौ स्वोच्चे त्रिकोणे वा तदीशेपि बलान्विते ॥ कारकेपि विशेषांशे शुभदृष्टे सुखाशनी ॥ १२४ ॥

भुक्तिस्थानमें शुभग्रह भुक्तीश शुभग्रहसे युक्त दृष्ट होवै तो वह मनुष्य सुखपूर्वक भोजन करनेवाला होवै ॥ १२२ ॥ भुक्तीश बलवान् वैशेषि ांशमें होवै अथवा बृहस्पति शुक्रसे दृष्ट होवै तो सुखसे भोजन करे ॥ १२३ ॥ भुक्तिस्थानमें ग्रह अपने उच्च वा मूल त्रिकोणका होवै भुक्तीश बलवान् होवै कारकांश वा विशेषांशमें होवै शुभदृष्ट होवै तो सुखसे भोजन करे ॥ १२४ ॥

कालोचिताशनी भुक्तिनाथे देहेशवीक्षिते ॥ पापग्रहेण वा दृष्टे नीचांशादियुते न तु ॥ १२५ ॥ अन्नप्रदो द्वितीयेंशे गुरुसौम्ययुतेक्षिते ॥ वैशेषिकांशकयुते मृद्वंशादियुतेपि वा ॥ १२६ ॥ गुरुशुक्रयुते भुक्तौ नाथे सौम्यनिरीक्षिते ॥ वैशेषिकांशकयुते अन्नदाता नरो भवेत् ॥ १२७ ॥ भुक्तिराशिपतौ वीर्ये केन्द्रे तूपचयेपि वा ॥ बलयुक्तैः शुभैर्दृष्टे त्वन्नदाता भवेन्नरः ॥ १२८ ॥ सौम्ये स्वोच्चगते भुक्तौ मित्रसौम्यनिरीक्षिते ॥ नाथे वैशेषिकांशे वा सुखभुक्तिप्रदो भवेत् ॥ १२९ ॥

भुक्तीशपर लग्नेशकी दृष्टि होवै तो जिस समयमें जो उचित है वही भोजन करे, अथवा पाप ग्रहसे दृष्ट नीचांशादियुक्त होवै तो वह फल विपरीत जानना ॥ १२५ ॥ द्वितीय भाव भावांश गुरुबुधसे युक्त वा दृष्ट होवै वैशेषिकांश अथवा मृदंशादि युक्त होवै तो मनुष्य अन्न

दाता होवै ॥ १३६ ॥ भुक्ति स्थानमें गुरु शुक्र होवें भावका स्वामी शुभ ग्रहोंसे दृष्ट होवै, वैशेषिकांशमें होवै तो मनुष्य अन्नदाता होवै ॥ १३७ ॥ भुक्ति राशिका स्वामी बलवान् होवै, केंद्र वा उपचयमें होवै, बलवान् शुभग्रहोंसे दृष्ट होवै तो मनुष्य अन्न देनेवाला होवै ॥ १३८ ॥ उच्चका बुध धनभावमें मित्र एवं शुभ ग्रहोंसे दृष्ट होवै अथवा भावेश वैशेषिकांशमें होवै तो सुखपूर्वक भोजन देनेवाला होवै ॥ १३९ ॥

अल्पाशी रुचिकामः स्याद्भुक्तिनाथे शुभग्रहे ॥ स्वोच्चे वा शुभसंदृष्टे मृद्वंशादिसमन्विते ॥१४०॥ परान्नभुक्तदीशे तु क्रूरषष्ट्यंशसंयुते ॥ नीचखेचरसंदृष्टे तद्दूषणपरो नरः ॥ १४१ ॥ भुक्तिस्थानाधिपे मंदे तदीशे मन्दसंयुते ॥ नीचेर्कसूनुना दृष्टे श्राद्धभुक्सततं नरः ॥ १४२ ॥

भुक्तिभावका स्वामी शुभग्रह उच्चका वा शुभग्रहोंसे दृष्ट और मृद्वंशादि युक्त होवै तो थोडा भोजन रुचिपूर्वक इच्छानुकूल पदार्थोंका करे ॥ १४० ॥ द्वितीयेश क्रूरषष्ट्यंशमें नीचगत ग्रहसे दृष्ट होवै तो पराये अन्न खावै यदि नीचगतग्रहसे दृष्ट होवै तो भोजनके दूषणोंमें तत्पर रहै ॥ १४१ ॥ द्वितीयेश शनि होवै अथवा द्वितीयेश शनियुक्त होवै नीचमें शनिदृष्ट होवै तो वारंवार श्राद्धान्न भोजन करनेवाला होवै ॥ १४२ ॥

कुभोजी भुक्तिनाथे तु शन्यारगुलिकान्विते ॥ नीचशत्रुयमांशादौ शुभदृष्टिविवर्जिते ॥ १४३ ॥ तदीशे शुभसंयुक्ते शीघ्रभुग्बलसंयुते ॥ द्वितीये शुभराशौ वा शुभखेचरसंयुते ॥१४४॥ तदीशे चरराशौ वा भुक्तौ वा तादृशे ग्रहे ॥ तादृशे पापसंबंधे चिरभोक्ता तु दूषकः ॥ १४५ ॥

भुक्तिभावेश शनि मंगल वा गुलिकसे युक्त, नीच, शत्रु और यमांशादिमें हो शुभग्रह उसे न देखें तो कुभोजन करनेवाला होवै ॥ १४३ ॥ भुक्तीश शुभग्रहसे युक्त बलवान् होवै तो शीघ्र भोजन करनेवाला होवै, दूसरे भावमें शुभग्रहकी राशि शुभ ग्रहयुक्त होवै तो भी शीघ्र भोजन करे ॥ १४४ ॥ भुक्तीश चर राशिमें अथवा चरग्रह भुक्तिस्थानमें होवै उसी प्रकार जैसा पहिले शुभग्रह संबंध कहा है वैसा पाप ग्रह संबंध होवै तो बडी देरीतक भोजन करे और भोजनमें दूषणभी लगावै ॥ १४५ ॥

विलग्नसप्ताष्टमवित्तराशौ दिनेशयुक्ते क्षितिसूनुदृष्टे ॥ भौमेथ वा वासरनाथदृष्टे स्फोटाग्निभीतिं प्रवदेत्खलाद्वा ॥ १४६ ॥ लग्नां-

त्यशत्रुमदने सति भूमिपुत्रे मांद्यन्विते कमलबंधुनिरीक्षिते वा ॥ मूढारिनीचभवने यदि वा क्षितीजे त्वाज्यासृगादिसहितः स भवेत्तदानीम् ॥ १४७ ॥

लग्न, सप्तम, अष्टम, द्वितीय भावमें द्वितीयेश सूयसे युक्त, मंगलसे दृष्ट, अथवा पापग्रह, मंगल, सूर्यसे दृष्ट होवै तो विस्फोटक (व्रण)--यद्वा अग्निकी भय होवै ॥ १४६ ॥ मंगल लग्न, द्वादश, छठे, सातवें में शनियुक्त सूर्यदृष्ट, अथवा अस्तंगत, शत्रु नीचराशिमें होवै तो मनुष्य रुधिररोग युक्त रहे ॥ ४७ ॥

मंदात्मजेन सहिते यदि भूमिपुत्रे वित्तेथ वा निधनराशिमुपागते वा ॥ तेनैव वीक्षितयुते धनभावनाथे त्वाज्यस्पृशादिनियतं प्रवदंति तज्ज्ञाः ॥ १४८ ॥ पापेक्षिते रविसुते धनराशियुक्ते पापान्विते शुनकभीतिमुपैति मर्त्त्यः ॥ तद्भावनाथसहिते दिन- नाथपुत्रे दृष्टेथ वा शुनकभीतिमुपैति मर्त्त्यः ॥ १४९ ॥

मंगल शनिके साथ दूसरे अथवा अष्टम स्थानमें होवै धनभावेश मंगलसे युक्त वा दृष्ट होवै तो रुधिरविकारका रोग निश्चय होता है ऐसा ज्योतिषज्ञ कहते हैं ॥ १४८ ॥ धन स्थानमें पापदृष्ट शनि पापयुक्त भी होवै तो कुत्तेसे भय होवै, द्वितीयेशके साथ शनि होवै अथवा धनेशको शनि देखे तो मनुष्यको कुत्तेके काटनेका भय होवै ॥ १४९ ॥

राहौ द्वितीये गुलिकेन दृष्टे युक्तेथ वा सर्पभयं वदन्ति ॥ कद- न्नभुग्भूमिसुतेन युक्ते पित्रादिकानां फलमेवमाहुः ॥ १५० ॥ लग्नेश्वरे शोभनखेचरेंद्रे निध्यादिलाभं धनभावयुक्ते ॥ सौम्ये द्वितीये यदि सत्त्वहीने पापेक्षिते वाक्चलनं तदाहुः ॥ १५१ ॥

धन स्थानमें राहु गुलिकसे दृष्ट वा युक्त होवै तो सर्पकी भय कहते हैं वही राहु मंगलसे युक्त होवै तो कदन्न (कोदो वानरा आदि) खानवाला होवै पित्रादिभावोंमें ऐसा योग होवै तो उनको भी वही फल कहते हैं ॥ १५० ॥ लग्नेश शुभग्रह धनभावमें होवै तो निधि (उत्तम वस्तु) आदिका लाभ होता है, यदि बुध धनस्थानमें निर्बल तथा पापदृष्ट होवै तो चंचल बोलना (हेकलाआदि) होवै ॥ १५१ ॥

वाक्स्थानपेंद्रौ यदि सत्त्वहीनौ क्रूरांशगौ वाक्पवनार्दितः स्यात् ॥ वाक्स्थानपे धीरतया विहीने पापेक्षिते वाक्चलनं

तदाहुः ॥ १५२ ॥ पापे धने पापनिरीक्षिते वा क्रूरांशगे पापयुते विशेषात् ॥ तत्स्थानपे पापनिरीक्षितेपि विषप्रयोगः खलु वंचनादेः ॥ १५३ ॥

द्वितीयेश और लग्नेश बलहीन क्रूरांशकगत होवै तो जबान वायुरोगसे पीडित होवै, द्वितीयेश निर्बल पापदृष्ट होवे तो जबान चलायमान (अस्थिर) होना कहते हैं ॥ १५२ ॥ धन स्थान पापग्रहसे दृष्ट होवै क्रूरांशकगत पापग्रहसे विशेषतः युक्त होवै द्वितीयेश पापदृष्ट भी होवै तो ठगपनी आदिसे विष (जहर) का प्रयोग होवै ॥ १५३ ॥

मित्रादिस्थानपवशादेवं तेषां फलं वदेत् ॥ नाथकारकभावानां बलाबलवशात्तथा ॥ १५४ ॥ सर्वेषामुपकारार्थं रहस्यार्थप्रकाशकः ॥ धनभावफलाध्यायो वर्णितोऽव्ययसूनुना ॥ १५५ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिन्तामणौ धनभावफलनिरूपणो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

इस प्रकारके योग मित्र आदि भावेशोंसे मित्रादियोंको भावेश भावकारक ग्रहोंके बलाबलके अनुसार कहना ॥ १५४ ॥ अव्ययके पुत्र वेंकटेशने सर्वसाधारणके उपकारार्थ गुप्त अर्थको प्रकट करनेवाला धनभावफलाध्याय वर्णन किया ॥ १५५ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिन्तामणौ महीधरकृतायां माहीधरभाषायां धनभावफलाध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ तृतीयचतुर्थभावफलविचाराध्यायः ।

सहजेन सहजविक्रमौषधसहायान्गलोरस्थानम् ॥
विद्यादक्षिणकर्णं भक्ष्यविशेषांश्च मूलादीन् ॥ १ ॥

तीसरे भावसे भाई, पराक्रम, औषधि, सहाय, कंठ हृदय, स्थान, दाहिना कान, कंद, मूल आदि खानेके पदार्थोंका विचार होता है, सोई आगे प्रत्येक योगवश कहते हैं ॥ १ ॥

नाशस्थितौ सोदरनाथभौमौ पापेक्षितौ सोदरनाशमाहुः ॥ पापर्क्षगौ पापसमागमौ वा भ्रातॄन् समासाद्य विनाशहेतुः ॥ २ ॥

तृतीयेश और मंगल पापदृष्ट बारहवें भावमें होवें तो भाइयोंका नाश कहते हैं, अथवा वे दोनों पापग्रहराशिमें पापग्रहोंके साथ होवैं तो भाइयोंको पैदा करके उसके नाशका कारण होवैं ॥ २ ॥

नीचर्क्षगौ सोदरकारकाख्यौ नीचांशगौ पापसमागमौ वा ॥ क्रूरादिषष्ट्यंशयुतौ तदानीं भ्रातॄन्समासाद्य विनाशमाहुः ॥ ३ ॥

तृतीयेश और भ्रातृकारक ग्रह नीच राशिमें नीचांशकमें अथवा पापयुक्त होवैं तथा क्रूर आदि षष्ट्यंशमें होवें तो हुये भाइयोंका नाश कहते हैं ॥ ३ ॥

पापग्रहे सोदरभावयुक्ते सोऽस्थेथ वा पापनिरीक्षिते स्यात्॥ तदीश्वरे पापखगांतरस्थे सहोदराणां कथयंति नाशम् ॥ ४ ॥ पापांतरे पापनिरीक्षिते वा पापान्विते नीचगृहान्विते वा ॥ तृतीयभावे शुभखेचरेंद्रैर्न वीक्षते सोदरनाशमाहुः ॥ ५ ॥

पापग्रह तीसरे होवें अथवा तृतीय भावको पापग्रह देखें उसका स्वामी पापग्रहोंके बीचमें होवै तो भाइयोंका नाश कहते है ॥ ४ ॥ तीसरा भाव पापग्रहोंके बीच पापदृष्ट वा पापयुक्त होवै शुभग्रहोंसे न देखा जावै तो भ्रातृनाश कहते हैं ॥ ५ ॥

भ्रातृस्थानाधिपस्यांशराशीशे नाशराशिगे ॥ नीचारातिगते मूढे त्वाहुः सोदरनाशनम् ॥ ६ ॥ शनिमांदिसमायुक्ते पापखेचरवीक्षिते ॥ तदीशे नीचराशिस्थे सोदराणां विनाशनम् ॥ ७ ॥ पापांतरे तदीशे तु कारके वा तथाविधे ॥ तथैव तद्भावनाथे सोदराणां विनाशनम् ॥ ८ ॥

भ्रातृस्थानेश जिस ग्रहके अंशकमें है वह बारहवें स्थानमें होवै नीचराशि शत्रुराशिमें हो अथवा अस्तंगत होवै तो भ्रातृनाश कहते हैं ॥ ६ ॥ शनि मांद्यंशमें पापग्रहसे दृष्ट होवै तृतीयेश नीच राशिमें होवै तो भाइयोंका विनाश होवै ॥ ७ ॥ तृतीयेश पापग्रहोंके बीच हो भ्रातृकारक ग्रहभी वैसाही होवै और जिस भावमें वह है उसका स्वामी भी वैसाही होवै तो भाइयोंका विनाश होवै ॥ ८ ॥

पापैर्हि वीक्षिते भावे भावेशे भावसंस्थिते ॥ क्रूरषष्ट्यंशके वापि सोदराणां विनाशनम् ॥ ९ ॥ भ्रातृस्थानाधिपस्थांशराशीशो यन्नवांशके ॥ तन्नाथे नीचमूढारिभावे सोदरनाशनम् ॥ १० ॥ भ्रातृस्थानाधिपे दुःस्थे कारके वा तथाविधे ॥ पापेक्षिते पाप-

युते स्वोच्चे वा सोदरक्षयः ॥ ११ ॥ सोत्थेशयुक्तराश्यंशनाथे यत्र नवांशके ॥ तन्नाथे नीचमूढारिभावे सोदरनाशनम् ॥ १२॥ अतिक्रूरसमायुक्ते भावे वा कारकेपि वा ॥ तद्भावनायके वापि बाल्ये सोदरनाशनम् ॥ १३ ॥

तृतीयेश तृतीयमें पापदृष्ट होवै अथवा क्रूरषष्ट्यंशमें होवै तो भाइयोंका नाश होवै ॥ ९ ॥ जिसके नवांशकमें तृतीयेश है वह जिसके नवांशकमें हो वह नीच, शत्रु, अस्तंगत होवै तो भ्रातृनाश होवै ॥ १० ॥ तृतीयेश दुष्टस्थानमें अथवा कारक ग्रह दुष्टस्थानमें पापदृष्ट पापयुक्त होवै तो अपने उच्चमें भी हो तो भी भ्रातृक्षय होवै ॥ ११ ॥ तृतीयेश जिसके नवांशकमें है वहभी जिस ग्रहके अंशमें है, वह नीच, अस्तु, शत्रुराशिमें होवै तो भ्रातृनाश होवै ॥ १२ ॥ तृतीय भाव वा तत्कारक अत्यंत क्रूर युक्त होवै तृतीयेश भी ऐसाही होवै तो बाल्यावस्थामें भ्रातृनाश होवै ॥ १३ ॥

यत्किंचित्क्रूरसंयोगे तन्नाशश्चिरकालतः ॥ बलहीनवशादेवं सोदरक्षयचिंतनम् ॥ १४ ॥ भ्रातृस्थाने शुभैर्युक्ते शोभनग्रहवीक्षिते ॥ भावनाथे बलाढ्ये तु भ्रातृलाभमुदीरयेत् ॥१५॥ भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ॥ भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातॄणां वर्धनं भवेत् ॥ १६ ॥ केंद्रत्रिकोणगे वापि स्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ॥ नाथे वा कारके वापि भ्रातृलाभमुदीरयेत् ॥ १७ ॥

जो कुछ तीसरे भावसंबंधी क्रूरसंयोग है उसका नाश बहुत समयमें होताहै भाव भावेशके हीनबलके वशसे भाइयोंका क्षय विचारना ॥ १४ ॥ तृतीय भाव शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट होवै तृतीयेश बलवान् होवै तो भ्रातृलाभ कहना ॥१५॥ तृतीयस्थान वा तद्भावकारक शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट होवै भावपूर्ण बली होवै तो भाइयोंकी वृद्धि होवै ॥ १६ ॥ तृतीयेश वा तद्भाव कारक केंद्र कोणमें वा उच्च मित्र अपने राश्यंशकादिमें होवै तो भ्रातृलाभ कहना ॥ १७ ॥

सौम्यग्रहान्विते वापि सौम्यानामंशके यदि ॥ नाथे वा कारके वापि भावे सोदरवर्द्धनम् ॥ १८ ॥

तृतीयेश शुभग्रहयुक्त शुभग्रहोंके अंशकमें होवै अथवा इस प्रकार कारक ग्रह होवै तो भ्रातृवृद्धि होवै ॥ १८ ॥

सोत्थेश्वरे गोपुरभागयुक्ते सिंहासने कारकखेचरेन्द्रे ॥ सौम्यग्रहे तद्भवनाधिपे स्याद्भ्रात्रादिलाभं कथयंति तज्ज्ञाः ॥ १९ ॥पारा-

वतांशे यदि केंद्रराशौ भावेश्वरे शोभनखेटयुक्ते ॥ सौम्यांशके सौम्यग्रहे तदीशे सोत्थादिबाहुल्यमुदीरयंति ॥ २० ॥

तृतीयेश गोपुरांशमें सिंहासनांशमें कारक ग्रह और तृतीयेश शुभ ग्रह होवै तो ज्योतिषज्ञ भ्रात्रादिलाभ कहते हैं ॥ १९ ॥ तृतीयेश शुभ ग्रह युक्त हो, पारावतांशमें केंद्रस्थित हो जिस राशिमें तृतीयेश है उसका स्वामी शुभ राशि शुभांशकमें होवै तो भाई आदियोंकी बहुतायत कहते हैं ॥ २० ॥

भ्रातृभावे स्वतुंगे वा स्वर्क्षे मूलत्रिकोणगे ॥ बलाढये भावनाथे तु सोदरोत्पत्तिमादिशेत् ॥ २१ ॥ मृद्वंशादिसमायुक्ते भावनाथे शुभैर्युते ॥ शुभेक्षिते वा भावेशे सोदरोत्पत्तिमादिशेत् ॥ ॥ २२ ॥ वैशेषिकांशे भावेशे ह्यथवा शुभवीक्षिते ॥ मृद्वंशादियुते वापि भ्रातृवर्द्धनमेव तु ॥ २३ ॥ लग्ननाथस्तु सोत्थेशमित्रश्चेन्मित्रता भवेत् ॥ भ्राता शत्रुर्भवेच्छत्रावेवं सर्वत्र युज्यते॥२४॥

तृतीयेश तीसरा वा उच्चमें वा मूलत्रिकोणमें बलवान् होवै तो उसके पीछे भाई होवैं ऐसा कहना ॥ २१ ॥ तृतीयेश मृद्वंशादियुक्त शुभग्रहसे दृष्ट युक्त होवै तो वही फल कहना ॥ २२ ॥ तृतीयेश वैशेषिकांशमें हो अथवा शुभदृष्ट वा मृद्वंशादिमें होवै तो भाइयोंकी वृद्धि होवै ॥ २३ ॥ लग्नेश तृतीयेशका मित्र होवै तो भाइयोंके साथ मित्रता रहे, शत्रु होवै तो शत्रुता रहे ऐसा विचार पित्रादि भावोंमें भी होता है ॥ २४ ॥

अयुग्मभांशे यदि कारकेशौ गुर्वर्कभूसूनुनिरीक्षितौ चेत् ॥ ओजे गृहे स्युर्यदि विक्रमाख्ये पुंभ्रातरस्तस्य वदंति तज्ज्ञाः ॥ २५ ॥ युग्मांशके युग्मगृहे तदीशे भावे तथा कारकखेचरेन्द्रे ॥ सहोदरीलाभमिहाहुरार्या नपुंसकांशे किल तत्तथैव ॥ २६ ॥

तृतीयेश तथा तृतीयभावकारक ग्रह गुरु, सूर्य, मंगलसे दृष्ट विषम राशिमें वा तृतीय भावमें होवै तो सहोदर पुरुष (भाई) होवैं ऐसा ज्योतिषज्ञ कहते हैं ॥ २५ ॥ तृतीयेश तथा कारक ग्रह समराशि समांशकमें समभावमें होवैं स्त्रीग्रह उन्हे देखैं तो बहिन उत्पन्न होवै, तृतीयेश तथा कारक नपुंसकांशमें नपुंसक ग्रहोंसे युक्त दृष्ट होवैं तो भाई नपुंसक पैदा होगा ॥ २६ ॥

भ्रातृराश्यंशकवशाद्भ्रातृसंख्यां विनिर्दिशेत् ॥ नाथकारकसंयुक्तराश्यंशाद्वा भवेत् तथा ॥ २७॥ भ्रातृराशिसमायुक्तखेचरस्यां-

शकाद्वदेत् ॥ सोत्थेशयुक्तराश्यंशात्कारकान्वितभावतः ॥२८॥ तयोः संयुक्तखेटस्य राश्यंशाद्वा तथा भवेत् ॥ एतयो रश्मिमानाद्वा पापयोगाद्विनाशनम् ॥ २९ ॥ संवादे विविधे प्राप्ते तत्कर्मबलतो भवेत् ॥कारकाद्विक्रमेशाद्वा विक्रांतस्य विनिर्दिशेत्॥३०॥

तृतीय स्थानकी राशि अंशकके वशसे भाइयोंकी संख्या कहनी, अथवा तृतीयेश तृतीयभावकारकयुक्त राशि अंशकके तुल्य संख्या होती है ॥ २७ ॥ तृतीयमें जो ग्रह है उसके अंशकसे अथवा तृतीयेश युक्त राशिसे कारकयुक्तभावसे संख्या कहनी ॥ २८ ॥ अथवा तृतीयेश तृतीयभावकारक ग्रहके साथ जो ग्रह है उसके राशि अंशकके तुल्य संख्या होतीहै, इनमें जो अधिक बली उत्तमांशगत हो उसका फल होताहै । अथवा उन दोनोंके रश्मिके प्रमाणसे कहना. ऐसेही पापयुक्त कालांशादिगत ग्रहोंसे हानिकी संख्या जाननी ॥ २९ ॥ जब बहुत प्रकारके योग हों तो उसका कर्म बलकारक ग्रहसे तृतीयभावेशसे जो अधिक बली पारावतांशादिमें हो उसीसे संख्या कहनी ॥ ३० ॥

शौर्याधिपे तुंगयुते बलाढ्ये केंद्रत्रिकोणे यदि सौम्यदृष्टे ॥ मूलत्रिकोणे स्वगृहेष्टगेहे वैशेषिकांशे पुरुषः स धीरः ॥ ३१ ॥ धीरो भवेद्विक्रमराशिनाथे सौम्ये गृहांशे शुभखेटयुक्ते ॥ तथैव तत्कारकखेचरेंद्रे सौम्यग्रहाणां भवने तु शूरः ॥ ३२ ॥

तृतीयेश उच्चका बलवान् केन्द्र त्रिकोणमें शुभ ग्रहोंसे दृष्ट होवै यद्वा अपने मूलत्रिकोणमें अपनी राशिमें मित्र राशिमें वैशेषिकांशमें होवै तो वह पुरुष धैर्यवान् पंडित होवै ॥ ३१ ॥ तृतीयेश शुभ ग्रहके नवांशमें शुभग्रह युक्त होवै तो धीर (पंडित) होवै. तृतीय भावकारक ग्रहभी ऐसेही शुभ ग्रहके राश्यंशमें होवै तो पुरुष पराक्रमी होवै ॥ ३२ ॥

धैर्यान्वितो विक्रमराशिनाथसंयुक्तराश्यंशपतौ यदंशे ॥ तदंशनाथे स्वगृहादिवर्गे युद्धे विदग्धः कलहप्रवीणः ॥ ३३ ॥

तृतीयेश जिसके राश्यंशमें है वह ग्रह अपने राश्यादिवर्गमें होवै तो धैर्यवान् युद्धमें चतुर और कलहमें प्रवीण होवै ॥ ३३ ॥

विक्रमाधिपतौ स्वोच्चे नाशस्थे पापसंयुते ॥ चरभे चरराश्यंशे युद्धात्पूर्वं दृढो भवेत् ॥ ३४ ॥ पापग्रहाणां भवने विक्रमे पापसंयुते ॥ तथाविधे तदीशेपि युद्धात्पूर्वं दृढो भवेत् ॥ ३५ ॥ क्रूरषष्ट्यंशगे वापि तदीशे नीचराशिगे॥पापयुक्तेथ वा दृष्टे युद्ध

जाड्यो भवेन्नरः ॥३६॥युद्धे पराजितः स्वोच्चे विक्रमेशे विनाशभे॥
कारके बलहीने वा क्रूरषष्ट्यंशसंयुते ॥ ३७॥

तृतीयेश अपने उच्चका पापयुक्त बारहवें भावमें चरराशि चरांशकमें होवे तो युद्धसे पहिले दृढ (मजबूत) रहे युद्ध छिडनेपर कातर होजावै ॥ ३४ । तीसरे भावमें पापराशि पाप युक्त होवै तृतीयेशभी पाप राशिमें पापयुक्त होवै तौभी वही फल जानना ॥ ३५ ॥ तृतीयेश क्रूरषष्ट्यंशमें अथवा नीचराशिमें पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट होवै तो युद्धकर्ममें अज्ञान होवै ॥ ३६ ॥ तृतीयेश उच्चराशिका व्ययस्थानमें और भावकारक ग्रह बलहीन क्रूरषष्ट्यंशमें होवै तो युद्धमें मनुष्य पराजय (हार) पावै ॥ ३७ ॥

सिंहासनांशे यदि विक्रमेशे पारावते गोपुरभागयुक्ते ॥ मृदंशके
वा शुभदृष्टियोगे चित्तोत्सवो युद्धविशारदः स्यात् ॥ ३८ ॥
युद्धाभिलाषी समरप्रवीणो वीर्येश्वरे सौम्ययुते स्वतुंगे ॥ वैशेषि-
कांशे बलपूर्णयुक्ते मृदंशगे वा विपरीतमन्यत् ॥ ३९ ॥

तृतीयेश सिंहासनांश, पारावतांश, गोपुरांश युक्त अथवा मृदंशयुक्त शुभग्रह दृष्टयुक्त होवै तो मानसी उत्सव सहित अर्थात् सहर्ष युद्धमें चतुर होवै ॥ ३८ ॥ तृतीयेश बुधयुक्त उच्च राशिमें वैशेषिकांशमें पूर्णबली अथवा मृदंशकमें होवै तो युद्धकी अभिलाषा करे लडाईमें प्रवीण (अभिज्ञ) होवै, विपरीत स्थानादिमें तृतीयेश होवै तो फलभी विपरीत जानना ॥ ३९ ॥

शौर्याधिपे भानुयुतेत्र धीरश्चन्द्रान्विते मानसधैर्ययुक्तः ॥ कृष्णो
जडो भौमयुते प्रकोपी सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः ॥ ४० ॥
जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ॥
कामातुरस्त्वास्फुजिदन्विते स्यात्तन्मूलकोपात्कलहप्रवीणः ४१॥

तृतीयेश सूर्यसे युक्त होवै तो धैर्यवान्, चंद्रयुक्तसे मनके धैर्ययुक्त, मंगलयुक्तसे कृष्ण और मूर्ख गुस्सावाला, बुधसे सात्विकबुद्धियुक्त, ॥ ४० ॥ गुरुसे धीरतायुक्त सब अर्थ शास्त्रार्थ जाननेवाला, शुक्रसे कामातुर तथा काम देवसंबंधी कोपसे कलह करनेमें बडा चतुर होवै ॥ ४१ ॥

जडो भवेद्वासरनाथपुत्रयुक्ते फणीनामधिपेन युक्ते ॥ बहिर्दृढो
हृद्गतजाड्ययुक्तः केत्वन्विते मांदियुते तथैव ॥ ४२ ॥

तृतीयेश शनियुक्त होवै तो मूर्ख होवै, राहुसे युक्त होवै तो बाहरसे तो दृढ रहे परन्तु हृदयमें जडता रहे, केतुसे युक्त होव तथा मांद्यंशसे युक्त होवै तौ भी वही फल होगा ॥ ४२ ॥

लग्ने गुरौ विक्रमनाथयुक्ते चतुष्पदानां प्रवदंति भीतिम् ॥ गवां भयं वा जलराशिलग्ने जलप्रमादो ब्रुवते ध्रुवं स्यात् ॥ ४३ ॥ वीर्याधिपे राहुसमेतराशीनाथान्विते राहुयुते विलग्ने ॥ सर्पाद्भयं विक्रमराशिनाथे बुधेन युक्ते गलरोगमत्र ॥ ४४ ॥

तृतीयेशयुक्त बृहस्पति लग्नमें होवै तो चौपैया पशुकी भय होवै, लग्नमें जलराशिके बैठे होवें तो गोसे भय होवै तथा जलसंबंधीप्रमाद निश्चय होगा ऐसा कहते हैं ॥ ४३ ॥ जिस राशिमें राहु है उसके स्वामीके सहित तृतीयेश लग्नमें राहुयुक्त होवै तो सर्पसे भय होवै तृतीयेश बुधयुक्त होवै तो यहां कंठरोग होगा ऐसा कहना ॥ ४४ ॥

नीचे तृतीयेरिगृहे विमूढे पापेक्षिते तद्गरलप्रमादः ॥ विषप्रयोगाद्विषभक्षणाद्वा तेषामभावेत्र विनिश्चयार्थः ॥ ४५ ॥ शुक्रे बलाढ्ये यदि वा शशांके सौम्येक्षिते शोभनखेटयुक्ते ॥ सोत्थस्थिते स्वोच्चसुमित्रवर्गे सुपात्रभोक्ता सुखभुक्तिभाक्स्यात् ॥ ४६ ॥

तीसरे भावमें कोही ग्रह नीच, शत्रुराशिका, अस्तंगत, पापदृष्ट होवै तो विषप्रयोग (विषकी क्रिया) से अथवा विषभक्षणसे जहरका प्रमाद होवै उक्तयोगके अभावमें विषरहितता जाननी ॥ ४५ ॥ तीसरे भावमें बलवान् शुक्र अथवा चंद्रमा शुभ ग्रहसे युक्त दृष्ट उच्चमें यद्वा मित्रराशिमें होवै तो मनुष्य उत्तम पात्रमें सुखपूर्वक भोजन करनेवाला होवै ४६॥

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदंति मांद्यादियुते विशेषात् ॥ भौमान्विते प्रेतपुरीशभागे तृतीयराशौ यदि कर्णरोगम् ॥ ४७ ॥ सोत्थे शनौ मांदियुते तथैव वाताद्भयं सौम्यदृशा विहीने ॥ तृतीयनाथस्थितराशिनाथसंयुक्तराश्यंशपतौ च केन्द्रे ॥ ४८ ॥

तीसरे भावमें पापग्रह होवै विशेषतः मांद्यशादि युक्त होवै तो कंठरोग होवै मंगल तीसरे यमांशमें होवै तो कानोंमें रोग होवै ॥ ४७ ॥ तीसरा शनि मांद्यंशमें शुभदृष्टि रहित होवै तो वातरोगसे भय होवै तृतीयेश जिसकी राशिमें होवै वहभी जिसके राश्यंशमें है वह केंद्रमें होवै ॥ ४८ ॥

पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदंति कर्णोद्भवरोगमत्र ॥ क्रूरादिषष्ट्यंशयुते तदीशे कर्णस्य रोगं कथयंति तज्ज्ञाः ॥ ४९ ॥

पाप युक्त दृष्ट होवै तो कानका रोग कहते हैं तृतीयेश क्रूरादिषष्ट्यंशमें होवै तो भी ज्योतिषी कानका रोग कहते हैं ॥ ४९ ॥

सौम्ययुक्ते तृतीये वा सौम्यखेचरवीक्षिते ॥ तदीशे शुभसंयुक्ते कर्णयोर्भूषणं वदेत् ॥५०॥ शुक्रे तृतीये यदि मौक्तिकं तु जैवेऽतुलं त्वाभरणं वदंति ॥ भानोस्तु संबंधयुते तृतीये सद्रत्नमानीलमयं हि मांद्ये ॥ ५१ ॥

तीसरे स्थानमें शुभग्रह हो अथवा शुभ ग्रह देखे तृतीयेश शुभयुक्त होवै तो कानोंमें भूषण होवै ऐसा कहना ॥ ५० ॥ उक्तलक्षण संपन्न शुक्र तीसरे होवै तो कानोंमें मोतियोंके भूषण होवैं बृहस्पति होवै तो सर्वोत्तम आभरण कहते हैं, तृतीयमें सूर्यका संबंध होवै तो उत्तम रत्नोंके, और शनिका संबंध हेवै तो नीलमके भूषण होवैं ॥ ५१ ॥

चंद्रे बहु त्वाभरणं तु सौम्ये श्यामं भवेत्तात्क्षितिसूनुराशौ ॥ विचित्रमार्गाभरणं तथैव पापेक्षिते तद्व्ययमाहुरार्याः ॥ ५२ ॥ शुभग्रहाणां भवने तु तस्मिंस्तृतीयराशौ श्रवणं कथानाम् ॥ पुण्यादिकानां यदि पापराशौ क्रूरश्च तत्कर्णकुठारमाहुः ॥ ५३ ॥

इति तृतीयभावः ॥

ऐसा चंद्रमा होवै तो बहुतसे भूषण होवैं बुध होवै तो वह पन्नाके होवै मंगलकी राशिका होवै तो अनेक रंगके भूषण होवैं यदि तृतीयभाव वा उक्तयोग पापदृष्ट होवै तो उक्त फलका नाश आचार्य कहते हैं ॥ ५२ ॥ तीसरे भावकी राशि शुभ ग्रहकी होवै तो उत्तम कथा पुण्य आदिकी सुननेमें आवै पापराशि पापयुक्त होवै तो दुष्टकथा कर्णनाशक कहते हैं ॥ ५३ ॥ इति तृतीयभावविचारः ॥

अथ चतुर्थभावविचारः ।

बंधुभवने बंधून्गृहमातृजलात्मवृद्धिभोज्यादीन् ॥ वाहनहृदयस्कंधासनशयनसुखान्यधो जलं ब्रूयात् ॥ ५४ ॥

चतुर्थ भवनसे बंधु (ज्ञाति), घर, माता, जल, अपनी वृद्धि, भोज्यपदार्थादि, वाहन, हृदयस्थान, स्कंधा,आसन,शयन,सुख,पाताल कूपका विचार कहना,सोई आगे कहते हैं॥ ५४॥

लग्नेश्वरे लग्नगते सुखांगनाथेन युक्ते यदि गेहलाभः ॥ अयत्नतः स्याच्छुभदृष्टियोगात्स्वोच्चे स्वमित्रे स्वगृहे बलाढ्ये ॥५५॥ गेहाधिपे केंद्रगते बलाढ्ये सौम्येक्षिते मंदिरलाभमाहुः ॥ वैशेषिकांशे परमोच्चभागे गेहेश्वरे मंदिरलाभमाहुः ॥ ५६ ॥

लग्नेश लग्नमें चतुर्थभावेशयुक्त होवै तो गृहलाभ होवे शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट भी होवै यद्वा अपने उच्चराशि मित्र राशीमें बलवान् होवै तो विनाही प्रयत्न गृहलाभ होवै ॥ ५५ ॥ चतुर्थेश केंद्रमें बलसहित शुभग्रहदृष्ट होवै तो घरका लाभ कहतेहैं । यदि चतुर्थेश वैशेषिकांशमें परमोच्चांशमें होवै तो भी गृहलाभ कहतेहैं ॥ ५६ ॥

गृहस्थानाधिपस्यांशनाथसंयुक्तराशिपः ॥ तदंशाधिपतौ केंद्रे गृहलाभमुदीरयेत् ॥ ५७ ॥ भाग्येशे केंद्रभावस्थे गृहेशे स्वोच्चमित्रगे ॥ गृहराशिगते खेटे स्वोच्चे बहुविचित्रकम् ॥ ५८ ॥ तृतीये सौम्यसंयुक्ते गृहेशे स्वबलान्विते ॥ तदीशे बलसंपूर्णे हर्म्यप्राकारमंडितम् ॥ ५९ ॥

चतुर्थेश जिसके नवांशमें है वह जिसकी राशिमें है उसके स्थित अंशाधीश केन्द्रमें होवै तो गृहलाभ कहना ॥ ५७ ॥ नवमेश केंद्रमें चतुर्थेश मित्रराशिमें और चतुर्थभावमें उच्चका ग्रह होवै तो चित्रविचित्र घर मिले ॥ ५८ ॥ तीसरेमें शुभग्रह होवै चतुर्थेश अपने बलसे पूर्ण होवै तृतीयेशभी बलपूर्ण होवै तो अट्टालिकासे शोभित उत्तम घर मिले ॥ ५९ ॥

सिंहासनांशके वापि गृहेशे गोपुरांशके ॥ मृदंशादियुते वापि तद्गृहं सौधमण्डितम् ॥ ६० ॥ पारावतांशके गेहनाथे गुर्विन्दुवीक्षिते ॥ गोपुराद्यंशके वापि दैविकं हर्म्यमादिशेत् ॥ ६१ ॥ विचित्रसौधप्राकारमण्डितं गृहमादिशेत् ॥ कर्माधिपेन सहिते नाथे केन्द्रेर्कसूनुना ॥ ६२ ॥

चतुर्थेश सिंहासभांशमें अथवा गोपुरांशकमें यद्वा मृदंशादिमें होवै तो उसका घर चूनेसे शोभित होवै ॥ ६० ॥ चतुर्थेश पारावतांशकमें बृहस्पति चंद्रमासे दृष्ट होवै अथवा गोपुरादि अंशकमें हाव तो उसका महल देवताओंकासा यद्वा देवतायुक्त होवै ॥ ६१ ॥ चतुर्थेश दशमेश शनिसे युक्त केद्रमें होवै तो रंग विरंग चूना आदिसे तथा अटारियों सहित घर कहना ॥ ६२ ॥

गेहाधिपे नाशगते यदि स्यात्पापेक्षिते तद्गृहनाशमत्र ॥ गेहेशसंयुक्तनवांशनाथे नाशस्थिते स्यादपि गेहनाशः ॥ ६३ ॥

चतुर्थेश बारहवें पापयुत होवै तो उसके घरका नाश होवै चतुर्थेश जिसके नवांशकमें हो वह बारहवें होवे तोभी मकानका नाश होवै ॥ ६३ ॥

बन्धुस्थानस्थिते सौम्ये सौम्यग्रहनिरीक्षिते ॥ तत्कारकबलाढ्ये वा बन्धुपूज्यो भवेन्नरः ॥ ६४ ॥ बंन्धुस्थानगते जीवे तदीश शुभसंयुते ॥ गुरुदृष्टिसमायुक्ते बंधुश्रेष्ठो भवेन्नरः ॥ ६५ ॥

चतुर्थ स्थानमें शुभग्रह शुभग्रहसे दृष्ट होवै तथा चतुर्थभावकारक ग्रह बलवान् होवे तो मनुष्य बन्धुवर्गका पूज्य (माननीय) होवै ॥ ६४ ॥ चौथे बृहस्पति चतुर्थेश शुभ ग्रहसे युक्त बृहस्पतिसे दृष्ट होवै तो मनुष्य बांधवोंमें श्रेष्ठ होवै ॥ ६५ ॥

बंधूपकर्त्ता तन्नाथे केंद्रे कोणेथ संयुते ॥ वैशेषिकांशसंयुक्ते पापदृग्योगवर्जिते ॥ ६६ ॥ बन्धूनामुपकारी स्याद्बंन्धौ गुर्वच्छसोमजाः ॥ तेषां गृहे वा तैर्दृष्टे मृद्वंशादिसमन्विते ॥ ६७ ॥

चतुर्थेश केंद्र त्रिकोणमें शुभ ग्रहयुक्त, वैशेषिकांशकमें पाप ग्रहोंके योग दृष्टिस रहित होवै तो बन्धुवर्गका उपकार करनेवाला होवे ॥ ६६ ॥ चतुर्थ स्थानमें गुरु, शुक्र, बुध होवे अथवा इनकी राशि इनसे दृष्ट होवे मृद्वंशादि शुभांशकोंसे युक्त होवे तो बन्धु जनका उपकार करने वाला होवे ॥ ६७ ॥

बन्धुभिस्त्यक्तपुरुषस्तदीशे पापसंयुते ॥ क्रूरषष्ट्यंशके वापि नीचारातिगृहेपि वा ॥ ६८ ॥ बहुपापसमायुक्ते बन्धौ नाथे तथैव हि ॥ तत्कारके तथैवात्र बन्धूनां कुत्सितं वदेत् ॥ ६९ ॥

चतुर्थेश पापयुक्त अथवा क्रूरषष्ट्यंशमें यद्वा नीच शत्रुराशिमें होवै तो वह पुरुष बन्धुजनोंसे त्यागा होवै ॥ ६८ ॥ चतुथ स्थानमें बहुत पाप हों चतुर्थेश भी पापयुक्त होवै तथा चतुर्थभावकारकभी पापयुक्त होवे तो बन्धुवर्गमें निन्द्य होवै ॥ ६९ ॥

नाथकारकसंयुक्तनवांशेशांशनायकः ॥ नीचराशिगतो मूढो बन्धूनां भयकर्मकृत् ॥७०॥ बन्धूपभोगी केन्द्रस्थे तदीशे शुभवीक्षिते ॥ गोपुराद्यंशके वापि मृद्वंशादिसमन्विते ॥ ७१ ॥ धने लाभे त्रिकोणस्थे तन्नाथे शुभवीक्षिते ॥ सौम्यग्रहाणामंशे वा बन्धूनामुपकारकृत् ॥ ७२ ॥ बन्धुद्वेषी भवेन्नित्यं पापाक्रांते ग्रहे यदा ॥ नीचास्तखेटसंयुक्ते शुभदृग्योगवर्जिते ॥ ७३ ॥

चतुर्थभावेश, तथा चतुर्थभावकारक जिसके नवांशकमें हों वह भी जिसके नवांशकमें हो वह नीच राशिमें अस्तंगत होवै तो बन्धुवर्गके वास्ते भयके काम करे ॥ ७० ॥ चतुर्थेश

केन्द्रमें शुभग्रहदृष्ट और गोपुरादि अथवा मृदंशादिसे युक्त होवे तो बन्धुजनका सुख भोगकरे ॥ ७१ ॥ चतुर्थेश दूसरे ग्यारहवें यद्वा त्रिकोणमें शुभग्रहदृष्ट होवै अथवा शुभग्रहोंके अंशकमें होवै तो बन्धुजनका उपकार करे ॥ ७२ ॥ चतुर्थेश पापोंका दबायाहो, नीचगत, अस्तंगत ग्रहसे युक्त होवै शुभ दृष्टि योग रहित होवै तो बन्धुवर्गका द्वेषी होवे ॥ ७३ ॥

कस्मिँश्चित्खेचरेन्द्रे वा बन्धौ स्वोच्चे स्वमित्रभे ॥ गुरुणा दृष्टिसंपाते बन्धुपूज्यो भवेन्नरः ॥ ७४ ॥ गृहस्थाने चरे लग्ने तदीशे चरराशिगे ॥ तथैव तत्कारकेपि बहुस्थाने गृहं भवेत् ॥ ७५ ॥

चतुर्थ स्थानमें कोई ग्रह अपने उच्च वा मित्रराशिमें होवै बृहस्पति उसे देखे तो मनुष्य बंधुवर्गका पूज्य होवै ॥ ७४ ॥ चतुर्थ भावमें चरराशि हो उसका स्वामी भी चरराशिमें हो वैसाही चतुर्थकारक ग्रहभी चरराशिमें होवै तो एक जगे छोडकर दूसरे दूसरेसे तीसरे इत्यादि कितनेही जगे घर होवैं ॥ ७५ ॥

स्थिरे गृहे स्थिरगृहं नाथकारकयोरपि ॥ षष्ट्यंशे शुभभागे वा तदीशे स्थैर्यतां व्रजेत् ॥ ७६ ॥ अर्थव्ययगृहेशैस्तैर्यावंतः पापसंयुताः ॥ तावद्गेहादिनाशः स्याच्छुभदृष्टा न दोषदाः ॥ ७७ ॥ अर्थव्ययगृहेशास्तु केन्द्रकोणादिसंयुताः ॥ तावद्गेहालयं सर्वं शोभनं तत्र निर्दिशेत् ॥ ७८ ॥

चतुर्थेश चतुर्थकारक स्थिर राशियोंमें होवै तो एकही घरमें स्थिरता रहे, चतुर्थेश शुभषष्ट्यंश शुभांशकमें होवै तो घरमें स्थिरता होवै ॥ ७६ ॥ वह चतुर्थेश चतुर्थभावकारक धन व्यय भावेशयुक्त जितने पापोंसे युक्त होवै उतने घर आदि नष्ट होवैं उनपर शुभग्रहोंकी दृष्टिभी होवै तो दोष नहीं देते ॥ ७७ ॥ द्वितीयभावेश तथा व्ययभावेश केन्द्र कोण आदिमें होवै तो जितने शुभग्रहोंसे युक्त हो उतने घरद्वार अच्छे होंगे ऐसा कहना ॥ ७८ ॥

गृहेशे कर्मराशिस्थे कर्मेशे गेहमागते ॥ बलयुक्ते धरासूनौ बहु क्षेत्रं विनिर्दिशेत् ॥ ७९ ॥ बलाढ्ये कर्मराशीशे बन्धुस्थानाधिपे तथा ॥ तयोर्मैत्री यदा तस्य बहु क्षेत्रं विनिर्दिशेत् ॥ ८० ॥ क्षेत्रस्थाने शुभैर्युक्ते तदीशे शुभसंयुते ॥ तत्कारके तथा प्राप्ते बहुक्षेत्रधनैर्युतः ॥ ८१ ॥ क्षेत्राधिपे पञ्चमस्थे गोपुरांशादिसंयुते ॥ मृदंशादिगते वापि बहुक्षेत्रसमन्वितः ॥ ८२ ॥

चतुर्थेश दशम, दशमेश चतुर्थ और मंगल बलवान् होवै तो बहुत खेती (जमीन) होवै ऐसा कहना ॥ ७९ ॥ दशमेश बलवान् होवै तथा चतुर्थेशभी बली होवै उनकी आपस-में मित्रता होवै तो बहुत खेती होवै ॥ ८० ॥ चौथे शुभ ग्रह चतुर्थेश शुभयुक्त चतुर्थकार-कभी वैसाही होवै तो बहुत खेती धन उसके होवैं ॥ ८१ ॥ चतुर्थेश पंचममें गोपुरांशा-दियुक्त अथवा मृदंशादियुत होवै तो बहुत खेतीवाला होवै ॥ ८२ ॥

भ्रातृकारकसंयुक्ते भ्रातृनाथेन संयुते ॥ क्षेत्रे तदीश्वरे वापि भ्रातृ-क्षेत्रं विनिर्दिशेत् ॥ ८३ ॥

चतुर्थमें तृतीयकारक ग्रह तृतीयेश अथवा चतुर्थेश भी उसमें होवै तो भाईकी खेती पावै ऐसा कहना ॥ ८३ ॥

क्षेत्रेशसंयुक्तनवांशनाथे केंद्रस्थिते मित्रनिरीक्षिते वा ॥ भौमा-न्विते भौमदृशा समेते भ्रातुर्धनं क्षेत्रमुदाहरन्ति ॥ ८४ ॥ लग्ने-श्वरे क्षेत्रगते बलाढ्ये लग्ने बलिष्ठे यदि क्षेत्रनाथे ॥ शुभग्रहैर्दृ-ष्टसमागमे वा क्षेत्रं स्वकीयेन बलेन याति ॥ ८५ ॥

चतुर्थेश जिसके नवांशमें हो वह केंद्रमें हों अथवा उसे उसका मित्र देखे मंगलसे युक्त वा दृष्ट होवे तो भाईकी खेती धन मिलना कहतेहैं ॥ ८४ ॥ लग्नेश चतुर्थस्थानमें बलवान् होवै लग्नमें बलवान् चतुर्थेश होवै शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होवै तो अपने बल (पुरुषार्थ) से खेती धन कमावै ॥ ८५ ॥

कलत्रकारके क्षेत्रे तदीशे वा कलत्रगे ॥ तदीशयोस्तथा मैत्र्यां कलत्रात्क्षेत्रमादिशेत् ॥ ८६ ॥

चतुर्थ स्थानमें स्त्रीकारक ग्रह अथवा चतुर्थेश सप्तम स्थानमें होवै चतुर्थेश सप्तमेशकी मैत्री होवै तो स्त्रीसे खेती पावै ॥ ८६ ॥

षष्ठेश्वरे क्षेत्रगते बलाढ्ये षष्ठस्थिते वा गृहभावनाथे ॥ षष्ठेश्वरा-त्क्षेत्रगते बलाढ्ये शत्रोः सकाशात्स धरामुपैति ॥ ८७ ॥ पारावतांशे स्वगृहे बलाढ्ये क्षेत्रेश्वरे चोपचयं गते वा ॥ आरो-हभागे शुभदृष्टियुक्ते क्षेत्रस्यबाहुल्यमुदाहरंति ॥ ८८ ॥ धनेशला-भेशसमन्विते वा क्षेत्रे तदीशेप्यथ कारके वा ॥ वैशेषिकांशे शुभ-दृष्टियुक्ते बह्वर्थरूपं गृहमाहुरार्याः ॥ ८९ ॥

षष्ठेश बलवान् चौथे होवै अथवा चतुर्थेश छठे होवै षष्ठेशसे चतुर्थेश बलवान् ग्रह होवै तो शत्रुसे खेती मिले ॥ ८७ ॥ चतुर्थेश पारावतांशमें अपनी राशिका बलवान् होवै अथवा उपचय ३।६।११।१० स्थानमें होवै उच्चाभिलाषी होवै शुभ ग्रह उसे देखे तो बहुत खेती होवै ऐसा कहते हैं ॥ ८८ ॥ धनेश लाभेशसे युक्त चौथे भावमें हो अथवा चतुर्थेश वा चतुर्थ भावकारक ग्रह वैशेषिकांशकमें होवै शुभदृष्टि युक्त होवै तो बहुत प्रकारके बहुत घर होवैं ऐसा श्रेष्ठ ज्योतिषी कहते हैं ॥ ८९ ॥

क्षेत्रेश्वरे नीचगते विमूढे पापांतरे पापनिरीक्षिते वा ॥ पापग्रहक्षेत्रगतेरिगेहे क्षेत्रादिनाशं कथयंति तज्ज्ञाः ॥ ९० ॥पापांतरस्थे यदि भूमिपुत्रे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा ॥ पापग्रहक्षेत्रगतेथ वा स्यात्क्रूरांशके भूमिविनाशमाहुः ॥ ९१ ॥

चतुर्थेश नीच वा अस्तंगत पापग्रहोंके बीच, अथवा पापदृष्ट, पापग्रहके राशिमें, शत्रुराशिमें होवै तो ज्योतिषज्ञ खेती आदिका नाश कहतेहैं ॥ ९० ॥ मंगल यदि पापग्रहोंके बीच हो अथवा पापयुक्त पापदृष्ट हो वा पाप ग्रहके राशिमें हो, क्रूरांशकमें होवे तो भूमिका नाश कहते हैं ॥ ९१ ॥

क्रूरादिषष्ट्यंशगते तदीशे क्षेत्रे सपापे यदि नीचभे वा ॥दुःस्थेरिगेहे त्वतिभीषणांशे क्षेत्रादिनाशं कथयंति तज्ज्ञाः ॥ ९२ ॥ क्षेत्रेश्वरे पापयुते धनस्थे नीचारिभे क्षेत्रविनाशमेति ॥ स्वोच्चस्थिते तद्भवनेश्वरे तु पापान्विते विक्रयमेति भूमेः ॥ ९३ ॥

चतुर्थेश क्रूरादि षष्ट्यंशकमें हो, चतुर्थमें पापग्रह हो अथवा भावेश दुष्ट स्थानमें शत्रुराशिमें अथवा भयानक अंशकमें होवै तो खेती आदिका नाश ज्योतिषज्ञ कहते हैं ॥ ९२ ॥ चतुर्थेश पापयुक्त धनस्थानमें नीच वा शत्रु राशिका होवे तो खेती नष्ट होवै यदि चतुर्थेश अपने उच्चमें पापयुक्त होवै तो भूमि बिक जावै ॥ ९३ ॥

आज्ञाक्षयात्क्षेत्रविनाशमाहुराज्येश्वरे क्षेत्रगते सपापे ॥ क्रूरांशकेमृत्युयमादिभागे कर्मेश्वरेणापि युते तथैव ॥ ९४ ॥ आज्ञाक्षयाद्भूमिविनाशमेति राज्येशतत्कारकभूमिनाथे ॥ क्रूरांशके वा त्ववरोहभागे नाशस्थिते मृत्युयमादिभागे ॥ ९५ ॥

राज्येश चतुर्थमें पापयुक्त होवै मृत्यु यम आदि क्रूरांशकमें होवै तो आज्ञाक्षय (नियमादिभंग) से भूमिनाश होवै ॥ ९४ ॥ राजभावेश, राजकारक और चतुर्थेश, क्रूरांशकमें अथवा अवरोहभागमें, व्यय स्थानमें, मृत्यु यम आदि अंशकमें होवै तो आज्ञाक्षयसे भूमिनाश होवैं ॥ ९५ ॥

राजाज्ञया क्षेत्रविनाशमेति भानौ तदीशेन युतेपि निम्ने ॥ धनेश-
संयुक्तनवांशनाथयुक्तांशपेनापि युते सपापे ॥ ९६ ॥ जीवेन
दृष्टे यदि वा तदीशे रम्ये गुरौ शोभनखेचरे वा ॥ सौम्यांतरे
तद्भवने ससौम्ये सुखी भवेत्सर्वजनेषु मुख्यः ॥ ९७ ॥

चतुर्थेश युक्त सूर्य नीचमें होवै धनेश जिसके नवांशकमें है वहभी जिसके नवांशमें है उससे युक्त सपाप होवै तो भी राजाकी आज्ञासे खेतीका विनाश होवै ॥ ९६ ॥ चतुर्थेश यदि बृहस्पतिसे दृष्ट होवै बलवान् बृहस्पति अथवा शुभ ग्रह शुभग्रहोंके मध्यमें हो चतुर्थ शुभयुक्त होवै तो मनुष्य सुखी और सब जनोंमें श्रेष्ठ होवै ॥ ९७ ॥

जीवे बलाढये सुखराशिनाथयुक्ते ससौम्ये तु चतुष्टये वा ॥
जीवेन दृष्टे यदि वा तदीशे मृद्वंशके वा सुखभाङ्नरः स्यात्॥९८॥
सुखे गुरौ शोभनखेचरे वा सौम्यांतरे तद्भवने ससौम्ये ॥ जीवे
बलाढये यदि लग्ननाथात्सुखी भवेत्सर्वजनेषु मुख्यः ॥ ९९ ॥

बलवान् बृहस्पति चतुर्थेशसे युक्त शुभग्रहयुक्त होवै अथवा केंद्रमें होवै यद्वा चतुर्थेश बृहस्पतिसे दृष्ट होवै वा मृद्वंशकमें होवै तो मनुष्य सुख भोगनेवाला होवै ॥ ९८ ॥ चतुर्थ भावमें बृहस्पति अथवा शुभग्रह होवै चतुर्थ भाव शुभग्रहयुक्त शुभग्रहोंके बीचमें होवै बृहस्पति लग्नेशसे बलवान् होवै तो मनुष्य सुखी तथा सबसे श्रेष्ठ होवै ॥ ९९ ॥

गोपुराद्यंशके वापि सुखपे देवपूजिते ॥ धनायवृद्धिभावेषु तस्मि-
न् खेटे सुखी भवेत् ॥ १०० ॥ सौम्येतरान्विते सौख्ये बल-
हीने गुरावपि ॥ सपापे दुर्बले नाथे दुःखी स्याद्दर्थसंयुतः ॥
॥ १०१ ॥ पुत्रार्थबन्धुयुक्तश्चेद्दुःखी स्यान्नीचखेचरे ॥ सुखी
तदीशे पापेन युक्ते क्रूरांशसंयुते ॥ १०२ ॥

सुखेश बृहस्पति गोपुरादि अंशकमें द्वितीय लाभ और वृद्धिभावमें होवै तो मनुष्य सुखी होवै ॥ १०० ॥ चतुर्थ भावमें पाप ग्रह होव बृहस्पति बलहीन होवै चतुर्थेश पापयुक्त निर्बल होवै तो धनसहित भी दुःखी होवै ॥ १०१ ॥ चतुर्थेश पापयुक्त चतुर्थमें नीचका ग्रह होवै तो पुत्र, धन, बंधु सहित सुखीभी दुःखी होवै ॥ १०२ ॥

रव्यारयुक्ते सुखभावनाथे क्रूरांशके सौम्यदृशा विहीने ॥
आरोहभागेतरभागयुक्ते जातो नरो दुःखित एव नित्यम् ॥१०३॥

नीचारिभागे रविभूमिपुत्रे सुखस्थिते पापदृशा समेते ॥ क्रूरांशके तद्भवनाधिनाथे गृहार्थहीनो भवति प्रमादात् ॥ १०४ ॥

चतुर्थ राशिका स्वामी सूर्य मंगल युक्त होवै क्रूरांशमें शुभदृष्टि रहित होवै अवरोही अंशकोंमें होवै ऐसे योगमें जिसका जन्म होवै वह सर्वदा दुःखित रहे ॥ १०३ ॥ सूर्य मंगल नीच शत्रु अंशकमें सुख भावमें पापदृष्ट होवे चतुर्थेश क्रूरांशकमें होवै तो अपने प्रमादसे घर तथा धनसे हीन होताहै ॥ १०४ ॥

पापान्विते पापनिरीक्षिते वा पापांतरे वा सुखभे तदीश ॥ क्रूराहिषष्ट्यंशसमन्विते वा पापी नरः स्याच्छुभदृष्टियुक्ते ॥ ॥१०५॥ पापाधिकत्वे सुखराशियुक्ते तदीश्वरे चारिविमूढयाते ॥ पापान्विते वा यमसूनुयुक्ते जातो बहुत्वं समुपैति पापम् ॥१०६॥

चतुर्थ भाव पापयुक्त पापदृष्ट यद्वा पापांतःस्थ होवै वा उसका स्वामी क्रूरआदि षष्ट्यंशमें होवे और शुभदृष्टि युक्त होवै तो मनुष्य पापी होवैं ॥ १०५ ॥ चतुर्थ राशिमें बहुत पाप होवैं उसका स्वामी शत्रुराशिमें वा अस्तंगत होवै पापान्वित वा शनियुत होवै तो मनुष्य बहुत पापोंको प्राप्त होताहै ॥ १०६ ॥

शुक्रेन्दुविद्देवपुरोहितानां क्षेत्रे सुखे पूर्णबलान्वितानाम् ॥ शुभान्विते शोभनदृष्टिपाते जातो नरोऽयं भुवि भुक्तिभाक्स्यात् ॥ १०७ ॥ बुधदृष्टे सिते सौख्ये सौम्यमध्यगतेपि वा ॥ गोपुराद्यंशगे वापि पुण्यभाक्स नरो भवेत् ॥ १०८ ॥

चतुर्थमें पूर्णबली शुक्र, चंद्रमा, बुध, बृहस्पतिकी राशि होवै शुभ ग्रहास युक्त दृष्ट होवै तो ऐसे योगमें जन्मवाला मनुष्य पृथ्वीमें भुक्तिभागी होताहै ॥ १०७ ॥ चतुर्थ स्थानमें बुधसे दृष्ट शुक्र होवै, अथवा शुभ ग्रहोंके बीच होवै, यद्वा गोपुरादि अंशकमें होवै तो वह मनुष्य पुण्यभागी होताहै ॥ १०८ ॥

नीचान्विते मौढ्ययुते सुखस्थ सपत्नभे वा जलराशिसंज्ञे ॥ तदीश्वरे हीनबले तदानीं पतत्यसौ कूपतटांबुराशौ ॥ १०९ ॥ लग्नेश्वरे हीनबले सुखस्थे नीचेर्कयुक्ते यदि वा सपापे ॥ जलग्रहेणापि युते सुखेशे बलेन हीने जलराशिमग्नः ॥ ११० ॥

चतुर्थेश नीचका, अस्तका, चतुर्थभावमें, शत्रुराशिका जलराशिका होवै चतुर्थेश हीनबली होवै तो वह मनुष्य कूपके किनारे जलसमूहमें गिरताहै ॥ १०९ ॥ लग्नेश हीनबल चौथे

भावमें नीचराशिका सूर्यसे यद्वा पापग्रहसे युक्त तथा जलचराधिप ग्रहसे युक्त होवै चतुर्थेश बलहीन होवै तो जलपुंजमें डूबे ॥ ११० ॥

सरित्स्थानाधिपे लग्ननाथेन सहिते सुखे ॥ कर्माधिपेन संदृष्टे नदीकूपतटादिषु ॥ १११ ॥ पतनं कूपनद्यादौ सुखेशस्थानराशिपः ॥ सरित्स्थानेशसंदृष्टे यदि वा सुखपेन युक् ॥ ११२ ॥

चतुर्थेश लग्नेशके साथ चतुर्थ स्थानमें दशमेशसे दृष्ट होवै तो नदी कुआं आदिके तीरमें मरे ॥ १११ ॥ सुखेश जिसकी राशिमें है वह सुखेससे दृष्ट अथवा युक्त होवै तो कुआं नदी आदिमें पतन होवै ॥ ११२ ॥

शिलाप्रहारस्तस्य स्याद्रविभौमान्विते सुखे ॥ दृष्टे युते कर्मपेन सरित्स्थानाधिपेन वा ॥ ११३ ॥ सुखेशे राहुमंदाभ्यां सहिते कुजवीक्षिते ॥ शुभदृष्टिविहीने तु शिलाभिः पीडितो नरः॥११४॥

सूर्य मंगल चौथे दशमेशसे युक्त वा दृष्ट हों अथवा सुसुखेशसे दृष्ट युक्त हों तो उसको पत्थरकी चोट लगे ॥ ११३ ॥ चतुर्थेश राहु शनिसे युक्त मंगलसे दृष्ट हो उसे शुभ ग्रह न देखें तो मनुष्य पत्थरोंसे पीडित होवै ॥ ११४ ॥

केन्द्रस्थिते रात्रिकरे भृगौ वा पापान्विते पापनिरीक्षिते वा ॥ क्रूरांशके वा त्ववरोहभागे सोऽयं जनन्या सह संगमेति ॥११५॥ पापेक्षिते पापयुते शशांके दिवाकरे वा यदि केंद्रराशौ ॥ क्रूरे सुखे वा यदि पापदृष्टे जातो नरः स्यादिह मातृगामी ॥ ११६ ॥

चंद्रमा अथवा शुक्र केंद्रमें पापयुक्त वा पापदृष्ट हों तथा क्रूरांशकमें अवरोही हों तो यह मनुष्य माताका संग करता है ॥ ११५ ॥ चंद्रमा पापयुक्त दृष्ट हो सूर्य केंद्रमें क्रूर ग्रह पापदृष्ट सुखस्थानमें होवै तो इस योगमें भी मनुष्य मातृगामी होताहै ॥ ११६ ॥

पापेक्षिते वा सुखभावनाथे पापान्विते सौम्यदृशा विहीने ॥ दारेश्वराल्लग्नपतौ विहीने जातो नरो मातृसमानगामी ॥११७॥ सहोदरी संगममाहुरन्ये दारेश्वरे क्रूरयुते सुखस्थे ॥ पापेक्षिते पापसमानमेव क्रूरादिषष्ट्यंशसमन्विते वा ॥ ११८ ॥

चतुर्थेश पापायुक्त वा पापदृष्ट हो शुभदृष्टि उसपर न होवै सप्तमेशसे लग्नेश हीनबलहोवै तो ऐसे योगवाला मनुष्य मातृतुल्य स्त्रीका गमन करनेवाला होवै ॥ ११७ ॥ सप्तमेश पापयुक्त

वा दृष्ट चतुर्थ स्थानमें होवै अथवा क्रूर आदि षष्टयंशयुक्त होवै तो मातृगमन समान पाप पावै ऐसे योगमें कोई बहिनके साथ संगम होना फल कहते हैं ॥ ११८ ॥

सुखे शनौ पापनिरीक्षिते वा पापान्विते तादृशपापयुक्तः ॥ पापग्रहाणां भवने सुखे तु क्रूरादिषष्टयंशयुते तथैव ॥११९॥ षष्ठेशभूनंदनसंयुतेऽब्जे सुखस्थिते पापनिरीक्षिते वा ॥ चंद्रांशसंयुक्तनवांशनाथे तथाविधे मातरि दोषमाहुः ॥ १२० ॥

चौथा शनि पापदृष्ट युक्त होवै तो वैसेही पापसे युक्त होवै चतुर्थमें पापराशि क्रूरादि षष्टयंश युत होवै तो वैसाही फल है ॥ ११९ ॥ छठे भावका स्वामी मंगलसे युक्त चंद्रमा सुख स्थानमें हो अथवा पापदृष्ट हो और चंद्रमा जिसके नवांशमें है वह भी ऐसाही होवै तो मातामें वही दोष कहतेहैं ॥ १२० ॥

सुखेश्वरे राहुयुते सपापे शनैश्चरेणापि दिवाकरेण ॥ मातान्यसक्ता सुखराशिनाथसंयुक्तभागाधिपतौ तथैव ॥ १२१ ॥ सुखेश्वरे लग्नगते बलाढ्ये गुर्विन्दुसौम्यास्फुजिदर्कदृष्टे ॥ वैशेषिकांशे शुभदृष्टियुक्ते पतिव्रता तस्य भवेत्सावित्री ॥ १२२ ॥

चतुर्थेश पापयुक्त तथा राहुयुक्त शनि तथा सूर्यसे भी युक्त वा दृष्ट होवै तो उसकी माता अन्य पुरुषमें आसक्त होवै चतुर्थेश जिसके नवांशकमें है वह भी ऐसा होवै तोभी वह फल होगा ॥ १२१ ॥ चतुर्थेश बलवान् लग्नमें गुरु, चंद्रमा, बुध, शुक्र और सूर्यसे दृष्ट होवै वैशेषिकांशमें हो शुभ ग्रह दृष्टियुक्त होवै तो उसकी मा पतिव्रता होवै ॥ १२२ ॥

तथाविधे शीतकरे सराहुकेतौ सवित्री यदि नीचसक्ता ॥ मंदेन युक्ते सति शूद्रसक्ता वैश्येन सक्ता शशिसूनुयुक्ते ॥ १२३ ॥ रव्यन्विते क्षत्रियजातिशक्ता शुक्रेज्ययुक्ते द्विजपुंगवेश्च ॥ धरासुतेनापि तथाविधेन वक्तुं फलं तादृशमेव सत्यम् ॥ १२४ ॥

ऐसाही चंद्रमा चतुर्थेश होकर राहु वा केतुसे युक्त पापयुक्त होवै तो उसकी माता नीच जातिके पुरुषमें आसक्त होवै, यदि वह चंद्रमा शनियुक्त होवै तो शूद्रमें, बुधसे युक्त होवै तो वैश्यमें आसक्त होवै ॥ १२३ ॥ सूर्यसे युक्त होवै तो क्षत्रियमें, शुक्र बृहस्पतिसे युक्त होवै तो श्रेष्ठ ब्राह्मणमें तैसेही मंगलसे युक्त होवै तो वैसाही फल कहना सत्य होताहै ॥ १२४ ॥

षष्ठेश्वरेण सहिते सुखराशिनाथे भाग्यस्थिते जनकमत्रविशं करोति ॥ भाग्याधिपेन सहिते यदि मातृनाथे सौख्यस्थिते

जनकमत्र विशं करोति ॥ १२५ ॥ लग्नेशभाग्येशसुखेशयुक्ते षष्ठाधिपे स्यात्परजात एव ॥ तदंशनाथेन युते तदीशे पापेक्षितः स्यात्परजात एव ॥ १२६ ॥

चतुर्थेश षष्ठेशसे युक्त नवम स्थानमें होवै तो उसकी उत्पत्ति वैश्यसे होगी यदि चतुर्थेश भाग्येशसे युक्त सुखस्थानमें होवै तोभी वही फल जानना ॥ १२५ ॥ लग्नेश भाग्येश सुखेशसे षष्ठेश युक्त होवै तो दूसरेसे उत्पन्न होगा षष्ठेश जिसके नवांशमें है उसीसे युक्त भी हो पापदृष्ट होवै तोभी परजात (जारज) करताहै ॥ १२६ ॥

पापांतरे मातृगृहे तदीशे तत्कारके वा शुभदृष्टियुक्ते ॥ लग्नेश्वराद्धीनबले शुभेशे जातस्तदानीं परजात एव ॥ १२७ ॥ न वीक्ष्यते तद्गुरुणा विलग्नं निशाकरो वा गुरुणा न दृष्टः ॥ दिवाकरेणापि युते शशांके सपापचन्द्रे रविणा तथैव ॥ १२८ ॥

चतुर्थभाव पापांतर, चतुर्थेश अथवा चतुर्थभावकारक शुभग्रहसे दृष्ट वा युक्त होवै, चतुर्थेश लग्नेशसे हीनबल होवै तो वह मनुष्य दूसरेसे उत्पन्न है ॥ १२७ ॥ लग्नको बृहस्पति न देखे अथवा चन्द्रमाको बृहस्पति न देखे चंद्रमा सूर्यसे युक्त होवै अथवा चंद्रमा पापयुक्त होवै तोभी वही फल होगा ॥ १२८ ॥

पापे शुभे मातृगृहे सपापे लग्नेश्वरे हीनबले सपापे ॥ परांशकादौ सुखभे तदानीं जातो नरः स्यात्परजात एव ॥ १२९ ॥ मातृस्थाने शुभयुते कारके शुभसंयुते ॥ सद्भावपे बलाढ्ये वा मातुरायुष्यमादिशेत् ॥ १३० ॥

नवम भावमें पापग्रह, चतुर्थ भाव सपाप, लग्नेश हीनबल सपाप तथा चतुर्थमें शत्रुके अंशकमें होवै तो मनुष्य दूसरेसेही उत्पन्न जानना ॥ १२९ ॥ चतुर्थ स्थानमें शुभ ग्रह चतुर्थभावकारक शुभयुक्त वा नवमेश बलवान् यद्वा चतुर्थेश बलवान् शुभ ग्रह होवै तो माता दीर्घजीविनी होवै ॥ १३० ॥

चंद्रे बलिष्ठे यदि वा भृगौ वा सौम्येक्षिते शोभनभागयुक्ते ॥ चतुष्टये मातृगृहे शुभाग्रे मातुश्च दीर्घायुरुदाहरंति ॥ १३१ ॥ भावेशसंयुक्तनवांशनाथयुक्तांशपे केन्द्रयुते बलाढ्ये ॥ तस्मिंश्चछशांकाद्यदि केंद्रयुक्ते मातुश्च दीर्घायुरुदाहरन्ति ॥ १३२ ॥

चंद्रमा वा शुक्र बलवान् शुभग्रहदृष्ट शुभग्रहोंके अंशकमें चतुर्थस्थानमें होवै, चतुर्थमें शुभग्रह होवैं, अथवा (मातृगृहाच्छुभाढ्ये) ऐसाभी पाठ है अर्थात् चतुर्थसे केंद्र शुभयुक्त होवै तो माताको दीर्घायु कहतेहैं ॥ १३१ ॥ चतुर्थेश जिसके नवांशकमें है वह भी जिस ग्रहके नवांशकमें है वह केंद्रमें बलवान् होवै और चंद्रमासे भी केन्द्रमें होवै तोभी माताको दीर्घायु कहतेहैं ॥ १३२ ॥

पापांतरे पापयुते शशांके पापेक्षिते मातृगृहे विनाशः ॥ शुक्रात्तथैवं प्रवदंति संतस्तत्स्थानपाद्वा कथयन्ति शेषम् ॥ १३३ ॥
निशाकरात्पापयुते स्मरे वा भृगोस्तथैवं जननीविनाशम् ॥ सुखे शनौ मातृविनाशमेति पापेक्षिते चेदचिरेण नाशः ॥ १३४ ॥

चंद्रमा पापोंके बीच, पापयुक्त पापदृष्ट चौथे होवै तो माताका विनाश होवे ऐसेही ज्योतिषज्ञ शुक्रसे और चतुर्थेशसे भी फल कहतेहैं ॥ १३३ ॥ चंद्रमासे सप्तममें पापयुक्त शुक्र होवै तो वैसेही मातृनाश फल होगा, चतुर्थमें शनि होवै तो मातृनाश होवै वह शनि पापदृष्ट भी होवै तो मातृनाश शीघ्रही होवै ॥ १३४ ॥

शुभेक्षितश्चेच्चिरकालमृत्युमुदाहरंत्यत्र महानुभावाः ॥ पापग्रहाणां भवने शनौ तु पापान्विते मातृविनाशमेति ॥ १३५ ॥

पूर्वोक्त चौथे शनि शुभग्रहदृष्ट होवै तो यहां बडे मतापी ज्योतिषी माताकी मृत्यु बहुत दिनोंमें होगी ऐसा कहतेहैं, वही शनि पाप ग्रहोंके राशिमें पापयुक्त होवै तो मातृनाश कुछही दिनमें होवै ॥ १३५ ॥

मातृस्थानाधिपस्यांशराशीशो यन्नवांशके ॥ तदंशनाथकिरणान्मातृकालं विनिर्दिशेत् ॥१३६॥ नाथकारकराशीनां मध्ये यो बलवान्भवेत् ॥ यावानंशस्तदंशे स्यान्मेषादौ तत्र मृत्युदः१३७॥ वक्रे तु द्विगुणं प्रोक्तं त्रिगुणं त्वतिवक्रगे ॥ चतुर्गुणं शुभैर्दृष्टे कालमेवं विनिर्दिशेत् ॥ १३८ ॥

चतुर्थेश जिसके नवांशकमें है वहभी जिसके नवांशकमें हो उसके रश्मियोंके अनुसार माताका जीवनसमय कहना ॥ १३६ ॥ भावेश भावकारक भावराशिमें से जो अधिक बलवान् हो वह जितने अंशमें है उसके अंशनाथसे मेषादि गणनासे जितनी संख्या हो उतने कालमें माताकी मृत्यु होतीहै यहां स्मरण चाहिये कि १२ राशियोंके १०८ नवांश होतेहैं वह काल १०८ वर्षके भीतर आताहै ॥ १३७ ॥ जो वह ग्रह वक्र होवै तो द्विगुण, अति वक्रमें त्रिगुण शुभग्रहोंसे दृष्टभी होवै तो चतुर्गुण समय कहना ॥ १३८ ॥

हृदये पापसंयुक्ते पापदृष्टे तदीश्वरे ॥ पापांतरे वा हृदये हृत्कापट्यं विनिर्दिशेत् ॥१३९॥ शन्याराराहुसंयुक्ते हृदये शुभवर्जिते ॥ तथैव तद्भावनाथे हृत्कापट्यं विनिर्दिशेत् ॥ १४० ॥ पापे कर्मेश्वरे सौख्ये कपटी पापवीक्षिते ॥ सपापे रंध्रपे सौख्ये कापट्यं पापसंयुते ॥ १४१ ॥ भानुना क्षीणचंद्रेण सहिते हृदये यदा ॥ कपटी क्षणमात्रं तु निष्कापट्यं तदूर्ध्वतः ॥१४२॥

चतुर्थभाव (हृदयस्थान) पापयुक्त चतुर्थेश पापदृष्ट वा पापोंके बीचमें हो यद्वा चतुर्थभाव पापांतःस्थ होवै तो मनुष्यके हृदयमें कपट कहना ॥ १३९ ॥ चौथे शनि मंगल राहु होवैं शुभग्रह न होवैं ऐसाही भावेशभी पापयुक्त हो शुभयुक्त न होवै तो हृदयमें कपट होगा ऐसा कहना ॥ १४० ॥ दशमेश पापग्रह सुखस्थानमें पापदृष्ट वा युक्त हो तो मनुष्य कपटी होगा, अष्टमेश पापसहित चतुर्थ स्थानमें होवै तो मनुष्य कपटी होवै ॥ १४१ ॥ चतुर्थ सूर्य वा क्षीणचंद्रमासे सहित होवै तो क्षणमात्र तो कपटी होवैं उपरान्त निष्कपट रहे ॥ १४२ ॥

हृदये शुभसंयुक्ते स्वोच्चमित्रगृहान्विते ॥ शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा निष्कापट्यं विनिर्दिशेत् ॥ १४३ ॥ विशुद्धहृदयः शांतो हृदयेशे बलान्विते ॥ गोपुराद्यंशके वापि मृद्वंशादियुते तथा ॥ १४४ ॥

चतुर्थ स्थानमें शुभग्रह अपने उच्चमें वा मित्रके घरमें अथवा शुभग्रहकी राशिमें होवे तो निष्कपटता कहनी ॥१४३॥ चतुर्थेश बलवान् होवे अथवा गोपुरादि अंशकमें मृद्वंशादिमें होवै तो निष्कपट शुद्धहृदय और शांत होवै ॥ १४४ ॥

लग्नेश्वरे हृद्गते वा शुभयुक्तेक्षितेपि वा ॥ पारावतादिभागस्थे निष्कापट्यं विनिर्दिशेत् ॥ १४५ ॥

लग्नेश चतुर्थ भावमें अथवा शुभग्रहयुक्त दृष्ट पारावतादि अंशकमें होवै तो मनुष्य निष्कपट होवै ॥ १४५ ॥

लग्ने गुरौ दानवपूजितेन युक्ते यदा तस्य विशुद्धचित्तम् ॥ पापे सुखे तद्भवनाधिनाथे पापान्विते तस्य विरुद्धचित्तम् ॥ १४६ ॥ राहौ सुखे पापदृशा समेते बहिर्विशुद्धस्त्वाति तत्र भाति ॥ अंतर्गतं तत्कपटं वदंति पापाधिकत्वे सुखराशियुक्ते ॥ १४७॥

लग्नमें बृहस्पति शुक्रयुक्त होवे तो शुद्ध (निष्कपट) चित्त होवै, चतुर्थमें पाप चतुर्थेश पापयुक्त होवै तो चित्त विरुद्ध (सकपट) होवै ॥ १४६ ॥ चौथे राहु पापदृष्ट होवै तथा चौथे पापग्रह भावेश पापयुक्त होवै तो बाहरसे निष्कपट और भीतर कपट होवै ॥ १४७ ॥

यदा लग्नसुखेशौ वा मित्रभूतौ परस्परम् ॥ शुभेक्षितौ शुभैर्युक्तौ मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ॥ १४८ ॥ लग्नेश्वरेण संदृष्टे मातृनाथे चतुष्टये ॥ शुभग्रहान्विते दृष्टे मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ॥ १४९ ॥ शत्रुश्चेल्लग्ननाथस्य मातृलाभाधिपौ यदि ॥ पापेक्षिते पापयुते तच्छत्रुत्वं विनिर्दिशेत् ॥ १५० ॥

यदि लग्नेश चतुर्थेश परस्पर मित्र होवैं शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट होवैं तो माताका विशेष स्नेह कहना ॥ १४८ ॥ चतुर्थेश केंद्रमें लग्नेशसे दृष्ट शुभग्रह युक्त वा दृष्ट होवै तोभी मातृस्नेह कहना ॥ १४९ ॥ यदि चतुर्थेश लाभेश लग्नेशके शत्रु होवैं पाप योग दृष्टिभी होवै तो माता और बेटेकी शत्रुता रहे ऐसा कहना ॥ १५० ॥

लग्नेशान्नाशराशिस्थे मातृस्थानाधिपे यदि ॥ तथैव लग्नभावाद्वा तच्छत्रुत्वं विनिर्दिशेत् ॥ १५१ ॥ वाहनेशे बलयुते वाहने शुभसंयुते ॥ शुभग्रहेण संदृष्टे वाहनादिफलं भवेत् ॥ १५२ ॥

चतुर्थेश लग्नेशसे बारहवें होवै अथवा लग्नसे द्वादशवें होवै तो माताके साथ शत्रुता कहनी. ॥ १५१ ॥ वाहनेश बलवान् चतुर्थ स्थानमें शुभयुक्त शुभदृष्ट होवै तो वाहनादि फल मिलेंगे ॥ १५२ ॥

सुवर्णवस्त्राभरणादियानं शुक्राद्वदेत्तत्सुखराशितो वा ॥ सेंदौ चतुर्थाधिपतौ विलग्ने लग्नेश्वरेणापि युतेश्वलाभः ॥ १५३ ॥ शुक्रेण युक्ते यदि वाहनेशे देहान्विते वा नरवाहनादि ॥ देवेन्द्रपूज्येन युतेत्र लग्ने वदंति संतश्चतुरंगयानम् ॥ १५४ ॥

सुवर्ण वस्त्र भूषण सवारी शुक्रसे अथवा चतुर्थ राशिसे बलाबलानुसार कहने, चतुर्थेश चंद्रमा सहित लग्नमें लग्नेशसे भी युक्त होवै तो घोडेका लाभ होवै ॥ १५३ ॥ चतुर्थेश शुक्रसे युक्त लग्नमें होवै तो नरवाहनादि पालकी नालकी आदि सवारी मिलें, यदि यहां लग्न बृहस्पतिसे भी युक्त होवै तो घोड़े हाथी रथ मनुष्य चारों प्रकारकी सवारीयां मिलैं ॥ १५४ ॥

चन्द्रामरेज्यामरशत्रुपूज्यैर्युक्ते तनौ वा यदि वाहनेशे ॥ प्रोक्तं त्रयं वाहनमाहुरार्या नीचारिमूढादिविहीनखेटैः ॥ १५५ ॥ भाग्ये-

शलग्नेशचतुर्थनाथाः कर्मस्थिता नीचविमूढहीनाः ॥ कर्मेश्वरेणापि युते विलग्ने सिंहासनप्राप्तिमुदाहरन्ति ॥ १५६ ॥

चंद्रमा, गुरु, शुक्रसे युक्त लग्न वा वाहनेश होवे परंतु नीच, शत्रु, अस्त आदिमें न होवे तो तीन प्रकारके वाहन रहें ॥ १५५ ॥ नवमेश, लग्नेश, चतुर्थेश दशवे होवें नीच अस्तंगत न होवें, अथवा दशमेश सहित लग्नमें होवें तो सिंहासन मिले ऐसा कहतेहैं॥ १५६॥

भाग्यस्थिते वाहनराशिनाथे सशुक्रजीवे सुखराशियुक्ते ॥ भाग्याधिपे कोणचतुष्टये वा बह्वर्थदेशाभरणार्थयानम् ॥ १५७ ॥ भाग्याधिपेन सहिते यदि वाहनेशे जीवेक्षिते तनुगते बलपूर्णयुक्ते ॥ स्वक्षेत्रतुंगसहिते यदि वा त्रिकोणे भूनाथमानववशाद्धनवाहनादि ॥ १५८ ॥

चतुर्थेश नवम शुक्र बृहस्पति चतुर्थ वा नवमेश केंद्रमें होवे तो बहुत देशोंके भूषण, धन सवारी मिले ॥ १५७ ॥ यदि चतुर्थेश नवमेशसे युक्त बृहस्पतिसे दृष्ट लग्नमें पूर्ण बल युक्त स्वराशि वा उच्चका अथवा त्रिकोणमें होवे तो राजासे धन वाहन आदि मिलें ॥ १५८

भाग्येश्वरेणापि युते सुखेशे यत्र स्थिते पश्यति वा निजर्क्षम् ॥ वैशेषिकांशे यदि वा बलाढ्ये सर्वार्थभाग्यान्वितवाहनः स्यात् ॥ ॥ १५९ ॥ दुःस्थे विमूढे यदि वाहनेशे भाग्येश्वरेणापि समीक्षिते वा ॥ दुर्वाहिनी चंचलवाहिनी वा लाभाधिपेनापि समीक्षिते वा ॥ १६० ॥ सौख्याधिपे शोभनखेचरेण भाग्येश्वरेणापि युतेथ वा स्यात् ॥ सेनाबहुत्वं समुपैति जातो बहुत्वदेशाभरणानि यानम् ॥ १६१ ॥

चतुर्थेश नवमेशसे युक्त किसी स्थानमें अपने गृहको देखे वैशेषिकांशमें अथवा बलवान् होवे तो संपूर्ण प्रकारके धन ऐश्वर्य सहित वाहन होवे ॥ १५९ ॥ यदि चतुर्थेश दुष्ट स्थानमें अस्तंगत हो और उसे भाग्येशभी देखे अथवा लाभेशसे दृष्ट होवे तो दुष्टसेना अथवा चंचल सेना (पुलिश) आदि मिलै ॥ १६० ॥ चतुर्थेश शुभग्रह तथा भाग्येशसे भी युक्त होवे तो मनुष्य बहुत सेना बहुत देशोंके आभरण वस्त्र भूषणादि सहित बहुत वाहन पावै॥ १६१॥

भाग्येश्वराल्लाभगते विलग्ननाथे सुखेशे यदि भाग्यराशौ ॥ सुखायभावे तनुनायके वा त्वसंख्ययानादियुतः प्रसिद्धः॥ १६२॥

सुखेश्वरे केंद्रगते तदीशे लग्नस्थिते वा बहुवाहनाढ्यः ॥ कर्मेश्वरे लग्नगते तदीशे कर्मस्थिते वा बहुवाहनाढ्यः ॥ १६३ ॥

लग्नेश नवमेशसे लाभ स्थानमें चतुर्थेश नवम स्थानमें हो अथवा लग्नेश चौथे ग्यारहवें भावमें होवै तो असंख्य वाहनोंसे युक्त एवं प्रसिद्ध (विख्यात) होवे ॥ १६२ ॥ चतुर्थेश केंद्रमें हो जिस राशिमें सुखेश है उसका स्वामी लग्नमें होवे तो बहुत वाहनोंसे युक्त होवे दशमेश लग्नमें लग्नेश दशवेंमें होवै तौ भी बहुत वाहानोंसे युक्त रहे ॥ १६३ ॥

सुखेश्वरे सौम्ययुते सुखस्थे शस्त्राश्वकोशाधिपतिर्भवेत्तु ॥ क्षेत्रेश्वरे लाभगते बलाढ्ये बंधौ भवे वा क्षितिसूनुयुक्ते ॥ १६४ ॥ भूसूनुराशौ यदि वा सुखेशे राज्यार्थसौख्याभरणादियानम् ॥ सौम्ये विलग्ने सबलं प्रयुक्ते धर्मान्विते शोभनखेचरेन्द्रे ॥ १६५ ॥

चतुर्थेश चतुर्थमें शुभयुक्त होवे तो हथियार घोडे और खजानेका स्वामी होवे चतुर्थेश लाभ स्थानमें बलवान् होवे अथवा चतुर्थ वा लाभ स्थानमें मंगल सहित होवे ॥ १६४ ॥ अथवा चतुर्थेश मंगलकी राशिमें होवे तो राज्य, धन, सुख, वस्त्र, भूषणादि और वाहन मिले लग्नमें बलवान् सौम्य ग्रह नवम स्थानमें शुभग्रह होवै ॥ १६५ ॥

स्वोच्चस्थिते वित्तपतौ च केंद्रे सिंहासनप्राप्तिमुदाहरंति ॥ सौम्येक्षिते धर्मगृहे तु केंद्रे सवित्तपाः शोभनखेचरेन्द्राः ॥ १६६ ॥ उच्चे ग्रहे वा धनराशियुक्ते सिंहासनप्राप्तिमुदाहरन्ति ॥ केन्द्रे शुभाः पापखगास्त्रिषष्ठलाभस्थितास्तत्पदमाहुरार्याः ॥ १६७ ॥

और धनेश अपने उच्चका केंद्रमें होवै तो सिंहासनप्राप्ति योग कहते हैं, नवम स्थान शुभ दृष्ट होवे केंद्रमें धनेश सहित शुभ ग्रह होवे ॥ १६६ ॥ अथवा उच्चका ग्रह धनस्थानमें होवे तो सिंहासन प्राप्ति कहते हैं, केंद्रोंमें शुभ ग्रह तीसरे, छठे, ग्यारहवें में पापग्रह होवें तो भी सिंहासन मिले ॥ १६७ ॥

गेहेशे व्ययराशिस्थे पित्राद्यन्यं विदेशगः ॥ अष्टमस्थे गृहेशे वा स्वयं संपादयेद्गृहम् ॥ १६८ ॥ धनेशे लग्नभावस्थे कर्मेशे धनमाश्रिते ॥ वाहने स्वोच्चखेटस्थे वाहनाधिपतिर्भवेत् ॥ १६९ ॥ लग्नवाहनभाग्येशास्त्वन्योन्यं केन्द्रमाश्रिताः ॥ लग्ननाथे बलाढ्ये वा वाहनाधिपतिर्भवेत् ॥ १७० ॥

चतुर्थेश बारहवें होवे तो पिताके घरसे अन्य घर विदेशमें बनावै अथवा चतुर्थेश अष्टम स्थानमें होवे तो आपही अपनेको घर बनावे ॥ १६८ ॥ धनेश लग्नमें दशमेश द्वितीय स्थानमें हो चतुर्थमें उच्चका ग्रह होवै तो वाहनोंका स्वामी होवे ॥ १६९ ॥ लग्नेश चतुर्थेश नवमेश परस्पर केंद्रोंमें होवें लग्नेश बलवान् होवे तो वाहनोंका स्वामी होवे ॥ १७० ॥

गोपुराद्यंशके वापि वाहनेशे बलान्विते ॥ लाभकर्मशुभाधीशैर्दृष्टे वाहनसंयुतः ॥ १७१ ॥ परमोच्चांशके युक्ते भाग्येसे केंद्रमाश्रिते ॥ ग्रहद्वये तुंगयुते बहुवाहनपुंजभाक् ॥ १७२ ॥ धनाधिपेन संयुक्ते व्ययेशे स्वोच्चराशिगे ॥ भाग्याधिपेन संदृष्टे वाहनाधिपतिर्भवेत् ॥ १७३ ॥

चतुर्थेश बलवान् गोपुरादि अंशकमें लाभेश, दशमेश, नवमेशसे दृष्ट होवे तो वाहनोंसे युक्त रहे ॥ १७१ ॥ नवमेश केंद्रमें परम उच्चांशकमें होवै, दो ग्रह उच्चके होवें तो बहुतसे वाहनोंके समूहका स्वामी होवै ॥ १७२ ॥ व्ययेश अपने उच्चमें धनेशसे युक्त नवमेशसे दृष्ट होवै तो वाहनोंका स्वामी होवै ॥ १७३ ॥

कर्माधिपे चतुर्थस्थे लाभनाथेन संयुते ॥ भाग्यनाथेन वा युक्ते बहुवाहनदेशभाक् ॥ १७४ ॥ उच्चाह्वये कर्मगते लग्ननाथेन वीक्षिते ॥ भाग्याधिपेन वा दृष्टे वाहनाधिपतिर्भवेत् ॥ १७५ ॥ सिंहासनांशकगते कर्मवाहनराशिपे ॥ लग्नेश्वरेण संदृष्टे बहुवाहनदेशभाक् ॥ १७६ ॥

दशमेश चौथे लाभेशसे युक्त अथवा नवमेशसे युक्त होवै तो बहुतसे वाहनोंका स्वामी होवै ॥ १७४ ॥ उच्चका ग्रह दशममें लग्नेश अथवा नवमेशसे दृष्ट होवे तो वाहनोंका स्वामी होवै ॥ १७५ ॥ दशम तथा चतुर्थका स्वामी सिंहासनांशमें हो लग्नेशसे दृष्ट होवै तो बहुतसे वाहनोंके समूहका स्वामी होवै ॥ १७६ ॥

वाहनार्थतृतीयेषु भाग्यकर्मभवाधिपाः ॥ स्थिता वात्यर्थमानादिसंयुक्ते निधने शुभे ॥ १७७ ॥ स्वोच्चे सुखेशे तन्नाथे केन्द्रकोणसमन्विते ॥ वाहने तुंगसंयुक्ते व्यये शुद्धे त्रियानभाक् ॥ १७८ ॥ परमोच्चांशके शुक्रे कर्मेशे गृहसंयुते ॥ संभवे तादृशे योगे वाद्यघोषादिभिर्युतः ॥ १७९ ॥ शंखवादि-

त्र्यंशोषाद्यैः संयुक्ते भाग्यपे सुखे ॥ केंद्रोच्चकोणगे वापि कर्मेशे वाहनान्वितः ॥ १८० ॥

चतुर्थ, लाभ, तीसरे भावोंमें नवमेश दशमेश लाभेश होवें अथवा अतिबलसंयुक्त शुभग्रह अष्टम भावमें होवै ॥ १७७ ॥ चतुर्थेश अपने उच्चमें हो उसका उच्चनाथ केंद्र त्रिकोणमें चतुर्थ स्थानमें उच्चका ग्रह होवै व्ययभाव शुद्ध (ग्रहरहित) होवै तो तीन वाहनोंका स्वामी होवै ॥ १७८ ॥ शुक्र परमोच्चांशमें होवै दशमेश अपनी राशिमें होवै ऐसे योग होनेमें बाजाओंके शब्दसे युक्त वाहनोंका स्वामी होवै ॥ १७९ ॥ नवमेश चतुर्थमें अथवा केंद्रमें उच्चका दशमेश होवै तो शंखबाजे आदियोंके शब्द सहित वाहनस्वामी होवै ॥१८०॥

शनिना संयुते कर्मनाथे केंद्रे शुभान्विते ॥ लग्नेशे वृद्धिभं याते पणवादिरवैर्युतः ॥ १८१ ॥ कर्मभाग्यविलग्नेषु स्वोच्चे सौम्यग्रहाः स्थिताः ॥ दृष्टेषु वा लग्नपेन यानांते दुःखमाप्नुयात् ॥ १८२ ॥ कर्मषट्सोदरसुखभाग्यलग्नव्ययेश्वराः ॥ सुताधिपेन सहिता ह्यसंख्याढ्यात्मदेशिभाक् ॥ १८३ ॥

दशमेश शनिसे युक्त केंद्रमें शुभग्रहयुक्त होवै लग्नेश उच्चाभिलाषी वा उदयी होवै तो पणव (वाद्यविशेष) आदिके शब्दसे युक्त वाहनाधीश होवै ॥ १८१ ॥ दशम नवम और लग्नमें उच्चके शुभग्रह होवें लग्नेश उन भावोंके देखे तो वाहनाधीश होवै परंतु अंतमें वाहनहीसे दुःखपावै ॥ १८२ ॥ दशम, छटा, तीसरा, चौथा, नवम,लग्न,व्ययभावोंके स्वामी पंचमेशसे युक्त होवें तो अगणित धनवान् अपने देशके वाहनोंका सुख भोग करे ॥ १८३ ॥

सुखे शुभयुते नाथे केंद्रकोणोच्चसंयुते ॥ भाग्येशे परमोच्चांशे सुखयानादिलाभभाक् ॥ १८४ ॥ मानेशे सुखराशिस्थे लाभे सौख्येशसंयुते॥लग्ने शुभेन संदृष्टे बहुयानादिलाभभाक् ॥१८५॥ मृदंगभेरीशंखादिकाहलादिरवैर्युतः ॥ राजयोगे समुद्भूते कर्मपे सौख्यसंयुते ॥ १८६ ॥

चतुर्थ भाव शुभग्रहयुक्त चतुर्थेश केंद्र त्रिकोणमें उच्च राशिका होवै, नवमेश परमोच्चांशमें होवै तो सुख देनेवाले वाहनादिसे युक्त होवै ॥ १८४ ॥ दशमेश सुखस्थानमें लाभेशभी सुखस्थानमें हो, लग्नमें शुभग्रहकी दृष्टि होवै तो बहुत वाहन आदियोंके लाभवाला होवै ॥ १८५ ॥ दशमेश चतुर्थ स्थानमें हो और राजयोगभी होवै तो मृदंग, भेरी, शंखादि, काहलादि शब्दोंसे युक्त होवै ॥ १८६ ॥

बलाबलाच्छोभनदृष्टियोगात्प्रोक्तं तृतीयस्य फलं तु राशेः ॥
चतुर्थराशेश्च फलं तथैव श्रीव्यंकटेशेन निरीक्ष्य सर्वम् ॥ १८७ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिन्तामणौ तृतीयचतुर्थभावफलविचारो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अध्यायांतमें ग्रंथकर्ता कहताहै कि मैं व्यंकटेशने तृतीयराशि तथा चतुर्थ राशिका फल ग्रहभावके बलाबल शुभग्रह दृष्टियोगके अनुसार समस्त ग्रंथोंको देखकर कहाहै ॥ १८७ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिंतामणौ माहीधरभाषायां तृतीयचतुर्थभावफलविचाराध्यायश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ पञ्चमषष्ठभावफलविचाराध्यायः ।

सुतभवनात्सुतबुद्धिमंत्रिणामपि मंत्रभोजनपितृभावान् ॥ हृदयोदरप्रवेशं विवेकशक्तिं च निर्दिशेन्मतिमान् ॥ १ ॥

पंचम भावसे पुत्र, बुद्धि, मंत्रित्व, मंत्र, भोजन, पितृभाव, हृदय, उदरप्रवेश, विवेकशक्तिका बुद्धिमान् ज्योतिषीने विचार करना, सोही आगे कहते हैं ॥ १ ॥

नाथैः कलत्रात्मजधर्मभानां पुत्रादिचिन्तां कथयेत्सजीवैः ॥
बुद्धिं तथा सोमसुतात्मजाभ्यां पितुस्तथैवात्मजभाग्यसूर्यैः ॥ २ ॥

सप्तम पंचम नवम भावोंके स्वामियों करिके तथा बृहस्पति करिके पुत्रादिका विचार कहना बुध तथा पंचम भावसे बुद्धिका तथा पंचम नवम और सूर्यकरिके पिताका विचार कहना ॥ २ ॥

पितुर्धनं याति सुखे सभानौ पुत्रे शशांके मरणं च मातुः ॥ सुते शुभे शोभनदृष्टियोगे पुत्रं ददात्येव तदा तदीशे ॥ ३ ॥

चतुर्थ स्थानमें सूर्य होवै तो पिताका धन पावै, पंचम चंद्रमा भी होवै तो माताकी मृत्यु होवै, पंचम भावमें शुभग्रह शुभग्रहदृष्ट होवै अथवा पंचमेश शुभग्रह शुभग्रहसे दृष्ट होवै तो पुत्र देताहै ॥ ३ ॥

पुत्रस्थाने तदीशे वा गुरौ वा शुभवीक्षिते ॥ शुभेन सहिते वापि पुत्रप्राप्तिर्न संशयः ॥ ४ ॥ लग्नेशे पुत्रभावस्थे पुत्रेशे बलसंयुते ॥ परिपूर्णबले जीवे पुत्रप्राप्तिर्न संशयः ॥ ५ ॥

पुत्रस्थान, अथवा पंचमेश वा गुरु शुभग्रहयुक्त दृष्ट होवै तो निस्संदेह पुत्रप्राप्ति होवै ॥ ४ ॥ लग्नेश पंचम भावमें पंचमेश बलवान् बृहस्पति पूर्ण बली होवै तो भी यही फल है ॥ ५ ॥

पुत्रस्थानाधिपे जीवे परिपूर्णबलान्विते ॥ लग्नाधिपेन वा दृष्टे पुत्रप्राप्तिर्न संशयः ॥ ६ ॥ वैशेषिकांशके जीवे पुत्रेशेपि तथा स्थिते ॥ शुभग्रहेण वा दृष्टे पुत्रप्राप्तिं समादिशेत् ॥ ७ ॥ पुत्रस्थानगते वित्तनाथे पूर्णबलान्विते॥ दृष्टे देवेन्द्रगुरुणा पुत्रप्राप्तिर्न संशयः ॥ ८ ॥ लग्नपुत्राधिपौ युक्तावन्योन्यं वापि वीक्षितौ ॥ क्षेत्रे परस्परस्थौ वा पुत्रप्राप्तिर्न संशयः ॥ ९ ॥

पंचमेश बृहस्पति पूर्णबली हो अथवा पंचमेश बृहस्पतिको लग्नेश देखे तो निस्संदेह पुत्रप्राप्ति होगी ॥ ६ ॥ बृहस्पति और पंचमेश वैशेषिकांशकमें हों अथवा ग्रहसे दृष्ट होवैं तो पुत्रप्राप्ति कहनी ॥ ७ ॥ धनभावेश पंचमभावमें पूर्णबलयुक्त हो अथवा बृहस्पतिसे दृष्ट होवै तो निःसंदेह पुत्रप्राप्ति होगी ॥ ८ ॥ लग्नेश पंचमेश एकस्थानमें हों अथवा परस्पर देखते हों अथवा एककी राशिमें दूसरा परस्पर हों तो वही फल कहना ॥ ९ ॥

लग्नपुत्राधिपौ केंद्रे शुभग्रहसमन्वितौ ॥ कुटुम्बेशे बलाढ्ये तु पुत्रप्राप्तिर्न संशयः ॥ १० ॥ पुत्रस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभसंयुते ॥ शुभेन वीक्षिते वापि पुत्रप्राप्तिर्न संशयः ॥ ११ ॥ लग्नेशे दारभावस्थे भाग्येशे दारसंयुते ॥ द्वितीयेशे विलग्नस्थे पुत्रप्राप्तिर्न संशयः ॥ १२ ॥ दारेशग्रहसंयुक्तनवांशभवनाधिपे ॥ भाग्यवित्तविलग्नेशैर्दृष्टे तत्प्राप्तिमादिशेत् ॥ १३ ॥

लग्नेश पुत्रेश केंद्रमें शुभग्रहसहित हों द्वितीयेश बलवान् होवै तो निस्सन्देह पुत्रप्राप्ति होवै ॥ १० ॥ पंचमेश जिसके नवांशकमें है उसका स्वामी शुभग्रहयुक्त होवै अथवा शुभग्रहसे दृष्ट होवै तो निस्संदेह पुत्रप्राप्ति होवै ॥ ११ ॥ लग्नेश सप्तममें नवमेशभी सप्तममें होवै द्वितीयेश लग्नमें होवै तो निःसंदेह पुत्रप्राप्ति होवै ॥ १२ ॥ सप्तमेश जिसके नवांशकमें है उसे नवम द्वितीय और लग्नभावके स्वामी देखें तो पुत्रप्राप्ति कहनी ॥ १३ ॥

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ॥ कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ॥१४॥ भाग्यपुत्रकलत्रेशसंयुक्तनवभागपाः ॥ पापांशगाः पापयुताः पुत्रनाशं वदेत्तदा ॥ १५ ॥ क्रूरांशे

पुत्रभावेशे नीचमूढसमन्विते ॥ पापैर्दृष्टेऽथ वा दुःस्थे पुत्रनाशं वदेत्तदा ॥ १६ ॥ व्ययेशसंयुतांशेशत्र्यंशनाथसमान्विते ॥ दृष्टे पुत्रेश्वरे तेन पुत्रार्तिं कथयंति हि ॥ १७ ॥

जिसका पंचम भाव पापग्रहोंके बीच हो पंचमेशभी तैसाही हो संतानकारक ग्रहभी पापयुक्त होवै तो पुत्रनाश कहना ॥ १४ ॥ नवम पंचम सप्तम भावोंके स्वामी जिनके नवांशोंमें हों वे पापग्रह सहित पापनवांशकोंमें होवैं तो पुत्रनाश कहना ॥ १५ ॥ पंचमेश क्रूरनवांशकमें नीच वा अस्तंगत होवै पापग्रहोंसे दृष्ट अथवा त्रिकस्थानमें होवै तो पुत्रनाश कहना ॥१६॥ व्यय भावेश जिसके नवांशकमें है वह जिसके द्रेष्काणमें हो उससे पंचमेश युक्त वा दृष्ट हो तो पुत्रपीडा कहतेहैं ॥ १७ ॥

पुत्रस्थानाधिपे दुःस्थे क्रूरषष्ट्यंशसंयुते ॥ क्रूरग्रहेण वा दृष्टे पुत्रनाशं वदेत्तदा ॥ १८ ॥ मृद्वंशादिसमायुक्ते पुत्रस्थानेश्वरे गृहे ॥ गोपुराद्यंशके वापि पुत्रसिद्धिर्न संशयः ॥ १९ ॥

पंचमेश दुष्टस्थानमें क्रूरषष्ट्यंशकगत होवै अथवा क्रूरग्रहसे दृष्ट होवै तो तब पुत्रनाश कहना ॥ १८ ॥ पंचमेश मृदु अंशादिमें बलवान् होवै अथवा गोपुरादि अंशकमें होवै तो पुत्रसंबन्धसिद्धि निस्संदेह होवै ॥ १९ ॥

पुत्राधिपस्थांशपतौ विलग्ने लग्नेश्वरस्थांशपतौ सुतस्थे ॥ गुरुस्थितांशाधिपतौ च केन्द्रे पुत्राप्तिमाहुर्मुनयो महांतः ॥२०॥ पारावतांशादियुते सुतेशे भाग्येश्वरे तादृशभावयुक्ते ॥ लग्नेश्वरे शोभनदृष्टियुक्ते पुत्राप्तिमाहुर्मुनयो महांतः ॥ २१ ॥

पुत्रभावेश जिसके नवांशकमें है वह लग्नमें होवै तथा लग्नेश जिसके नवांशकमें है वह पंचम होवै और बृहस्पति जिसके नवांशकमें है वह केन्द्रमें होवै तो श्रेष्ठ मुनिलोग पुत्रप्राप्ति कहते हैं ॥ २० ॥ पंचमेश पारावतांशादिमें होवै नवमेशभी तैसाही होवै लग्नेश शुभग्रह दृष्ट होवै तो श्रेष्ठ मुनिजन पुत्रप्राप्ति कहते हैं ॥ २१ ॥

वंशक्षयादिसहिते यदि सत्यमेतच्छास्त्राधिपारगमना मुनयो वदंति ॥ पुत्रादियोगमखिलं तदभावयोगं प्रोक्तं विलोक्य मनसा च वदेत्सुविद्वान् ॥ २२ ॥ वंशस्य विच्छेदकरः प्रजातश्चंद्रास्फुजित्पापखगाः क्रमेण ॥ खंदारसौख्येषु युतास्तथैव लग्नेश्वरे चंद्रसुतेन युक्ते ॥ २३ ॥ पापग्रहा रिष्फसुताष्टमस्था वंशस्य-

विच्छेदकरोऽर्थहीनः॥ निशाकरे लग्नगते सजीवे तत्सप्तमे भूमिसुते शनौ वा ॥ २४ ॥

वंशक्षयादि जो आगे कहते हैं तथा पुत्रादि होनेके योग उनके अभावके योग जो शास्त्रमें पारंगम मुनियोंने कहेहैं सत्य हैं प्रथम मनमें ठीक विचार करके विद्वानने फल कहना ॥२२॥ दशम चंद्रमा सप्तम शुक्र और चतुर्थ पापग्रह होवै तथा लग्नेश बुधयुत होवै तो वह मनुष्य वंशका विच्छेद करनेवाला होवै ॥ २३ ॥ पापग्रह १२ । ५ । ८ भावोंमें होवै तो वंशच्छेदक एवं धनहीन भी होवै, चंद्रमा बृहस्पति सहित लग्नमें और सप्तममें मंगल अथवा शनि होवै तो भी वही पूर्वोक्त फल कहना ॥ २४ ॥

पापग्रहा बंधुगताश्च सर्वे वंशस्य विच्छेदकरोऽत्र जातः॥ लग्नांत्यपुत्राष्टमराशियुक्तैः पापग्रहैर्वंशविनाशहेतुः ॥ २५ ॥ शुभेतरा रंध्रविलग्नरिष्फे वंशस्य विच्छेदकरः सुतेब्जे ॥ दारस्थिते सोमसुते सशुक्रे पापे सुखे देवगुरौ सुतस्थे ॥ २६ ॥

संपूर्ण पापग्रह चौथे हों तो मनुष्य वंशका विच्छेद करनेवाला होवे, लग्न द्वादश, पंचम, अष्टम भावोंमें पापग्रह हों तो वह मनुष्य वंशके विच्छेदका कारण होवै ॥ २५ ॥ अष्टम लग्न और द्वादशमें पापग्रह पंचममें चंद्रमा होवे तो वंशच्छेत्ता होवै सप्तममें बुध शुक्र चतुर्थमें पाप बृहस्पति पंचममें होवे तो भी वही फल कहना ॥ २६ ॥

रंध्रे शशांकात्सहिते तु पापैर्वंशस्य विच्छेदकरोत्र जातः ॥ पापे विलग्ने सुखगे शशांके लग्नेश्वरे पंचमराशियुक्ते ॥ २७ ॥ बलैर्विहीने यदि पुत्रनाथे वंशस्यविच्छेदकरोत्र जातः ॥ क्षीणे शशांके तनुभावयुक्ते मूढान्विते मंदगृहे सुरेज्ये ॥ २८ ॥

चन्द्रमासे अष्टम पापग्रह होवे तो मनुष्य वंशच्छेत्ता होवै लग्नमें पापग्रह, चतुर्थ चन्द्रमा लग्नेश पंचम भावमें ॥ २७ ॥ पंचमेश बलहीन होवै तो वंशच्छेदक होवै । क्षीण चन्द्रमा लग्नमें और मकर वा कुम्भका बृहस्पति अस्त होवे ॥ २८ ॥

त्रिकोणगैः पापखगैश्च सर्वैः प्रागेव पुत्रस्य सुखस्य नाशः ॥ चन्द्रात्मजे पंचमराशियुक्ते लग्ने सुखे वा यदि पापयुक्ते ॥ २९॥ शुभेतरैः पंचमभावयुक्तैर्न दृश्यते पुत्रसुखं हि तेन ॥ जातो यदि स्यात्क्षितिसूनुलग्ने रन्ध्रे शनौ पंचमगे रवौ वा ॥ ३० ॥

पुत्रादिलाभं मुनयो वदंति कालांतरे शोभनदृष्टियोगात् ॥
लग्ने शनौ देवगुरौ तु रंध्रे व्यये कुजे पुत्रजनिश्चिरेण ॥ ३१ ॥

समस्त पापग्रह त्रिकोणोंमें होवैं तो पहिलेहीसे पुत्रसुखका नाश होवे बुध पंचम भावमें अथवा लग्न वा चतुर्थ में पापयुक्त होवे ॥ २९ ॥ पंचममें पापग्रह होवैं तो उस मनुष्यसे पुत्रका सुख न देखा जावे जो मनुष्य लग्नके मंगल अष्टम शनि वा पंचम सूर्यमें ॥ ३० ॥ जन्मा हो उनपर शुभग्रहोंकी दृष्टि होवै वा शुभग्रहोंसे युक्त होवें तो उसको कालांतरमें पुत्रादिलाभ मुनिजन कहते हैं । लग्नमें शनि अष्टममें गुरु बारहवें मंगल होवे तो बडी उमरमें पुत्र-लाभ होगा ॥ ३१ ॥

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ॥ शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ॥ ३२ ॥ परमोच्चांशके बुद्धि-स्थाने नाथेन वीक्षिते ॥ शुभग्रहाणां मध्यस्थे तीव्रबुद्धिं समा-दिशेत् ॥ ३३ ॥

पंचमेश शुभग्रह शुभग्रहोंसे दृष्ट हो अथवा शुभग्रहकी राशिमें होवै तो बुद्धि तथा नीति-वाला होवै ॥ ३२ ॥ पंचम स्थान परमोच्चांशमें स्वस्वामिदृष्ट एवं शुभग्रहोंके मध्यमें होवै तो तीव्र बुद्धि कहनी ॥ ३३ ॥

कारके बलसंपूर्णे तदीशे शुभवीक्षिते ॥ बुद्धिस्थानेथ वा सौम्ये तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ॥ ३४ ॥ बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ॥ वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ॥ ३५ ॥

पंचम भावकारक पूर्णबली, पंचमेश शुभग्रहसे दृष्ट होवै अथवा पंचममें शुभग्रह होवै तो तीव्रबुद्धि होगी ऐसा कहना ॥ ३४ ॥ पंचमेश जिसके नवांशकमें है वह शुभ-ग्रहसे दृष्ट होवै अथवा वैशेषिकांशमें होवै तो भी तीव्रबुद्धि कहनी ॥ ३५ ॥

कारकस्थितराश्यंशनाथे केन्द्रत्रिकोणगे ॥ बुद्धीश्वरेण संदृष्टे तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ॥ ३६ ॥ शुभग्रहाणां मध्यस्थे बुद्धिराशौ शुभान्विते ॥ गुरौ केन्द्रत्रिकोणे वा बुद्धिमार्गविशारदः ॥ ३७ ॥

पंचमकारक ग्रह जिसकी राशि अंशकमें हो वह केंद्र वा त्रिकोणमें पंचमेशसे दृष्ट होवै तो तीव्र (तेज) बुद्धि होगी ऐसा कहना ॥ ३६ ॥ पंचम राशि शुभग्रहोंके बीचमें शुभग्रह युक्त हो वा बृहस्पति केन्द्र त्रिकोणमें होवै तो बुद्धिमार्गमें निपुण होवै ॥ ३७ ॥

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये बुद्धिराशिगते गुरौ ॥ शुभग्रहाणां मध्यस्थे भावे बुद्धिं विनिर्दिशेत् ॥ ३८ ॥ बुद्धिस्थानेश्वरे केन्द्रे शुभग्रहसमन्विते ॥ उच्चग्रहसमायुक्ते ग्रहणादिपटुर्भवेत् ॥ ३९ ॥

पुत्रभावेश बुध हो, पंचममें गुरु होवै पंचम भाव शुभग्रहोंके बीचमें होवै तो बुद्धिमान् होवै ॥ ३८ ॥ पंचमेश केन्द्रमें शुभग्रहयुक्त तथा उच्चराशिगत ग्रहके साथ होवै तो शीघ्र ग्रहण करने आदिवाली चतुर बुद्धि होवै ॥ ३९ ॥

मृद्वंशादिसमायुक्ते नाथकारकखेचरे ॥ शुभग्रहेण संदृष्टे धारणादिपटुर्भवेत् ॥४०॥ गोपुराद्यंशके वापि धारणादिपटुर्भवेत् ॥४१॥ परेंगितज्ञो मेधावी कारकस्थितभागपे ॥ केंद्रत्रिकोणसंयुक्ते कारकग्रहवीक्षिते ॥ ४२ ॥ नाथकारकसंयुक्ते त्र्यंशभोगपतौ शुभे ॥ चतुष्टये त्रिकोणे वा शुभदृष्टेंगितज्ञकृत् ॥ ४३ ॥

पंचमेश तथा पंचम भावकारक ग्रह मृदु आदि अंशकमें शुभग्रहदृष्ट होवै तो धारणा आदिमें चतुर होवै॥४०॥अथवा वे गोपुरादि अंशकमें होवैं तो भी वही फल होवै॥४१॥जिस भावमें कारक ग्रह है उसका स्वामी केन्द्र त्रिकोणमें होवै कारक ग्रहसे दृष्ट होवै तो पराये आकारही से उसके मनकी बात जाननेवाला बुद्धिमान् होवै ॥ ४२ ॥ द्रेष्काणेश शुभग्रह पंचमेश तथा कारकग्रहसे युक्त होवै केन्द्र वा त्रिकोणमें शुभग्रहदृष्ट होवै तो पराये इसारे जाने यद्वा पराये आकार चेष्टाहीसे समझकर काम करनेवाला होवै ॥ ४३ ॥

पंचमे पापसंयुक्ते तदीशे पापसंयुते ॥ क्रूरषष्ट्यंशके वापि बुद्धिनाशो भवेत्तदा ॥ ४४ ॥ नीचमूढारिगेहस्थे पापखेचरवीक्षिते ॥ क्रूरषष्ट्यंशसंयुक्ते बुद्धिनाशो भवेत्तदा ॥ ४५ ॥ पंचमे मंदसंयुक्ते लग्नेशे मंदवीक्षिते ॥ तदीशे पापसंयुक्ते बुद्धिजाड्यं समादिशेत् ॥ ४६ ॥ मंदमांद्यगुसंयुक्ते पंचमे शुभवर्जिते ॥ तदीशे पापसंदृष्टे विस्मृतिः प्रायशो भवेत् ॥ ४७ ॥ बुद्धिर्विस्मृतिपूर्वा स्यात्कारके शुभसंयुते ॥ तदीशे पापसंयुक्ते क्रूरषष्ट्यंशकेपि वा ॥ ४८ ॥

पंचम भावमें पापग्रह पंचमेश पापयुक्त अथवा क्रूरषष्ट्यंशमें होवै तो बुद्धिका नाश होवै ॥ ॥ ४४ ॥ नीच अस्तंगत वा शत्रु राशिमें पापग्रहसे दृष्ट हो तथा क्रूर षष्ट्यंशमें होवै तो

बुद्धि नष्ट होवे ।। ४५ ।। पंचममें शनि होवै लग्नेशपर शनिकी दृष्टि और पंचमेश पापयुक्त होवै तौ बुद्धिजड होगी ऐसा कहना ।। ४६ ।। शनि केतु राहुयुक्त शुभग्रहरहित पंचम भाव कारक शुभयुक्त होवै परंतु पंचमेश पापयुक्त अथवा क्रूर षष्ट्यंशमें होवै तो बुद्धि विस्मरणवाली होवे ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

सौम्ये तु बुद्धिभावस्थे गुरुशुक्रनिरीक्षिते ।। तादृशे बुद्धिनाथे वा सर्वेषां बुद्धिदो भवेत् ।। ४९ ।। ऊहापोहसमर्थः स्यात्तदीशे गोपुरांशके ॥ ५० ॥ कारकस्थितराशीशे लग्ननाथेन वीक्षिते ।। राजमन्त्री भवेद्दाता वाक्पतौ बलसंयुते ।। ५१ ।। बुद्धीश्वरेण संयुक्ते गोपुराद्यंशकान्विते ।। आगामिसूचको मंत्री कारके केंद्रकोणगे ॥५२॥ भृगौ सौम्यसमायुक्ते दृष्टे ताभ्यां शुभांशके।। त्रिकालज्ञो भवेज्जीवे स्वांशे मृद्वंशसंयुते ।। ५३ ।।

पंचमस्थानमें बुध, बृहस्पति शुक्रसे दृष्ट हो ऐसेही पंचमेशभी गुरु शुक्र दृष्ट होवै तो सभीको बुद्धिदेनेवाला होताहै ।।४९।। पंचमेश गोपुरांशकमें होवै तो ऊहापोह(दलील तकरीर) करनेमें समर्थ होवै ।। ५० ।। पंचमकारक जिसकी राशिमें है उसे लग्नेश देखे और गुरु बलवान् होवैं तो राजमंत्री तथा दाताभी होवै ।। ५१ ।। कारक ग्रह पंचमेशसे युक्त केंद्र कोणमें वा गोपुरादि अंशकमें होवै तो भविष्य जाननेवाला मन्त्री होवै ।। ५२ ॥ शुक्र बुधसे युक्त हो गुरु अपने नवांशमें मृद्वंशमें होवै बुध शुक्रसे दृष्ट होवे तो भूत भविष्य वर्तमान तीनों कालका जाननेवाला होवै ॥ ५३ ॥

गोपुराद्यंशके वापि शुभांशे शुभवीक्षिते ।। पुंग्रहे पुंग्रहं प्राप्ते पुंभागे पुत्रनायके ॥ सुपुत्रजननं विद्यात्प्रथमं नात्र संशयः ॥५४॥

पंचमेश गोपुरादि अंशकमें हो अथवा शुभग्रहके अंशकमें शुभग्रहसे दृष्ट पुरुषग्रहसे युक्त स्वयं पुरुष ग्रह होवे तो प्रथम सुपुत्र उत्पन्न होगा इसमें संशय नहीं ॥ ५४ ॥

स्त्रीराशौ स्त्रीग्रहे प्राप्ते स्त्रीभावे पुत्रनायके ॥ दारिकां प्रथमं विद्यात्षंढांशे षंढमादिशेत् ॥ ५५ ॥ कारकस्थितराशेर्वा पंचमे बिन्दुसंख्यया ॥ नीचारिमूढगेहानां बिन्दुं त्यक्त्वा सुतान्वदेत् ॥ ५६ ॥ पुत्रस्थानेशकिरणात्पुत्रभावांशकाद्वदेत् ॥ रश्मिजालैर्गुरोर्वापि बलोत्कर्षाद्वदेत्तथा ॥ ५७ ॥

पंचमेश स्त्रीराशिमें स्त्रीग्रहसहित स्त्रीनवांशकमें होवै तो प्रथम कन्या होवै यदि वह नपुंसकराश्यंशकादिमें होवै तो नपुंसक पैदा होगा ऐसा कहना ॥ ५५ ॥ कारक जिस राशिमें है उससे अथवा पंचमभावके बिन्दु (अष्टकवर्ग गणनासे) की संख्यामें नीच, शत्रु, अस्तंगतके बिंदुसंख्या छोडके पुत्रसंख्या कहनी ॥ ५६ ॥ अथवा पंचमेशके रश्मिसंख्यासे पंचमभावांशकसंख्यासे अथवा रश्मियोंसे बृहस्पतिके बलवत्तासे पुत्रसंख्या कहनी ॥ ५७ ॥

लग्नपुत्रेश्वराभ्यां तु मित्रत्वेनैव मित्रता॥शत्रुत्वे शात्रवं प्रोक्तं समत्वे समता भवेत् ॥ ५८ ॥ लग्नपुत्रेश्वरौ खेटौ परस्परनिरीक्षितौ ॥ परस्परगृहांशस्थौ शुश्रूषां कारयेत्सुतः ॥ ५९ ॥ लग्नं पश्यति वा पुत्रनाथे लग्नान्विते यदि ॥ लग्नेश्वरे सुतर्क्षे वा पुत्रो वाक्यवशानुगः ॥ ६० ॥

लग्नेश पंचमेश परस्पर मित्र होवैं तो पिता पुत्रकी परस्पर मित्रता रहै उनके शत्रु होनेमें शत्रुता और सममें समता होतीहै ॥५८॥ लग्नेश पंचमेशकी परस्पर दृष्टि होवै, परस्पर राशि वा अंशकोंमें होवैं तो पुत्र पितासे अपनी शुश्रूषा करावै ॥ ५९ ॥ पंचमेश लग्नको देखे यद्वा लग्नमें होवै तथा लग्नेश पंचममें होवै तो पुत्र पिताके आज्ञापर चलनेवाला होवै ॥ ६० ॥

पुत्रस्थानेश्वरे दुःस्थे लग्नेशेनापि वीक्षिते ॥ संदृष्टे कुजराहुभ्यां नित्यं पितृविदूषकः ॥ ६१ ॥ पंचमे गुरुशुक्राभ्यां सवित्रा सहितेऽथ वा ॥ एतेषां भवने वापि सोयं योजयिता भवेत् ॥ ६२ ॥ तृतीयेशे तृतीयस्थे पंचमेशे सुखं गते ॥ शुभोच्चखेटसंयुक्ते जातो भोजयिता भवेत् ॥ ६३ ॥

पंचमेश दुष्टभावमें हो लग्नेशसे भी दृष्ट हो परंतु मंगल राहु उसे देखें तो नित्य पिताका द्वेषी होवै ॥ ६१ ॥ पंचममें गुरु शुक्र हों सूर्यभी उनके साथ होवै अथवा युक्त ग्रहोंके स्थानमें पंचमेश त्रिकोदि दुष्टभावमें होवै तो पिता पर आज्ञा चलानेवाला होवै ॥ ६२ ॥ तृतीयेश तीसरे पंचमेश चौथे शुभग्रह वा उच्चवर्ती ग्रहसे युक्त होवै तो पिताको खूब खिलाने पिलानेवाला होवै ॥ ६३ ॥

अन्नदानपरो नित्यं पंचमेशे शुभंगते ॥ शुभग्रहैः समायुक्ते युक्तीशे शुभसंयुते ॥ ६४ ॥ हृदये पापसंयुक्ते तदीशे पापसंयुते ॥ पापग्रहाणां मध्यस्थे हृद्गतं रोगमादिशेत् ॥ ६५ ॥ तदीशस्थांशराशीशे क्रूरषष्ट्यंशसंयुते ॥ क्रूरग्रहेण संदृष्टे हृद्गतं शल्यमादिशेत् ॥

॥ ६६ ॥ तन्नाथे नाशभावस्थे नाशस्थानेशसंयुते ॥ नीचारिमू-ढभावे वा हृद्गतं रोगमादिशेत् ॥ ६७ ॥ इति सुतभावः ।

पंचमेश शुभराशिमें यद्वा नवमस्थानमें शुभग्रहयुक्त होवै जिसकी राशिमें है वहभी शुभयुक्त होवै तो नित्य अन्न देनेमें तत्पर रहे ॥ ६४ ॥ हृदय ४ स्थानमें पाप उसका स्वामी पापयुक्त. पापमध्य होवै तो हृदयमें रोग रहे पंचम उदरस्थान है उसके उपलक्षणसे उदररोग जानना ॥ ६५ ॥ उस भावका स्वामी जिसके नवांशकमें है उसका स्वामी क्रूरषष्ट्यंशमें हो क्रूरग्रहसे दृष्ट होवै तो हृदयमें (शल्य) शूलादिरोग होवै ॥ ६६ ॥ उस भावका स्वामी नाश १२ स्थानमें व्ययेशसहित हो अथवा नीच, शत्रु अस्तंगत होवै तो हृदयगत रोग कहना ॥ ६७ ॥ इति पंचमभावविचारः ॥

अथ षष्ठभावविचारः ।

अरिभवनादरिचोरक्षतविघ्नक्लेशनाभ्युदरदेशान् ॥ मधुरादिषड्-पदंशान् ग्रहराश्युदितान् वदेत्प्राज्ञः ॥ १ ॥

छठे स्थानसे शत्रु, चोर, घाव, विघ्न, क्लेश, नाभि. एवं उदररोगादि और मधुर आदि छः प्रकारके उपदंश ग्रहराशियोंके अनुसार विचार करके विद्वानने फल कहने ॥ १ ॥

षष्ठेश्वरे क्रूरयुते विलग्ने रन्ध्रस्थिते वा व्रणदः शरीरे ॥ कर्मस्थिते तादृशखेचरेन्द्रे व्रणप्रदोंगे शुभदृष्टियुक्ते ॥ २ ॥ पित्रादिभावा-दपि योजनीयं भावेशतत्कारकदृष्टियोगात् ॥ बलाबलेनापि विकल्प्य सर्वं तेषां व्रणं तत्कथयंति तज्ज्ञाः ॥ ३ ॥

छठे भावका स्वामी क्रूरयुक्त लग्नमें अथवा अष्टमभावमें होवै तो शरीरमें (व्रण) विस्फोटकादिचिह्न होवै ऐसाही ग्रह दशमस्थानमें हो पापग्रहदृष्ट होवै तो अंगमें व्रण देनेवाला होताहै ॥ २ ॥ ऐसाही विचार पित्रादि सभी भावोंमें करना. भावेश. भावकारक ग्रहके दृष्टियोगसे तथा बलाबलके अनुसार विचारके पित्रादियोंकोभी व्रणादि कहना ॥ ३ ॥

शिरोक्षिदेर्मुखं कंठं श्रोत्रं नासा च गुह्यकम् ॥ पाणी पार्श्वौ दृशौ पादौ प्रपदौ कुक्षिमादिशेत् ॥ ४ ॥ लग्नेशभूपुत्रशशांकपुत्राः सह-स्थिताः सौख्यगृहे व्यये वा ॥ अपानरोगं त्वथ नापवित्रं पश्यं-ति षष्ठं मुनयो वदन्ति ॥ ५ ॥ शशांकतत्पुत्रविलग्ननाथाः सरा-हवः केतुयुतास्तदंगे ॥ वैश्यं तु कुष्ठं मुनयो वदंति शुभेक्षितास्तत्र भवेत्तदानीम् ॥ ६ ॥

छठे भावमें रोगकाभी विचार है शुभग्रहोंसे शुभत्व पापग्रहोंसे रोगादि छठे भावस्थ राशिके उक्त अंगमें होताहै इसलिये अंगविभाग कहते हैं कि शिर १ मुख २ कंठ ३ कान ४ नाक ५ गुदा ६ हात ७ बगल ८ नेत्र ९पैर१०पैरोंके तलुवे११और कुक्षि १२ ये क्रमसे हैं ॥४॥ लग्नेश मंगल और बुध चौथे वा बारहवें भावमें एकसाथ होवें तो गुदामें रोग होवे ९।६ भावोंको देखें तोभी वही फल मुनिजन कहते हैं ॥ ५ ॥ चंद्रमा बुध लग्नेश राहु वा केतुयुक्त छठे होवें तो कमलकुष्ठ होवे उनपर शुभदृष्टि होवे तो वह कुष्ठ तत्रस्थ राशितुल्य अंगमें होवे ॥ ६ ॥

विना विलग्नाधिपतिं ग्रहेषु लग्नस्थितेष्वत्र तु कुष्ठभाक् स्यात् ॥ पित्रादिकानां फलमेवमाहुर्मुनीश्वराः कारकभावनाथैः ॥७॥ पैत्र्यं तु कुष्ठं कुजसंयुतेषु शैत्यं भवेन्मन्दसमन्वितेषु ॥ रक्तं तदा सूर्यसमन्वितेषु ग्रहोक्तदेशे नियतं तदाहुः ॥ ८ ॥

विना लग्नेश उक्त ग्रह लग्नमें होवें तो कुष्ठरोग होवे भावकारक. भावेशसेभी इसीप्रकार पित्रादिभावोंमें होवें तो पिता आदिको मुनीश्वर वही फल कहते हैं ॥ ७ ॥ उन ग्रहोंके साथ मंगलभी होवे तो पिताका कुष्ठ आया जानना, शनैश्वर युक्त होवे तो शीतसे उत्पन्न. सूर्ययुक्त होवे तो रुधिरसे उत्पन्न कुष्ठ ग्रहके उक्त स्थानमें अवश्य होगा कहते हैं ॥ ८ ॥

लग्नेशषष्ठाधिपती दिनेशयुक्तौ ज्वरं चंद्रसमन्वितौ चेत् ॥ जलेन गंडं क्षितिसूनुयुक्ते युद्धेन वा स्फोटकराशिभिर्वा ॥ ९ ॥ चैत्तेन रोगेण बुधेन युक्तौ निर्व्याधिकौ जीवसमन्वितौ चेत् ॥ शुक्रेण भार्याविपदं वदंति मंदेन नीचानिलरोगमाहुः ॥ १० ॥ सराहुकेतुर्यदि सर्पपीडा चौराग्निभीर्वातभयात्प्रमादः ॥

लग्नेश और षष्ठेश सूर्ययुक्त होवें तो ज्वररोग होवे चंद्रमायुक्त होवे तो जल करके (गंड) गुल्मादि होवे मंगलसे युक्त होवें तो युद्धसे वा विस्फोटकादिसे राशितुल्य धातुसंबंधि रोग होवे ॥ ९ ॥ बुधसे युक्त हों तो मनके रोगसे पीडित रहे, बृहस्पतिसे युक्त होवें तो निरोगी रहे, शुक्रसे युक्त हों तो स्त्री मरजावे शनिसे युक्त हों तो नीचरोग वायुरोग कहते हैं ॥१०॥ राहु वा केतुसहित हों तो सर्पसे भय. वा विसर्परोग होवे तथा चोरभय. अग्निभय वायुकी भयसे (प्रमाद) विक्षिप्तता आदि होवे ॥

षष्ठेश्वरश्चंद्रसुतेन युक्तः सागुर्विलग्ने स्वयमत्र शिश्नम् ॥ ११ ॥ छिनत्त्यसौ सौम्यदृशा विहीनः सभूमिपुत्रो यदि लिंगरोगात् ॥ कामेश्वरः शुक्रयुतो रिपुस्थः कलत्रषंढत्वमुदीरयन्ति ॥ १२ ॥

षष्ठेश बुधसहित तथा राहुसहित लग्नमें होवै तो आपही अपना लिंगछेदन करे ॥ ११ ॥ यदि मंगलसहित हो उसपर शुभग्रहकी दृष्टि न होवै तो किसीरोगसे लिंगछेदन होवै, सप्तमेश शुक्रसहित छठा होवै तो स्त्री हिजडी होवै ॥ १२ ॥

षष्ठेशलग्नाधिपती समंदौ केन्द्रत्रिकोणे यदि बन्धनं स्यात् ॥
सराहुकेतुर्यदि केन्द्रकोणे वदन्ति तज्ज्ञा निगडं तदानीम् ॥
॥१३॥पित्रादितत्कारकभावनाथैः पित्रादिकानां फलमाहुरन्ये ॥
तत्तद्ग्रहाणां परिपाककाले त्वन्तर्दशायामथ वा वदन्ति ॥ १४ ॥

षष्ठेश तथा लग्नेश शनिसहित केन्द्रत्रिकोणमें होवै तो (बन्धन) कैद पावै यदि राहु केतु सहित केन्द्रकोणमें होवै तौभी ज्योतिषज्ञ वही फल कहते हैं ॥ १३ ॥ ऐसेही योग पित्रादि भावकारक भावेशसेभी होवै तो पिता आदिकोंभी वही फल कहतेहैं ये फल उन ग्रहोंकी दशामें अथवा अंतर्दशामें कहने ॥ १४ ॥

धर्मे शनौ वा सगुरौ तृतीये करच्छिदोऽर्के निधने व्यये वा ॥
विधौ कलत्रे निधनान्वितो वा कुजेन युक्ते यदि वा सजीवे १५॥
कर्मस्थिताश्चेद्यदि राहुमन्दसौम्याः पदच्छेदयुतोऽत्र जातः ॥
शुक्रेज्यदृष्टे दिवसाधिनाथे सारे शनौ वा फणिनाथयुक्ते ॥ १६ ॥
क्रूरादिषष्ट्यंशसमन्विते वा विच्छेदनं तच्छिरसो वदन्ति॥ मन्दे
विलग्ने मदने सराहौ कर्मान्विते भार्गवनन्दने च ॥ १७ ॥
कृष्णे शशांके मदराशियुक्ते विच्छिन्नहस्तः स भवेत्पदेन ॥ भूसु-
नुलग्ने यदि वा तदंशे सूर्याऽन्विते कृष्णनिशाकरे तु ॥ १८ ॥
फणीन्द्रचंद्रात्मजसंयुतेर्करश्म्याभिभूते ह्युदरस्य भेदः ॥ मंदोदये
सौम्यदृशा विहीने सर्पार्कयुक्ते यदि कृष्णचन्द्रे ॥ १९ ॥ शस्त्रेण
कुक्षेर्दलनं वदंति जातस्य दर्शे मुनयो महान्तः ॥ २० ॥

शनि बृहस्पति सहित नवम वा तृतीय स्थानमें हो,सूर्य अष्टम वा द्वादशस्थानमें होवै तो हाथ कटे मंगलयुक्त चंद्रमा सप्तम वा अष्टम स्थानमें हो अथवा बृहस्पतियुक्त होवै तोभी वही फल होगा ॥ १५ ॥ दशमस्थानमें राहु, शनि, बुध होवैं तो पैर कटे) सूर्य शुक्र गुरुसे दृष्ट अथवा मंगल शनि राहुयुक्त हों ॥ १६ ॥ अथवा क्रूर आदि षष्ट्यंशयत होवैं तो शिर कटे, शनि लग्नमें अथवा सप्तममें राहुयुक्त होवै तथा दशममें

शुक्रभी होवै ॥ १७ ॥ कृष्णपक्षका चंद्रमा सप्तम होवै तो वह हाथ पैर कटावै. लग्नमें मंगल वा उसका नवांशक होवै कृष्णपक्षका चंद्रमा सूर्ययुक्त हो ॥१८॥ राहु बुधयुक्त होवै अस्तंगतभी होव तो पेट फटे, शनि लग्नमें शुभदृष्टिरहित राहु सूर्ययुक्त क्षीण चंद्रमा होवै तो ॥ १९ ॥ शस्त्रसे कूखी फाडी जावै. विशेषतः दर्शमें अर्थात् पूरे क्षीण चंद्रमा होनेमें ऐसा फल मुनिलोग कहते हैं ॥ २० ॥

क्षीणे शशांके फणिनाथदृष्टे सौरौ शिरस्यास्य निकृंतनं स्यात् ॥ लग्ने शनौ सोमसुते स्वगेहे शौर्ये चतुर्थे सबुधेऽतिह्रस्वः ॥२१॥

क्षीण चंद्रमा राहुसे दृष्ट शनि होवै तो उस मनुष्यका शिर कटे, लग्नमें शनि हो बुध अपने घरका होवै अथवा चौथा शनि बुधसहित होवै तो अतिछोटे कदका होवै ॥ २१ ॥

षष्ठाष्टमव्यये चन्द्रे लग्ननाथेन वीक्षिते ॥ मंदमांद्यगुसंयुक्ते तस्य दुर्मरणं भवेत् ॥ २२ ॥ नीचारातिविमूढांशे मन्दे पापान्वितेक्षिते ॥ क्रूरषष्ट्यंशसंयुक्ते तस्य दुर्मरणं भवेत् ॥ २३ ॥ रंध्रेश्वरस्थितत्र्यंशे पाशसर्पादिसंज्ञके ॥ दृकाणे मरणं व्याधिरुद्बंधान्मरणं वदेत् ॥ २४ ॥ मंदमांद्यगुसंयुक्ते रंध्रेशस्थत्रिभागपे ॥ तथाविधेर्कपुत्रे वा ह्युद्बंधान्मरणं वदेत् ॥ २५ ॥

चंद्रमा ६।८।१२ मेसे किसीमें लग्नेशसे दृष्ट तथा शनि केतु राहु सहित होवै तो उसका (दुर्मरण) विषूचिका उच्चपात विषबंधनादिसे मरण होवै ॥ २२ ॥ शनि नीच, शत्रु, मूढ अंशकमें पापयुक्त दृष्ट होवै क्रूरषष्ट्यंशमें होवै तो उस मनुष्यका दुर्मरण होवै ॥ २३ ॥ जिस द्रेष्काणमें अष्टमेश है वह पाश सर्प आदि होवै तो उस द्रेष्काणेशके दशा आदिमें व्याधि यद्वा फांसीसे मरण कहना ॥ २४ ॥ अष्टमेश जिसके द्रेष्काणमें है वह शनि केतु राहुसे युक्त होवै. अथवा शनि ऐसा होवै तो फांसीसे मरण होना कहना ॥ २५ ॥

षष्ठाष्टमेशे भौमे वा विक्रमेशसमन्विते ॥ मंदमांद्यगुसंयुक्ते क्रूरांशे युद्धतो मृतिः ॥ २६ ॥ युद्धेन मरणं ब्रूयाच्छनियुक्तत्रिभागपे ॥ कुजेन वीक्षिते युक्ते भौमक्षेत्रे तदंशके ॥ २७ ॥ रविभौमौ यदान्योन्यं परस्परनिरीक्षितौ ॥ परस्परग्रहांशस्थौ द्वंद्वयुद्धान्मृतिं वदेत् ॥ २८ ॥

षष्ठेश अष्टमेश अथवा मंगल पराक्रमेशसे युक्त हों तथा शनि केतु राहु सहित हों क्रूरांशकमें होवैं तो युद्धसे मरण होवै ॥ २६ ॥ शनि जिसके द्रेष्काणमें है वह मंगलसे

दृष्ट वा युक्त हो मंगलके राशि वा अंशकमें होवै तो युद्धसे मरण होवें ।। २७ ।। यदि सूर्य मंगलकी आपसमें परस्पर दृष्टि होवै परस्पर राशि अंशकोंमें होवें तो मल्लयुद्धसे मरण होगा कहना ॥ २८ ॥

अष्टमे बहवः पापा भौमराशिगतांशकाः ॥ क्रूरषष्ट्यंशकयुताः सद्यस्तन्मरणं वदेत् ॥ २९ ॥ नीचमूढारिगेहस्थाः साम्याः सर्वे पराजिताः।।पापांशस्थाः पापयुताः सद्यस्तस्य मृतिं वदेत्॥३०॥ सद्यः स्यान्मरणं तस्य शनिराहुदिनाधिपाः ॥ रंध्रेशवीक्षिताः सर्वे क्रूरांशान्मूढसंयुताः ॥ ३१ ॥

अष्टम स्थानमें बहुत पापग्रह मंगलके राशि नवांशकके होवैं क्रूरषष्ठ्यंशकमें होवैं तो (तत्काल मरण) अकस्मात् मृत्यु होवै ॥ २९ ॥ समस्त शुभग्रह नीच अस्त शत्रुराशिगत होवैं युद्धमें पराजित तथा पापांशकोंमें पापग्रहोंसे युक्त होवें तो वैसाही फल कहना ॥ ३० ॥ शनि, राहु, सूर्य्य, अष्टमेशसे दृष्ट हों सभी क्रूरांशकोंमें हों अस्तंगत हों तो उसमनुष्यका अचानक मरण होवै ॥ ३१ ॥

रोगस्थानगते सूर्ये तद्भावे पापसंयुते ॥ पापदृष्टियुते नाभौ पैत्तिकाद्व्रणमादिशेत् ॥ ३२ ॥ तथाभूते निशानाथे क्रूरदृष्टे तदंशके ॥ वातार्दितो भवेज्जातो रक्तपित्तार्दितः कुजे ॥ ३३ ॥

छठे स्थानमें सूर्य षष्ठेश पापयुक्त पापदृष्ट होवै तो नाभि स्थानमें पित्तविकारसे व्रण कहना. ॥ ३२ ॥ ऐसाही चंद्रमा होवै क्रूरदृष्ट क्रूरांशकगत होवै तो मनुष्य वातरोगसे पीडित होवै, इसीप्रकार मंगल होवै तो रक्तपित्तसे पीडित रहे ॥ ३३ ॥

श्लेष्मवातार्दितस्सौम्ये तथाभूते विशेषतः ॥जीवे तु विद्रधिर्वाच्यः शुक्रे मूलातिसाररुक् ॥ ३४ ॥ तथाभूते शनौ गुल्मरोगो वात्र विशेषतः ॥ राहुकेतुसमायुक्ते बाधा पैशाचिकी स्मृता ॥ ३५ ॥

उसीप्रकार बुध होवै तो विशेष करके श्लेष्म तथा वातरोगसे पीडित होवै, बृहस्पति वैसा होवै तो (विद्रधि) किसी अगमें गुमडा आदि रोग होता है, शुक्र होवै, तो अतिसार रोग होवै ॥ ३४ ॥ ऐसा शनि होवै तो विशेषकरके गुल्मरोग होवै, राहु, केतुसे युक्त होवै तो पिशाचकी बाधा होवै ॥ ३५ ॥

चंद्रे षष्ठे कुजयुते भ्रांतिपांड्वादिरोगभाक् ॥ सारे चन्द्रे रवियुते शूलवैसर्परोगभाक् ॥ ३६ ॥ षष्ठे कुजे बुधयुते भृगुचन्द्रनिरीक्षिते ॥ क्रूरांशकसमायुक्ते क्षयरोगं वदंति हि ॥ ३७ ॥

छठा चंद्रमा मंगल सहित होवै तो (भ्रांति) चित्तभ्रम तथा पाण्डु आदि रोगवाला होवै, चंद्रमा छठा मंगल सूर्य सहित होवै तो शूलरोग विसर्प रोग होवै ॥ ३६ ॥ छठा चन्द्रमा बुधयुक्त होवै शुक्र चन्द्रमा उसे देखें क्रूरांशकमें होवै तो क्षयरोग निश्चय कहतेहैं ॥ ३७ ॥

शन्यारसहिते षष्ठे रविराहुनिरीक्षिते ॥ लग्नेश्वरे हीनबले दीर्घरोगी भवेन्नरः ॥ ३८ ॥ षष्ठे शनौ सगुलिके रव्यारफणिवीक्षिते ॥ शुभैर्न दृष्टे युक्ते वा श्वासकासक्षयादियुक् ॥ ३९ ॥

छठे भावमें शनि मंगल होवैं सूर्य राहु उन्हे देखें लग्नेश निर्बल होवै तो मनुष्य दीर्घरोगी होवै ॥ ३८ ॥ छठे शनि गुलिक सहित हो सूर्य, मंगल, राहु उनको देखें शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट न होवैं तो श्वास, कास, क्षय, आदि रोगोंसे युक्त होवै ॥ ३९ ॥

जलराशिगते चन्द्रे षष्ठे तद्भवनाऽधिपे ॥ जलर्क्षस्थविदा दृष्टे मूत्रकृच्छ्रादिकं भवेत् ॥ ४० ॥ षष्ठे चन्द्रे शनौ रन्ध्रे व्यये पापे विलग्नपे ॥ पापांशकसमायुक्ते पीनसं रोगमादिशेत् ॥ ४१ ॥

छठा चन्द्रमा जलचरराशिका हो षष्ठेश जलराशिमें बुधसे दृष्ट होवै तो मूत्रकृच्छ्र आदि रोग होवैं ॥ ४० ॥ छठा चन्द्रमा अष्टम शनि बारहवेंमें पापग्रह और लग्नेश पापांशकमें होवै तो पीनस रोग होगा कहना ॥ ४१ ॥

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते ॥ मूर्धार्तिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभाग्भवेत् ॥ ४२ ॥ षष्ठेश्वरस्थितांशेशे रव्यादौ हि तथा भवेत् ॥ फलं पूर्वोक्तमप्यत्र क्रमात्तस्य विनिर्दिशेत् ॥ ४३ ॥

षष्ठेश बलरहित हो वा लग्नमें हो अथवा लग्नमें मंगल होवै तो शिरमें पीडा वा मुखरोग यद्वा गुल्मरोग (विद्रधि) ग्रंथि व्रण रोगवाला होवै ॥ ४२ ॥ षष्ठेश जिसके नवांशकमें हो वहभी ऐसा होवै तो सूर्यादिकोंमेंसे जो ग्रह हो उसके धातुके अनुसार यद्वा ग्रहोक्त अंगमें क्रमसे पूर्वोक्त फल कहना ॥ ४३ ॥

शत्रुस्थानाधिपे केन्द्रे पापग्रहनिरीक्षिते ॥ षष्ठे वा पापबाहुल्ये शत्रुपीडां विनिर्दिशेत् ॥ ४४ ॥ लग्नेशे शत्रुराशिस्थे तदीशे लग्नमाश्रिते ॥ मन्दमांद्यगुसंयुक्ते शत्रुपीडां विनिर्दिशेत् ॥ ४५ ॥ पापग्रहेण संदृष्टे बलहीनेऽरिनायके ॥ पापांतरगते वापि शत्रुपीडां विनिर्दिशेत् ॥ ४६ ॥

षष्ठेश केन्द्रमें पापग्रहोंसे दृष्ट होवै अथवा छठे स्थानमें बहुत पाप होवैं तो शत्रुसे पीडा मिले ॥ ४४ ॥ लग्नेश शत्रु राशि (छठे भाव) में हो षष्ठेश लग्नमें हो शनि राहु केतुसे

युक्त होवै तो शत्रुपीडा कहनी ॥ ४५ ॥ षष्ठेश पापग्रहदृष्ट तथा बलरहित होवै अथवा पापग्रहाके बीच होवै तो शत्रुपीडा कहनी ॥ ४६ ॥

शत्रुस्थानाधिपे दुःस्थे नीचमूढारिसंयुते ॥ लग्नेशे बलसंयुक्ते शत्रुनाशं वदेद्बुधः ॥ ४७ ॥ शुभग्रहेण संदृष्टे शत्रुस्थानाधिपे यदा ॥ शुभान्विते शुभक्षेत्रे तेन मैत्रीं वदेद्बुधः ॥ ४८ ॥ लग्नेशाद्बलहीने तु शत्रुस्थानाधिपे यदा ॥ शुभान्विते शुभैर्दृष्टे शत्रूणां मैत्रमादिशेत् ॥ ४९ ॥

षष्ठेश दुष्टस्थानमें नीच, अस्त, शत्रुराशिस्थ होवै लग्नेश बलवान् होवै तो पंडित शत्रुका नाश होगा कहे ॥ ४७ ॥ षष्ठेश यदि शुभग्रहदृष्ट शुभयुक्त शुभग्रहके राशिमें होवै तो पंडित शत्रुसे मित्रता होगी कहे ॥ ४८ ॥ यदि षष्ठेश लग्नेशसे हीनबली होवै शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट होवै तो शत्रुओंसे मित्रता होगी कहना ॥ ४९ ॥

लग्नेशेऽष्टमभावस्थे षष्ठेशेन निरीक्षिते ॥ तौ वा विलग्नभावस्थौ ज्ञातिपीडां विनिर्दिशेत् ॥ ५० ॥ गुरुशुक्रौ विलग्नस्थौ षष्ठभावेश्वरान्वितौ ॥ शन्यारफणिसंदृष्टौ ज्ञातिपीडां विनिर्दिशेत् ॥ ५१ ॥ लग्नाधिपे शुभयुते षष्ठे चंद्रेऽथ वा शुभे ॥ केन्द्रत्रिकोणगे सौम्ये ज्ञातिभिः सह जीवनम् ॥ ५२ ॥ ज्ञातयो बहवः संति षष्ठेशे देवपूजिते ॥ शुभान्विते शुभैर्दृष्टे मृदंशादिसमन्विते ॥ ५३ ॥

लग्नेश अष्टम षष्ठेशसे दृष्ट हो अथवा लग्नेश षष्ठेश लग्नमें हों तो अपनी जातिवालोंको पीडा होगी कहना ॥ ५० ॥ गुरु और शुक्र लग्नमें षष्ठेश सहित होवैं शनिमंगल राहु उन्हें देखें तो ज्ञातिपीडा कहनी ॥ ५१ ॥ लग्नेश शुभग्रहयुक्त हो छठे स्थानमें चंद्रमा वा कोई शुभग्रह हो बुध केंद्रत्रिकोणमें होवै तो बिरादरीके साथ आजीवन होवै ॥ ५२ ॥ षष्ठेश बृहस्पति शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट एवं मृदंशादियुक्त होवै तो बिरादरी बहुत बडी होवै ॥ ५३ ॥

ज्ञातिक्षयं विजानीयात्षष्ठेशे पापसंयुते ॥ क्रूरांशनीचमूढादौ शुभदृग्योगवर्जिते ॥ ५४ ॥ पारावतादिभागस्थे लग्नेशे शुभवीक्षिते ॥ ज्ञातीशे बलहीने वा तस्मादुत्कर्षतां व्रजेत् ॥ ५५ ॥ भाग्येशे षष्ठराशिस्थे षष्ठेशेन निरीक्षिते ॥ षष्ठेशे मन्दभौमाभ्यां युते चौराग्निपीडनम् ॥ ५६ ॥

षष्ठेश पापयुक्त हो क्रूरांशकमें तथा नीचास्तादिमें हो शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट न हो तो अपनी जातिवालोंका क्षय होवै ॥ ५४ ॥ लग्नेश शुभग्रहदृष्ट पारावतादि अंशकमें हो चतुर्थेश बलरहित होवै तो अपनी जातिमें श्रेष्ठता पावै ॥ ५५ ॥ नवमेश छठा होवै षष्ठेश उसे देखे, तथा षष्ठेश शनि मंगलसे युक्त होवै तो, चोर तथा अग्निसे पीडन होव ॥ ५६ ॥

तदीशे गोपुरांशादौ दिवसेशेन वीक्षिते ॥ लग्नेशे बलसंपूर्णे ज्ञातीनामुपकारकृत् ॥ ५७ ॥ षष्ठे सौम्ये शुभैर्दृष्टे तदीशे शुभसंयुते ॥ पापग्रहाणां मध्यस्थे सूपदंशप्रियो भवेत् ॥ ५८ ॥

षष्ठेश गोपुरांशादिमें सूर्यसे दृष्ट होवै, लग्नेश पूर्ण बली होवै तो अपनी जातवालोंका उपकार करनेवाला होवै ॥ ५७ ॥ छठा बुध शुभग्रहदृष्ट हो षष्ठेश शुभयुक्त होवै परन्तु पापग्रहोंके मध्यभी होवै तो अच्छे क्षारपदार्थोंको प्रिय माने ॥ ५८ ॥

उपदंशप्रियो नित्यं षष्ठे जीवे शशांकजे ॥ क्षेत्रे तयोर्वा संप्राप्ते मृद्वंशादिसमन्विते ॥ ५९ ॥ देवेज्ये षष्ठभावेशे शुक्रे वा तस्य नायके ॥ मधुरादिप्रियो नित्यं गोपुराद्यंशकाऽन्विते ॥ ६० ॥

छठे बृहस्पति बुध हों षष्ठेश गुरु बुधके अंशकमें मृद्वंशादिमें होवै तो क्षारवस्तु प्रिय होवै ॥५९॥ षष्ठेश गुरु वा शुक्र गोपुरादि अंशकमें होवै तो मीठा आदि पदार्थ प्रिय माने ॥६०॥

शुक्रे षष्ठे ससौम्ये वा शुभदृष्टे शुभांशके ॥ बलाऽन्विते शुभांशस्थे नित्यं मधुरभाग्भवेत् ॥ ६१ ॥ पापग्रहेण संदृष्टे बुधे मधुरवर्जितम् ॥ बुधेन युक्ते शुक्रेऽरौ त्वम्लभाक् स नरो भवेत् ॥६२॥ षष्ठे शुक्रे भौमदृष्टे भौमे शुक्रे तदन्विते ॥ दिवसेशेन वा दृष्टे त्वम्लभाक् स नरो भवेत् ॥ ६३ ॥

शुक्र छठा होवै अथवा बुधयुक्त होवै शुभग्रहोंसे दृष्ट शुभांशकमें हो बलवान् तथा पारावतादि शुभांशकमें होवै तो नित्य मीठा खानेवाला होवै ॥ ६१ ॥ बुध पापग्रहोंसे दृष्ट होवै तो मीठा न खावै, बुधसहित शुक्र छठा होवै तो वह मनुष्य खट्टा खानेवाला होवै ॥ ६२ ॥ छठा शुक्र मंगलसे दृष्ट हो अथवा मंगल शुक्र छठे हों अथवा सूर्य उसे देखे तो वह मनुष्य खट्टा बहुत खावे ॥ ६३ ॥

षष्ठेशे भौमसंदृष्टे राहुकेतुनिरीक्षिते ॥ भौमक्षेत्रगते वापि विप्रलंभादिचौर्यभाक् ॥ ६४ ॥ पुत्रादीनामिदं योज्यं तत्तद्भावप्रकार-

कैः ॥ नास्तिकाय न वक्तव्यं वक्तव्यं सुजनाय वै ॥ ६५ ॥
अध्यायः पंचमः प्रोक्तः पंचषड्भाववाचकः ॥ विचित्रार्थसमायुक्तो वेंकटेशेन धीमता ॥ ६६ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिंतामणौ पञ्चमषष्ठभावफलविचारो नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

षष्ठेशपर मंगलकी दृष्टि हो राहु केतुभी देखें अथवा मंगलकी राशिमें होवै तो विशेष वादमतिवाद करके दूसरेसे किसीप्रकारकी विद्या आदि चोरे ॥ ६४ ॥ ऐसेही फल पुत्रादि भावोंमें उन भावोंके विचारसे उन पुत्रादिकोंको भी कहना यह शास्त्र नास्तिकके आगे न कहना सज्जनसे कहना ॥ ६५ ॥ यह पांचवां अध्याय पंचम तथा छठे भावका फलवाचक विचित्रार्थयुक्त धीमान् वेंकटेशने कहा ॥ ६६ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिंतामणौ माहीधरभाषाटीकायां पञ्चमषष्ठभावफलविचाराध्यायः पञ्चमः ॥ ५ ॥

षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावफलविचाराध्यायः ।

युवतिपदादुद्वाहं भार्यापतिसूपदधिगुडक्षीरम् ॥
आगमगमनमदार्तिं ब्रूयान्मूत्राशयं च नष्टधनम् ॥ १ ॥

सप्तम भावसे विवाहविचार, स्त्री पति विचार, दाल, दही, गुड, दूध, आगमन, गमन, कामदेवार्ति तथा मूत्राशयका विचार और चोरी आदिसे नष्ट धनका विचार कहना ॥ १ ॥

शुक्रे कलत्रे त्वतिकामुकः स्याद्बुधेऽन्ययोषानिरतो गुरौ तु ॥
स्वदारसक्तो दिननाथपुत्रे कुदाररम्यः सुपतौ सुदारः ॥ २ ॥ कुजे बहुस्त्रीपुरतः कुलघ्नो भानौ कुटुम्बी बहुदारसक्तः ॥ लग्नस्थिता वित्तकलत्रशत्रुनाथाः सशुक्रा यदि पापयुक्ताः ॥ ३ ॥

शुक्र सप्तम होवै तो अतिकामी होवै, बुधसे परस्त्रीगामी, बृहस्पतिसे अपनी स्त्रीमें आसक्त, शनिसे दुष्टस्त्रीमें रमणकरनेवाला होवै सप्तमेश शुभ होवै, तो अच्छी स्त्री होवै ॥ २ ॥ मंगल सप्तम होवै तो बहुत स्त्रियोंके होतेभी कुलघ्न (दूसरेकी स्त्री तथा परम नीचजाति नीचकर्मकरने-

वाली स्त्रीका प्रसङ्गकर अपने कुलको नष्ट करनेवाला) होवै । सूर्यसे कुटुंबवाला बहुत स्त्रियोंमें आसक्त होवै । लग्नमें दूसरे, सप्तम, पंचम और छठे भावके स्वामी शुक्रसहित तथा पाप सहित होवैं तो ॥ ३ ॥

जातः परस्त्रीषु रतः कुमार्गी शुभेक्षितश्चेन्न तथा भवेच्च ॥ लग्नारिपौ पापयुतौ यदि स्याज्जातः परस्त्रीषु रतः कुमार्गी ॥ ४ ॥ लग्नेश्वरे शत्रुकुटुम्बनाथे पापैर्युते वा यदि दारराशौ ॥ सौरो सपापे यदि दारनाथे जातः परस्त्रीषु रतः कुटुम्बे ॥ ५ ॥ सराहुकेतौ यदि दारनाथे पापेक्षिते वा व्यभिचारयोगः ॥ कर्मेशवित्तेशकलत्रनाथा मानास्थिता जारमुदाहरंति ॥ ६ ॥

मनुष्य पराई स्त्रियोंमें आसक्त और कुमार्ग चलनेवाला होवै, यदि शुभग्रहोंसे दृष्टभी होवैं तो वैसा न होवै कुछ कम होवै यदि लग्नेश षष्ठेश पापयुक्त होवै तो परस्त्रीमें आसक्त तथा कुमार्गी होवै ॥ ४ ॥ लग्नेश षष्ठेश द्वितीयेश पापयुक्त हों अथवा सप्तममें शनि, सप्तमेश पापयुत होवै तो पराई स्त्रीमें आसक्त रहे । यदि दूसरे भावमें ॥ ५ ॥ राहु वा केतु हो सप्तमेश पापदृष्ट होवै तो व्यभिचारयोग होताहै। दशमेश, धनेश, सप्तमेश दशममें हों तो जार (परस्त्री गमन करनेवाला) कहतेहैं ॥ ६ ॥

एको ग्रहस्तेषु चतुर्थराशौ जातः परस्त्रीगमनं प्रयाति ॥ पुत्रेश्वरे दारपतौ बलाढ्ये दृष्टे युते वा त्वरिनायकेन ॥ ७ ॥ जातोऽनपत्यो यदि तत्कलत्रे जारात्सुतः स्याच्छुभखेटदृष्टे ॥ दारेश्वरे पापयुते कुटुम्बे भौमेन दृष्टे यदि जारपुत्रः ॥ ८ ॥

दशम द्वितीय सप्तम भावोंके स्वामियोंमें से एकभी ग्रह चौथे स्थानमें होवै तो परस्त्रीगमन करे । पंचमेश एवं सप्तमेश बलवान् हो षष्ठेशसे दृष्ट वा युक्त हो ॥ ७ ॥ तो मनुष्य-अपुत्र होवै, यदि योगकर्त्ता उक्त ग्रह सप्तममें होवै और उसपर शुभग्रहकी दृष्टिभी होवै तो जारसे संतान पैदा होवै । सप्तमेश पापयुक्त दूसरे भावमें हो मंगल उसे देखे तो जारसे पुत्र पैदा होवै ॥ ८ ॥

धीधर्मनाथौ सकलत्रनाथौ दुःस्थानगौ हीनबलौ शुभैर्न ॥ दृष्टे सुते दारबहुत्वयोगे त्वपुत्रयोगं मुनयो वदंति ॥ ९ ॥ क्षीणे शशांके यदि पापयुक्ते दारस्थिते त्वन्यकलत्रगामी ॥ लग्ने सपापे यदि दारनाथे जातः परस्त्रीषु रतः कुमार्गी ॥ १० ॥

पंचम नवमेके स्वामी सप्तमेश सहित दुष्ट स्थानमें हों हीनबली हों पंचमपर शुभदृष्टि न होवै तो बहुत स्त्रियोंमेंभी अपुत्र योग मुनिलोग कहतेहैं ॥ ९ ॥ यदि क्षीण चन्द्रमा पापयुक्त सप्तममें होवै तो परस्त्रीगामी होवै. लग्नमें पापग्रह सहित सप्तमेश होवै तो परस्त्रीगामी कुमार्गी होवै ॥ १० ॥

सुतेशे दारभं याते तदीशे पापसंयुते ॥ शुक्रो बलविहीनश्चेद्गर्भेण स्त्रीमृतिर्भवेत् ॥ ११ ॥ नीचे भृगौ वा यदि वा शशांके नीचस्थितेऽत्राम्बुनि दारहानिः ॥ उद्बन्धनात्तन्मरणं वदंति दारेश्वरे पाशभुजंगमाख्ये ॥ १२ ॥

पंचमेश सप्तममें हो सप्तमेश पापयुक्त हो और शुक्र बलहीन होवै तो गर्भदोषसे स्त्रीकी मृत्यु होवै ॥ ११ ॥ इस योगमें शुक्र अथवा चन्द्रमा नीचका होवै तो जलमें स्त्री मरे, यदि सप्तमेश पाश सर्पद्रेष्काणमें होवै तो उद्बंधन (फांसी) से स्त्री मरे ॥ १२ ॥

द्रेष्काणभागे विषभक्षणाद्वा मान्द्यन्विते दारपतौ सराहौ ॥ स्वर्क्षे कुटुंबाधिपतौ कलत्रनाथे यदा त्वेककलत्रभाक् स्यात् ॥ ॥१३॥ ताभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः॥ कलत्रनाथस्थितराशिनाथसंयुक्तखेटैरपि वाच्यमेतत् ॥ १४ ॥

सप्तमेश (मांदि) केतु वा राहु युक्त भुजंगद्रेष्काणमें होवै तो स्त्री विषखायके मरे । द्वितीयेश अपनी राशिमें हो सप्तमेशभी अपनी राशिमें होवें तो एकही स्त्रीवाला होवै ॥ १३ ॥ अथवा द्वितीयेश सप्तमेशके साथ जितने ग्रह हैं उनके बलानुसार स्त्रियोंकी संख्या पंडित कहतेहैं। सप्तमेश जिसकी राशिमें है उसके साथ जितने ग्रह हैं उनसेभी स्त्रीसंख्या कहनी॥ १४॥

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ॥ बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा ॥ १५ ॥ भार्याद्वयं वदेत्तत्र लग्नेशे नाशराशिगे ॥ कलत्रे पापसंयुक्ते कुटुम्बेशे तथाविधे ॥ १६ ॥

सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुतगुणोंसे युक्त होवै अथवा लग्नमें होवै तो मनुष्यको बहुत स्त्रियोंसे युक्त जानना ॥ १५ ॥ लग्नेश बारहवें सप्तममें पाप कुटुम्बमेंभी पाप ग्रह होवै तो दो स्त्री होंगी ऐसा कहना ॥ १६ ॥

शन्यारफणिसंयुक्ते कलत्रेशो यदा भवेत् ॥ क्रूरषष्ट्यंशके वापि कलत्रमरणं वदेत् ॥ १७ ॥ शुभग्रहेण संयुक्तः कलत्रेशेऽरिनीचगे ॥ पापे कलत्रराशिस्थे विवाहद्वयमादिशेत् ॥ १८ ॥

यदि सप्तमेश, शनि, मंगल, राहु युक्त होवै अथवा क्रूरषष्ट्यंशमें होवै तो स्त्रीमरण कहना ॥ १७ ॥ सप्तमेश शत्रु वा नीच राशिमें शुभग्रहसे दृष्ट हो और सप्तममें पापग्रह होवै तो दो स्त्री होंगी ऐसा कहना ॥ १८ ॥

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ॥ पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत् ॥ १९ ॥ कलत्रकारकश्चन्द्रो ज्ञो गुरुर्वाथ वा भृगुः ॥ मध्ये बलिष्ठो यस्तेषां तस्मात्सर्वं निरूपयेत् ॥ २० ॥

सप्तमभावकारक ग्रह पापयुक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशकमें हो पापग्रह उसे देखे तो दो विवाह कहना ॥ १९ ॥ सप्तमभावकारक चंद्रमा अथवा बुध अथवा शुक्र वा बृहस्पति होवैं इनके मध्यभी जो विशेष बलवान् हो उससे समस्त विवाहयोगका निरूपण करना ॥ २० ॥

कलत्रे वा कुटुम्बे वा पापदृग्योगसम्भवे ॥ तदीशे बलहीने तु कलत्रांतरभाग्भवेत् ॥ २१ ॥ सप्तमे चाष्टमे पापे व्यये भूसुतसंयुते ॥ अदृश्ये यदि नाथेन कलत्रांतरभाग्भवेत् ॥ २२ ॥ वित्ते पापबहुत्वे तु कलत्रे वा तथाविधे ॥ तदीशे पापसंदृष्टे कलत्रत्रयभाग्भवेत् ॥ २३ ॥ लग्ने कुटुम्बे दारे वा पापखेचरसंयुते ॥ दारेशे नीचमूढादौ कलत्रयभाग्भवेत् ॥ २४ ॥

सप्तममें यद्वा द्वितीयस्थानमें पापग्रहोंकी दृष्टिका योग होवै उस भावका स्वामी बलरहित होवै तो दूसरी स्त्रीवाला होवै ॥ २१ ॥ सप्तम तथा अष्टम भावमें पाप ग्रह हो बारहवां मंगल होवै स्वस्वामीसे सप्तमभाव दृष्ट न होवै तो दूसरी स्त्रीसे गृहस्थ होवै ॥ २२ ॥ धनस्थानमें बहुत पाप ग्रह हों सप्तममें भी ऐसेही हों भावेश पापयुक्त होवै तो तीन स्त्री होवैं ॥ २३ ॥ लग्न द्वितीय अथवा सप्तम भावमें पापग्रह हों सप्तमेश नीच राशि अस्तंगतादिमें होवै तो तीन स्त्री होवैं इन योगोंमें स्त्रीहानिसे तीसरी स्त्री होनेकी संभावना है ॥ २४ ॥

नीचमूढारिभावस्थे लग्नेशे दारपेऽथ वा ॥ क्रूरषष्ट्यंशके वापि कलत्रांतरभाग्भवेत् ॥ २५ ॥ दारेशस्थनवांशेशे नीचमूढारिभांशके पापांतरे पापदृष्टे कलत्रांतरभाग्भवेत् ॥ २६ ॥

लग्नेश अथवा सप्तमेश नीच अस्त शत्रुराशिगत हो अथवा क्रूरषष्ट्यंशमें होवै तो अन्य स्त्रीवाला होवै ॥ २५ ॥ सप्तमेश जिसके नवांशकमें हो वह नीच अस्त शत्रु राशि वा नवांशकमें हो पापग्रहोंके बीच पापग्रहोंसे दृष्ट होवै तो अन्य स्त्रीवाला होवै ॥ २६ ॥

एवं कुटुम्बनाथेन कारकस्थांशपेन वा ॥ पापांतरे दारगृहे तन्नाथेऽपि कलत्रहा ॥ २७ ॥ लग्नेश्वरात्कर्मगते सोमपुत्रे बलान्विते ॥ दारेशाद्विक्रमे चन्द्रे बहुस्त्रीसहितो भवेत् ॥ २८ ॥

इसी प्रकार द्वितीयेशसे तथा सप्तमकारकस्थित अंशेशसेभी फल कहना । सप्तमभाव पापोंके बीच हो सप्तमेशभी पापांतर होवै तो स्त्रीहानि होवै ॥ २७ ॥ लग्नेशसे दशममें बुध बलवान् होवै सप्तमेशसे तीसरा चंद्रमा होवै तो बहुत स्त्रियों सहित होवै ॥ २८ ॥

व्ययार्थेशौ तृतीयस्थौ गुरुणा च निरीक्षितौ ॥ भाग्यनाथेन वा दृष्टौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ॥ २९ ॥ केन्द्रत्रिकोणे दारेशे स्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ॥ कर्माधिपेन वा युक्ते बहुस्त्रीसहितो भवेत् ॥ ३० ॥

धनव्ययभावेश तीसरे भावमें गुरुदृष्ट अथवा नवमेशसे दृष्ट हों तो बहुत स्त्रियोंसहित होवै ॥ २९ ॥ सप्तमेश केन्द्र वा त्रिकोणमें उच्च मित्र राशिमें वा अपने अंशादिमें हो अथवा दशमेशसे युक्त होवै तो बहुत स्त्री होवैं ॥ ३० ॥

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ॥ बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ॥ ३१ ॥ भाग्येशे दारराशिस्थे दारेशे सुखभं गते ॥ भावेशे लाभनाथे वा केंद्रे बहुकलत्रभाक् ॥ ३२ ॥

लाभेश सप्तमेश एकसाथ हों अथवा परस्पर देखते हों, बलवान् हों यद्वा त्रिकोणमें होवैं तो बहुत स्त्रीवाला होवै ॥ ३१ ॥ नवमेश सप्तममें, सप्तमेश चतुर्थमें, चतुर्थेश वा लाभेश केन्द्रमें होवें तो बहुत स्त्रियोंवाला होवै ॥ ३२ ॥

दारेशसंयुक्तनवांशनाथयुक्तांशनाथे सति सौम्ययुक्ते ॥ पारावतांशादिगते बलाढ्ये जातः शतस्त्रीसहितो नरः स्यात् ॥ ३३ ॥ कुटुम्बनाथस्थितराशिनाथसंयुक्तषष्ट्यंशपतौ बलाढ्ये ॥ मृदंशके गोपुरभागयुक्ते जातः शतस्त्रीद्विगुणेन युक्तः ॥ ३४ ॥ तत्कारकस्थांशपयुक्तराशिनाथस्थितांशाधिपतौ च केंद्रे ॥ मृदंशके गोपुरभागयुक्ते जातस्य वाच्या त्रिशती बधूनाम् ॥ ३५ ॥

सप्तमेश जिसके नवांशकमें है वहभी जिसके नवांशकमें है वह शुभयुक्त पारावतादि अंशकमें हो बलवान् होवै तो मनुष्य सौ स्त्रियों सहित रहे ॥ ३३ ॥ द्वितीयेश जिसकी राशिमें है वह षष्ट्यंशशके सहितहो बलवान् हो मृदंशकमें वा गोपुरांशकमें हो तो दो सौ स्त्री होवैं ॥ ३४ ॥ सप्तमकारक जिसके अंशकमें है वहभी जिसकी राशिमें है वह जिसके नवांशकमें

है वह केन्द्रमें मृदंशकमें वा गोपुरांशमें होवै तो तीन सौ स्त्री होवैं। ऐसे योगोंमें भावेश तथा भावेश जिसके राश्यंशमें है वहभी जिसके राशि वा अंशकमें हैं ऐसे २।२ विकल्पवाले सभी बलवान् तथा पारावतादि उत्तमभागोंमें होने चाहिये तब ठीक फल होगा ॥ ३५ ॥

दारेशे गोपुरांशस्थे कर्मेशे दारराशिगे ॥ तथाविधे कुटुम्बेशे दशसंख्यकलत्रभाक् ॥ ३६ ॥ एवं पुत्रादिभावानां कलत्रादिकमादिशेत् ॥ दारेशे पापसंयुक्ते दारे वा पापसंयुते ॥ ३७ ॥ दारेशस्थांशपे पापे कुस्त्रीभाक्स नरो भवेत् ॥ क्रूरषष्टचंशके दारनाथे कुस्त्रीयुतो भवेत् ॥ ३८ ॥

सप्तमेश गोपुरांशकमें, दशमेश सप्तम और ऐसाही द्वितीयेशभी होवै तो दश स्त्रियोंको भोगे ॥ ३६ ॥ ऐसेही पुत्रादिभावोंका विचार करके उनके स्त्रियोंकी संख्या कहनी सप्तमेश पापयुक्त अथवा सप्तममें पाप हो ॥ ३७ ॥ सप्तमेशभी पापग्रहके अंशकमें होवै तो मनुष्य कुस्त्रीवाला होवै, सप्तमेश क्रूरषष्टचंशमें हो तौभी कुस्त्रीवाला होवै ॥ ३८ ॥

नीचांशे नीचसंयुक्ते दारनाथे च कारके ॥ कुस्त्रीयुतो भवेज्जातः शुभदृष्टिविवर्जिते ॥ ३९ ॥ दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ॥ शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ॥ ४० ॥ दारेशे शुभराश्यंशे कारके वा तथाविधे ॥ कर्मेशे बलसंयुक्ते सत्कलत्रसमन्वितः ॥ ४१ ॥

सप्तमेश एवं सप्तमभावकारक नीचांश नीचराशिमें हो उनपर शुभदृष्टि न होवै तो मनुष्य (कुस्त्री) निन्द्य स्त्रीसे युक्त होवै ॥ ३९ ॥ सप्तमेश शुभयुक्त शुभग्रहदृष्ट शुभग्रहोंके बीचमें होवै तो (सुस्त्री) उत्तम स्त्रीवाला होवै ॥ ४० ॥ सप्तमेश शुभ ग्रहके राशि अंशमें हो कारकभी ऐसाही हो दशमेश बलवान् होवै तो अच्छी स्त्रीवाला होवै ॥ ४१ ॥

स्वोच्चे मित्रे स्ववर्गेवा गोपुराद्यंशके भृगौ ॥ षष्टयंशे मृदुभागस्थे सत्कलत्रसमान्वितः ॥ ४२ ॥ गुरुणा सहिते दृष्टे दारनाथे बलान्विते ॥ कारके वा तथा भावे पती व्रतपरायणा ॥ ४३ ॥ कलत्रेशे रवौ वापि भृगौ सौम्यनिरीक्षिते ॥ गुरुयुक्ते कलत्रे वा धर्मशीला पतिव्रता ॥ ४४ ॥ कलत्राधिपतौ केन्द्रे शुभग्रहनिरीक्षिते ॥ शुभांशे शुभराशौ वा पातिव्रतपरायणा ॥ ४५ ॥ कलत्रे-

शे रवौ वापि पापराश्यंशसंयुते ॥ पापान्विते पापदृष्टे पत्नी पापपरायणा ॥ ४६ ॥

शुक्र अपने उच्चराशि मित्रराशि अपने अंशादिमें अथवा गोपुरादि भागमें मृदुषष्ट्यंशमें होवै तो अच्छी स्त्रीसे युक्त होवे ॥ ४२ ॥ सप्तमेश बलवान् हो बृहस्पतिसे युक्त वा दृष्ट हो ऐसेही भावकारक ग्रहभी होवै तो स्त्री पतिके व्रतमें तत्पर रहे ॥ ४३ ॥ सप्तमेश अथवा सूर्य शुक्र बुधसे यद्वा शुभग्रहमात्रसे दृष्ट हों, गुरुसहित हों अथवा सप्तमस्थानमें होवें तो स्त्री धर्मस्वभाववाळी पतिव्रता होवै ॥ ४४ ॥ सप्तमेश केंद्रमें शुभग्रहसे दृष्ट शुभग्रहके अंशकमें वा शुभग्रहकी राशिमें होवै तो स्त्री पतिव्रतमें परायण रहे ॥ ४५ ॥ सप्तमेश अथवा सूर्य पापराशि पापांशकमें पापदृष्ट पापयुक्त होवै तो स्त्री पापकर्ममें तत्पर होवै ॥ ४६ ॥

भानौ कलत्राधिपतौ बलाढ्ये शुभान्विते शोभनराशिभागे ॥ शुभग्रहेणापि निरीक्षिते वा लग्नेशमित्रे पतिभक्तियुक्ता ॥ ४७ ॥ दारेश्वरे वा कुमुदात्मबंधौ पापान्विते पापनिरीक्षिते वा ॥ पापांशके पापग्रहांतरस्थे कुमार्गचारी कठिनापराधा ॥ ४८ ॥

सप्तमेश सूर्य बलवान् हो, शुभयुक्त शुभग्रहकी राशिमें शुभांशकमें शुभग्रहसे दृष्ट हो वा लग्नेशका मित्र होवै तो स्त्री पतिभक्तिवाळी होवै ॥ ४७ ॥ सप्तमेश अथवा चन्द्रमा पापयुक्त पापदृष्ट वा पापांशकमें पापग्रहोंके बीच होवै तो स्त्री कुमार्गी एवं कठिन अपराधवाळी होवै ॥ ४८ ॥

सौम्यांशके सौम्यगृहान्विते वा मित्रोच्चगेहे मृदुभागयुक्ते ॥ चंद्रे कलत्राधिपतौ च शुक्रे पुण्या सुशीला सुचरित्रयुक्ता ॥ ४९ ॥ दाराधिपे हीनबले धराजे क्रूरादिषष्ट्यंशसमन्विते वा ॥ निम्नारिमूढे विहगारिभावे दुष्टान्यसक्ता पतिकर्कशा वा ॥ ५० ॥ मित्रोच्चवर्गे यदि दारनाथे शुभान्विते सौम्यदृशा समेते ॥ पारावतांशादिगते बलाढ्ये क्रूरापि पत्युर्गुणमार्गयुक्ता ॥ ५१ ॥

चंद्रमा सप्तमेश और शुक्र शुभराशि शुभांशकमें वा मित्रराशि उच्चराशिमें मृद्वंशकमें होवै तो पुण्यवती सुशीला उत्तमचरित्रवाळी होवै ॥ ४९ ॥ सप्तमेश हीनबल हो मंगल क्रूर आदि षष्ट्यंशमें वा नीच शत्रु राशिमें अस्तमें होवै तो स्त्री दुष्टस्वभावकी अन्य पुरुषमें आसक्त वा पतिके लिये (कर्कशा) कठोर होवै ॥ ५० ॥ यदि सप्तमेश मित्र वर्गमें उच्च वर्गमें शुभग्रहोंसे

दृष्ट वा युक्त हो पारावतादि अंशकमें प्राप्त बलयुक्त होवै तो क्रूरस्वभाव हुयेमें भी पतिके गुण एवं उसके मार्गगामिनी होवै ॥ ५१ ॥

दाराधिपे सोमसुते सपापे नीचारिमूढे यदि नाशभावे ॥ पापान्तरे पापदृशा समेते जाता पतिघ्नी कुलनाशकारी ॥ ५२ ॥ सुपुत्रसौख्यान्वितधर्मशीला व्रतोपवासादिविशुद्धदेहा ॥ सौम्ये कलत्राधिपतौ बलाढ्ये मित्रोच्चवर्गे यदि गोपुरांशे ॥ ५३ ॥

सप्तमेश चन्द्रमा पापयुक्त नीच, शत्रु, अस्तका यदि बारहवें भावमें पापग्रहोंके बीचमें पापदृष्ट होवै तो वह कन्या पतिको मारनेवाली कुलका नाश करनेवाली होवै ॥ ५२ ॥ सप्तमेश शुभ ग्रह बलवान् मित्र उच्च वर्गमें यदि गोपुरांशकमें होवै तो सुपुत्रा सुखसे युक्त धर्ममें स्वभाव, व्रत उपवासादिकोंसे शुद्ध देहवाली होवै ॥ ५३ ॥

भृगोः सुते दारपतौ सपापे नीचान्विते नीचभमूढगेहे ॥ क्रूरादिषष्ट्यंशसमन्विते वा वेश्यासमाना कठिना हि चौरा ॥ ५४ ॥ शुक्रे कलत्राधिपतौ बलाढ्ये शुभान्विते शोभनखेचरांशे ॥ मित्रोच्चवर्गे स्वगृहे मृदुस्थे वाचलिका पुत्रवती गुणाढ्या ॥ ५५ ॥

सप्तमेश शुक्र पापयुक्त नीचगत ग्रहयुक्त नीच राशिमें वा अस्तंगत हो अथवा क्रूरादिषष्ट्यंशयुक्त होवै तो वेश्याके समान तथा कठोर और चोर होवै ॥ ५४ ॥ सप्तमेश शुक्र बलवान् शुभयुक्त शुभग्रहके अंशकमें मित्र एवं उच्चवर्गमें अपनी राशिमें मृदु अंशकमें होवै तो वाचाल पुत्रवती गुणयुक्त होवै ॥ ५५ ॥

जरातिदुष्टा कुलदूषणा स्यान्मन्दे कलत्राधिपतौ सपापे ॥ नीचांशके नीचगृहेऽरिगेहे पापेक्षिते पापवियच्चरांशे ॥ ५६ ॥ परोपकारी द्विजदेवभक्ता स्त्री ब्रह्मवादी गुरुदृष्टियुक्ते ॥ शुभेक्षिते धर्मरता सुशीला मंदे कलत्राधिपतौ बलाढ्या ॥ ५७ ॥

सप्तमेश शनि पापयुक्त नीचराशि नीचांकमें शत्रुराशिमें पापदृष्ट पापग्रहके अंशकमें होवै तो बूढे आकारकी अतिदुष्ट कुलमें दूषण लगानेवाली होवै ॥ ५६ ॥ सप्तमेश शनि बलवान् शुभग्रहदृष्ट विशेषतः बृहस्पतिसे दृष्ट होवै तो परोपकार करनेवाली ब्राह्मण और देवतोंकी भक्ति करनेवाली ब्रह्मवादिनी ज्ञानवती धर्ममें तत्पर सुशील होवै ॥ ५७ ॥

सराहुकेतौ मदनेऽन्यसक्ता पापेक्षिते पापरता कुशीला ॥ क्रूरांशके भर्तृविषप्रदा स्याल्लोकापवादान्वितकर्कशा स्यात् ॥ ५८ ॥

सप्तमभावमें राहु वा केतु सहित होवै तो अन्यपुरुषमें आसक्त रहे पापदृष्टभी हो तो पापमें तत्पर और दुष्ट शीलवाली होवै । क्रूरांशकमें होवै तो भर्त्ताको विषदेनेवाली लोकमें झूठे कलंकयुक्त और (कर्कशा) कठोरभी होवै ॥ ५८ ॥

दारेश्वरे सन्निहिते विलग्ने नाथस्य बाल्ये परिणीतमाहुः ॥ लग्ना-त्कलत्राच्छुभखेचरेंद्रे समीपराशौ यदि तत्तथैव ॥ ५९ ॥ लग्ने कुटुम्बे यदि दारभावे शुभान्विते शोभनवर्गयुक्ते ॥ तदीश्वरे शो-भनदृष्टयुक्ते बाल्ये विवाहादिकमाहुरार्याः ॥ ६० ॥

सप्तमेश लग्नेश एकसाथ अंशोंमें समीपवर्ती होवै तो बाल्यावस्थामें विवाह होवै यदि लग्नसे सप्तमसे शुभग्रह समीप राशियोंमें होवै तौभी वही फल कहतेहैं ॥ ५९ ॥ लग्न द्वितीय और सप्तमस्थान शुभयुक्त शुभांशकादियुक्त हों उनके स्वामी शुभग्रह दृष्ट युक्त होवैं तो श्रेष्ठ ज्योतिषी बाल्यावस्थामें विवाहादि कहतेहैं ॥ ६० ॥

पारावतांशादिगते कलत्रनाथे कुटुम्बाधिपतौ बलाढ्ये ॥ मृद्वा-ख्यभागे तनुभावनाथे बाल्ये विवाहं मुनयो वदंति ॥ ६१ ॥ भाग्यं विवाहात्परतो वदंति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ॥ कुटुं-बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ॥ ६२ ॥

सप्तमेश पारावतांशादिमें होवै द्वितीयेश बलवान् होवै और लग्नेश मृदंशकमें होवै तो मुनिलोग बाल्यावस्थामें विवाह कहतेहैं ॥ ६१ ॥ शुक्र सप्तम हो अथवा उपचय ३।६।११। १० स्थानमें हो यद्वा द्वितीयमें हो अथवा लग्नेश इन भावोंमेंसे किसीमें हो शुभग्रहसे दृष्ट युक्त होवै तो मुनिलोग विवाहसे पीछे भाग्योदय होगा कहतेहैं ॥ ६२ ॥

तत्कारके दारपतौ कुटुंबनाथे विलग्नाधिपतौ च दुःस्थे ॥ नीचा-रिमूढांशगते सपापे भाग्यं विवाहात्प्रविनाशमेति ॥ ६३ ॥ क्रूरादिषष्ट्यंशसमन्वितेपि तत्कारके तादृशखेचरेन्द्रे ॥ शुभा-न्विते शोभनदृष्टिपाते नाशात्परं भाग्यमुपैति जातः ॥ ६४ ॥

सप्तमकारक सप्तमेश द्वितीयेश और लग्नेश दुष्ट स्थानमें हों नीच शत्रु मूढ अंशकमें पाप-युक्त होवैं तो विवाह होजानेसे भाग्य नष्ट होजावै ॥ ६३ ॥ सप्तमकारकग्रह वा पूर्वोक्तोंमेंसे कोई क्रूरआदि षष्ट्यंशमें भी होवै तथा शुभग्रहसे युक्त दृष्ट होवें तो (भाग्य) ऐश्वर्य नाश होकर फिर ऐश्वर्य पाताहै ॥ ६४ ॥

क्रूरे कलत्रेशयुते त्रिकोणे तत्कारके पापसमन्विते वा ॥ कुटुम्बराशौ यदि वात्र माने दूरे विवाहात्कथयंति संतः ॥६५॥ माने सपापे यदि वा कुटुंबे भाग्येथ वा पापयुते कलत्रे ॥ क्रूरांशके क्रूरनिरीक्षिते वा दूरे विवाहात्कथयंति संतः ॥ ६६ ॥ पुत्रादिलाभेष्वयमेव मार्गस्तं चिंतयित्वा प्रवदेत्सुतादीन् ॥ ६७ ॥ लग्नेश्वराद्धीनबले कलत्रनाथेऽरिभागांशयुते विमूढे ॥ नीचांशके नीचसमन्विते वा निकृष्टजातौ हि कलत्रलाभः ॥ ६८ ॥

पापग्रह सप्तमेशसहित त्रिकोण ९।५ में होवै वा सप्तम कारक पापयुक्त दूसरे वा दशम स्थानमें होवै तो विवाहसे बहुत दिनों पीछे भाग्य उदय होवै ऐसा सज्जन कहतेहैं ॥ ६५ ॥ सप्तमेश पापयुक्त दशम, वा द्वितीय यद्वा नवमस्थानमें हो सप्तममें भी पापग्रह होवैं तौभी वही फल कहतेहैं ॥ ६६ ॥ पुत्रादि लाभमेंभी ऐसाही विचार करके पुत्रादिप्राप्ति दूर वा शीघ्र कहनी ॥ ६७ ॥ सप्तमेश लग्नेशसे हीनबली हो शत्रुराशि शत्रुके अंशकमें वा अस्तंगत हो अथवा नीचराश्यंकमें होवै तो स्त्री अपनेसे नीच जातकी मिले ॥ ६८ ॥

लग्नेश्वरात्पूर्णबले कलत्रनाथे शुभांशे शुभदृष्टियुक्ते ॥ वैशेषिकांशे परमोच्चभागे उत्कृष्टजातौ हि कलत्रलाभः ॥ ६९ ॥ लग्नेश्वरे हीनबले कलत्रनाथात्सपापे यदि नीचभागे ॥ नाशस्थिते वान्ववरोहभागे कलत्रजातेः स्वयमत्र हीनः ॥ ७० ॥

लग्नेशसे सप्तमेश पूर्णबली हो शुभांशकमें शुभग्रहोंसे दृष्ट वैशेषिकांशकमें वा परमोच्चांशकमें होवै तो अपनेसे उत्तमजातिमें स्त्री मिले ॥ ६९ ॥ लग्नेश सप्तमेशसे हीनबली हो पापयुक्त नीचांशकगत बारहवें भावमें अथवा (अवरोही) उच्चसे उतरता होवै तो स्त्रीकी जातिसे अपनी जाति न्यून होवै ॥ ७० ॥

तस्माद्बलाढ्ये तु विलग्ननाथे त्वारोहभागे परमोच्चभांशे ॥ केन्द्रत्रिकोणे यदि वा ससौम्ये श्रेष्ठः कलत्रात्स्वयमेव जातः ॥७१ ॥ कलत्रनाथाद्यदि वा कलत्रराशेः कुटुम्बाधिपतेर्वदेद्वा ॥ बलेन साम्ये समजातिमाहुः स्त्रियं सुशीलां पतिभक्तिचित्ताम् ॥ ७२ ॥

सप्तमेशसे लग्नेश बलवान् हो आरोहभागमें वा परमोच्चराश्यंशकमें शुभयुक्त केन्द्र त्रिकोणमें होवै तो स्त्रीकी जातिसे अपनी जाति श्रेष्ठ होवै ॥ ७१ ॥ सप्तमेशसे वा सप्तम राशिसे

अथवा द्वितीयेशसे बलाबल देखके यह फल कहना यदि लग्नेश सप्तमेश बलमें तुल्य हों तो स्त्री तुल्यजातिकी कहतेहैं तथा सुशीला और पतिकी भक्तिमें चित्त लगानेवाली होतीहै॥ ७२॥

लग्नेश्वरस्यापि कलत्रनाथे शत्रौ तदीयस्त्विह शत्रुभूतः॥ मित्राणि ते तस्य कुलोद्भवाश्च मित्रे विलग्नाधिपतेस्तदानीम् ॥ ७३ ॥ दारेश्वरस्यापि विलग्ननाथे शत्रौ तदीयास्त्वरयस्ततोऽन्ये ॥७४॥

लग्नेशकाभी सप्तमेश शत्रु होवै तो विवाह स्थानवाले शत्रु होवैं यदि लग्नेशका सप्तमेश मित्र होवै तो स्त्रीके कुलवाले भी उसके मित्र होवैं ॥ ७३ ॥ सप्तमेशकाभी लग्नेश शत्रु होवै तो वे संबंधी शत्रु और मित्र हों तो मित्र होवै ॥ ७४ ॥

कलत्राधिपतेर्वर्णे राशेर्वा कारकस्य च ॥ सर्वोत्तमबलस्यैव तेषां मध्ये विनिर्दिशेत् ॥ ७५ ॥ सुगुणा रूपसंपन्ना तस्मिन्गुर्वच्छवीक्षिते ॥ पापेक्षिते पापयुक्ते कुरूपा दुर्गुणा भवेत् ॥ ७६ ॥

स्त्रीका रंग सप्तमेश वा सप्तमराशि अथवा सप्तम भावकारकग्रहमेंसे जो सर्वोत्तम बली हो उससे कहना ॥ ७५ ॥ उक्त बली गुरु शुक्रसे दृष्ट होवै तो स्त्री अच्छे गुणोंवाली रूपसे संपन्न होगी यदि पापदृष्ट पापयुक्त होवै तो स्त्री कुरूपा एवं दुर्गुणोंवाली होवै ॥ ७६ ॥

कलत्रनाथस्थितभं तदीयं राशिं कलत्रस्य विदुर्महान्तः ॥ तस्योच्चनीचं यदि वा कलत्रराशिं तदंशत्रितयं तदीयम् ॥ ७७ ॥ कलत्रराशित्रितयेथ वा स्यात्तदीशसंयुक्तभकोणराशौ ॥ कलत्रराशिं समुदाहरन्ति प्रोक्तान्यराशौ यदि नास्ति पुत्रः ॥ ७८ ॥ गोसिंहकन्यादिषु जन्मराशिः स्त्रीणां भवेज्जन्मनि वाल्पपुत्रा ॥ शुभग्रहैराक्रमितेषु तेषु सुतान्वदेत्तत्र बहून्गुणाढ्यान् ॥ ७९ ॥

सप्तमेश जिस राशिमें है १, सप्तमेशकी जो राशि है २, उसकी जो उच्चराशि जो नीच राशि हैं ३, इस प्रकार कलत्र राशिके तीन भेद होतेहैं । इनसे स्त्रीका विचार बलाबल देखके कहना ॥ ७७ ॥ उक्त तीनप्रकार कलत्रराशि अपने स्वामी युक्त वा इन तीनोंमें एकका स्वामी दूसरेमें हो. अथवा सप्तमेश जिस राशिमें है उसके त्रिकोण ९ । ५ में कलत्रराशि कहतेहैं । इनमेंभी बलाबल देखना. इनराशियोंमें बली ग्रह हों तो पुत्र होंगे; निर्बलग्रह निर्बलराशि हों तो नहीं होते ॥ ७८ ॥ उक्त स्थानोंमें २ । ५ । ६ आदि राशि अथवा ये जन्मराशि हों तो कन्या बहुत, पुत्र कम होवैं यही राशि शुभग्रहोंसे युक्त होवैं तो गुणवान् बहुत पुत्र होंगे ऐसा कहना ॥ ७९ ॥

वंध्यासंगो मदें भानौ चन्द्रे दासीसमाश्रयः ॥ कुजे रजस्वला-संगो वंध्यासंगश्च कीर्तितः ॥ ८० ॥ बुधे वेश्यार्थहीना वा वणिक्स्त्री वा प्रकीर्तिता ॥ गुरौ ब्राह्मणभार्या स्याद्गर्भिणी-संगमो भृगौ ॥ ८१ ॥ हीना वा पुष्पिता वा स्यान्मंदराहुफणी-श्वरैः ॥ राहौ च गर्भिणीसंगः कृष्णया कुब्जया शनौ ॥ ८२ ॥

सप्तम सूर्य होवै तो वांझ स्त्रीका संग करे, चंद्रमा होवे तो दासीका आश्रय लेवै, मंग-लसे रजस्वला और वांझ स्त्रीका संग कहाहै ॥ ८० ॥ बुधसे वेश्या अथवा दरिद्रा (भिखारिन) यद्वा बनियेंकी स्त्रीसे, बृहस्पतिसे ब्राह्मणकी स्त्रीका संग, शुक्रसे गर्भिणीका संग ॥ ८१ ॥ शनि राहु केतुसे हीनजातिकी वा रजोवती स्त्रीका गमन करे, राहुसे गर्भिणी स्त्रीका संग, और शनिसे कालेरंगकी कुबरी कुरूपा स्त्रीसे भी संग करताहै ॥ ८२ ॥

एवं सुखस्थितैरेतैरीदृक्स्त्रीसंग ऊह्यताम् ॥ सूर्याद्यैः सुखगै-र्वाच्यं वाहनं गृहनिर्णयः ॥ ८३ ॥ वन गृहं च कुड्यं स्याद्विहारो देवतालयम् ॥ जलं हरिगजस्थानमिति स्थाननिरूपणम् ॥८४॥

इसीप्रकार उक्त ग्रह चतुर्थ स्थानमें होवैं तो भी इसीप्रकार स्त्रीसंग जानना। सूर्यादि ग्रहोंमेंसे जो चतुर्थ स्थानमें हो उसके अनुसार वाहन तथा मकानका निर्णय कहना ॥ ८३ ॥ सूर्यसे वन, चंद्रमासे वस्तीमें, मंगलसे कुटिया, बुधसे विहारस्थान, गुरुसे देवालय, शुक्रसे जलस्थान, शनिसे सिंहव्याघ्रादि स्थान, राहु केतुसे गजस्थान इसप्रकार स्थानका निरूपण करना ॥ ८४ ॥

पापैर्युक्ते चतुष्केन्द्रे चतुष्पान्मैथुनं वदेत् ॥ पापैर्दृष्टेषु सर्वेषु केंद्रेष्वेवं विनिर्दिशेत् ॥ ८५ ॥ केन्द्रे कोणे पापयुते पशुवन्मै-थुनं वदेत् ॥ मन्दे पापान्विते वापि समांशे तादृशं वदेत्॥८६॥

चारों केन्द्रोंमें पापग्रह होवैं तो पशुके समान (वा साथ) मैथुन करनेवाला होवै ऐसा कहना, यदि चारों केन्द्र पापयुक्त होवैं तोभी ऐसाही फल कहना ॥ ८५ ॥ केन्द्र तथा त्रिकोण पापयुक्त होवैं तो पशुसमान मैथुन कहना शनि पापयुक्त वा केतुयुक्त केन्द्र कोणमें होवै तौभी वही फल कहना ॥ ८६ ॥

मन्दे सूर्ये सुखे भौमे पशुवन्मैथुनं वदेत् ॥ राहौ कलत्रे सौम्ये वा सुखे तादृशमैथुनम् ॥ ८७ ॥ मंदेशे भृगुसंदृष्टे भौमक्षेत्र-गतेऽथ वा ॥ भृगुणा सहिते वापि भगचुम्बनभाग्भवेत् ॥ ८८ ॥

चौथे भावमें शनि सूर्य मंगल हो तो पशुके तुल्य मैथुन कहना, राहु सप्तम वा मंगल चौथे होवै तो वैसाही मैथुन कहना ॥ ८७ ॥ जिस राशिमें शनि है उसका स्वामी शुक्रसे दृष्ट होवै अथवा मंगलके क्षेत्रमें हो अथवा शुक्रसे युक्त होवै तो भगका चुम्बन करनेवाला होवै ॥८८॥

एवं कुटुम्बनाथेन भगचुंबनभाग्भवेत् ॥ ८९ ॥ कर्मेशे मन्दसंदृष्टे भौमक्षेत्रगतेऽथ वा ॥ भृगुणा सहिते वापि भगचुंबनभाग्भवेत् ॥ ॥ ९० ॥ लग्नेशे नीचराश्यादौ स्थिते तादृशचुम्बनम् ॥ एवं कुटुम्बनाथेन भगचुम्बनभाग्भवेत् ॥ ९१ ॥ कुजे कृशस्तनी मंदे राह्वादौ लंबनस्तनी ॥ कठिनोर्ध्वकुचा भानौ शेषैः स्थूलोत्तमस्तनी ॥ ९२ ॥

इसीप्रकार द्वितीयेशसे भग चुम्बन वाला होताहै ॥ ८९ ॥ दशमेश शनिसे दृष्ट अथवा मंगलके राशिमें वा शुक्र सहित होवै तो भग चुम्बनवाला होवै ॥ ९० ॥ लग्नेश नीच राशि आदिमें हो तोभी वैसाही चुम्बन करे। ऐसेही कुटुम्बेशसेभी भग चुम्बनवाला होवै ॥ ९१ ॥ मंगलसे पतले स्तनवाली, शनि राहु आदिसे लंबे स्तनवाली सूर्यसे कडे एवं ऊंचे स्तनवाली अन्यग्रहोंसे स्थूल और उत्तम स्तनोंवाली होतीहै ॥ ९२ ॥

पापेनैकेन सहिते विलक्षणकुचा भवेत् ॥ दारेशे पापखेटे वा शुभे वा तादृशस्तनी ॥९३॥ शुभद्वयेन सहिते दारेशेऽपि तथाविधे ॥ समस्तनी भवेत्पत्नी पापयोगेऽन्यथा भवेत् ॥ ९४ ॥ अतिस्थूलस्तनी पत्नी सशुभे दारनायके ॥ जलगेहे जलर्क्षस्थे गुरुणापि निरीक्षिते ॥ ९५ ॥

एक पापग्रहसे युक्त होवै तो विलक्षण स्तनवाली होवै, सप्तमेश पाप वा शुभ पापयुक्त नीचादिगत होवै तो वैसाही फल होगा ॥ ९३ ॥ दो शुभग्रहोंसे सहित हो सप्तमेशभी वैसाही होवै तो स्त्री समान स्तनवाली होवै पापयुक्त होवै तो समस्तनी न होवै ॥ ९४ ॥ सप्तमेश शुभयुक्त होवै तो अतिस्थूल स्तनवाली होवै जलराशिमें चतुर्थस्थानगत होवै बृहस्पतिभी उसे देखे तोभी वही फलहोगा ॥ ९५ ॥

रवौ वा भूमिपुत्रे वा मन्दमान्द्यगुसंयुते ॥ दाराधिपे पापभागे भगदैर्घ्यं विनिर्दिशेत् ॥ ९६ ॥ तदीशौ गुरुशुक्रौ वा शुभांशसहितौ यदा ॥ समं भगं भवेत्तस्याः पापयुक्ते तु दीर्घकम् ॥९७॥

शनिचन्द्रविदां मध्ये यत्रैकस्मिन्मदेश्वरे ॥ ह्रस्वं भगं समादिष्टं स्त्रियामेवं विनिर्दिशेत् ॥ ९८ ॥

सूर्य अथवा मंगळ, शनि, केतु, राहुयुक्त होवें सप्तमेश पापांशकमें होवै तो भग दीर्घ होवै ॥ ९६ ॥ सप्तमेश गुरु वा शुक्र यदि शुभग्रहाके अंशमें हों तो उस स्त्रीका भग सम होवै- पापयुक्त होवें तो दीर्घभग होवै ॥ ९७ ॥ शनि चंद्रमा बुधमेंसे एक सप्तमेश होवै तो छोटा भग कहाहै इसप्रकार स्त्रियोंके ग्रहोंका विचार करना ॥ ९८ ॥

कलत्रेशे जलर्क्षस्थे कारके वा तथाविधे ॥ जलर्क्षे दारभावे वा पूर्ण-चन्द्रनिरीक्षिते ॥ ९९ ॥ चन्द्रे जलर्क्षे दारस्थे जलस्थभृगुवीक्षिते॥ जलर्क्षस्थविदा दृष्टे स्त्रीगुह्यस्यार्द्रता भवेत् ॥१००॥ पूर्णे शशांके दारस्थे जलराश्यंशकेऽपि वा ॥ जलस्थगुरुसंदृष्टे सततं त्वार्द्रता भवेत् ॥ १०१ ॥ परमोच्चांशके शुक्रे जलराशिगतेपि वा ॥ भानु-नासंयुते वापि मैथुनादेव तादृशम् ॥ १०२ ॥

सप्तमेश जलराशिमें सप्तमकारकभी जलराशिमें हो वा सप्तम भावमें जलराशि पूर्ण चंद्र से दृष्ट होवै स्त्रीका भग गीला शीघ्र होवै ॥ ९९ ॥ चन्द्रमा जलराशिमें सप्तम होवै उसे शुक्र देखे जलराशिस्थ बृहस्पतिसे भी दृष्ट होवै तो स्त्रीके गुह्यस्थानमें गीलापन रहे ॥ १०० ॥ पूर्ण चन्द्रमा सप्तममें जलराशि वा जलराश्यंशकका होवै जलराशिस्थ गुरु उसे देखे तो सर्व दा भगमें गीलापन रहे ॥ १०१ ॥ शुक्र परमोच्चांशकमें हो अथवा जलराशिमें हो सूर्यसे युक्त होवै तो मैथुनसेभी तादृशह भग होवै ॥ १०२ ॥

दारेशे शुष्कराशिस्थे दारे वा शुष्कसंज्ञके ॥ शुष्कग्रहेण संयुक्ते त्वनार्द्रं गुह्यमादिशेत् ॥१०३॥पापक्षेत्रे पापमध्ये दारेशेपि तथा-विधे ॥ पापदृग्योगसंपाते त्वनार्द्रं गुह्यमादिशेत् ॥ १०४ ॥

सप्तमेश (शुष्क) स्थल चरराशिमें वा सप्तममें शुष्कराशि शुष्कग्रह होवै तो गुह्य-स्थान गीला न रहे ऐसा कहना ॥ १०३ ॥ पापग्रहकी राशिमें पापग्रहोंके बीच ऐसाही सप्तमेश होवै पापग्रहकी दृष्टि वा योग होवै तोभी वैसाही कहना ॥ १०४ ॥

सप्तमेशे बुधे दृष्टे गुरुणा बलसंयुते ॥ भुक्तीशेनापि संदृष्टे सूपद-ध्याज्यभाग्भवेत् ॥ १०५ ॥ सप्तमेशे गुरौ दृष्टे शोभनांशसम-न्विते ॥ सौम्यांशसौम्यसंदृष्टे सूपदध्याज्यभाग्भवेत् ॥ १०६ ॥

सप्तमेश बुध गुरुसे दृष्ट एवं बलवान् होवै द्वितीयेशसे भी दृष्ट होवै तो. दाल दही घी आदि खानेवाला होवैं ॥ १०५ ॥ सप्तमेश गुरु द्वितीयेशसे दृष्ट शुभांशकमें तथा बुधक नवांशमें बुधसे दृष्ट होवै तौभी वह फल कहना ॥ १०६ ॥

दारस्थे भृगुपुत्रे वा पूर्णचन्द्रनिरीक्षिते ॥ पापैरयुक्ते दृष्टे वा सूपदध्याज्यभाग्भवेत् ॥ १०७ ॥ रवौ वा भूमिपुत्रे वा सप्तमेशे-शुभेक्षिते ॥ भुक्तिस्थानगते वापि कदाचिद्दधिसूपभाक् ॥ १०८ ॥

अथवा सप्तम शुक्र पूर्णचन्द्रमासे दृष्ट तथा पापग्रहोंसे युक्त दृष्ट न होवै तो दाल दही घी आदि खानेवाला होवै ॥ १०७ ॥ सूर्य अथवा मंगल सप्तमेश हो शुभग्रहदृष्ट हो अथवा दूसरे स्थानमें होवै तो दही दाल कदाचित् खावै ॥ १०८ ॥

पापे सप्तमभावस्थे तदीशे पापसंयुते ॥ क्रूरषष्ट्यंशके वापि घृतसूपादिहीनभाक् ॥ १०९ ॥ चन्द्रे गुरौ वा दारेशे जलराश्यंशसंभवे ॥ जलग्रहेण वा दृष्टे क्षीरपानादिभाग्भवेत् ॥ ११० ॥ सप्तमेशस्थितांशेशे शुभदृष्टिसमन्विते ॥ शुभग्रहांशके वापि गुडक्षीरादिपानभाक् ॥ १११ ॥

सप्तममें पापग्रह हो सप्तमेश पापयुक्त हो अथवा क्रूरषष्ट्यंशकमें होवै तो घृत दाल आदि से रहित भोजन करे ॥ १०९ ॥ चंद्रमा वा बृहस्पति सप्तमेश होकर जलचर राशि वा अंशकमें हो अथवा जलधातुवाले ग्रहसे दृष्ट होवै तो दुग्ध आदि पीनेवाला होवै ॥ ११० ॥ सप्तमेश जिसके अंशकमें है वह शुभ दृष्ट होवै अथवा शुभांशकमें होवै तो गुड दूध आदि उत्तम पदार्थ पान करनेवाला होवै ॥ १११ ॥

बहवः सप्तमे पापाः षष्ठे वा रन्ध्रभेऽपि वा ॥ क्रूरषष्ट्यंशसंयुक्ता मूत्रकृच्छ्रं विनिर्दिशेत् ॥ ११२ ॥ इति सप्तमभावस्थानिश्चितार्थविचारयुक् ॥ षष्ठाध्यायो मया प्रोक्तो व्यंकटेशेन धीमता ॥ ११३ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिन्तामणौ सप्तमभावफलविचारो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

सप्तम स्थानमें बहुत पापग्रह हों अथवा छठे वा अष्टममें हों, क्रूर षष्ट्यंशकसंयुक्त होवैं तो मूत्रकृच्छ्र रोग कहना ॥ ११२ ॥ मैं धीमान् व्यंकटेशने इसप्रकार सप्तमभावस्थ निश्चित फल विचार चित्र अर्थवाला छठा अध्याय कहाहै ॥ ११३ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिंतामणौ माहीधरभाषाटीकायां सप्तमभावफलविचाराध्यायः षष्ठः ॥ ६ ॥

सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथायुर्धर्मभावफलविचाराध्यायः।

मरणाज्जीवितमरणं गुह्यस्थानं च मरणहेतुं च ॥
अन्नसुखं भृतिदंशं परिभवमपि चिंतयेत्प्राज्ञः ॥ १ ॥

मरणसे जीवन और मरण, गुह्यस्थान, मरणका हेतु, अन्नसुख, भृति, दंश, हारजानाभी अष्टम भावसे विचारने। इनको खुलासा आगे कहेंगे ॥ १ ॥

रन्ध्रेश्वरे पापयुतेंत्यराशावल्पायुरस्येति वदंति षष्ठे ॥ तत्रापि लग्नेश्वरयोगजातः स्वल्पायुरस्येति वदंति संतः ॥ २ ॥

अष्टमेश पापयुक्त बारहवें वा छठे होवै तो इस मनुष्यकी अल्पायु होगी, तहां लग्नेशसेभी युक्त होवै तो विद्वान् इसकी थोडी आयु कहते हैं ॥ २ ॥

स्वक्षेत्रसंस्थे यदि रंध्रनाथे दीर्घायुराहुर्मुनयो महान्तः ॥ मदेन वाचिन्त्य विशेषमायुः स्वक्षेत्रमित्रोच्चगृहस्थितेन ॥ ३ ॥ रन्ध्रेश्वरेणापि विलग्ननाथे युते रिपौ वा व्ययराशियुक्ते ॥ षष्ठांत्यपे वा यदि लग्नयुक्ते दीर्घायुरस्येति शुभेक्षितश्चेत् ॥ ४ ॥

अष्टमेश अपने क्षेत्रमें होवै तो बडे मुनिजन इसकी दीर्घायु कहतेहैं अथवा सप्तम भावसे अपनी राशि मित्रकी राशि और उच्चराशि स्थित ग्रहके अनुसार दीर्घायु विशेष जाननी ॥ ३॥ अष्टमेशसे युक्त लग्नेश छठें वा बारहवें होवै और षष्ठेश व्ययेश लग्नमें होवैं शुभग्रह उनको देखें तो मनुष्यकी दीर्घायु होगी ॥ ४ ॥

कर्मेश्वरेणापि विचिन्त्यमायुर्दीर्घं सुहृत्स्वोच्चयुतेन तेन ॥ केन्द्रस्थितैः कर्मविलग्नरन्ध्रनाथैस्तथैवायुरुदाहरन्ति ॥ ५ ॥ प्रोक्तं ग्रहैर्व्योमचरैस्त्रिभिर्वा सभानुजैः केंद्रगतैस्तथैव ॥ स्वक्षेत्रकोणादिगतैर्विशेषाद्वदन्ति दीर्घायुरुदारचित्ताः ॥ ६ ॥

ऐसेही मित्र उच्च स्वगृहादिस्थित दशमेशसेभी दीर्घायुका विचार करना दशम लग्न और अष्टम भावके स्वामी केन्द्रमें होवैं तो वैसेही दीर्घायु कहनी ॥ ५ ॥ उक्त ग्रह दशममें हों वा तीनों शनियुक्त अन्य केंद्रोंमें हों तो भी उदारबुद्धिवाले दीर्घायु कहतेहैं ॥ ६ ॥

केन्द्रान्विते विलग्नेशे गुरुशुक्रसमन्विते ॥ ताभ्यां निरीक्षिते वापि दीर्घमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ ७ ॥ चतुरस्रे शुभैर्युक्ते लग्नेशे शुभसंयुते ॥ गुरुणा दृष्टिसंयोगे पूर्णमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ ८ ॥ त्रिषडायगताः पापाः शुभाः केंद्रत्रिकोणगाः ॥ लग्नेशे बलसंयुक्ते पूर्णमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ ९ ॥

लग्नेश केन्द्रमें गुरु शुक्र सहित वा इनसे दृष्ट होवै तो दीर्घायु कहनी ॥ ७ ॥ केंद्रोंमें शुभग्रह लग्नेश शुभयुक्त बृहस्पतिसे दृष्ट होवै तो पूरी आयु कहनी ॥ ८ ॥ पापग्रह तीसरे छठे ग्यारहवे में शुभग्रह केन्द्र कोणोंमें हों और लग्नेश बलवान् होवै तो पूर्ण आयु कहनी ॥ ९ ॥

षट्सप्तरन्ध्रभावेषु शुभेषु सहितेषु च ॥ त्रिषडायेषु पापेषु पूर्णमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ १० ॥ रंध्राधिपे विलग्नस्थे गुरुशुक्रयुतेक्षिते ॥ लग्नेशे केन्द्रभावे वा दीर्घमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ ११ ॥ उच्चाश्रितैस्त्रिभिःखेटैर्लग्ने रन्ध्रेशसंयुते ॥ रंध्रे पापविहीने तु दीर्घमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ १२ ॥

छठे सातवें और आठवें भावमें शुभग्रह हों ३।६।११ में पापग्रह हों तो पूर्णायु कहनी ॥ १० ॥ अष्टमेश लग्नमें गुरु शुक्रसे युक्त वा दृष्ट होवै वा लग्नेश केन्द्र भावमें होवै तो दीर्घायु कहनी ॥ ११ ॥ तीन ग्रह उच्चके हों अष्टमेश लग्नमें हो और अष्टममें कोई पापग्रह न होवै तो दीर्घायु कहनी ॥ १२ ॥

रन्ध्रस्थितैस्त्रिभिः खेटैः स्वोच्चमित्रस्वगेहगैः ॥ लग्नेशे बलसंयुक्ते दीर्घमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ १३ ॥

अष्टम भावमें तीन ३ ग्रह हों और वे अपने उच्च मित्र अथवा राशिमें होवें अर्थात् अष्टम भाव उन ग्रहोंके उच्चादिमेंसे कोई होवै, और लग्नेश बलवान् होवै तो दीर्घायु कहनी ॥ १३ ॥

पारावतादिभागस्थाः पापाः सर्वेशुभास्तथा ॥ केन्द्रत्रिकोणनिलयाः पूर्णमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ १४ ॥ षष्ठाष्टमे व्यये पापे लग्नेशे दुर्बले यदि ॥ अल्पायुरनपत्यो वा शुभदृग्योगवर्जिते ॥ १५ ॥ (१६)

संपूर्ण पाप तथा शुभग्रह पारावतादि अंशकोंमें केंद्र त्रिकोण गत होवैं तो पूर्णायु कहनी ॥ १४ ॥ छठे आठवें और बारहवें भावमें पापग्रह हों लग्नेश निर्बल होवै शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट न हों तो अल्पायु वा अपुत्र होवै ॥ १५ ॥ (१६)

चतुष्टयगते पापे शुभदृष्टिविवर्जिते ॥ बलहीने विलग्नेशे त्वल्प-
मायुर्विनिर्दिशेत् ॥ १७ ॥ व्ययार्थौ पापसंयुक्तौ शुभदृष्टिविव-
र्जितौ ॥ क्रूरषष्ट्यंशके वापि स्वल्पमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ १८ ॥

केंद्रमें पापग्रह शुभग्रहदृष्टि रहित होवै तथा लग्नेश बलहीन होवै तो अल्पायु कहनी ॥ १७ ॥ बारहवां और दूसरा भाव पापयुक्त शुभदृष्टिरहित हों अथवा क्रूर षष्ट्यंशकमें होवें तो अल्पायु कहनी ॥ १८ ॥

आयुर्योगास्त्रिधा प्रोक्ताः स्वल्पमायुश्चिरायुषः ॥ द्वात्रिंशत्पूर्वम-
ल्पायुर्मध्यमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ १९ ॥ सप्तत्याः प्राक् ततः पूर्ण-
मायुरत्र वदंति हि॥अल्पायुर्दिननाथस्य शत्रुर्लग्नाधिपो यदि॥२०॥

अल्प मध्य दीर्घ भेदसे आयुके तीन भेद हैं । ३२ वर्षसे पहिले अल्प, ७० वर्षसे पूर्व मध्य इससे ऊपर पूर्णायु कहतेहैं ॥ लग्नेश सूर्यका शत्रु होवै तो अल्पायु होवै ॥ १९ ॥ २० ॥

समत्वे मध्यमायुः स्यान्मित्रे दीर्घायुरादिशेत् ॥ बलहीने विल-
ग्नेशे जीवे केन्द्रत्रिकोणगे ॥ २१ ॥ षष्ठाष्टमव्यये पापे मध्यमा-
युरुदाहृतम् ॥ शुभे केन्द्रत्रिकोणस्थे शनौ बलसमन्विते ॥२२॥
षष्ठे वाप्यष्टमे पापे मध्यमायुरुदाहृतम् ॥ लग्ने त्रिकोणे केन्द्रे
वा मध्यमायुश्च मिश्रिते ॥ २३ ॥

लग्नेश सूर्यका सम होवै तो मध्यमायु, मित्र होवै तो दीर्घायु कहनी । लग्नेश निर्बल होवै बृहस्पति केंद्र वा त्रिकोणमें होवै और छठे आठवे बारहवें में पापग्रह होवै तो मध्यायु कहीहै । केंद्र त्रिकोणमें शुभग्रह हों शनि बलवान् हो छठे अथवा आठवें पापग्रह होवै अथवा लग्न त्रिकोण केन्द्रमें पापग्रह हावै तो मध्यमायु होवै, उक्तयोगमिश्रित हों तोभी मध्यायु होवै ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥

अल्पायुर्योगजातानां विपत्पाको मृतिप्रदः ॥ मध्यमे प्रत्यरिदशा
मृतिं दद्याद्विशेषतः ॥ २४ ॥ वधभेशदशा कष्टा पूर्णायुर्योगसं-
ज्ञके ॥ योगायुरिति निश्चित्य जातस्यैवं वदेद्बुधः ॥ २५ ॥

जिनके अल्पायु योग होतेहैं उनको विपत् नक्षत्रेश दशा, मध्यमायुवालेको प्रत्यरितारेश दशा, और विशेषकरिके पूर्णायुयोगमें वधनक्षत्रेशदशा मृत्यु देतीहै, इसप्रकार योगायु निश्चय करके पंडित आयु कहे ॥ २४ ॥ २५ ॥

आयुर्विलग्नाधिपती बलेन हीनौ धरासूनुव्रणेशयुक्तौ ॥ युद्धे मृतिं तस्य वदन्ति तज्ज्ञाः शस्त्रेण वा तन्मरणं विशेषात् ॥ २६ ॥ रंध्रांगनाथौ यदि वा रिपुस्थौ राह्वन्वितौ केतुयुतौ समंदौ ॥ तद्भुक्तिकालेप्यथ वापि पाके शस्त्रेण चौरैर्मरणं प्रयाति ॥ २७ ॥

अष्टमेश और लग्नेश बलरहित होवैं तथा मंगल एवं षष्ठेशसे युक्त होवैं तो ज्योतिषज्ञ उसकी मृत्यु रणमें; विशेषतः शस्त्रसे कहतेहैं ॥ २६ ॥ यदि लग्नेश अष्टमेश छठे स्थानमें शनि तथा राहु वा केतु सहित होवे तो उसकी दशा अथवा अंतर्दशामें शस्त्रसे चोरोंके हाथसे मरे ॥ २७ ॥

रन्ध्रांगपौ वाहननाथयुक्तौ तस्मान्मृतिं तस्य वदंति तज्ज्ञाः ॥ मृतिं त्वजीर्णाद्गुरुसंयुतौ तौ देहेशजीवौ रिपुगावजीर्णात् ॥२८॥ लग्नेश्वरे वाहननाथयुक्ते वागीश्वरेणापि युते त्वजीर्णात् ॥ देहेश्वरे वाहनवित्तभावनाथान्विते वा मरणं त्वजीर्णात् ॥ २९ ॥ रन्ध्रेशयोगान्मरणं दशायामन्तर्दशायामथ वा वदन्ति ॥ पित्रादिभावाधिपयोगदृष्ट्या पित्रादिकानां मरणं तथैव ॥ ३० ॥

अष्टमेश लग्नेश चतुर्थेशसे युक्त होवैं तो वाहनसे मृत्यु कहतेहैं । यदि वही लग्नेश अष्टमेश बृहस्पतिसे युक्त होवैं तो अजीर्णसे मृत्यु होवै । तथा लग्नेश और बृहस्पति छठे हों तौ भी अजीर्णसे ज्योतिषी मृत्यु कहतेहैं ॥ २८ ॥ लग्नेश चतुर्थेशसे तथा बृहस्पतिसेभी युक्त होवै तो अजीर्णसे मृत्यु होवै । लग्नेश, चतुर्थेश, द्वितीयेशसे युक्त होवै तोभी अजीर्णसे मृत्यु होवै ॥ २९ ॥ अष्टमेशके योगसे उसकी दशा वा अंतर्दशामें मरण कहतेहैं । ऐसेही पित्रादिभावेशोंकी दृष्टि वा योगसेभी पिता आदिका मरण कहना ॥ ३० ॥

भुक्त्यंगपौ भानुसुतेन युक्तौ दुःस्थानगौ वा विषभक्षणेन ॥ राहुध्वजाभ्यां सहितौ च दुःस्थावुद्बंधनात्तस्य मृतिं वदंति॥३१॥ षष्ठेश्वरे भानुसुते सराहौ केतौ मृगाद्भीतिमुदाहरन्ति ॥ जीवनयुक्ते गजभीतिमस्य जातस्य चन्द्रेण युतेश्वभीतिम् ॥ ३२ ॥ सूर्यान्विते तादृशभानुपुत्रे मृगात्सशृंगाच्छुनकात्सभौमे ॥ षष्ठस्थिते भानुसुतेपि चैवं विना स्वतुंगस्वगृहं सुखेटे ॥ ३३ ॥

दशमेश लग्नेश शनिसहित दुष्टस्थानमें होवैं तो विषखानेसे मृत्यु होवै । यदि राहु वा केतुसे युक्त दुष्ट स्थानमें होवें तो फांसीसे मरण होवै ॥ ३१ ॥ षष्ठेश शनि

राहु वा केतु सहित होवे तो मृगसे भय कहतेहैं । बृहस्पतिसे युक्त होवे तो हाथीसे और चंद्रमासे युक्त होव तो घोडेसे भय कहतेहैं ॥ ३२ ॥ वैसाही शनि सूर्यसे युक्त होवै तो शींगवाले मृगसे और भौमयुक्त होवे तो कुत्तासे भय होवै. छठे स्थानमें शनि होवे तोभी यही फल जानना इन योगोंमें योगकर्त्ता ग्रह अपने उच्चराशि स्वराशि का न हो तब उक्त फल होंगे ॥ ३३ ॥

सुखेशभाग्येशविलग्ननाथास्त्रिकोणगाः केन्द्रगताश्च सर्वे ॥ मुक्तौ यदा तत्परिपाककाले पित्रा सहैवानुमृतिं च मातुः ॥३४॥ रन्ध्रे शशांके फणिनाथयुक्ते हीने त्वपस्मारयुतः समन्दे ॥ तत्र स्थिते हीनबले शशांके पिशाचपीडा जलजा च पीडा ॥ ३५ ॥ भौमाहिमन्दान्यतमेन युक्ते क्षीणे शशांके निधनस्थितेपि ॥ दुःस्थे त्वपस्मारभयान्मृतिः स्यात्पिशाचाबधा त्वथ वा मृतिः स्यात् ॥ ३६ ॥रन्ध्रे सराहौ यदि वा सकेतौ चातुर्थिकात्पीडन-माहुरस्य ॥ रन्ध्रेश्वरेणापि युते तथैवं क्रूरादिषष्ट्यंशयुतेतिस-त्यम् ॥ ३७ ॥ नीचस्थिते वासरनायके वा षष्ठाष्टमस्थे यदि पापदृष्टे ॥ राज्ञां प्रकोपान्मरणं पितुश्च तत्पीडया वित्तवि-नाशमेति ॥ ३८ ॥

चतुर्थेश नवमेश और लग्नेश त्रिकोण वा केन्द्रमें होवैं उनकी दशा अंतर्दशा समयमें पिताके साथ माताकीभी मृत्यु होवै ।। ३४ ।। अष्टम भावमें चंद्रमा राहुयुक्त तथा बलहीन होवै तो अपस्मार (मृगीरोग) होवै अष्टमस्थ निर्बल चन्द्रमा शनिसहित होवै तो पिशाच आर जलसे उत्पन्न पीडा होवै ॥ ३५ ॥ ऐसाही चन्द्रमा क्षीण (तनु) मंगल, राहु शनिमस किसीसे युक्त अष्टमस्थ होवै तो भी वही फल कहना । ऐसा चंद्रमा यदि अन्य दुष्टस्थानमें होवै तो पिशाचकी पीडा अथवा मृत्यु होवै ॥ ३६ ॥ अष्टमस्थ चन्द्रमा राहु वा केतु सहित होवै तो चौथिया ज्वरसे पीडा इसको होवै अष्टमेशसे युक्तभी होवै तो वही फल होगा यदि क्रूरादिषष्ट्यंशमें भी होवै तो वह फल अतिसत्य (अवश्य) ही होगा ॥ ३७ ॥ सूर्य नीच राशिमें होवै अथवा छठे वा आठवें भावमें पापदृष्ट होवै तो राजाओंकी पीडासे मरण एवं पिताका मरण एवं धननाशभी होवै ॥ ३८ ॥

अथ केचिदरिष्टयोगाः ॥ लग्नाच्छुभे कर्मणि भूमिपुत्रे पापेक्षिते मातुलमृत्युमाहुः ॥ मन्देन युक्ते यदि पुत्रमृत्युं चन्द्रे हि तन्मा-

तृमृतिं सपापे ॥ ३९ ॥ पितुर्मृतिर्वासरनायकेत्र न संशयः पापदृशा समेते ॥ पापद्वयेनापि युतौ विलग्ननिशाकरौ मृत्युमुपैति बालः ॥ ४० ॥ ग्रस्ते शशांके परिवेषयुक्ते पापेक्षिते वा मरणं च सद्यः ॥ त्वष्ट्रार्यतोयेषु विलग्नचन्द्रे जातः सवित्रीसुतमातुलांश्च ॥ ४१ ॥

अब थोडे अरिष्टयोग कहते हैं ॥ लग्नसे नवम वा दशममें मंगल पापदृष्ट होवै तो मामाकी मृत्यु होवै यदि शनियुक्त होवै तो उसके पुत्रकी, और चंद्र सहित होवै तो उसकी मृत्यु होवै ॥ ३९ ॥ इन्हीं भावोंमें पापदृष्ट सूर्य होवै तो निस्संदेह पिताकी मृत्यु होवै, लग्नेश तथा चन्द्रमा दो पापग्रहोंसे युक्त होवै तो बाल्यावस्थाहीमें मरजावै ॥ ४० ॥ जन्म समयमें चन्द्रमापर ग्रहण अथवा (परिवेष) मंडल होवै तथा पापदृष्ट होवै तो बालक शीघ्र मरजावै ॥ चंद्रमा एवं लग्न चित्रा, उत्तरा फाल्गुनी, पूर्वाषाढामें होवै ऐसे समयमें चंद्रमा ग्रस्त वा परिवेषयुक्त होवै तो भाई और मामा मरें ॥ ४१ ॥

पादाक्रमेणापि निहन्ति तांस्तु शुभैस्तु दृष्टे सहिते न दोषः ॥ लाभे शुभे वा यदि मन्दभौमौ फणीन्द्रयुक्तौ पितुरस्त्यपायः ॥ ॥ ४२ ॥ पापेक्षिते भूमिसुते कलत्रे जातः स मृत्युं समुपैति रन्ध्रे ॥ सोत्थे धरासूनुयुते सपापे पापेक्षिते सोदरनाशमाहुः ॥ ४३ ॥

यद्वा उनको पादाक्रमणसे मारे यदि उस योगकर्ता ग्रहपर शुभग्रहकी दृष्टिभी होवै तो वह दोष नहीं होगा, लाभ वा नवम स्थानमें शनि मंगल राहुयुक्त होवैं तो उसके पिताका नाश होवै ॥ ४२ ॥ पापदृष्ट मंगल सप्तमस्थानमें यद्वा अष्टम स्थानमें होवै तो बाल्यावस्थामें मरण होवै तृतीयभावमें मंगल पापयुक्त दृष्ट होवै तो भ्रातृनाश होवै ॥ ४३ ॥

अस्ते शशांके यदि मातृमृत्युं पापान्विते पापदृशा समेते ॥ भानौ पितुर्मृत्युमुदाहरन्ति मन्दारशुक्रैः सहिते सुतस्य ॥ ४४ ॥ तृतीयषष्ठस्थितखेचरेन्द्रैः पापग्रहैरन्त्यगतैश्च सौम्यैः ॥ शिशोर्मृतिं वा कुमुदात्मबन्धौ चतुर्थरंध्रस्थितपापखेटैः ॥ ४५ ॥

पापयुक्त दृष्ट चन्द्रमा सप्तम स्थानमें होवै तो माताकी मृत्यु होवै ऐसाही सूर्य होवे तो पिताकी मृत्यु कहतेहैं यदि सप्तममें शनि मंगल शुक्र सहित होवै तो पुत्रकी मृत्यु होवे ॥ ४४ ॥ पापग्रह तीसरे छठे भावोंमें हों शुभग्रह बारहवें में हों अथवा चंद्रमा पापग्रहोंसहित चौथे वा आठवें होवे तो बालककी मृत्यु होवे ॥ ४५ ॥

लग्नेर्कचन्द्रौ व्ययगास्तु पापाः शिशोर्मृतिं शोभनदृष्टयभावे ॥
अस्ते रवौ चन्द्रयुते विलग्ने पापान्विते तत्सुतमृत्युमाहुः ॥४६॥
दिनेशचन्द्रौ व्ययगौ तदानीमन्धो भवेत्सौम्यदृशा विहीनौ ॥
युक्ते तयोरन्यतरेण रिष्फे काणो भवेत्सौम्यदृशा विहीने ॥४७॥
दिनेशचन्द्रौ व्ययगौ तदीशे लग्नस्थिते देहविनाशमाहुः ॥ सुरे-
श्वरे रंध्रगते व्यये वा पापान्विते पापदृशा समेते ॥ ४८ ॥ लग्ना-
धिपे पूर्णबले सुखेशभाग्येश्वरौ नाशगतौ विहीनौ ॥ जातस्य ज-
न्मावसरे तदानीं पितुश्च मातुर्निधनं वदन्ति ॥ ४९ ॥

लग्नमें सूर्य चन्द्रमा व्ययभावमें पापग्रह हों उन्हें शुभग्रह न देखें तो बालककी मृत्यु होवै, सप्तममें सूर्य लग्नमें चन्द्रमा पापयुक्त हों तो पुत्रमरण कहतेहैं ॥ ४६ ॥ सूर्य चन्द्रमा व्ययस्थानमें शुभदृष्टिरहित होवैं तो अंधा होवे, इनमेंसे एक छठे एक व्ययस्थानमें शुभदृष्टिरहित होवें तो एक आंखसे काण होवै ॥ ४७ ॥ सूर्य चन्द्रमा व्ययभावमें और व्ययेश लग्नमें होवे तो शरीर नष्ट होवे । बृहस्पति आठवें वा बारहवें पापग्रह दृष्ट युक्त होवै ॥ ४८ ॥ लग्नेश पूर्णबली, चतुर्थेश नवमेश अष्टमभावमें बलहीन होवें तो मनुष्यके जन्मसमयहीमें माता और पिताकाभी मरण कहतेहैं ॥ ४९ ॥

दुःस्थे तृतीयाधिपतौ सचन्द्रे स्तन्यं परस्त्रीषु पिवेत्स बालः ॥
तातेशतत्कारकखेचरेन्द्रौ दुःस्थौ तयोः पुत्रसुखं न दृष्टम् ५०॥
केंद्रत्रिकोणे यदि तौ विहंगौ वदेत्तयोः पुत्रसुखं त्वभीष्टम् ॥
पितुर्निशायां मरणं वदंति भाग्येशसूर्यार्कसुताः क्षतस्थाः॥५१॥
षष्ठेश्वरेणापि युतास्तथैव चंद्रेण हीनास्तु दिवा मृतिः स्यात् ॥
सुखस्थितैः खेचरनायकैर्वा मातुर्मृतिः स्यादयने तु तस्मिन्॥५२॥

तृतीयेश चंद्रमासहित त्रिक स्थानमें होवै तो अन्यस्त्रीका दूध पीवै, अपनी माताका न पीवै, दशमेश तथा दशमभावकारक ग्रह दुष्टस्थानमें होवैं तो उनको पुत्रसुख देखनेमें न आवे. ॥ ५० ॥ वही ग्रह केन्द्र त्रिकोणमें होवैं तो उनको मनोनुकूल पुत्रसुख कहना । नवमेश सूर्य और शनि अष्टम स्थानमें होवैं तो पिताका मरण रात्रिमें कहते हैं ॥ ५१ ॥ यदि वही षष्ठेशसे भी युक्त होवैं तो दिनमें कहते हैं, परंतु षष्ठेश चंद्रमा होवै तो वह फल नहीं होगा, वही ग्रह चतुर्थ स्थानमें होवैं तो उक्तप्रकार दिन वा रात्रिमें माताकी मृत्यु कहनी ॥ ५२ ॥

नो चेत्तदीशान्वितराशिकाले मातुर्मृतिः स्यादयने च तस्मिन् ॥ द्वित्र्यादियोगादयनं हि तत्र व्यत्यासतो वा प्रवदन्ति सन्तः ॥ ॥ ५३ ॥ नाशे चरे वा पितृभावनाथे दूरस्थितस्तज्जनकोपि वाच्यः ॥ स्थिरोभयस्थे पितृभावनाथे समीपतस्तज्जनकः स्थितः स्यात् ॥ ५४ ॥

ऐसे न हों तो चतुर्थेश जिस राशिमें है उसके उक्त समय (अयन दिन रात्र्यादि) में माताकी मृत्यु कहनी, यदि दो तीन योग होवें तो मरणसमय विपरीततासे सज्जन कहतेहैं ॥ ५३ ॥ दशमेश अष्टममें वा चरराशिमें होवै तो मरणसमयमें उसका पिता दूर रहेगा ऐसा कहना, यदि स्थिर वा द्विस्वभाव राशिमें होवै तो उस समयमें पिता समीप होगा ॥ ५४ ॥

केंद्रे चरेर्के यदि वा शशांके सुतो दहेत्तत्पितरौ न तत्र ॥ द्विदेहराशौ यदि तौ च केन्द्रे तयोर्मृतिं वा दहने विकालम् ॥ ५५ ॥ बलेन युक्ते पितृभावनाथे शशांकदेहेशचतुर्थनाथाः ॥ बलेन हीना यदि तज्जनन्यां गाढां विपत्तिं समुदाहरंति ॥ ५६ ॥

सूर्य अथवा चंद्रमा चरराशि केंद्रमें होवैं तो पुत्र अपने माता पिताका दाह अपने हाथसे न करे, यदि वही केंद्रमें द्विस्वभावराशिके हों तो माता पिताके मृत्युमें दाहका कुसमय होवै ॥ ५५ ॥ दशमेश बलवान् हो चन्द्रमा लग्नेश चतुर्थेश बलहीन हों तो उसकी माताको गाढ़ी विपत्ति कहतेहैं ॥ ५६ ॥

रन्ध्रे तु पापबाहुल्ये गुह्यरोगं विनिर्दिशेत् ॥ शुभग्रहेण संदृष्टे न दोषं तत्र निर्दिशेत् ॥ ५७ ॥ रन्ध्रे शुभेक्षिते तेन संयुते चेत्सुखं भवेत् ॥ स्थूलान्नं पापसंबंधे मृद्वन्नं शुभसंयुते ॥ ५८ ॥

अष्टम भावमें बहुत पापग्रह होवैं तो गुह्यस्थानमें रोग होवे उनपर शुभग्रहोंकी दृष्टि होवै तो वह दोष न कहना ॥ ५७ ॥ अष्टम स्थानमें शुभग्रह हों शुभग्रहोंकी दृष्टि होवै तो सुखी रहै । ऐसेही पापसंबंधसे मोटा अन्न शुभग्रह संबंधसे कोमल अन्न मिले ॥ ५८ ॥

रन्ध्रेशे पापसंयुक्ते पापदृष्टे तदन्तरे ॥ पापक्षेत्रेथ वा रन्ध्रे जातः परिभवान्वितः ॥ ५९ ॥ शुभग्रहाणां संबन्धे रन्ध्रे परिभवो न हि ॥ चरे रंध्रे मृतिर्दूरे तदीशे चरराशिगे ॥ ६० ॥

अष्टमेश पापयुक्त दृष्ट होवै वा पापोंके बीच, वा पापराशिमें अथवा अष्टम स्थानमें होवै तो वह मनुष्य हारा हुआ रहे ॥ ५९ ॥ यदि अष्टम भावमें शुभग्रहोंका दृष्टियोगादि संबंध

होवै तो पारिभव (तिरस्कार) नहीं होगा. अष्टममें चरराशि हो अष्टमेश चरराशिमें होवै तो दूरदेशमें मरण होगा ॥ ६० ॥

शनौ वा चरराशिस्थे चरांशस्थे तथा भवेत् ॥ स्थिरे रन्ध्रे तदीशेपि स्थिरराशौ तदंशके ॥ ६१ ॥ शनौ वा स्थिरराश्यंशे स्वगृहे मरणं भवेत् ॥ रन्ध्रे द्विदेहराश्यादौ मार्गे मरणमादिशेत् ॥६२॥ इत्यष्टमभावविचारः ॥

अथवा शनि चरराशिमें होवे वा चरांशकमें होवै तोभी दूरदेशमें मरण होवै । अष्टम स्थानमें स्थिरराशि हो उसका स्वामीभी स्थिरराशिमें होवै तो अपने घरमें मृत्यु होवै । ऐसे ही अष्टममें द्विस्वभाव राश्यादि होवैं तो मार्गमें मरण कहना ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ इतने अष्टम भावके विचार कहे हैं ॥

अथ नवमभावविचारः ।

शुभभवनाद्गुरुभाग्यं पितृपौत्रदयातपःप्राप्तिम् ॥ ऊरुस्थानं स्वांतं सहभोक्तृन्दानयोगमपि विद्यात् ॥ १ ॥ चिन्तनीया गुरुस्वामिपितृभाग्यादिमातुलाः ॥ नवमे स्वामिसौम्याढ्ये शुभा एतेन्यथाशुभाः ॥ २ ॥

नवमभावसे गुरु, भाग्य, पिता, पौत्र, दया, तप, लाभ, ऊरुस्थान, मन, कुटुम्बादि साथ भोजन करनेवाले, दान, योगसाधन इतनोंका विचार जानना ॥ १ ॥ तथा गुरु, स्वामी (आचार्यादि), पिता, ऐश्वर्य आदि, मामा, इनका, विचारभी इसीसे करना । नवमभाव अपने स्वामी एवं शुभग्रहसे युक्त होवै तो उपरोक्त अच्छे होतेहैं; और प्रकार होनेमें अशुभ फल जानना ॥ २ ॥

चन्द्रे सपापे यदि धर्मराशौ भृगोः सुते वा गुरुदारगामी ॥ धर्माधिपे तादृशखेचरेण युते सपापे गुरुदारगामी ॥ ३ ॥ धर्माधिपस्थांशपतौ तथैव युक्ते तदा तादृशदारगामी ॥ धर्माधिपे नीचगते तदंशे शुक्रेण युक्ते गुरुदारगामी ॥ ४ ॥ क्षीणे निशीशे त्वथ वा तदंशे शुक्रे तथैवं गुरुदारगामी ॥ धर्माधिपे नीचगते तदंशे शुक्रेण युक्ते गुरुदारगामी ॥ ५ ॥

यदि नवम भावमें पापयुक्त चन्द्रमा अथवा पापयुक्त शुक्र होवै तो गुरु (अपनेसे श्रेष्ठ) की स्त्रीका गमन करनेवाला होवै, धर्मभावेश ऐसे ग्रहसे युक्त तथा पापयुक्त होवै तो

भी वही फल होगा ॥ ३ ॥ नवमेश जिसके नवांशकमें है वहभी ऐसा युक्त होवै तो गुरु स्त्रीगामी होवै नवमेश नीच राशिमें धर्मभावस्थांशमें शुक्र होवै तोभी वही फल होगा ॥ ४ ॥ क्षीण चन्द्रमा अथवा नवमभावांश तथा शुक्र उक्त प्रकारके होवैं तोभी वही फल देंगे, और धर्मेश नीचगत, धर्म भावांश शुक्रयुक्त होवै तो भी वही फल जानना ॥ ५ ॥

धर्मेश्वरे सौम्ययुते तदंशे वैशेषिकांशे त्वथ वा तदीशे ॥ क्रूरादिषष्ट्यंशविवर्जिते स्याज्जातस्तु धर्मे दृढबुद्धियुक्तः ॥ ६ ॥ गुरौ वा भृगुपुत्रे वा स्वोच्चमित्रांशके शुभे ॥ धर्माधिपे बलयुते धर्माध्यक्षो नरो भवेत् ॥ ७ ॥ गुरुशुक्रबुधांशस्थे धर्मनाथे शुभेक्षिते ॥ शुभग्रहाणां मध्यस्थे धर्मभाक्स नरो भवेत् ॥ ८ ॥

नवमेश नवमभावांश शुभयुक्त होवै नवमभाव भावेश वैशेषिकांशकमें होवैं क्रूर आदि षष्ट्यंशसे रहित होवैं तो धर्ममें दृढ बुद्धिवाला होवै ॥ ६ ॥ बृहस्पति अथवा शुक्र उच्च मित्रांशकका नवम स्थानमें होवै और नवमेश बलवान् होवै तो मनुष्य धर्माध्यक्ष होवै ॥ ७ ॥ नवमेश गुरु शुक्र बुधके अंशकमें शुभग्रहयुक्त होवै अथवा शुभग्रहोंके मध्यमें होवै तो वह मनुष्य धर्मवाला होवै ॥ ८ ॥

सौम्यान्विते धर्मगृहे तस्मिन् पापांशसंयुते ॥ क्रूरषष्ट्यंशके वापि दंभाद्धर्मपरिग्रहः ॥ ९ ॥ नाथकारकभावानामंशे शुभसमन्विते ॥ शुभांशे शुभसंदृष्टे शुचितो धर्मसंयुतः ॥ १० ॥

नवमभाव शुभयुक्त हो परंतु उसमें पापांशक अथवा क्रूरषष्ट्यंशक होवै तो दंभ (घमंड) से धर्म करे ॥ ९ ॥ नवम भावेश नवम भावकारकेशके अंशकमें शुभयुक्त होवै अथवा वे शुभांशकी शुभदृष्ट होवैं तो पवित्रतासे धर्मसहित रहे ॥ १० ॥

धर्मे पापे पापभाक्स्यात्तदीशे पापसंयुते ॥ क्रूरषष्ट्यंशके वापि पापमध्यगतेऽथ वा ॥ ११ ॥ राहुमंदयुते धर्मे क्रूरांशे गुलिकेक्षिते ॥ तदीशे क्रूरराश्यंशे त्वतिक्रूरादिकृद्भवेत् ॥ १२ ॥

धर्मस्थानमें पापग्रह होवै तो पाप भोगनेवाला होवै, धर्मेश पापयुक्त अथवा क्रूरषष्ट्यंशमें वा पापग्रहोंके मध्यमें होवै ॥ ११ ॥ यद्वा धर्मस्थान राहु शनैश्चरसे युक्त होवै क्रूर गुलिकसे दृष्ट होवै नवमेश क्रूरराशि क्रूरांशकमें होवै तो अतिक्रूरआदि काम करनेवाला होवै ॥ १२ ॥

पितृस्थानेश्वरे सौम्ये कारके शुभसंयुते ॥ भावे वा शुभसंयुक्ते पितृसौख्यं विनिर्दिशेत् ॥ १३ ॥ पारावतादिभागस्थे नाथे वा

कारकेपिवा ॥ स्वोच्चमित्रांशके वापि पितृसौख्यं विनिर्दिशेत् ॥ ॥१४॥ सौम्यांतरस्थे तन्नाथे गुरुशुक्रयुतेक्षिते ॥ तेषामेकेन संयुक्ते पितृसौख्यं विनिर्दिशेत् ॥ १५ ॥ गोपुराद्यंशसंयुक्ते कारके नाथवीक्षिते ॥ पापैरवीक्षिते युक्ते पितृसौख्यं विनिर्दिशेत् ॥ १६ ॥

पितृस्थानका स्वामी शुभग्रह होवै पितृकारक ग्रह शुभयुक्त होवै अथवा पितृभाव शुभग्रहयुक्त होवै तो पिताका सौख्य कहना ॥ १३ ॥ भावेश वा भावकारक पारावतादि अंशकमें होवै अथवा उच्चांशक मित्रांशकमें होवै तो पितृसौख्य कहना ॥ १४ ॥ पितृस्थानेश शुभग्रहोंके मध्यमें गुरुशुक्रसे युक्त वा दृष्ट होवै अथवा गुरुशुक्रमेंसे एकसेभी युक्त होवै तो पितृसौख्य कहना ॥ १५ ॥ पितृकारक गोपुरादि अंशमें हो पितृभावेशसे दृष्ट पापग्रहोंसे अदृष्ट होवै तो वही फल कहना ॥ १६ ॥

पापदृष्टे सपापे वा कारके भावनायके ॥ पापांतरगते वापि पितृदुःखं विनिर्दिशेत् ॥ १७ ॥ क्रूरनीचांशकस्थे वा भावनाथे च कारके ॥ मंदमांद्यगुसंयुक्ते पितृदुःखं विनिर्दिशेत् ॥ १८ ॥ सौम्ये तदीश्वरे वापि नीचशत्रुसमन्विते ॥ क्रूरषष्ट्यंशके वापि पितृदुःखं विनिर्दिशेत् ॥ १९ ॥ पितृस्थानेश्वरांशेशसंयुक्तनवभागपः ॥ क्रूरनीचारिभागस्थपितृदुःखं विनिर्दिशेत् ॥ २० ॥

पितृभावकारक वा भाव पापयुक्त वा दृष्ट हो अथवा पापोंके मध्यमें होवै तो पिताको दुःख कहना ॥ १७ ॥ भावेश वा भावकारक क्रूरांशक नीचांशकमें होवै शनि केतु राहुसे युक्त होवै तो पिताको दुःख कहना ॥ १८ ॥ पितृभावेश वा तत्रस्थ शुभग्रह नीचका हो अथवा शत्रुराश्यंशयुक्त होवै अथवा क्रूरषष्ट्यंशकमें होवै तो वही फल कहना ॥ १९ ॥ पितृभावेश जिसके अंशकमें हो वह जिसके नवांशकमें है क्रूर नीच शत्रुके अंशकमें होवै तोभी वही फल कहना ॥ २० ॥

लग्नेशात्पितृभावेशे संपूर्णबलसंयुते ॥ कारके वा शुभैर्दृष्टे जातः पितृवशानुगः ॥ २१ ॥ पितुर्जन्माष्टमे जातस्तदीशे लग्नगेपि वा ॥ तेनैव पितृकार्याणि कर्मशेषं समापयेत् ॥ २२ ॥

पितृभावेश वा पितृभावकारक लग्नेशकी अपेक्षा पूर्णबली तथा शुभदृष्ट होवैं तो मनुष्य पिताके वशमें उसका आज्ञाकारी होवै ॥ २१ ॥ पिताके जन्मलग्नसे अष्टम लग्नमें जन्म होवै. अथवा उस लग्नका स्वामी इसके लग्नमें होवै तो उसी ग्रहसे शेषकर्म (कारकायुर्दायादि) समाप्त करे इसका खुलासे अष्टकवर्ग गणितमें है ॥ २२ ॥

पितृकर्मगृहे जातः पितृतुल्यगुणान्वितः ॥ पितृजन्मतदीयर्क्षे जातः पितृधनाश्रितः ॥२३॥ पितु षष्ठाष्टमे जातः पित्रोः शत्रुर्भवेन्नरः ॥पितुर्धर्मायवित्तेषु जातः पितृवशो भवेत् ॥२४॥ पित्रष्टमेशनक्षत्रत्रितये यस्तु जायते ॥ स करोति पितुर्दुःखं पुत्रपौत्रसमन्वितः ॥ २५ ॥ पितुर्जन्मांत्यभेशर्क्षात्रितये यस्तु जायते ॥ स करोति पितुर्दुःखं दूरदेशगतो भवेत् ॥ २६ ॥

पिताकी राशिसे दशम राशिमें जन्म होवै तो पिताके गुणोंके तुल्य गुणवाला होवै यदि पिताके राशिमें जन्म होवै तो मनुष्य पिताके धनका आश्रयी होवै ॥ २३ ॥ पिताके राशिसे ६ वा ८ राशिमें होवै तो मनुष्य पिताका शत्रु होवै पिताके ९ । ११ । २ मेंसे किसी राशिमें जन्म होवै तो पिताके वशमें रहै ॥ २४ ॥ पिताके अष्टम राशिमें वा अष्टमेश जिस नक्षत्रमें है उससे तीन नक्षत्रोंमें जन्म होवै तो वह मनुष्य पुत्रपौत्रसहित पिताकी आज्ञा (शिक्षा) पर चले ॥ २५ ॥ पिताके जन्मराशिसे द्वादशेशसे तीनराशियोंमेंसे किसीमें जन्म होवै तो पिताको दुःख करे तथा दूरदेश चलाजावै ॥ २६ ॥

भाग्याधिपे विलग्नेशे दुश्चिक्ये धर्मगेपि वा ॥ बलवान् स्वोच्चभे वापि येषां ते श्रेष्ठमानवाः ॥ २७॥ त्रिकोणकेन्द्रे यदि भाग्यनाथे सौम्येक्षिते सौम्ययुते बलाढ्ये॥ पारावतांशादिगते शुभांशे जातो धनाढ्ये बहुभाग्ययुक्तः ॥ २८ ॥ धनाधिपे लाभगते तदीशे भाग्यस्थिते तद्भवनाधिपेथैं॥कर्माधिपेनापि युतेथ दृष्टे जातो महाभाग्ययुतो नरः स्यात् ॥ २९ ॥

नवमेश तथा लग्नेश तीसरे वा नवममें होवैं बलवान् होवैं अथवा अपने उच्चमें होवैं ऐसे योग जिन मनुष्योंके हों वे श्रेष्ठ मनुष्य होतेहैं ॥ २७ ॥ नवमेश केन्द्र त्रिकोणमें शुभग्रहदृष्ट वा युक्त होवै बलवान् होवै पारावतादि शुभांशकमें हो तो मनुष्य धनवान् बडा भाग्यशाली होताहै ॥ २८ ॥ द्वितीयेश लाभस्थानमें लाभेश नवममें नवमेश द्वितीयमें होवै दशमेशसे दृष्ट वा युक्त होवै तो मनुष्य बडा भाग्यशाली होवै ॥ २९ ॥

तृतीयराशेरधिपेन युक्ते भाग्याधिपे सौम्यदृशा समेते ॥ शुभान्विते शोभनखेचरांशे भ्रातुर्धनाद्भाग्यमुपैति जातः ॥ ३० ॥ पुत्रे

श्वरे वा यदि भाग्यराशौ भाग्याधिपेनात्र युतेपि दृष्टे ॥ तत्कारके वा यदि पुत्रभावे जातः सुताद्भाग्यमुपैति वित्तम् ॥ ३१ ॥

नवमेश तृतीयभावेश युक्त तथा शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट और शुभग्रहके अंशकमें होवै तो भाईके धनसे मनुष्य ऐश्वर्य पावे ॥ ३० ॥ यदि पंचमेश भाग्यस्थानमें भाग्येशसे युक्त वा दृष्ट अथवा नवमभावकारकग्रह पंचममें होवै तो पुत्रसे ऐश्वर्य एवं धन पावै ॥ ३१ ॥

ज्ञातिस्थानाधिपे भाग्ये भाग्येशे ज्ञातिसंगते ॥ ज्ञातिकारकसंयुक्ते ज्ञातिभाग्यमुपैति सः ॥ ३२ ॥ कलत्रकारकादेवं तत्स्थानेशाद्वदेत्तथा ॥ भाग्याधिपस्य शत्रुश्च शत्रुराशिपतिस्तथा ॥ ३३ ॥ तदीशे भाग्यसंबंधे शत्रुभाग्यमुपैति सः ॥ षष्ठाष्टमांत्यनाथेन युक्ते नाथेत्र तत्फलम् ॥ ३४ ॥

चतुर्थेश नवमस्थानमें नवमेश चतुर्थमें हो चतुर्थभावकारकसे युक्त होवै तो ज्ञाति (बिरादर) का ऐश्वर्य पावै ॥ ३२ ॥ ऐसेही कलत्रभाव कलत्रकारकसे भी वैसे ऐश्वर्य कहना नवमेशका शत्रुग्रह तथा शत्रुराशिका स्वामी भाग्य वा भाग्येशसे वैसाही संबंध करै तो शत्रुका ऐश्वर्य पावै यदि भाग्येश ६ । ८ । १२ भावेशसे संबंधी हो तोभी वही फल होगा ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

भाग्याधिपे विनाशस्थे शत्रुनीचनिरीक्षिते ॥ क्रूरांशे नीचराश्यादौ भाग्यहीनो भवेन्नरः ॥ ३५ ॥ बहुपापसमायोगे भाग्ये हीने तदीश्वरे ॥ लग्नेशे बलहीने वा भाग्यहीनो भवेन्नरः ॥ ३६ ॥

भाग्येश बारहवें भावमें शत्रुदृष्ट वा नीचमें यद्वा नीचगत ग्रहसे दृष्ट होवै क्रूरांशमें अथवा नीचराशि आदिमें होवै तो मनुष्य भाग्यहीन होवै ॥ ३५ ॥ नवममें बहुत पाप हों नवमेश हीनबल होवै अथवा लग्नेश बलरहित होवै तो मनुष्य भाग्यहीन होवै ॥ ३६ ॥

गुरुशुक्रेक्षिते युक्ते भाग्ये तन्नायकेपि वा॥लग्नेशार्थपतौ धीरे भाग्यप्राप्तिः पुनर्भवेत् ॥ ३७ ॥ क्रूरराश्यंशके भाग्यनाथे शुक्रेज्यवीक्षिते ॥ भाग्यलग्नेशसंदृष्टे भाग्यनाशं करोति सः ॥ ३८ ॥ लग्नेशे भाग्यराशिस्थे भाग्येशे लग्नमाश्रिते ॥ लाभे भाग्येशसंयुक्ते पुनर्भाग्यं लभेत्खलु ॥ लाभभाग्येशसंयुक्तभाग्यपेर्थः पुनर्भवेत् ॥ ३९ ॥

भाग्यभाव तथा भाग्येश बृहस्पति शुक्रसे दृष्ट वा युक्त होवै, लग्नेश तथा द्वितीयेश बलवान् होवै तो फिरभी ऐश्वर्यकी प्राप्ति होवै ॥ ३७ ॥ नवमेश क्रूरग्रहके राशि अंशकमें होवै उसे शुक्र बृहस्पति देखें भाग्येश लग्नेशभी देखें तो वह ऐश्वर्यका नाश करताहै ॥ ३८ ॥ लग्नेश नवममें नवमेश लग्नमें हो अथवा नवमेश लाभस्थानमें होवै तो फेरभी नष्ट ऐश्वर्यका लाभ होवै, लाभेश भाग्येश युक्त हो अथवा परस्परराशिगत हो तोभी फिर धनादि होंगे ॥ ३९ ॥

कर्मेशे भाग्यराशिस्थे भाग्येशे बलसंयुते ॥ गुरुशुक्रयुते दृष्टे जपध्यानसमाधिमान् ॥ ४० ॥ कर्मेशयुक्तराश्यंशराशीशे बलसंयुते ॥ तदीशे भाग्यसंबंधे जपध्यानसमाधिमान् ॥ ४१ ॥ देवलोकांशकस्थे वा कर्मेशे भाग्यपेथ वा ॥ पारावतांशके सौम्ये दृष्टे सुब्रह्मनिष्ठता ॥ ४२ ॥

दशमेश नवम हो नवमेश बलवान् हो बृहस्पति शुक्रसे युक्त वा दृष्ट होवै तो जप ध्यान समाधिवाला होवै ॥ ४० ॥ दशमेश जिसकी राशीमें है वह बलवान् होवै जिस राशिमें वह बैठा है उसका स्वामी नवमेशसे किसी प्रकारका संबंध रखता हो तोभी वही फल होगा॥ ४१॥ दशमेश वा नवमेश देवलोकांशकमें हो अथवा पारावतांशकमें शुभदृष्ट होवै तो ब्रह्मनिष्ठ होवै ॥ ४२ ॥

दानस्थानाधिपे स्वोच्चे शुभग्रहनिरीक्षिते ॥ तत्स्थाने शुभसंयुक्ते दानकृत्स नरो भवेत् ॥ ४३ ॥ पारावतादिभागस्थे दानेशे गुरुवीक्षिते ॥ लग्नेशे भृगुसंदृष्टे महादानकरो भवेत्॥४४॥दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा॥ तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत् ॥४५॥ सिंहासनांशके दाननाथे लग्नेशवीक्षिते ॥ कर्मेशेनापि संदृष्टे महादानकरो भवेत् ॥ ४६ ॥

नवमेश अपने उच्चमें शुभग्रहदृष्ट होवै नवमभावमें शुभ ग्रह होवै तो वह मनुष्य दान करनेवाला होवै ॥ ४३ ॥ नवमेश पारावतादि शुभांशकमें गुरुसे दृष्ट होवै, लग्नेशपर शुक्रकी दृष्टि होवै तो मनुष्य महादान (अन्नदान तुलादानादि) करनेवाला होवै ॥ ४४ ॥ लग्नेश वा लग्नमें नवमेशकी दृष्टि होवै वह नवमेशभी केन्द्र त्रिकोणमें होवै तो भी वही फल होवै ॥ ४५ ॥ नवमेश सिंहासनांशकमें होवै उसे लग्नेश देखे और कर्मेशभी देखे तोभी वही फल होगा ॥ ४६ ॥

भाग्ययोगे तु संप्राप्ते दानयोगे तथा भवेत् ॥ राजयोगेथ वा प्राप्ते नेतरेषां तथा भवेत् ॥ ४७ ॥ इतरेषां तु संपाते दानयोगे कथं भवेत् ॥ भाग्ययोगे नरो जातो दानस्य तु सहायकृत् ॥ ४८ ॥ जातः पुरोहितो वाथ ब्रह्मवंशसमुद्भवः ॥ दानाध्यक्षोऽथ जातः स्याद्वर्णभेदविकल्पनात् ॥ ४९ ॥

भाग्ययोगहोनेमें तथा दानयोग अथवा राजयोग होनेमें उक्त फल होताहै. अन्ययोगोमें नहीं ॥ ४७ ॥ दानयोग होनेमें भी उक्तयोग न हो राजभंगादि दुष्टयोग हो तो दानी होना संभव नहीं होता दानयोगमें भाग्ययोगभी होवै तो वह दानकर्ममें सहायता करता है भाग्ययोगकी संपन्नतासे दान होताहै अथवा दूसरेके दानमें सहायता और उसका प्रतिपालनआदि करताहै ॥ ४८ ॥ उक्तदानादियोगोंसे ब्राह्मणवंशोत्पन्न पुरोहित अथवा दानाध्यक्ष होताहै क्षत्रिय दानी, अथवा दानकर्मसहायक होताहै ऐसेही स्ववर्णानुरूप फल मनुष्यको मिलताहै ॥ ४९ ॥

चतुर्थे दानभावेशे कर्मेशे केन्द्रमाश्रिते ॥ व्ययेशे गुरुसंदृष्टे महादानकरो भवेत् ॥ ५० ॥ भाग्येशेनापि संदृष्टे स्वोच्चस्थे सोमनंदने ॥ लाभेशे केन्द्रभावस्थे महादानकरो भवेत् ॥ ५१ ॥

नवमेश चतुर्थदशमेश केन्द्रमें होवै व्ययेशपर बृहस्पतिकी दृष्टि होवै तो महादानदेनेवाला होवै ॥ ५० ॥ बुध अपने उच्चका होवै नवमेश उस देखे और लाभेश केन्द्रमें होवै तो महादान करनेवाला होवै ॥ ५१ ॥

लग्नेशे लाभराशिस्थे कर्मेशे बलसंयुते ॥ लग्नेशेनापि संदृष्टे दानग्रहणमिष्यते ॥ ५२ ॥ सुतेशे भाग्यराशिस्थे कर्मभाग्यपसंयुते ॥ लग्नेशेनापि संदृष्टे दानप्राप्तिर्न संशयः ॥ ५३ ॥ भाग्येशे कर्मनाथेन दृष्टे केन्द्रत्रिकोणगे ॥ परमोच्चांशके वापि दानप्राप्तिर्न संशयः ॥ ५४ ॥

लग्नेश लाभस्थानमें हो दशमेश बलवान् होवे उसे लग्नेशभी देखे तो दान लेनेवाला होवे ॥ ॥ ५२ ॥ पंचमेश नवमस्थानमें नवमेश तथा दशमेशसे युक्त होवै उसे लग्नेशभी देखे तो उसको दानकी प्राप्ति होवै इसमे संदेह नहीं ॥ ५३ ॥ नवमेश दशमेशसे दृष्ट होकर केन्द्र त्रिकोणमें होवै अथवा परम उच्चांशकमें होवै तो निस्सन्देह दानकी प्राप्ति होवै ॥ ५४ ॥

गुरुस्थानेशसंयुक्तनवांशाधिपतौ यदा ॥ गुरुशुक्रेक्षिते वापि गुरुभक्तियुतो भवेत् ॥ ५५ ॥ गुरुस्थाने सौम्ययुते गुरुसंबंध संयुते ॥ तदीशे मृदुभावस्थे गुरुभक्तियुतो भवेत् ॥ ५६ ॥ अध्यायः सप्तमः प्रोक्तश्चायुर्धर्माधिवाचकः ॥ नानार्थसारसंयुक्तो व्यङ्कटेश्वरशर्मणा ॥ ५७ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिंतामणौ अष्टमनवमभावफलविचारो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

बृहस्पति जिसकी राशिमें है वह जिसके नवांशमें हो वह गुरु शुक्रसे दृष्ट होवै तो गुरुभक्तिवाला होवै ॥ ५५ ॥ नवमस्थान शुभयुक्त हो बृहस्पति उसके साथ संबंध करता हो उसकी अधिष्ठित राशिका स्वामी सौम्यभावमें होवै तो मनुष्य गुरुभक्तिवाला होवै ॥ ५६ ॥ यह सातवां अध्याय आयु तथा धर्मविचारवाचक नानाप्रकारके सार अर्थोंसे युक्त वेङ्कटेश्वर शर्माने कहा ॥ ५७ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिंतामणौ माहीधरभाषाटीकायामष्टमनवमभावफलविचाराध्यायः सप्तमः ॥ ७ ॥

अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ दशमादिभावविचाराऽध्यायः।

दशमात्प्रवृत्तिमाज्ञां कीर्तिं वृष्टिं प्रवासपूर्तादीन् ॥
मानं कर्माजीवं जानुस्थानं च निर्दिशेद्दासान् ॥ १ ॥

दशमभावसे कर्मकी प्रवृत्ति (किस काममें रुचि रहेगी) हकूमत, कीर्ति, वर्षा, प्रवास, पूर्त (वापी कूपआदि) आदिसे राज्यस्थान ऐश्वर्यादि, तथा मान, किस कामसे आजीवन होगा, (पितृस्थानादि) और जानुस्थानका विचार, दासआदियोंका विचार कहना ॥ १ ॥

कर्माधिपे हीनबले सपापे कर्मादिवैकल्यमुशंति तज्ज्ञाः ॥ कर्मेशवागीशशशांकपुत्रा वीर्यान्विता यज्ञकरा भवन्ति ॥ २ ॥ शुभग्रहैर्दृष्टिसमन्वितास्ते वीर्यान्विता यज्ञविशेषमाहुः ॥ दुःस्थाः शशांकात्मजजीवशुक्राः पापेक्षिताः कर्मविनाशमाहुः ॥ ३ ॥

दशमेश हीनबल पापयुक्त होवै तो ज्योतिषज्ञ कर्मआदिकी विकलता कहतेहैं दशमेश बृहस्पति बुध बलवान् होवै तो मनुष्य यज्ञ करनेवाले होतेहैं ॥ २ ॥ वही तीनों शुभग्रहोंसे दृष्ट तथा बलवान्भी होवैं तो यज्ञविशेष कहतेहैं बुध गुरु दुष्टस्थानोंमें हों पापग्रह उन्हें देखें तो कर्मका नाश कहतेहैं ॥ ३ ॥

नाशस्थितास्तत्र तदंशनाथास्तद्युक्तराशेरधिपाश्च नाशम् ॥ राहौ च माने यदि वा दिनेशे भागीरथीस्नानमुशंति तज्ज्ञाः ॥ ४ ॥ माने च मीने यदि वा ससौम्ये भौमान्विते वा भविता च मुक्तिः ॥ जलर्क्षगे पूर्णशशांकजीवे मानस्थिते गांगजलादिपूतः ॥ ५ ॥

वही बुध गुरु शुक्र नाशस्थानमें हों अथवा उनके अंशनाथ तथा राशिनाथभी नाशस्थानमें हों तो भी वही फल होगा यदि राहु अथवा सूर्य दशम स्थानमें होवैं तो ज्योतिषज्ञ भागीरथीका स्नान मिलेगा कहतेहैं ॥ ४ ॥ दशममें मीनराशि शुभग्रहयुक्त अथवा भौमयुक्त होवै तो मुक्ति होगी दशमस्थानमें जलचर राशिके पूर्णचन्द्रमा बृहस्पति होवैं तो गंगाआदिके जलसे पवित्र होवै ॥ ५ ॥

माने गुरौ शुक्रयुते च केन्द्रे स्वोच्चस्थिते तादृशतोयपूतः ॥ माने धने शुक्रयुते सजीवे केन्द्रोच्चगे तादृशतोयपूतः ॥ ६ ॥ बुधे व्यये वा यदि वा तदीशे स्वोच्चान्विते तादृशपुण्यभाक्स्यात् ॥ चन्द्रे तृतीये जलराशियुक्ते सौम्यान्विते तादृशपुण्यभाक्स्यात् ॥ ७ ॥

दशम स्थानमें बृहस्पति शुक्रयुक्त होवै अथवा अपनी उच्चराशिका किसी केन्द्रमें होवै तो गंगाजलसे पवित्र होवै दशम वा द्वितीय स्थानमें शुक्रसहित बृहस्पति हो अथवा केन्द्रमें उच्चराशिका होवै तो वैसेही गंगाजलसे पवित्र होवै ॥ ६ ॥ बुध बारहवें होवै अथवा व्ययेश अपने उच्चमें होवै तो वैसाही पुण्यवान् होवै चन्द्रमा जलराशिका तीसरे भावमें शुभयुक्त होवै तोभी वैसेही पुण्यवाला होवै ॥ ७ ॥

शुभेश्वरे केन्द्रयुते जलर्क्षे सौम्येक्षिते तादृशतोयपूतः ॥ बुधे सजीवे यदि वा सभौमे प्राकारकृन्मण्डपगोपुरादीन् ॥ ८ ॥ मानस्थिते तद्गृहनाथयुक्ते करोति जीर्णोद्धरणादि तत्र ॥ ९ ॥ करोति कूपादितटाकभूमिं कर्मेश्वरे गोपुरभागयुक्ते ॥ मृद्वंशके वा शुभदृष्टियुक्ते भाग्येश्वरेणापि निरीक्षिते वा ॥ १० ॥

दशमेश जलराशिका केन्द्रमें हो शुभग्रह उसे देखे तो गंगाआदिके जलसे पवित्र रहे बुध बृहस्पति अथवा मंगलसे युक्त होवै तो प्राकार मण्डप अट्टालिका आदि बनानेवाला होवै ॥ ८ ॥ बुध दशमेश सहित दशम स्थानमें होवै तो जीर्णोद्धार आदि करताहै ॥ ९ ॥ दशमेश गोपुरांशकमें होवै अथवा मृदंशकमें होवै शुभग्रह तथा भाग्येशसेभी दृष्ट होवै तो कुआं तालाव आदि भूमि बनावै ॥ १० ॥

चन्द्रात्मजे कर्मगते तदीशे भाग्यस्थिते पापविवर्जितेस्मिन् ॥ सौम्येक्षिते शोभनभावयुक्ते यज्ञस्य कर्त्ता स भवेत्तदानीम् ॥ ११ ॥ कर्माधिपेस्मिन्यदि सोमपुत्रे स्वोच्चस्थिते वा यदि धर्मराशौ ॥ विवर्जितः स्याच्छिखिराहुपापैर्यज्ञस्य कर्त्ता स भवेत्तदानीम् ॥ १२ ॥

बुध दशम स्थानमें दशमेश नवममें पापरहित होवै शुभग्रहकी राशियोंमें शुभग्रह दृष्ट होवैं तो यज्ञ करनेवाला होवै ॥ ११ ॥ यदि बुध दशमेश होकर अपने उच्चमें होवै अथवा नवमभावमें होवै केतु राहु और पापग्रहोंसे रहित होवै तो यज्ञका करनेवाला होवै ॥ १२ ॥

कर्माधिपे स्वोच्चगते सपापे नीचांशगे नाशगतेपि तस्मिन् ॥ विघ्नो भवत्येव मखस्य तस्य क्रूरादिषष्ट्यंशगतेपि चैवम् ॥ १३ ॥ तुंगस्थिते सोमसुते तदीशे स्वोच्चान्विते सोमसुतेन दृष्टे ॥ शुभेक्षिते वा सबुधे स्वराशौ यज्ञस्य कर्ता स भवेत्तदानीम् ॥ १४ ॥

दशमेश अपने उच्चराशिमें हो परंतु पापयुक्त नीचांशकमें और बारहवें होवै तो उसके यज्ञका विघ्न अवश्य होताहै यदि दशमेश क्रूरआदि षष्ट्यंशमें होवै तोभी वही फल होगा ॥ १३ ॥ दशमेश अपने उच्चराशिमें हो उसे उच्चराशिस्थ बुध देखे अथवा शुभग्रह दृष्ट तथा बुधयुक्त होवै यद्वा उच्चमें न हो अपनी राशिमें होवै तो वह मनुष्य यज्ञकरनेवाला होवै ॥ १४ ॥

आज्ञास्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टियुतेपि वा ॥ शोभनांशगते वापि जातस्त्वाज्ञाधिपो भवेत् ॥ १५ ॥ आज्ञास्थानगतें सूर्ये भूमिपुत्रेण वा युते ॥ केन्द्रान्विते तदीशेपि क्रूरामाज्ञां करोति सः ॥ १६ ॥ आज्ञाधिपे मन्दयुते रन्ध्रनाथेन संयुते ॥ क्रूरांशे केन्द्रराशौ वा क्रूरामाज्ञां करोति सः ॥ १७ ॥ मानाधिपे केन्द्रयुते शुभयुक्तेक्षितेपि वा ॥ शरषष्ट्यंशसंयुक्ते सौम्यामाज्ञां करोति सः ॥ १८ ॥

दशमेश शुभग्रह शुभग्रहसे दृष्ट युक्त होवै अथवा शुभांशकमें होवै तो दूसरेको आज्ञा देनेवाला (हाकिम) होवै ॥ १५ ॥ दशम भावमें सूर्य वा मंगल होवै दशमेश केन्द्रमें होवै तो वह हाकिम होनेपर क्रूर आज्ञा देनेवाला होवै ॥ १६ ॥ दशमेश शनियुक्त तथा अष्टमेशसे युक्त होवै क्रूरांशकमें अथवा केंद्रमें होवै तो क्रूर आज्ञा देताहै ॥ १७ ॥ दशमेश केंद्रमें शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट होवै पांचवें षष्ट्यंशमें होवै तो वह हाकिम सौम्य आज्ञा देताहै ॥ १८ ॥

राहुमांदियुते माने रंध्रे राहौ ध्वजेपि वा ॥ नीचस्थे धर्मभावेशे क्रूरामाज्ञां करोति सः ॥ १९ ॥ शशांके कर्किसंयुक्ते गुरुशुक्र निरीक्षिते ॥ पारावतादिभागस्थे सत्कीर्तिसहितो भवेत् ॥२०॥

राहु वा केतु दशममें हो अथवा अष्टममें हो और धर्मेश नीचराशिमें होवै तो वह क्रूर आज्ञा देता है ॥ १९ ॥ चंद्रमा कर्कका बृहस्पति शुक्रसे दृष्ट होवै पारावतादि शुभांशकमें होवै तो वह मनुष्य सत्कीर्तिवाला होवै ॥ २० ॥

तदीशे शुभसंयुक्ते शुभमध्यगतेपि वा॥शुभग्रहाणामंशे वा सत्कीर्तिसहितो भवेत् ॥ २१ ॥ कांतिस्थानाधिपे सौम्ये स्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ॥ सौम्यषष्ट्यंशके वापि सत्कीर्तिसहितो भवेत् ॥२२॥ तदीशे देवलोकस्थे सिंहांशे शुभनायके ॥ बलपूर्णे विलग्नेशे सत्कीर्तिसहितो भवेत् ॥ २३ ॥ पापग्रहाणां संबंधे माननाथे बलक्षये ॥ क्रूरषष्ट्यंशसंयुक्ते सत्कीर्तिसहितो भवेत् ॥ २४ ॥

चंद्रराशीश शुभयुक्त अथवा शुभग्रहोंके मध्यमें हो अथवा शुभग्रहोंके अंशकमें होवै तो सत्कीर्तियुक्त होवै ॥ २१ ॥ दशमेश शुभग्रह अपने उच्च वा मित्रराशि वा अपने अंशमें होवै अथवा शुभषष्ट्यंशमें होवै तो सत्कीर्तिवाला होवै ॥ २२ ॥ दशमेश देवलोकांशकमें होवै और नवमेश सिंहासनांशकमें पुस्तकांतरमें " शुभांशकस्थे " ऐसा पाठहै अर्थात् शुभग्रहके नवमांशमें होवै, लग्नेश पूर्णबली होवै तो सत्कीर्तिवाला होवै ॥ २३ ॥ दशमेश निर्बल तथा पापग्रहोंसे संबंधी होवै और क्रूरषष्ट्यंशमें होवै तो वही फल होगा ॥ २४ ॥

अपकीर्तियुतो जातः कर्मस्थे च रवौ शनौ ॥ पापांशके पापदृष्टे पापमध्यगतेपि तत् ॥ २५ ॥ शुभग्रहाणां संबंधे मानतन्नायकेपि वा ॥ स्वोच्चे वा स्वगृहे वापि जातो मानी दृढव्रतः ॥२६॥ इंगितज्ञोपि मानी स्यान्माने जीवेथ वा शुभे ॥ तदीशे शुभसंबंधे शुभमध्यगतेपि वा ॥ २७ ॥

दशमस्थानमें सूर्य वा शनि पापदृष्ट वा पापमध्य होवै तो भी अपकीर्तिवाला होवै॥ २५॥ दशमस्थानसे अथवा दशमेशसे शुभग्रहोंका संबंध होवै अथवा स्वोच्चराशि वा स्वराशिमें होवै तो मानवाला और दृढव्रतवाला होवै ॥ २६ ॥ दशमस्थानमें बृहस्पति अथवा कोई शुभग्रह होवै दशमेशका संबंध शुभग्रहोंसे होवै अथवा शुभग्रहोंके मध्यमें होवै तो आकारहीसे दूसरेके मनका भाव जाननेवाला होवै ॥ २७ ॥

पापे माने पापदृष्टे तदीशे नीचराशिगे ॥ पापराश्यंशके वापि मानहीनो भवेन्नरः ॥ २८ ॥ मानाधिपे चरांशस्थे संचारसहितो भवेत् ॥ स्थिरांशे स्थैर्यमुद्दिष्टं मृगयात्रा द्विदेहगे ॥ २९ ॥ षष्ठेशे कर्मराशिस्थे कर्मेशे मंदसंयुते ॥ केंद्रत्रिकोणगे वापि दासी दासान्विनिर्दिशेत् ॥ ३० ॥

दशमस्थानमें पापग्रह पापग्रहसे दृष्ट हो दशमेश नीचराशिमें हो अथवा पापग्रहकी राशि वा अंशकमें होवै तो मनुष्य मानहीन रहे ॥ २८ ॥ दशमेश चरराश्यंशकमें होवै तो घूमने फिरनेवाला होवै स्थिरांशकमें होवै तो स्थिर रहे और द्विस्वभावांशकमें होवे तो शिकार खेलना आदि सैलानी होवै ॥ २९ ॥ षष्ठेश दशममें दशमेश शनियुक्त होवै अथवा केन्द्र त्रिकोणमें होवै तो दास दासी बहुत होवैं ॥ ३० ॥

कर्माधिपस्थांशपतौ शनिसंबंधसंयुते ॥ षष्ठाधिपस्य संबंधे बहुदासान्विनिर्दिशेत् ॥ ३१ ॥ शुभग्रहेण संदृष्टे कर्मराशौ तदीश्वरे ॥ भानुपुत्रेण वा युक्ते बहुदासान्विनिर्दिशेत् ॥ ३२ ॥ कर्मनाथेन वा भुक्तिप्रश्ने पूर्तिं विनिर्दिशेत् ॥ तत्र पापसमायोगे जानुदौर्बल्यमादिशेत् ॥ ३३ ॥ इति दशमभावविचारः ॥

दशमेश जिसके नवांशकमें है वह शनिसे संबंधी होवै षष्ठेशकाभी संबंध होवै तो बहुतदासका होना कहना ॥ ३१ ॥ दशमस्थानमें शुभग्रहकी दृष्टि होवै वा दशमेश शनियुक्त होवै तौभी वही फल कहना ॥ ३२ ॥ भोजनप्रश्नमें दशमेशसे भोजनकी पूर्ति आदि बलाबल देखके कहनी दशममें पापग्रह होवैं तो जंघा कृश होवै ॥ ३३ ॥ इति दशमभावविचारः ॥

अथ प्रव्रज्यायोगाः ।

ग्रहैश्चतुर्भिः सहितैस्तदीशे त्रिकोणगे केन्द्रगतैस्तु मुक्तः ॥ चतुर्ग्रहैः केंद्रगतैः प्रव्रज्यामाप्नोति जातः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ १ ॥

न वीक्षितश्चेदितरग्रहैर्द्रैर्लग्नाधिपः पश्यति भानुपुत्रम् ॥ लग्नाधिपं वा यदि भानुपुत्रः संन्यासयोगो हि बलेन हीनः ॥ २ ॥ शनेर्दृकाणे कुमुदात्मबन्धौ मंदेक्षिते तादृशयोगमाहुः ॥ मन्दांशके भूमिसुतांशके वा मंदेक्षिते चन्द्रयुते तथैव ॥ ३ ॥ संन्यासयोगाधिपतौ सराहौ क्रूरांशके वा गुलिकेन युक्ते ॥ संन्यासवैकल्यमुदाहरंति भंगो भवेत्तस्य शुभैर्विहीने ॥ ४ ॥ इति प्रव्रज्यायोगाः ॥

अब संन्यासयोग कहते हैं चार ग्रह एक स्थानमें होवैं उस भावका स्वामी केन्द्र त्रिकोणमें न होवै अथवा चार ग्रह केन्द्रमें होवैं तात्पर्य यह है कि चार आदि ग्रह एक स्थानमें होवैं तो मनुष्य संन्यासी (फकीरी) पाता है यह मुनीन्द्रोंनें कहाहै ॥ १ ॥ लग्नेशपर केवल शनिकी दृष्टि होवै अन्यकी न होवै अथवा शनिको लग्नेश देखे लग्नेशको शनि देखे बलरहित होवै तो संन्यासयोग होताहै ॥ २ ॥ चन्द्रमा शनिके द्रेष्काणमें हो शनि उसे देखे तो संन्यासयोग होताहै शनिके वा मंगलके अंशकमें शनिसे दृष्ट हो अथवा चंद्रमा शनिसहित होवै तो भी वही योग होताहै ॥ ३ ॥ जिस स्थानमें संन्यासयोग है उसका स्वामी राहुयुक्त होवै अथवा क्रूरांशकमें गुलिकसहित होवै तो संन्यासमें विकलता होवै यदि शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट न होवै तो संन्यास लियेमें भी भंग होजावै ॥ ४ ॥ इति संन्यासयोगाः ॥

अथ लाभभावविचारः ।

आयेनार्थावाप्तिं पादावपि वामकर्णचिंतां च ॥ जातावपि कचकुब्जान्ज्येष्ठान्ब्रूयाद्धनान्यासाम् ॥ १ ॥ लाभेश्वरे केंद्रगते त्रिकोणे वा समन्विते ॥ लाभे वा पापसंयुक्ते धनलाभमुदीरयेत् ॥२॥

ग्यारहवें भावसे धनप्राप्ति, पैरोंका विचार, वामकर्णका विचार, केश, कुब्जता, बडेभाई, धनादिविचार करना ॥ १ ॥ लाभेश केंद्र त्रिकोणमें हो अथवा लाभस्थानमें पापग्रहसे युक्त होवै तो धनलाभ कहना ॥ २ ॥

धनाधिपे लाभगते लाभेशे धनमागते ॥ तावुभौ केन्द्रगौ वापि धनलाभमुदीरयेत् ॥ ३ ॥ शुभमध्यगते लाभे तदीशे वा तथा स्थिते ॥ पारावतादिभागस्थे धनलाभमुदीरयेत् ॥ ४ ॥ लाभेशयुक्तराशीशे शुभग्रहनिरीक्षिते ॥ शुभग्रहाणां मध्यस्थे धनलाभमुदीरयेत् ॥ ५ ॥ लाभनाथसमायुक्तनवांशाधिपतौ शुभे ॥

वित्ताधिपेन संदृष्टे धनलाभमुदीरयेत् ॥ ६ ॥ लाभाधिपसमायुक्तत्र्यंशभागपतौ शुभे ॥ कर्मेश्वरेण संदृष्टे धनलाभमुदीरयेत् ॥७॥

धनेश लाभमें लाभेश द्वितीयभावमें होवै अथवा वे दोनोंके केंद्रमें होवैं तो धनलाभ कहना ॥ ३ ॥ लाभभाव शुभग्रहोंके बीचमें होवै अथवा लाभेश ऐसा होवै और पारावतादि अंशकमें होवै तो धनलाभ कहना ॥ ४ ॥ लाभेश जिस राशिमें है उसका स्वामी शुभग्रह दृष्ट शुभग्रहोंके बीचमें होवै तो धनलाभ होवै ॥ ५ ॥ लाभेश जिसके नवांशकमें है उसका स्वामी शुभग्रह हो और धनेश उसे देखे तो धनलाभ कहना ॥ ६ ॥ लाभेश जिसके द्रेष्काणमें है वह शुभग्रह होवै कर्मेश उसे देखे तो धनलाभ कहना ॥ ७ ॥

पापग्रहाणां संबंधे धनहानिं विनिर्दिशेत् ॥ लाभेश्वरोक्तादिग्भागाद्धनप्राप्तिं विनिर्दिशेत् ॥ ८ ॥ लाभराश्युक्तदिग्भागात्सर्वोत्तमबलादपि॥ग्रहबलवशेनैव द्रव्यलाभं विनिर्दिशेत् ॥९॥ लाभे पापे तद्गृहे वा धनहानिं विनिर्दिशेत् ॥ लाभेशे पापसंबंधे धननाशं विनिर्दिशेत् ॥ १० ॥

लाभेश पापग्रहोंसे संबंधी होवै तो धनहानि कहनी धनप्राप्तिके लिये लाभेश जिस दिशाका स्वामी है उस दिशासे धनलाभ कहना ॥ ८ ॥ लाभगत राशिके उक्त दिशासे अथवा सर्वोत्तम बली ग्रहके दिशासे धनप्राप्ति कहनी ॥ ९ ॥ लाभस्थानमें पापग्रह हो वा पापग्रहकी राशि होवै तो धनहानि कहनी लाभेश पापग्रहोंसे संबंधी होवै तो धननाश होवै ॥१०॥

कर्णस्थानेश्वरे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ॥ कर्णाधिपे बलवति कर्णाभरणमिष्यते ॥ ११ ॥ पापग्रहाणां संबंधे तन्नाशोत्र भविष्यति ॥ लाभेशात्सोदरेशाद्वा कर्णसौख्यं विनिर्दिशेत् ॥ १२ ॥ तदीशे शुभसंबंधे कर्णसौख्यं विनिर्दिशेत् ॥ तदीशे पापसंबंधे कर्णरोगं विनिर्दिशेत् ॥ १३ ॥ ब्रूयाज्ज्येष्ठांशलाभेन शुभपापवशादपि ॥ शुभग्रहाणां संबंधे दीर्घमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ १४ ॥

लाभेश शुभग्रह शुभदृष्ट होवै तथा लाभेश बलवान् होवै तो कानोंके भूषण होवै ॥ ११ ॥ यदि उसका पापग्रहोंसे संबंध होवै तो उन भूषणोंका नाश कहना ऐसेही लाभेशसे तथा तृतीयेशसेभी कानोंका सौख्य कहना ॥ १२ ॥ इन भावोंका स्वामी शुभग्रहोंसे संबंध करे तो कर्णसौख्य कहना । पापसंबंधसे कर्णरोग बधिरता आदि कहनी ॥ १३ ॥ लाभसे दक्षिण कर्ण तृतीयसे वामकर्णका विचार शुभ पापग्रहवशसे शुभाशुभ कहना शुभग्रहोंके संबंधसे दीर्घायु कहनी ॥ १४ ॥

पापान्विते पापदृष्टे तद्धानिं प्रवदंति हि ॥ लाभराशेश्च दिग्भागे धनलाभमुदीरयेत् ॥ १५ ॥ तद्राशिनाथदिग्भागाद्द्रव्यप्राप्ति-मुदीरयेत् ॥ लाभराशिवशादेवं चिंतयेन्मतिमान्नरः ॥ १६ ॥ इत्यायभावविचारः ॥

तदीश पापयुक्त दृष्ट होवै तो लाभकी हानि कहते हैं लाभभावराशिकी जो दिशाहै उस दिशासे लाभ कहना ॥ १५ ॥ अथवा लाभेशकी दिशाकी ओरसे धनप्राप्ति कहनी । इस प्रकार बुद्धिमान् मनुष्य लाभराशिके वशसे धनका लाभालाभ विचारे ॥ १६ ॥ इति लाभ-भावविचारः ॥

अथ व्ययभावविचारः।

व्ययभवनाद्व्ययमखिलं पतनं नरके च वैकल्यम् ॥ वामाक्षि चरणयुगलं शयनस्थानं विनिर्दिशेत्प्राज्ञः ॥ १ ॥

बारहवें भावसे संपूर्ण व्यय (खर्च), नरकमें पडना, विकलपकता, वामनेत्र, दोनों चरण, शयन स्थानका विचार प्राज्ञ कहे ॥ १ ॥

व्यये पापसमायुक्ते तदीशे पापखेचरे ॥ पापग्रहेण संदृष्टे पापमू-लाद्धनव्ययः ॥ २ ॥ मन्दमान्द्यगुसंयुक्ते व्यये वा तद्गृहाधिपे॥ क्रूरांशकसमायुक्ते पापमूलाद्धनव्ययः ॥ ३ ॥ व्ययाधिपसमायु-क्तनवभागपतौ शुभे ॥ शुभांशे शुभमध्यस्थे धर्ममूलाद्धनव्ययः ॥ ४ ॥ गुरुशुक्रौ व्यये वापि बुधचंद्रौ शुभेक्षितौ ॥ पारावता-दिभागस्थौ धर्ममूलाद्धनव्ययः ॥ ५ ॥

व्ययभावमें पापग्रह होवैं व्ययेश पापग्रह होवै पापग्रहसे दृष्ट होवै तो पापके कारण धन खर्च होवै ॥ २ ॥ शनि केतु राहुसे युक्त व्ययभाव वा व्ययेश होवै तथा क्रूरांशकमें होवै तो पापके कारण धनव्यय होवै ॥ ३ ॥ व्ययेश जिसके नवांशकमें है वह शुभग्रह होवै एवं शुभग्रहके अंशकमें शुभग्रहोंके बीचमें होवै तो धर्मके कारण धन व्यय होवै ॥ ४ ॥ बृहस्पति शुक्र अथवा बुध चंद्रमा व्ययभावमें शुभदृष्ट तथा पारावतादि अंशकोंमें होवैं तो धर्मके कारण धनव्यय होवै ॥ ५ ॥

व्ययाधिपे त्रिकोणस्थे केन्द्रे पापनिरीक्षिते ॥ परषष्ट्यंशके वापि पापमूलाद्धनव्ययः ॥६॥ पापेन कर्मनाथेन व्ययेशे दृष्टि-संयुते ॥ शत्रुनीचादिभागस्थे पापमूलाद्धनव्ययः ॥ ७ ॥ शुभेन

कर्मनाथेन दृष्टे युक्ते व्ययेश्वरे ॥ स्वोच्चमित्रस्ववर्गस्थे धर्ममूलाद्धनव्ययः ॥ ८ ॥ व्ययेशे बलहीने वा शत्रुनाथयुतेक्षिते ॥ गुलिकादिसमायुक्ते शत्रुमूलाद्धनव्ययः ॥ ९ ॥ व्ययेशे दारनाथेन बलहीनेन तेन तु ॥ दृष्टे युते वा क्रूरांशे स्त्रीहेतोर्द्धननाशनम् ॥ १० ॥

व्ययेश त्रिकोणमें वा केंद्रमें पापदृष्ट होवै, अथवा दूसरे षष्ट्यंश अर्थात् राक्षसषष्ट्यंशमें होवै तो पापके कारण धनव्यय होवै ॥ ६ ॥ दशमेश पापग्रह करके व्ययेश दृष्ट होवै तथा शत्रु नीचआदि अंशकमें होवै तो पापके कारण धनव्यय होवै ॥ ७ ॥ यदि दशमेश शुभग्रहसे व्ययेश दृष्ट होवै अपने उच्च मित्र स्वराशिमें वा नवांशकमें होवै तो धर्मके कारण धनव्यय होवै ॥ ८ ॥ व्ययेश बलरहित हो अथवा षष्ठेशसे युक्त वा दृष्ट होवै और गुलिकादिसे युक्त होवै तो शत्रुके कारण धनव्यय होवै ॥ ९ ॥ बलहीन सप्तमेशसे व्ययेश दृष्ट वा युक्त होवैं तथा क्रूरांशकमें होवै तो स्त्रीके कारण धननाश होवै ॥ १० ॥

तादृशे व्ययनाथेऽस्मिन्दृष्टे युक्तेऽथ वा भवेत ॥ तथाविधेन भौमेन भ्रातृमूलाद्धनक्षयः ॥ ११ ॥ पुत्रभावेश्वरेणापि बलहीनेन संयुते ॥ दृष्टे व्ययेशे क्रूरांशे पुत्रमूलाद्धनव्ययः ॥ १२ ॥ पितृस्थानेश्वरेणापि कारकेणापि वा युते ॥ व्ययेशे दृष्टिसंबंधे पितृमूलाद्धनव्ययः ॥ १३ ॥ एवं मातृपयोगेन युते दृष्टे व्ययाधिपे ॥ क्रूरान्विते क्रूरभावे मातृमूलाद्धनव्ययः ॥ १४ ॥

ऐसेही व्ययेशपर निर्बल मंगलकी दृष्टि हो वा युक्त होवै तो भ्रातृवर्गके कारण धननाश होवै ॥ ११ ॥ तथा बलहीन पंचमेशसे दृष्ट वा युक्त व्ययेश होवै तथा क्रूरांशमें भी होवै तो पुत्रके कारण धनव्यय होवै ॥ १२ ॥ व्ययेश दशमेशसे युक्त वा दृष्ट होवै अथवा कारकसेभी युक्त होवै तो पिताके कारण धनव्यय होवै ॥ १३ ॥ ऐसेही चतुर्थेशसे युक्त वा दृष्ट व्ययेश होवै क्रूरभावमें क्रूरग्रहयुक्त होवै तो माताके कारण धनव्यय होवै ॥ १४ ॥

बलहीने तु रिष्फेशे क्रूरराश्यंशकेपि वा ॥ नीचांशे नीचराशौ वा देहे वैकल्यमादिशेत् ॥ १५ ॥ बहुपापसमायोगे व्यये तद्भावनायके ॥ मन्दमान्द्यगुसंयुक्ते देहवैकल्यमादिशेत् ॥ १६ ॥

व्ययेश बलहीन होवै क्रूरराशि क्रूरांशकमें अथवा नीचराशि नीचांशकमें होवै तो शरीरमें विकलता होवै ॥ १५ ॥ व्ययभावमें बहुत पाप होवैं व्ययेश शनि केतु राहुसे युक्त होवै तो शरीरमें विकलता होवै ॥ १६ ॥

व्ययेशे पापराश्यंशे क्रूरांशे क्रूरसंयुते ॥ पापग्रहेण संदृष्टे नरके निपतिष्यति ॥१७॥ नरके पतनं ब्रूयाद्राहुमांदियुते व्यये ॥ षष्ठाधिपेन संदृष्टे रन्ध्रनाथेन वा युते ॥ १८ ॥ व्ययेशयुक्तषष्ट्यंशे क्रूरभागादिसंज्ञके ॥ क्रूरग्रहेण संदृष्टे नरके पतनं भवेत् ॥१९॥ चन्द्रार्कयोर्यो बलवांस्तद्युक्तत्र्यंशनायकः ॥ गुरुर्वा चन्द्रशुक्रौ वा सूर्यभौमौ ज्ञसूर्यजौ ॥ २० ॥ दैविकं पितृलोकं तु तिर्यङ् नरकमेव च ॥ तेषां वदेत्क्रमेणैव तल्लोकः श्रेष्ठ उच्यते ॥ २१ ॥

व्ययेश पापग्रहके राशि अंशकमें वा क्रूरांशकमें क्रूरयुक्त होवै पापग्रहसे दृष्ट होवै तो नरकमें पडेगा ॥ १७ ॥ राहु वा केतु व्ययभावमें षष्ठेशसे दृष्ट अथवा अष्टमेशसे युक्त होवै तो नरकमें पडेगा कहना ॥ १८ ॥ व्ययभावेश क्रूर आदि षष्ट्यंशमें क्रूरग्रहसे दृष्ट होवै तो नरकमें पडेगा कहना ॥ १९ ॥ सूर्यचंद्रमामेंसे जो बलवान् हो वह जिसके द्रेष्काणमें हो वह द्रेष्काणेश बृहस्पति होवै तो देवलोक, चंद्रमा शुक्रसे पितृलोक, सूर्य मंगलसे तिर्यग्योनि, (कीटादि) और बुधशनिसे नरकलोक उसके लिये श्रेष्ठ कहा जाता है यहां ग्रहक्रमसे फलक्रम है ॥ २० ॥ २१ ॥

उच्चस्थे श्रेष्ठलोकः स्यान्नीचे नीचत्वमाप्नुयात् ॥ समस्थिते समप्राप्तिरित्याहुश्च महर्षयः ॥ २२ ॥ शुभे स्वोच्चे व्यये वापि सौम्यखेचरवीक्षिते ॥ देवलोकादिभागस्थे स्वर्गप्राप्तिर्भविष्यति ॥ २३ ॥ देवेज्ये कर्मराशीशे व्ययराशिगतेपि वा ॥ शुभग्रहेण संदृष्टे स्वर्गप्राप्तिर्भविष्यति ॥ २४ ॥

उक्तग्रह उच्चका होवै तो उत्तमलोक नीचका होवै तो नीचलोक और सम होवै तो समलोककी प्राप्ति होवै, इसप्रकार महर्षि कहतेहैं ॥ २२ ॥ शुभग्रह अपने उच्चमें बारहवेंभी होवै उसे शुभग्रह देखें और देवलोकादि अंशकमें होवै तो स्वर्गप्राप्ति होगी ॥ २३ ॥ दशमेश बृहस्पति व्ययभावमें भी हो उसे शुभग्रह देखे तो स्वर्गकी प्राप्ति होगी ॥ २४ ॥

नेत्रेशे शुभसंयुक्ते शोभनांशसमन्विते ॥ शुभखेचरसंबंधे तन्नेत्रस्य शुभं वदेत् ॥ २५ ॥ अन्यथा चेद्वदेन्नाशं पादयोरपि तत्तथा ॥ तत्प्रपंचादिकं सर्वं धनभावे प्रदर्शितम् ॥ २६ ॥

व्ययेश शुभग्रहसे युक्त हो शुभषष्ट्यंशमें तथा शुभग्रहसे संबंधी होवै तो नेत्रका शुभ कहना ॥ २५ ॥ पापयुक्त, अशुभ षष्ट्यंशगत पापसंबंधी होवै तो नेत्रनाश कहना ऐसेही पैरोंका भी विचार कहना क्योंकि पादस्थानभी द्वादशही है इसका समस्त विचार धनभावमें कहदिया है॥२६॥

गुरुशुक्रबुधास्तत्र वाहनं निर्दिशेद्बुधः ॥ वाहनोक्तादिकं सर्वं तदिहात्र विचिंतयेत् ॥ २७ ॥ शुभग्रहाणां सम्बन्धे व्यये तद्भावनायके ॥ दोलां तु मंचं प्रवदेच्छयनादिसुखं तथा ॥ २८ ॥ व्ययेशे स्वोच्चराशिस्थे शुभवर्गसमन्विते ॥ शुभग्रहेण संदृष्टे पर्यंकशयनं वदेत् ॥ २९ ॥ विचित्रमञ्चशयनं व्ययेशे परमोच्चगे ॥ भाग्यनाथेन वा दृष्टे मणिरत्नविभूषितम् ॥ ३० ॥ पापग्रहाणां संबंधे व्यये तद्भावनायके ॥ क्रूरांशे क्रूरसंदृष्टे शयनादिसुखं न हि ॥३१॥ व्ययेशः पापखेटोपि स्वोच्चमित्रस्वराशिगः॥ तस्यनाथोपि तत्स्थाने शयनादिसुखं वदेत् ॥३२॥ नीचे व्यये वा लग्नेशे शत्रुनाथेन वीक्षिते ॥ मंदमांद्यगुसंयुक्ते शयनादिसुखं न हि ॥ ३३ ॥

व्ययभावमें बृहस्पति, शुक्र, बुध होवै तो वाहन होगा कहना और जो चतुर्थस्थान विचारमें वाहन विचार कहेहैं वह सभी यहां विचारने ॥ २७ ॥ बारहवें स्थानमें तथा व्ययेशके साथ शुभग्रहोंका संबंध होवै तो डोली मंच आदि होंगे कहना तथा बिस्तर आदिका सुख कहना ॥ २८ ॥ व्ययेश अपने उच्चराशिमें शुभांशकादियुक्त होवे तथा शुभग्रह उसे देखें तो पलंग आदि शय्या मिले ॥ २९ ॥ व्ययेश अपने परम उच्चमें हो वा नवमेशसे दृष्ट होवै तो शय्या मणि आदिसे भूषित होवै ॥ ३० ॥ व्ययस्थानमें पापग्रहोंका संबंध होवै व्ययेश क्रूरांशमें क्रूरदृष्ट होवै तो शय्याआदिका सुख न होवै ॥ ३१ व्ययेश पापग्रहभी अपने उच्च मित्रराशि अपने अंशादिमें होवे और उस राशिका स्वामीभी उसी स्थानमें होवे तो शय्या आदिका सुख कहना ॥ ३२ ॥ लग्नेश नीचराशिमें वा व्ययभावमें षष्ठ्यंशसे युक्त होवै शनि केतु राहुमेंसे किसीसे युक्त होवे तो शय्या आदिका सुख नहीं मिलेगा ॥ ३३ ॥

पंचमे भृगुसंयुक्ते चन्द्रेण सहिते तथा ॥ ताभ्यां दृष्टेथ वा पुत्रे स्त्रीदेवोपास्तिमादिशेत् ॥ ३४ ॥ पंचमे पुंग्रहयुते पुंदेवोपास्तिमादिशेत् ॥ पंचमे भानुसंबंधे सूर्यशंकरभाजनः ॥ ३५ ॥ चन्द्रे तथाविधे जाते यक्षिणी देवता भवेत् ॥ स्कंदो वा भैरवो वापि सौम्यसंबंधवीक्षिते ॥ ३६ ॥ उपास्या शारदा सौम्ये विष्णुर्वा सात्त्विको गुरौ ॥ चामुण्डां पंचमे शुक्रसंबंधे तु विनिर्दिशेत्॥३७॥

शनौ प्रेताशनी प्रोक्ता श्मशाननिलया भवेत् ॥ राहुकेतुयुते तत्र परपीडनदेवता ॥ ३८ ॥

पंचम स्थानमें शुक्र चंद्रमा सहित होवै अथवा शुक्र चंद्रमा पंचमभावको देखें तो स्त्री संज्ञक (देवी आदिका) उपासक होवै ॥ ३४ ॥ पंचममें पुरुषग्रह होवें तो पुरुषवाची (शिवगणेशादि) की उपासना करे । पंचममें सूर्यका संबंध होवै तो सूर्य एवं महादेवकी उपासना करे ॥ ३५ ॥ ऐसाही चन्द्रमा होवै तो यक्षिणी उसकी देवता होवै उसपर बुधका संबंध होवै वा दृष्टि होवै तो स्कंद (वेतालादि) अथवा भैरव उसकी देवता होवै ॥ ३६ ॥ पंचम भावमें बुध होवै तो सरस्वती उपास्य देवता होवै बृहस्पति होवै तो सात्विक विष्णु राम कृष्णादि उपास्य होवें शुक्र पंचम होवै तो चामुण्डा होवै ॥ ३७ ॥ शनि होवै तो प्रेतके अशनवाली देवी राहु केतुसे श्मशान कालिका आदि दूसरेको पीडा देनेवाली होवै ॥ ३८ ॥

उक्तेष्वेतेषु खेटेषु स्वोच्चमित्रांशकेषु च ॥ तदेव भजनं स्वार्थं परार्थं त्वन्यथा भवेत् ॥ ३९ ॥ सौम्येक्षितेषु सर्वेषु मृद्वंशादिगतेषु च ॥ तदेव सौम्यता वाच्या क्रूरांशे क्रूरता भवेत् ॥ ४० ॥ द्वित्र्यादिग्रहयोगेन तद्देवभजनं भवेत् ॥ लग्नाधिपस्य मंत्रेशे मित्रे तन्मित्रमादिशेत् ॥ ४१ ॥ शत्रुत्वे शत्रुभूतः स्यात्समत्वे समता भवेत् ॥ ४२ ॥ लग्नाद्द्वादशराशीनां फलं प्रोक्तं मयाधुना ॥ संगृह्य सारमखिलमध्यायस्त्वष्टमोऽभवत् ॥ ४३ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिन्तामणौ भावफलनिरूपणो नामाअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

उक्तग्रहोंमेंसे यदि अपने मित्रांशक उच्चांशकोंमें होवैं तो वह उपासना अपने लिये और नीचशत्रु आदि अंशकोंमें होवैं तो पराये अर्थ होवै ॥ ३९ ॥ उक्त ग्रह सभी शुभदृष्ट होवै तथा मृदुआदि अंशादिमें होवैं तो सौम्य उपासना और क्रूरदृष्ट क्रूरांशकादिमें होवै तो क्रूरोपासना कहनी ॥ ४० ॥ जो दो तीन आदि ग्रहोंसे यह योग होवै तो वैसेही प्रकारके उतनेही देवताओंकी उपासना होवै लग्नेशका पंचमेश मित्र होवै तो वह देवता मित्रभावमें शत्रु होवै तो शत्रुभावमें रहेगा कहना ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ लग्नसे बारह राशियोंका फल मैंने इस समय समस्त सार ग्रहण करके कह दिया इसप्रकार अष्टम अध्याय होगया ॥ ४३ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिन्तामणौ माहीधरभाषाटीकायां भावाध्यायोऽष्टमः ॥ ८ ॥

इति द्वादशभावविचारः ॥

नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथ राजयोगाध्यायः ।

षड्भिर्ग्रहैरुच्चसमन्वितैः स्याद्राजाधिराजो बहुदेशभर्त्ता ॥ उच्चस्थितैः पञ्चभिरत्र राजा शक्त्यान्वितो देवगुरौ विलग्ने ॥ १ ॥ कुम्भे विलग्ने भृगुनंदने वा स्वोच्चस्थिते भूमिपतिश्चतुर्भिः ॥ उच्चस्थितैर्नीचवियुक्तभागैः क्रूरादिषष्ट्यंशविहीनभागैः ॥ २ ॥

छः ग्रह उच्चके होवैं तो राजाओंका राजा (बादशाह) बहुत देशोंका स्वामी होवै पांच ग्रह उच्चके हों और लग्नमें बृहस्पति होवै तो सामर्थ्यवाला राजा होवै ॥ १ ॥ कुम्भराशि लग्नमें शुक्र होवै और चार ग्रह उच्चके होवैं तो राजा होवै, परन्तु जो ग्रह उच्चके हैं वे नीचांशक एवं क्रूरआदि षष्ट्यंशोंमें न होवैं तब राजयोग होताहै ॥ २ ॥

लग्ने वृषे तत्र गते शशांके षड्भिर्ग्रहैरुच्चगतैर्नृपः स्यात् ॥ कस्मिन् गृहे स्वोच्चयुते तु सर्वैः स्वक्षेत्रगैर्भूपतितुल्यजातः ॥ ३ ॥ मूलत्रिकोणाङ्कितराशियुक्तैर्मित्रर्क्षगैर्वा यदि वक्रयुक्तैः ॥ कस्मिन् गृहे स्वोच्चयुतेत्र शेषैर्नीचांशहीनैर्नृपतुल्यजातः ॥ ४ ॥ जनयति नृपमेकोप्युच्चगो मित्रदृष्टः प्रचुरधनसमेतं मित्रयोगाच्च सिद्धम् ॥ विवसुविसुखमूढव्याधितं बंधतप्तं वधदुरितसमेतं शत्रुनिम्नर्क्षगेषु ॥ ५ ॥

लग्न वृष हो उसमें चंद्रमा हो और ६ ग्रह चंद्रसहित उच्चके हों तो राजा होवै किसी स्थानमें भी सभी ग्रह उच्चगत होनेसे राजा होताहै सभी स्वराशिगत हों तो राजाके तुल्य होवै ॥ ३ ॥ मूलत्रिकोणराशियोंमे वा मित्रराशियोंमे अथवा वक्रग्रह किसीभावमें हो शेष उच्चराशियोंमे हो परंतु नीचांशकोंमें न होवै तो मनुष्य राजाके तुल्य होवै ॥ ४ ॥ एक भी ग्रह उच्चगत मित्रग्रहसे दृष्ट हो तो बहुत धन सहित मित्रमंडलीसे संपन्न राजा होताहै शत्रुनीच राशियोंमें पापग्रह धनरहित सुखरहित बंधनसे संतप्त मरण अरिष्ट सहित करतेहैं ॥ ५ ॥

शुभं वर्गोत्तमे जन्म वेशिस्थाने च सद्ग्रहे॥अशून्येषु च केन्द्रेषु कारकाख्यग्रहेषु च ॥ ६ ॥ हित्वार्कं सुनफानफादुरुधराः स्वान्त्योभयस्थैर्ग्रहैः शीतांशोः कथितोऽन्यथा तु बहुभिः केम-

द्रुमोऽन्यैस्त्वसौ ॥ केन्द्रे शीतकरेऽथ वा ग्रहयुते केमद्रुमो नेष्यते केचित्केन्द्रनवांशकेष्वपि वदंत्युक्तिप्रसिद्धा न ते ॥ ७ ॥ सौम्ये स्मरारिनिधनेष्वधियोग इन्दोस्तस्मिंश्च भूपसचिवक्षितिपालजन्म ॥ संपन्नसौख्यविभवा हतशत्रवश्च दीर्घायुषो विगतरोगभयाश्च जाताः ॥८॥

वर्गोत्तम लग्नमें जन्म शुभ होताहै शुभग्रह वेशिस्थान (सूर्यसे १२) में तथा कारकग्रहमें भी जन्म शुभ होताहै परंतु केन्द्र शून्य (ग्रहरहित) न हों ॥ ६ ॥ सूर्यसे १२ में वेशि २ में वो दोनोंमें ग्रह होनेसे उभयचारी होताहै, तैसेही सूर्यको छोडकर चंद्रमासे दूसरा कोई ग्रह होवै तो सुनफा, १२ में होवै तो अनफा होताहै, यदि दोनों भावोंमें हों तो दुरुधरा होताहै इनमेंसे कोइ भी न होवै तो केमद्रुम योग होताहै, अन्य आचार्य चंद्रमा केंद्रमें होनेसे अथवा किसी ग्रह सहित होनेसे केमद्रुमभंग होना कहतेहैं, कोई केन्द्रनवांशकमें होनेसेभी ऐसा कहतेहैं परन्तु यह बात उक्तिसे प्रसिद्ध नहींहै ॥ ७ ॥ चन्द्रमासे ७ । ६ । ८ । भावोंमें ग्रह होवैं तो अधियोग होताहै इसका फल होके सुखविभवसे संपन्न, शत्रुरहित, दीर्घायु, नीरोग, निर्भय, सेनापति, मंत्री और राजा होतेहैं, इसमें यह क्रम मानते हैं कि चन्द्रमासे ६ । ७ । ८ । मेंसे एक भावमें ग्रहहो तो सेनानायक दोमें हो तो मंत्री तीनोंमें हो तो राजा होताहै ॥ ८ ॥

लग्ने चन्द्रे गुरौ सौख्ये कर्मस्थे भृगुनन्दने ॥ स्वोच्चस्वर्क्षस्थिते मन्दे नृपतुल्यो भवेन्नरः ॥ ९ ॥ दशमैकादशे रिष्फलग्नवित्तसहोत्थभे ॥ ग्रहास्तिष्ठंति चेत्सौम्या नृपतुल्यो भवेन्नरः ॥ १० ॥ केन्द्रत्रिकोणगाः सौम्या पापाः षड्लाभसोदराः ॥ लग्नाधिपे बलवति नृपतुल्यो भवेन्नरः ॥११॥ दृश्यते युज्यते वापि चन्द्रजेन बृहस्पतिः ॥ शिरसा शासनं तस्य धारयंति नृपास्तदा ॥१२॥

चंद्रमा लग्नमें बृहस्पति चतुर्थमें शुक्र दशमभावमें हो और अपने उच्च वा अपनी राशिमें होवै तो मनुष्य राजाके तुल्य होवै ॥ ९ ॥ दशमभावसे लेकर तीसरे पर्यंत शुभग्रह सभी होवैं तो मनुष्य राजाके समान होवै ॥ १० ॥ शुभग्रह केन्द्र त्रिकोणोंमें पापग्रह ६ । ११ । ३ में हों और लग्नेश बलवान् होवै तो मनुष्य राजतुल्य होवै ॥ ११ ॥ बृहस्पतिको बुध देखे वा युक्त होवै तो उस मनुष्यकी आज्ञाको राजालोग शिरमें धारण करें ॥ १२ ॥

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्तद्राशिनाथोथ तदुच्चनाथः ॥स चेद्विलग्नाद्यदि केन्द्रवर्ती राजाभवेद्धार्मिकचक्रवर्ती ॥ १३ ॥ नि-

शाकरे केन्द्रगते विलग्नं त्यक्त्वा त्रिकोणे यदि जीवदृष्टे॥ शुक्रेण दृष्टे बलपूर्णयुक्ते जातो नरो भूपतितुल्यभाग्यः ॥ १४ ॥ नीचस्थिता जन्मनि ये ग्रहेन्द्राः स्वोच्चांशगा राजसमानभाग्याः ॥ उच्चस्थिता चेदपि नीचभागा ग्रहा न कुर्वंति तथैव भाग्यम्॥१५॥

जो ग्रह जन्ममें नीचका है उसके उच्चराशिका स्वामी अथवा जिस राशिमें बैठा है उसका स्वामी लग्नसे केन्द्रमें होवै तो धार्मिक तथा चक्रवर्ती राजा होवै ॥ १३ ॥ चन्द्रमा लग्न छोडके केंद्रमें होवै अथवा त्रिकोणमें होवै उसे बृहस्पति देखे अथवा शुक्रसे दृष्ट होवै पूर्णबली होवै तो मनुष्य राजाके ऐश्वर्यके बराबर ऐश्वर्यवाला होवै ॥ १४ ॥ जो ग्रह जन्ममें नीचके हों वह अपने उच्चांशकोंमें होवैं तो राजाओंके समान ऐश्वर्यवाले होवैं जो ग्रह उच्चराशियोंमें हों वह नीचांशकोंमें होवैं तो वे ग्रह वैसा ऐश्वर्य नहींकरसकते॥ १५॥

ग्रहा बलाढ्या यदि पूर्वषट्के स्वोच्चस्थिताः पूर्वदले नृपः स्यात् ॥ तद्व्यत्ययं पश्चिमभाग्ययुक्ता मिश्रस्थिताश्चेदुभयत्र भाग्यम् ॥ ॥ १६ ॥ त्रेधा विभज्यं तु वयःप्रमाणं खण्डत्रयं तत्र वदन्ति संतः ॥ व्ययादिकं प्राथमिके च खण्डे शुभग्रहाः शोभनमत्र दद्युः ॥ १७ ॥ खण्डे द्वितीये बहवश्च सौम्यास्तथैव सौख्यं तु तृतीयखण्डे ॥ खण्डे तु यस्मिन्बहवश्च पापा नीचांशगा मूढसमान्वितास्तु ॥ १८ ॥ दुःखं भवेत्तत्र विशेषतस्तु राज्यात्पदभ्रंशमुदाहरन्ति ॥ एवं भवेच्छोभनखेचरेन्द्रैः खण्डान्वितैः शोभनकालमाहुः ॥ १९ ॥

बलवान् ग्रह यदि पूर्वषट्क (लग्नसे छठे भावपर्यन्त) में होवैं तो आयुके पूर्वदलमें और पश्चिमषट्क (७ से १२ केभीतर) होवैं तो उमरके उत्तरदलमें, दोनों षट्कोंमें होवैं तो दोनहूं दलोंमें, ऐश्वर्य होवै ॥ १६ ॥ आयुके प्रमाणका तीन भाग करना इनको ज्योतिषज्ञ तीन खंडकहतेहैं ऐसेही १२ भावोंके ३ खंड जानने प्रथम दूसरे तथा तीसरे खंडमें जहां शुभग्रह हों उस खंडमें सुख ऐश्वर्य देतेहैं जिस खंडमें बहुत पाप हों अथवा नीचांशके वा अस्तंगत ग्रह हों तो उमरके उस खंडमें दुःख होताहै विशेषकरके राज्यसे पदच्युति होनी कहतेहैं ऐसेही शुभग्रहोंसे वह उमरका खंड शुभ कहतेहैं ॥ १७ । १८ । १९ ॥

लग्ने गुरौ बुधे केन्द्रे भाग्यनाथेन वीक्षिते ॥ लग्नेशे वापि संदृष्टे नृपतुल्यो भवेन्नरः ॥ २० ॥ सप्तमे जीवसंयुक्ते त्रिकोणे वा

समन्विते ॥ लग्नाधिपेन संदृष्टे नृपतुल्यो भवेन्नरः ॥ २१ ॥ केन्द्रे शनौ त्रिकोणे वा स्वोच्चमूलत्रिकोणगे ॥ राज्याधिपेन संदृष्टे नृपमानसमन्वितः ॥ २२ ॥ कर्मेशे रन्ध्रभावस्थे स्वोच्चमित्रांश- संयुते ॥ पारावतांशके वापि राजराजो भवेन्नरः ॥ २३ ॥

लग्नमें बृहस्पति बुध केंद्रमें भाग्येशसे दृष्ट और लग्नेशसेभी दृष्ट होवै तो मनुष्य राजाके तुल्य होवै ॥ २० ॥ बृहस्पति सप्तममें वा त्रिकोणमें होवै लग्नेशसे दृष्ट होवै तो वही फल होगा ॥ २१ ॥ अपने उच्च वा मूलत्रिकोणका शनि केन्द्र वा त्रिकोणमें होवै दशमेश उसे देखे तो राजमानसे युक्त रहे ॥ २२ ॥ दशमेश अष्टममें उच्चका वा मित्रांशका होवै अथवा पारावतांशमें होवे तो राजराज होवै ॥ २३ ॥

नीचे गुरौ विलग्नस्थे रन्ध्रस्थे वाथ धर्मपे ॥ तथाविधांशसंयुक्ते राजराजो भवेन्नरः ॥ २४ ॥ गुरौ व्यये शनौ लाभे रवौ वा विक्र- माधिपे ॥ गुरौ व्यये विलग्नेशे राजराजो भवेन्नरः ॥ २५ ॥ पंचमे जीवसंयुक्ते चन्द्रे केन्द्रे बृहस्पतौ ॥ स्थिरलग्ने तदीशे तु राज्यस्थे नृपतिर्भवेत् ॥ २६ ॥ पूर्वषट्के ग्रहाः सर्वे यस्य तिष्ठंति ज- न्मनि ॥ भाग्याधिपे धनस्थे वा सचन्द्रे नृपतिर्भवेत् ॥ २७ ॥

नीचराशिका बृहस्पति लग्न अथवा अष्टमभावमें होवै और नवमेश पारावतांशमें होवै तो राजराज (राजाओंका राजावा कुबेरसम) होवे ॥ २४ ॥ बारहवें बृहस्पति ग्यारहवें शनि वा सूर्य होवै तृतीयेश बृहस्पति होवै लग्नेश बारहवें होवै तो राजराज होवै ॥ २५ ॥ पंचम भावमें वा केन्द्रमें बृहस्पति सहित चन्द्रमा होवै लग्नमें स्थिरराशि लग्नेश राज्यस्थानमें होवे तो राजा होवै ॥ २६ ॥ जिसके समस्त ग्रह लग्नसे छठे भाव पर्यन्त हों अथवा भाग्येश धनस्थानमें चन्द्रमासहित होवै तो राजा होवै ॥ २७ ॥

चन्द्राधिष्ठितराश्यंशनाथे केन्द्रायकोणगे ॥ बुधात्केंद्रगते वापि राजराजो भवेन्नरः ॥ २८ ॥ निशाकरः सभौमस्तु वित्ते वा वि- क्रमेपि वा ॥ पंचमे राहुसंयुक्ते राजराजो भवेन्नरः ॥ २९ ॥ भा- ग्याधिपसमायुक्तनवांशाधिपतौ सुखे ॥ पुत्रस्थानगते वापि नृप- श्रेष्ठो भवेन्नरः ॥ ३० ॥

चन्द्र जिसकी राशि वा नवांशकमें है वह केन्द्र लाभ वा त्रिकोणमें होवै अथवा बुधसे केन्द्रमें होवै तो मनुष्य राजाओंकाभी राजा होवै ॥ २८ ॥ चंद्रमा मंगलयुक्त

दूसरे वा तीसरे भावमें होवै राहु पंचममें होवै तो राजराज होवै ॥ २९ ॥ नवमेश जिसके नवांशकमें है वह चतुर्थभावमें होवै अथवा पंचममें होवै तो राजाओंमें श्रेष्ठ होवै ॥ ३० ॥

क्रूरे सकर्मभावेशे ग्रहास्तिष्ठंति चेत्क्रमात् ॥ लग्नादिपूर्वषट्केऽस्मिन् राजराजो भवेन्नरः ॥ ३१ ॥ लग्ने चरे तदीशेऽपि चरराश्यंशकान्विते ॥ भाग्येश चरराशिस्थे भूमिपालोऽन्यदेशगः ॥ ॥ ३२ ॥ राजयोगादिसंजाते तथा वाच्योऽन्यथा न हि ॥ उत्तमांशगते चन्द्रे गुरौ नीचांशवर्जिते ॥ ३३ ॥ शुभषष्ट्यंशके सूर्ये नृपतुल्यो भवेन्नरः ॥ त्रयो वा द्वौ खगौ वापि चत्वारो नीचसंयुताः ॥ ३४ ॥ शुभषष्ट्यंशसंयुक्ताः स्वोच्चांशे वा धरापतिः ॥ ॥ ३५ ॥ नीचास्थितांशनाथस्तु खेटः केन्द्रत्रिकोणगः ॥ चरलग्ने तदीशे तु चरांशादौ नृपो भवेत् ॥ ३६ ॥

दशमेश पापयुक्त होवै और लग्नसे छठे भावपर्यंत क्रमसे ग्रह होवें तो राजराज होवै ॥ ३१ ॥ लग्नमें चरराशि हो लग्नेश चरराशि चरांशकमें होवै भाग्येशभी चरराशिमें होवै तो परदेशमें जाके राजा होवै ॥ ३२ ॥ यह फल जिसके राजयोगभी हों उसको कहना औरको नहीं, चंद्रमा उत्तमांशमें हो बृहस्पति नीचांशकमें न हो सूर्य शुभषष्ट्यंशमें होवै तो मनुष्य राजतुल्य होवै, तीन वा दो यद्वा चार ग्रह नीचराशियोंमें होवैं और शुभषष्ट्यंशोंमें वा अपने उच्चांशकोंमें होवैं तो राजा होवै, नीचगत ग्रहका अंशनाथ ग्रह केंद्र त्रिकोणमें होवै लग्नमें चरराशि लग्नेश चरराशि चरांशकमें होवै तो राजा होवै ॥ ३३ ॥ ३४ । ३५ । ३६ ॥

माने राहौ भवे मंदे भाग्यनाथेन वीक्षिते॥लग्नेशे नीचखेटेन युते नृपसमो भवेत् ॥ ३७ ॥ अंशतो भावतो वापि स्वोच्चमूलत्रिकोणगः ॥ राजयोगास्तु निर्दिष्टास्तेषां योगे बहुत्वदाः ॥ ३८ ॥ इति राजयोगाः ॥

दशम राहु लाभमें शनि भाग्येशसे दृष्ट होवै और लग्नेश नीचगत ग्रहसे युक्त होवै तो राजतुल्य होवै ॥ ३७ ॥ अंशसे भावसे ग्रह अपने उच्च वा मूलत्रिकोणमें हो तो भी राजयोग होताहै ॥ उक्त राजयोगोंमें ऐसा होनेसे विशेषतर राजयोग होताहै. ॥ ३८ ॥ इति राजयोगाः ॥

अथ जातकभंगयोगाः ।

जीवे सकेतौ यदि वा सराहौ चाण्डालता पापनिरीक्षिते चेत् ॥
नीचांशके नीचसमन्विते वा जीवे द्विजश्चेदपि तादृशः स्यात् ॥
॥ १ ॥ ध्वजाहिमन्दैः सहितेंद्रपूज्ये शुक्रेक्षिते वा शशिसूनुदृष्टे ॥
शूद्रोपि चेद्विप्रसमानमेति विद्यां च सर्वामधिगम्य जातः ॥ २ ॥

बृहस्पति केतु वा राहु सहित और पापदृष्ट होवै तो वह मनुष्य चाण्डालताको प्राप्त होवै वह बृहस्पति नीचराशि वा नीचांशकमें होवे तो ब्राह्मणभी हो तो भी चाण्डाल होजावै ॥ १ ॥ केतु राहु और शनिसे युक्त बृहस्पतिको शुक्र वा बुध देखें तो शूद्रभी हो तो भी मनुष्य समस्त विद्या जानकर ब्राह्मणके समानताको प्राप्त होताहै ॥ २ ॥

मेषे शशांके रविसूनुदृष्टे भिक्षाशनी भूमिसुतेन दृष्टे ॥ निःश्रीर्विलग्नस्य निशाकरस्य लुब्धो दिनेशात्मजदृष्टियोगात् ॥ ३ ॥
शुभग्रहाणामवलोकनेन हीनाद्भवेत्तत्र समन्विताद्वा ॥ तत्कालहोराधिपतौ धराजे केंद्रे शनौ चेद्यदि वा विलग्ने ॥ ४ ॥ शुभग्रहाणामवलोकहीने दासस्तु भिक्षाशनदेहशीलः ॥ ५ ॥

मेषका चंद्रमा शनिसे दृष्ट होवै तो भिक्षा मांगके खावै मंगलसे दृष्ट होवै तो लक्ष्मीरहित होवै लग्न चंद्रमाके शनिसे युक्त वा दृष्ट होनेसे लुब्ध (नित्य तृष्णायुक्त) रहे ॥ ३ ॥ यह फल शुभग्रहोंके योग दृष्टि रहित होनेमें होताहै तत्काल लग्नका स्वामी मंगलमें केन्द्रमें हो अथवा शनि लग्नमें होवै ॥ ४ ॥ शुभग्रह उसे न देखें तो पराया दास होवै और भिक्षाके अन्नसे देहधारणकरे ॥ ५ ॥

पापमध्यगते चन्द्रे सप्तमे मन्दसंयुते ॥ श्वासक्षयप्लीहगुल्मविद्रधिं भजते नरः ॥ ६ ॥ वेशौ समन्दे दशमे सचन्द्रे वैकल्यमङ्गे क्षितिजे कलत्रे ॥ परस्परक्षेत्रनवांशयुक्तौ शशाङ्कसूर्यौ तनुशोषणं स्यात् ॥ ७ ॥ दिनेशचन्द्रौ रविराशियुक्तौ चन्द्रर्क्षगौ वा यदि शोषणं स्यात् ॥ रन्ध्रारिवित्तांत्यगता ग्रहेन्द्रा दिनेशचन्द्रारयमाः क्रमेण ॥ ८ ॥ कुर्वन्ति जातं नयनेन हीनं तद्धातुकोपाद्बलसंयुतस्य ॥ लग्ने गुरौ भूमिसुते कलत्रे उन्मादभाक् तत्र नरो हि जातः ॥ ९ ॥

चन्द्रमा पापग्रहोंके बीचमें हो शनि सप्तम भावमें होवै तो श्वास, क्षय, प्लीह, गुल्म, विद्रधि रोगसे मनुष्य पीड़ित रहे ॥ ६ ॥ सूर्यसे दूसरे (वेशि) स्थानमें शनि दशममें चन्द्रमा और मंगलसप्तममें होवै तो अंगविकल होवैं । चन्द्रमा सूर्य अन्योन्य राशि नवांश-कोंमें होवैं तो शरीरक्लेश रहे ॥ ७ ॥ सूर्य चन्द्रमा सूर्यकी राशिमें वा चन्द्रराशिमें होवे तो शरीर सूख जावै, अष्टममें सूर्य, छठे चन्द्रमा, दूसरे मंगल, बारहवें शनि क्रमसे होवैं तो ॥ ८ ॥ मनुष्यको बलवान् ग्रहके धातुके कोपसे नेत्रहीन करतेहैं । लग्नमें बृहस्पति सप्तममें मङ्गल होवै तो मनुष्य उन्मादी (विक्षिप्त) होताहै ॥ ९ ॥

उन्मादयुग्भ्रंशयुतो विलग्ने शनौ कलत्रे सकुजे त्रिकोणे ॥ लग्ने शनौ रिष्फगते दिनेशे चन्द्रे त्रिकोणे यदि वा धराजे ॥ १० ॥ उन्मादबुद्धिः सजडोथ वा स्याज्जातो हि चेच्चञ्चलबुद्धियुक्तः ॥ लग्ने त्रिकोणे दिननाथचन्द्रौ सौर्य्ये गुरौ केन्द्रसमन्विते वा ॥ ॥ ११ ॥ उन्मादबुद्धिः स भवेत्तदानीं शन्यारवारो यदि जन्म-काले ॥ केंद्रस्थितौ सौम्यनिशाकरौ वा सौम्यांशहीनौ भ्रमसं-युतः स्यात् ॥ १२ ॥

लग्नमें शनि सप्तममें मंगल हो अथवा त्रिकोणमें होवै तो उन्मादी (बावला) अथवा स्खलित वाणी होवै, लग्नमें शनि बारहवें सूर्य और त्रिकोण ५।९ में चन्द्रमा अथवा मंगल होवै ॥ १० ॥ तो उन्मादबुद्धि अथवा जड (मूर्ख) यद्वा मनुष्य चंचल बुद्धिवाला होवै लग्न वा त्रिकोणमें सूर्य चंद्रमा अथवा शनि बृहस्पति केन्द्रमें होवै ॥ ११ ॥ और जन्म-कालमें शनि वा मंगलवार होवै तो वह मनुष्य उन्मादबुद्धि होवै वा यदि केंद्रमें बुध चंद्रमा शुभांशरहित होवैं तो भ्रमसंयुक्त होवै ॥ १२ ॥

केन्द्रस्थिता मन्दनिशाकरार्का जडो भवेदन्यवसूपभोक्ता ॥ भाग्येश्वरे रिष्फगते तदीशे वित्तस्थिते भ्रातृगतैश्च पापैः ॥ १३ ॥ केमद्रुमेस्मिन्स भवेत्कुभोजी दुष्कर्मयुक्तोन्यकलत्रगामी ॥ १४ ॥

शनि चंद्रमा सूर्य केन्द्रमें होवैं तो दूसरेका द्रव्य खानेवाला मूर्ख होवै । भाग्येश बारहवें व्ययेश धनस्थानमें और तृतीय स्थानमें पापग्रह हों ऐसे केमद्रुम योगमें मनुष्य कुभोजी (निकम्मे अन्नादि खानेवाला) दुष्टकर्मोंसे युक्त परस्त्रीगमन करनेवाला होवै ॥ १३ ॥ १४ ॥

नीचे विलग्नाधिपतौ तदंशे षष्ठाष्टमस्थैर्यदि पापखेटैः ॥ १५ ॥ मांदौ विलग्ने कुलनाशकः स्यादल्पायुरार्द्धः शुभदृष्टिहीनैः ॥ सर्वग्रहैर्नीचसपत्नभोगैः कर्मान्यगैर्भिक्षुक एव जातः ॥ १६ ॥

लग्नेश नीचराशि नीचांशकमें होवै पापग्रह छठे आठवें होवै मांदि लग्नमें होवै तो अपने कुलका नाशकरनेवाला होवै उक्त ग्रहोंपर शुभग्रहदृष्टि न होवै तो अल्पायु कहतेहैं। समस्त ग्रह नीच शत्रुराशियोंमें दशम स्थान रहित होवें तो मनुष्य भिक्षुक होवै ॥ १५ ॥ १६ ॥

होरेश्वरे रिष्फगते तु माने क्रूरान्विते भौमयुते शशांके ॥ जातो-
भिशस्तः परदेशवासी भिक्षाशनी दुःखितदेहभाक्स्यात् ॥ १७॥
षष्ठाष्टमे भानुसुते सभौमे जातोप्यपस्मारयुतो नरः स्यात् ॥
पापग्रहाः षड्व्ययरंध्रभेषु जीवे परिध्यान्वितकेन्द्रगे वा ॥ १८॥
रन्ध्रस्थिताः पापखगाश्च सर्वे निशाकराच्छौ यदि केन्द्रयुक्तौ ॥
योगे गदाख्ये सभवेत्तदानीं जातोप्यपस्मारयुतः सुतप्तः ॥ १९॥

लग्नेश बारहवें दशम स्थानमें पापग्रह चन्द्रमा मंगलयुक्त होवै तो मनुष्य झूठे कलंकवाल परदेशमें रहनेवाला भिक्षा मांगके खानेवाला और दुःखी शरीरवाला होवै ॥ १७॥ शनि मंगलसहित छठे वा आठवें भावमें हो तो मनुष्य अपस्मार (मृगीरोग) वाला होवै पापग्रह ६। १२। ८ भावोंमें हों बृहस्पति परिधि (शौंडल) वाला जन्ममें अथवा केन्द्रमें होवै तोभी वही फल होगा ॥ १८ ॥ सभी पापग्रह आठवें भावमें हों चंद्रमा शुक्र केन्द्रमें ऐसे गदायोगमें मनुष्य अपस्मारी होताहै आश्रयोक्त गदायोग 'आसन्नकेन्द्रद्वयवाला' यहां नहीं है उक्तयोगकी गदा संज्ञा रखदी है इसमें मनुष्य संतप्तभी रहताहै ॥ १९ ॥

समन्विताः सौम्यशशांकशुक्राः केन्द्रस्थिता भोगिपतौ विलग्ने॥
चंडालयोगः स भवेत्तदानीं जातो निजाचारसुकर्महीनः ॥२०॥
जातः परिभ्रंशसमन्वितः स्याच्छुभैर्न युक्ता यदि दृष्टिहीनाः॥माने
स्थिता वा यदि वित्तराशौ पापास्तथा देवगुरौ च हीने ॥ २१ ॥

बुध चंद्रमा शुक्र एकसाथ केंन्द्रमें हों राहु लग्नमें होवै यह चंडालयोग होताहै इसमें उत्पन्न मनुष्य अपने कुलाचार एवं सत्कर्मसे हीन होताहै ॥ २० ॥ पापग्रह दशममें वा द्वितीय स्थानमें शुभग्रहोंके योग एवं दृष्टिसे रहित होवैं और बृहस्पति नीच मूढ दुष्ट षष्ट्यंशादियोंमें होवै तो वाणी स्खलित बोले यद्वा धर्मादिकार्यसे च्युत होवै ॥ २१ ॥

भाग्येश्वरे चांशगते सपापे जन्मोदयेशे रविगे कुलघ्नः ॥ विन-
ष्टपुत्रार्थकलत्रभाक्स्याच्छुभैर्न युक्तौ यदि वीक्षितौ वा ॥ २२ ॥
शुभाशुभैः केन्द्रगतैः शशांको लग्नेश्वरेणापि निरीक्षितश्चेत् ॥
सौरांशके वा यदि संयुतश्चेज्जातः कुलध्वंसकरो विदारः ॥२३॥

गृहात्परिभ्रष्टविदारपुत्रो गुणेन हीनो यदि वा जडोऽसौ ॥ केन्द्र शनौ लग्नगते शशांके जीवे व्यये भिक्षुक एव जातः ॥ २४ ॥

नवमेश पापयुक्त व्ययस्थानमें हो लग्नेश अस्तंगत होवै तो कुलका नाश करनेवाला होवै यदि शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट भी न हो तो उसके स्त्री पुत्र धन नष्ट होवैं ॥ २२ ॥ केन्द्रोंमें शुभ पाप सभी हों चन्द्रमाको लग्नेश देखे तथा शनिके अंशकमें वा शनिसे युक्त होवै तो स्त्रीरहित होवै तथा कुलका विध्वंस करे ॥ २३ ॥ शनि केन्द्रमें चन्द्रमा लग्नमें बृहस्पति बारहवें होवै तो अपने घरसे स्त्री पुत्रोंसे गुणोंसे रहित होवै अथवा मूर्ख होवै और भिक्षा मांगनेवाला होवे ॥ २४ ॥

चन्द्रात्सुतेर्थे यदि लग्ननाथे रंध्रस्थितैः सौम्यखगेतरैर्वा ॥ मानस्थिते रात्रिकरे तदानीं जातस्तु जीवत्यतिहेयवृत्त्या ॥ २५ ॥ लग्नाधिपान्मृत्युरिपुव्ययस्थैः पापैर्हि जातो जनिभूमिभ्रष्टः ॥नीचारिभांशे यदि देवपूज्ये तदंशके वासरनाथपुत्रे ॥ २६ ॥ जातोति दुःखी सुतदारहीनः कृच्छ्रादसौ जीवति भाग्यहीनः ॥ उच्चस्थिते वासरनायके तु नीचांशयुक्ते यदि राजपुत्रः ॥२७॥प्राप्नोति नीचत्वमिनोदये स्यात्पापेक्षिते वा यदि निश्चितार्थः ॥ २८ ॥

चंद्रमासे पंचम वा दूसरे लग्नेश हो अथवा अष्टममें पापग्रह हों दशममें चन्द्रमा होवै तो मनुष्य अतिनिंद्य त्याज्यवृत्तिसे आजीवन करे ॥ २५ ॥ लग्नेशसे ८।६।१२ भावोंमें पापग्रह होवैं तो जन्मभूमिसे भ्रष्ट होवै यदि बृहस्पति नीच शत्रु अंशकमें होवै और शनि बृहस्पतिके अंशमें होवै तो मनुष्य अतिदुःखी स्त्री पुत्र रहित भाग्यहीन होवै बडी कठिनतासे आजीवन करे सूर्य उच्चका होवै परंतु नीचांशका होवै तो राजपुत्र हो तो भी नीचताको प्राप्त होवै इस योगमें यदि वा पापदृष्ट सूर्य लग्नमें होवै तो वह फल निश्चयही होगा२६।२७।२८॥

तुलायां दशमे भागे स्थितः पंकजबोधनः ॥ सहस्रराजयोगानां फलं नीचत्वमाप्नुयात् ॥ २९ ॥ भृगोः पुत्रोपि नीचस्थो राजयोगविनाशदः ॥ उल्कापाताद्यप्रकाशे ग्रहे जातोपि भंगगः॥३०॥

सूर्य तुलाके दशवें अंशमें अर्थात् परमनीचांशकमें होवै तो हजार राजयोग हुयेमें भी नीचता पावै ॥ २९ ॥ शुक्रभी नीचका होनेसे राजयोगका नाशक होताहै । तथा जन्मसमयमें उल्कापातादियोंसे अप्रकाश होनेमें वा ग्रहोंके प्रकाशावस्था वा उदयता न होनेमें भी राजयोग भंग होतेहैं ॥ ३० ॥

नीचे भृगौ मन्दनवांशके वा व्ययस्थिते चन्द्ररवी कलत्रे ॥
निरीक्षितौ भानुसुतेन चात्र जातः परप्रैष्यमुपैति नित्यम् ॥ ३१॥
क्षीणे शशांके भृगुजे कलत्रे लग्ने शनौ भ्रंशदशान्वितः स्यात् ॥
लग्ने शनौ कर्मगते शशांके शुक्रेक्षिते वा यदि बंधभोक्ता ॥ ३२॥

शुक्र नीचका वा शनिके नवांशकमें बारहवें होवै चन्द्रमा सूर्य सप्तमभावमें शनिसे दृष्ट होवैं तो मनुष्य सर्व पराई आज्ञा करनेवाला दूत होवै ॥ ३१ ॥ चन्द्रमा क्षीण होवै शुक्र सप्तममें लग्नमें शनि होवै तो फटे टूटे वस्त्र पहिने, लग्नमें शनि दशममें चंद्रमा शुक्रसे दृष्ट होवै तो बंधनका भोगनेवाला होवै ॥ ३२ ॥

चन्द्रे व्यये वा यदि वा दिनेशे मन्दे त्रिकोणे मदरन्ध्रभेर्के ॥
मन्दाक्षिरोगी स भवेत्तदानीं नीचारिशत्र्वंशगतास्तथैव ॥ ३३ ॥
सुताम्बुगौ पापखगौ विशेषाच्चंद्रेष्टरिष्फारिगतेऽधता स्यात् ॥
शुभग्रहाणामवलोकहीने त्वन्धो भवत्येव शुभैर्न दोषः ॥ ३४ ॥

बारहवें चंद्रमा वा सूर्य त्रिकोण ९।५ में शनि ७।८ में सूर्य होवै तो मंददृष्टि नेत्ररोगी होवै, नीच शत्रु नवांशकमें उक्त ग्रह हों तो भी वही फल होगा ॥ ३३॥ पंचम चतुर्थमें पापग्रह हों विशेषतः चंद्रमा ८।१२ स्थानमें होवै तो अंधा होवै इनग्रहोंपर पापदृष्टि होवै तो अंधा होवै शुभग्रहदृष्टि होनेमें दोष नहीं ॥ ३४ ॥

माने शशांके सबुधे कलत्रे शनौ द्वितीये विकलांगमेति ॥ जातिच्युतिर्नीचसपत्नभागसमन्वितास्तेपि विनिश्चितार्थः ॥ ३५ ॥
निशाकरे कार्मुकमध्यभागमृगांशकर्कीवृषभागयुक्ते ॥ मंदारयुक्ते तदवेक्षणे वा कुष्ठी भवेत्सौम्यदृशा विहीने ॥ ३६ ॥

दशममें चंद्रमा सप्तममें बुध दूसरे शनि होवै तो अंगकला रहित होवै यदि उक्तग्रह नीच शत्रु राशि अंशकोंमें भी होवैं तो निश्चय अपनी जातिसे पतित होवै ॥ ३५ ॥ चंद्रमा धनके मध्य अर्थात् पांचवें नवांशकमें शनि मंगलसे युक्त वा दृष्ट होवै तो कुष्ठी होवै अथवा चंद्रमा किसी राशिमें मकर कर्क वृषांशकमें शनि मंगलसे युक्त वा दृष्ट होवै । भी कुष्ठी होताहै परंतु यह योग चन्द्रमापर शुभदृष्टि न होनेमें है यदि शुभग्रह दृष्ट वा युक्तभी हाव तो कुष्ठ नहीं होता तदंग रोग दद्रू चित्रक आदि होतेहैं ॥ ३६ ॥

कुलीरकुम्भालिनवांशयुक्ते चंद्रे समांदौ यदि गुल्मरोगी ॥ चंद्रे मुखे तद्भवनांशयुक्ते पापान्विते स्याद्द्विजकंठरोगी ॥ ३७ ॥ चंद्रे

सपापे फणिनाथयुक्ते रिष्फे शुभे रन्ध्रगते तथापि ॥ उन्मादभाक्
तत्र सरोषता च जातस्तु नित्यं कलहप्रियः स्यात् ॥ ३८ ॥

कर्क कुंभ वृश्चिकांशका चंद्रमा राहु केतु सहित होवै तो (गुल्म) पेटमें गोलेका रोग होवै यदि वैसाही चंद्रमा चतुर्थ होवै और पापयुक्त होवै तो दांत तथा कंठमें रोग होताहै ॥ ३७ ॥ चंद्रमा पापयुक्त राहु सहित बारहवें होवै अथवा चंद्रमा सपाप और १२ वें ८ वेमें शुभग्रह होवें तो मनुष्य उन्मादी (बावला) होवै और क्रोधी एवं नित्य कलहको प्यारा माननेवाला होवै ॥ ३८ ॥

चन्द्रे तु गोकर्कटराशियुक्ते पापान्विते तद्विपरीतयुक्ते ॥ उन्म-
ण्डलस्थौ शशिभौमसंज्ञौ पापान्वितौ सौम्यदृशा विहीनौ॥३९॥
हृच्छूलभाग्जातनरस्तु नित्यं तथैव तौ सप्तमराशियुक्तौ ॥ केन्द्रे
शनौ जन्मनि येन दृष्टे जीवे शशांके यदि वा दिनेशे ॥ ४० ॥
विलग्नगे स्याद्यदि भाग्यहीनः प्राप्तार्थचोरो मुनयो वदंति॥४१॥

वृष कर्कका चंद्रमा पाप एवं शत्रुयुत होवै वा चंद्रमा मंगल अस्तंगत पापयुक्त तथा शुभदृष्टिवर्जित होवैं ॥ ३९ ॥ तो हृदयमें शूल रहे यदि वैसेही चंद्रमा मंगल सप्तमस्थानमें हों तो भी वही फल मनुष्यको नित्य होगा शनि केंद्रमें बैठकर लग्नगत बृहस्पति वा चंद्रमा यद्वा सूर्यको देखे ॥ ४० ॥ तो मनुष्य भाग्यहीन होगा मिलेहुये धनकाभी चोर होवै ऐसा ज्योतिषज्ञ मुनि कहतेहैं ॥ ४१ ॥

व्यये शुभेशे यदि पापखेटे केन्द्रस्थिते ज्ञानधनादिहीनः ॥
परान्नभुग्दुःखितदेहभाक् स्याच्छुभैर्न दृष्टे कलहप्रियो वा॥४२॥
केन्द्रे गुरौ तज्जनकेन काले न कर्मवेदोक्तमथास्ति नास्ति ॥
पितुः सुतो वा यदि वा न कुर्यादूर्ध्वं तु तत्कर्म शुभैर्विहीने॥४३॥

नवमेश यदि बारहवें होवै पापग्रह केन्द्रमें होवै तो ज्ञान धन आदिसे हीन रहे उसपर शुभग्रह दृष्टिभी न होवै तो पराया अन्न खानेवाला दुःखित देह अथवा कलहको प्यारा माननेवाला होवै ॥ ४२ ॥ बृहस्पति केन्द्रमें होवै तो उसके पिताने समयपर वेदोक्तकर्म (संस्कार) न किये होंगे अर्थात् व्रात्य होगा अथवा पुत्र पिताका ऊर्ध्वकर्म न करे ऐसा फल तब होगा जब बृहस्पति शुभग्रह दृष्टि योगरहित हो ॥ ४३ ॥

केन्द्रे शशांके क्षितिसूनुयुक्ते रन्ध्रस्थितो वा यदि कश्चिदस्ति ॥
संवाहनाद्भीतिमुशंति तज्ज्ञाः सुखस्थिते क्षीणनिशाकरे तु ॥४४॥

रवौ सुखे पापदृशा समेते देहोष्णतां सौख्यमथाहुरार्याः ॥ रवेः
शशांके नवमस्थिते तु जले मृतिस्तस्य पितुश्च वाच्या ॥ ४९ ॥

केन्द्रमें चंद्रमा मंगल सहित हो अथवा अष्टममें हो यद्वा क्षीण चंद्रमा चौथे होवै और अष्टम भावमें भी कोइ ग्रह होवै तो ज्योतिषज्ञ वाहनसे भय कहतेहैं ॥ ४४ ॥ सूर्य चतुर्थ स्थानमें पापदृष्ट होवै तो शरीर गरम रहे तथा श्रेष्ठलोग पित्तधातु प्रबल रहनेसे नीरोग सुखी भी कहतेहैं सूर्यसे चन्द्रमा नवमस्थानमें होवै तो उसके पिताकी मृत्यु जलमें कहनी ॥४५॥

पापेक्षितौ चंद्ररवी झषस्थौ जले मृतिस्तस्य पितुश्च वाच्या ॥
कुजाहियुक्ते दिवसेशपुत्रे सुखे शनौ वा भयमस्य वाच्यम्॥४६॥
नीचे भृगौ धर्मगते सपापे द्विजप्रहर्ता यदि पापदृष्टे॥ विकर्णता-
मेति फणीन्द्रयुक्ते माने तदा भौमयुते शिशुघ्नः ॥ ४७ ॥

चन्द्रमा सूर्य मीन राशिमें पापदृष्ट हों तो उसके पिताकी मृत्यु जलमें कहनी यदि शनि मंगल राहुसे युक्त होवै अथवा शनि चौथे होवै तो जातकको जलकी भय कहनी ॥४६॥ धर्म स्थानमें नीचराशिका शुक्र पापयुक्त होवै उसे पापग्रह देखे तो ब्राह्मणको मारनेवाला होवै यदि राहुसहित होवै तो कानोंसे रहित होवै यदि दशमस्थानमें मंगलयुक्त होवै तो बालकोंको मारने वाला होवै ॥ ४७ ॥

नीचे गुरौ वासरनायके वा केन्द्रस्थिते पापयुते शिशुघ्नः ॥ केंद्रे
सपापे शुभदृष्टियुक्ते रन्ध्रे भृगौ गोमृगजातिहन्ता ॥ ४८ ॥ श-
शांकसौम्यौ दशमस्थितौ वा पापेक्षितौ पापसमागमौ वा ॥
नीचांशगौ सौम्यदृशा विहीनौ जातस्तु नित्यं खलु पक्षिहंता॥४९॥

बृहस्पति अथवा सूर्य नीचराशिका केन्द्रमें पापयुक्त होवै तो बालघाती होवै शुक्र केंद्रमें पापयुक्त शुभदृष्ट होवै अथवा अष्टममें होवै तो गवय आदि मृगजातिका मारनेवाला होवै ॥ ४८ ॥ चंद्रमा बुध पापयुक्त वा दृष्ट दशमस्थानमें होवैं अथवा नीचांशकोंमें शुभदृष्टि रहित होवै तो निश्चय सर्वदा पक्षियोंका मारनेवाला होवै ॥ ४९ ॥

रन्ध्रे गुरौ नीचसमन्विते वा गलांतमृत्युं प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥चन्द्रे
व्यये वा मदने सशुक्रे जातस्य वामं नयनं हिनस्ति ॥ ५० ॥
रन्ध्रे त्रिकोणे दिवसाधिनाथे जातस्य गेहे शिथिलीभयं स्यात् ॥
तस्मिञ्छनौ वा यदि वा सकेतौ पतेत्तदानीं कृकलासजातिः ॥५१॥

अष्टम स्थानमें बृहस्पति नीचका होवै तो गला घुटकर मरण होना ज्योतिषज्ञ कहतेहैं चंद्रमा व्ययभावमें शुक्रसहित हो अथवा सप्तममें होवै तो मनुष्यका वामनेत्र हीन होवै

॥ ५० ॥ चंद्रमा त्रिकोणमें सूर्यसहित होवै तो मनुष्यके घरमें शिथिली (जहरीले कीट) की भये होवै उक्तस्थानमें केतुसहित शनि होवै तो उसके घरमें कृकलास (छिपकलीकी जातिविशेष) पडे ॥ ५१ ॥

कौल्यादिपातित्यमुशंति तज्ज्ञास्तत्रैव राहौ तु कुजे तु कौर्मम् ॥
तत्र स्थिते सोमसुते तु दंशं शुक्रे तु निद्रायतनं स्त्रियाश्च ॥५२॥
तत्रैव मंदे पतनं नराणां बलाबलं तत्र वदेद्विचिन्त्य ॥ ५३ ॥

उक्तस्थानमें राहु होवै तो उसके घरमें कुत्ता अथवा शूकरसे अपवित्रता होना कहते हैं यदि तहां मंगल होवै तो कछुवे पडें बुध होवै तो दंश (वनमक्षिका) पडे । शुक्र होवै तो स्त्रियोंके शयन आदिसे मलिनता रहे ॥ ५२ ॥ तहां शनि होवै तो मनुष्योंके शयन आदिसे मलिनता होवै इसमें बलाबल देखके बुद्धिबलसे न्यूनाधिक्य यद्वा मलिनता पतितता आदि कहनी ॥ ५३ ॥

वंध्यास्त्रियाः संगमनं रवौ स्यान्मंदे शशांके भवने समानम् ॥
रजस्वलासंगमनं कुजे तु वंध्यांगनासंगमनं च वाच्यम् ॥५४॥
बुधे तु वेश्यागमनं मदस्थे हीनांगनासंगमनं वणिग्जा ॥ मदे
गुरौ ब्राह्मणभार्यया वा भृगौ तु गर्भान्वितभामिनी वा ॥ ५५ ॥
सपुष्पिणी जातिविहीनिका वा गम्या भवेत्तेन शनिध्वजाद्यैः ॥
राहौ मदे गर्भिणिसंगमः स्यात्कृष्णा च कुब्जा शशिना वदंति ॥५६॥

सप्तममें सूर्य होवै तो वांझ स्त्रीका गमन करे चन्द्रमा वा चंद्रमाकी राशि सप्तममें होवै तो समान स्त्रीका गमन करे मंगल होवै तो रजस्वलाका गमन करे तथा वांझ स्त्रीका संगमभी कहना ॥ ५४ ॥ बुध होवै तो वेश्या तथा हीन जातिकी स्त्री यद्वा वणिक् स्त्रीका गमन करे गुरु होवै तो ब्राह्मणकी स्त्रीसे, शुक्रसे गर्भवती स्त्रीका गमन करे ॥ ५५ ॥ शनि केतु आदिसे रजस्वला वा जातिसे हीन हुई स्त्रीका गमन करे, राहु सप्तम होवै तो गर्भिणी चंद्रमासे कृष्णकुवरी आदिसे गमन करे ये फल केवल भावजन्य नहीं है उक्तग्रह नीच शत्रु आदिमें हों तब ये फलहैं अन्यथा होनेमें नहीं हैं ॥ ५६ ॥

सुखस्थितैरीदृशसंगमस्तु वाच्यस्तदा व्योमचरैर्विशेषात् ॥ सूर्या-
दिभिर्व्योमचरैः सुखस्थैर्वाच्या तयोः संगमनस्य शाला ॥ ५७ ॥
वनं गृहं शून्यगृहं विहारस्थानं तु देवालयतोयभूमिः ॥ हरीशज-
स्थानमतीवदुर्गस्थानं तु वा निर्जिततोयभूमिः ॥ ५८ ॥

उक्त संगम सुखस्थानगत ग्रहोंसे भी कहना विशेषतः चतुर्थस्थानगत ग्रहोंसे मैथुनस्थान कहना जैसे सूर्यसे वनमें चन्द्रमासे घरमें मंगलसे शूने घरमें बुधसे विहारस्थान बृहस्पतिसे देवतालय जलाशयभूमि शुक्रसे विष्णु वा शिवस्थान शनिसे दुर्ग (किला) वा जीतीहुई जलप्राय भूमि मैथुनस्थान कहना ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

केन्द्रे चतुष्के यदि पापयुक्ते जातः पशूनां मिथुनं समेति ॥
केन्द्रत्रिके पापयुते यदि स्यात्पश्वादिवन्मैथुनमेति जातः॥५९॥
कृशस्तना भूमिसुते मदस्थे लंबस्तना मंदफणींद्रकेतौ ॥ काठि-
न्यतश्चोर्ध्वकुचा रवौ स्याच्छेषग्रहैरुत्तमकोमलांगी ॥ ६० ॥

चारों केंद्रोंमें पापग्रह होवें तो मनुष्य पशूके साथ मैथुनकरे यदि तीन केन्द्रोंमें होवें तो पशुके समान मैथुन करे ॥ ५९ ॥ मंगल सप्तम होवै तो स्त्री कृश स्तनवाली मिले शनि राहु केतुसे लम्बे स्तनवाली सूर्यसे कडे और ऊंचे स्तन अन्यग्रह चंद्रमा बुध बृहस्पति शुक्रसे कोमलांगी उत्तम स्तनादि अंगोंवाली स्त्री होवे ॥ ६० ॥

चन्द्रे कृशांगे परिजीर्णगेहं तस्मिन्बलिष्ठे सुदृढं नवीनम् ॥
दुःस्थे यदि स्याच्छनिराहुकेतौ दाहेन तप्तं नियमेन वाच्यम् ॥
॥६१॥धनायपौ लग्नपतेस्तु मित्रे धनं तदीयं द्विजदेवतार्थम्॥६२॥

चंद्रमा क्षीण होवै तो जीर्ण घर होवै चन्द्रमा बलवान् होनेमें दृढ एवं नवीन होताहै यदि शनि राहु केतु दुष्टस्थानोंमें होवैं तो अग्नि आदि दाहक वस्तुसे घर संतप्त नियमसे कहना ॥ ६१ ॥ २ । ११ भावोंके स्वामी लग्नेशके मित्र होवैं तो उसका धन देवता एवं ब्राह्मणोंके काम आवै ॥ ६२ ॥

इति चिंतामणौ प्रोक्तो राजयोगादिनिर्णयः ॥ जातभंगादिकं चैव व्यङ्कटेशेन धीमता ॥ ६३ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिन्तामणौ राजयोगजातभङ्गादिनिरूपणो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

इतना सर्वार्थचिंतामणिमे राजयोगादि तथा जातकके राजयोग भंगादिका निर्णय धीमान् व्यंकटेशनें कहा ॥ ६३ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिंतामणौ:माहीधरभाषाटीकायां राजयोगजातभङ्गादि-
निरूपणाध्यायो नवमः ॥ ९ ॥

दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अथारिष्टाध्यायः ।

केचिद्योगं प्रशंसन्ति दशां केचिद्वदन्ति हि ॥ तद्विना चायुषं ज्ञातुं न शक्यं तु मनीषिभिः ॥१॥ त्रिविधाश्चायुषां योगाः स्वल्पायुर्मध्यमोत्तमाः ॥ द्वात्रिंशत्पूर्वमल्पं स्यात्तदूर्ध्वं मध्यमं भवेत्॥ २ ॥ आसप्ततेस्तदूर्ध्वं तु दीर्घायुरिति संमतम् ॥ उत्तमायुः शतादूर्ध्वमिह शंसन्ति तद्विदः ॥ ३ ॥

आयुके लिये कोई तो योगकी प्रशंसा करतेहैं कोई दशा कहतेहैं इनके विना आयु जाननेको मुनियोंका सामर्थ्य नहीं है ॥ १ ॥ इनमें पहिले योगोंका विचार कहतेहैं कि आयुके योग तीन प्रकारके होतेहैं अल्प मध्यम और उत्तम ३२ वर्षसे पूर्व अल्पायु इसके ऊपर ७० पर्यंत मध्यमायु इसके ऊपर दीर्घायु कही है सौसे ऊपर ज्योतिषज्ञ लोक उत्तमायु कहते हैं ॥ २ ॥ ३ ॥

आद्वादशाब्दाज्जंतूनामायुर्ज्ञातुं न शक्यते ॥ जपहोमचिकित्साद्यैर्बालरक्षां तु कारयेत् ॥ ४ ॥ पित्रोर्दोषैर्मृताः केचित्केचिद्बालग्रहैरपि ॥ अपरे रिष्टयोगाच्च त्रिविधा बालमृत्यवः ॥ ५ ॥ जन्मतः प्रबलेनैव बालानां पुष्टिवर्द्धनम् ॥ कथयेदेव शेषं तु तत्तद्योगानुरूपतः ॥ ६ ॥

दशा आदिसे आयु १२ वर्षसे भीतर ज्ञात नहीं होसकती इस अवस्थामें जप हवन (चिकित्सा) वैद्यकसे बालरक्षा करनी चाहिये ॥ ४ ॥ किसी बालककी मृत्यु माताके रोग असंयम. अन्याय पाप आदिसे होतीहै किसीकी बालग्रह पूतना छल छिद्र आदिसे किसीकी बाल्यारिष्टयोगोंसे भी मृत्यु होती है ॥ ५ ॥ जन्मसे प्रबल योगोंके अनुसार बालोंके पुष्टि बढानेके उपाय कहने ॥ ६ ॥

अल्पायुर्लग्नपे भानोः शत्रौ मध्ये तु मध्यमम्॥ मित्रे लग्नेश्वरे तस्य दीर्घमायुरुदाहृतम् ॥ ७ ॥ अल्पायुर्योगजातस्य विपद्दाये मृतिम्वदेत् ॥ जातस्य मध्यमे योगे प्रत्यरौ तु मृतिंवदेत् ॥ ८ ॥

दीर्घायुर्योगजातानां वधभे तु मृतिं वदेत् ॥ जातस्य मध्यमे योगे प्रत्येकं त्रिविधं भवेत् ॥ ९ ॥

जन्मलग्नेश सूर्यका शत्रु होवै तो अल्पायु, सम होवै तो मध्यमायु और मित्र होवै तो दीर्घायु कहीहै ॥ ७ ॥ जिसकी अल्पायु पाई गयी है उसकी मृत्यु विपत् नक्षत्रकी दशामें कहनी मध्यायु योगमें प्रत्यरिके ॥ ८ ॥ और दीर्घायु उक्त योगवालोंकी वधताराके पाकमें मृत्यु होतीहै उक्त तीन योगोंमें प्रत्येक ताराके पाककालमें मृत्यु होतीहै ॥ ९ ॥

चरस्थिरेति सूत्रेण दीर्घमध्याल्पकायुषः ॥ तयोरन्यतमं ज्ञात्वा चायुर्ज्ञानं प्रचक्षते ॥ १० ॥ अल्पायुरल्पमध्यं तु पूर्णायुस्त्रिविधं स्मृतम्॥मध्यमादल्पमध्यं तु पूर्णायुस्त्रिविधं भवेत् ॥ ११ ॥ दीर्घायुषोल्पमध्यं तु पूर्णायुस्त्रिविधं भवेत् ॥ एवं नवविधः प्रोक्तश्चायुषां तु विनिर्णयः ॥ १२ ॥

सूत्रपठित जो चर स्थिर द्विस्वभाव हैं इनके अनुसार दीर्घ मध्य और अल्प आयु होती है इनमेंसे यहां किसकी प्राप्ति है उसका निश्चय करके आयुका ज्ञान कहते हैं ॥ १० ॥ इन अल्प मध्य दीर्घ आयुके ३ । ३ भेद हैं. कि अल्पायु अल्प मध्य और दीर्घ भेदसे तीन प्रकारकी है, मध्यायु अल्प मध्य पूर्णसे दीर्घायु अल्पमध्य पूर्ण भेदसे ३ प्रकारकी है इस प्रकार आयुका निर्णय नौ ९ प्रकारका है प्रत्येक आयुके वर्ष जो पूर्व कहे हैं उनमें भी चर स्थित द्विस्वभाव भेदोंसे प्रत्येकके तीन तीन भाग होतेहैं ॥ ११ ॥ १२ ॥

पञ्चम्यारदशा मृत्युं दद्यात्षष्ठीगुरोर्दशा॥शनेश्चतुर्थीमृत्युः स्याद्दशाराहोश्च सप्तमी ॥ १३ ॥ विपत्पाकदशा कष्टा प्रत्यरीशदशा तथा॥वधभेशदशा कष्टा पापा स्यादशुभेक्षिता ॥ १४ ॥ नीचारातिविमूढस्य-विपत्प्रत्यारिनैधनाः ॥ दशा दद्युर्मृतिं तस्य पापैर्युक्ता विशेषतः॥ १५ ॥

उक्त दशाओंमें मंगलकी दशा पंचमीमें गुरुकी षष्ठीमें शनिकी चतुर्थीमें राहुकी सप्तमीमें मृत्यु देतीहै ॥ १३ ॥ विपत्ताराकी पाकदशा कष्ट देतीहै ऐसे ही प्रत्यरिके स्वामीकी और वध नक्षत्र स्वामिकी भी कष्ट देतीहै यदि पापदृष्ट होवै ॥ १४ ॥ नीचगत शत्रुगत अस्तंगतकी विपत् प्रत्यरि निधनदशा मृत्यु देतीहै पापयुक्त होनेसे विशेषफल करतीहै ॥ १५ ॥

राशिसंधिषु ये जातास्ते बाला मृतजीवनाः ॥पापदृष्टा युता वापि निःसंशयमृतिः स्मृता ॥ १६ ॥ गंडांतेषूद्भवो मर्त्यः पितृमातृबलात्ततः ॥ यदि जीवेत्स्वर्गपालो गजवाजिसमन्वितः ॥ १७ ॥

राशिसंधिमें जिनबालकोंका जन्म होताहै वे मृतप्राय रहतेहैं यदि पापग्रहोंसे युक्त दृष्ट होवें तो निःसंदेह मृत्यु होतीहै ॥ १६ ॥ जो मनुष्य गंडांतमें उत्पन्न होताहै वह माता पिता के बल अर्थात् शांत्युपचारादिसे बालक बच जावे तो स्वर्गकाभी पालक अर्थात् बडा पराक्रमी हाथी घोडे सहित बडा ऐश्वर्ययुक्त होताहै ॥ १७ ॥

तृतीयगौ भानुनिशाकरौ वा क्रूरर्क्षगौ क्रूरनिरीक्षितौ वा॥व्याधिं नरस्यापि वदंति तज्ज्ञाः स्त्रीवर्षमात्रं त्वतिदुर्लभं तत् ॥ १८ ॥ चन्द्रात्स्मरे वासरनाथभौमौ कुजोदये वा मरणं दशाहात् ॥ १९ ॥

सूर्य चंद्रमा तीसरे अथवा क्रूर राशिमें वा क्रूर ग्रहोंसे दृष्ट होवें तो ज्योतिषज्ञ उस मनुष्यको रोगयुक्त रहना कहतेहैं यदि कन्या होवे तो उसका जीवित रहना एक वर्षभी दुर्लभ होवै ॥ १८ ॥ यदि चन्द्रसे सप्तम सूर्य मंगल होवें अथवा चंद्रमासे सप्तम सूर्य और लग्नमें मंगळ होवे तो दश दिनमें मरण होवे ॥ १९ ॥

उद्यद्द्रेष्काणजा मित्रे यस्य स्याद्दारुणो ग्रहः ॥ क्षीणचंद्रे विलग्नस्थे सद्यो हरति जीवितम् ॥ २० ॥ विलग्नादिपतिर्नीचे निधने वार्कसंयुते ॥ कृच्छ्रेण जीवितं विद्यात्मृतप्रायो भविष्यति ॥ ॥२१॥आपोक्लिमे स्थिताः सर्वे ग्रहा ऽलविवर्जिताः॥ षण्मासं वा द्विमासं वा तस्यायुः समुदाहृतम् ॥ २२ ॥

सप्तमभावमें उद्यदायुध (मेषका प्रथम, मिथुनका दूसरा, सिंहका प्रथम, तुलाका दूसरा, कुंभका प्रथम,) द्रेष्काणका पापग्रह हो और चन्द्रमा लग्नमें होवे तो तत्काल बालक मरजावे ॥ २० ॥ लग्नेश नीचका होवे अथवा सूर्यके साथ अष्टममें होवे तो बडी कठिनतासे बचे मरेके सदृश रहे ॥ २१ ॥ आपोक्लिम ३ । ६ । ९ । १२ भावोंमें सभी ग्रह बलहीन होवें तो ६ महीने अथवा २ ही महीने उसकी आयु होवे ॥ २२ ॥

केतोरुदयः पूर्वे पश्चादुल्काग्निपवननिर्घाताः ॥ रौद्रे सति मौहूर्त्ते प्राणैः संत्यज्यते जंतुः ॥२३ ॥ ग्रहणं परिवेषकाले जातः पापान्विते विलग्नस्थे ॥ लग्नेशे बलहीने जीवति पक्षत्रयं त्रिमासं वा ॥ २४ ॥ अंशाधिपतिर्जन्मपतिर्लग्नपतिश्चास्तमुपगता यस्य॥जन्मावसानमरणं तस्य भवेत्कतिपयाहेन ॥ २५ ॥ संधिचतुष्टयकाले जातो मृत्युं समादिशेत्तज्ज्ञः॥ पापयुते वा दृष्टे शीघ्रं सौम्यैरदृष्टयुते ॥ २६ ॥

जिसके जन्ममें पूर्वमें केतुका उदय, पश्चिममें उल्कापात अग्नि वायुके निर्घात शब्द हो और रौद्र मुहूर्तमें जन्म होवै तो शीघ्रही बालक मरजावै ॥ २३ ॥ जिसका जन्म ग्रहण वा परिवेष (शौंडल) के समयमें हो लग्नमें पापग्रह लग्नेश बलरहित होवै तो २ पक्षमें वा २ महीनेमें बालक मरे ॥ २४ ॥ लग्नेश अंशेश राशीश जिसके अस्तंगत होवैं तो कुछही दिनोंमें मरजावै ॥ २५ ॥ प्रातः सायं अर्धरात्रि और मध्यान्ह इन चार संधियोंके समयमें जिसका जन्म होवै लग्न चंद्रमा पापयुक्त हों और शुभयुत दृष्ट न हों तो शीघ्र मृत्यु होवै ॥ २६ ॥

राहौ केन्द्रे पापयुक्तोक्षिते वा क्षिप्रं नाशं याति सौम्यैरदृष्टे ॥ पापः केन्द्रे वार्किलग्ने त्रिकोणे सौम्यैः षष्ठे चाष्टमेंत्ये च बालः ॥ ॥ २७ ॥ जातः क्षीणे शीतगौ लग्नसंस्थे पापैर्दृष्टे नाशमाशु प्रयाति ॥ उच्चक्षेत्रं मेषराशिं च हित्वा राहुयुक्तस्तेष्वपि प्राप्तनाशः ॥ २८ ॥

राहु केन्द्रमें पापयुक्त वा दृष्ट होवै शुभग्रह उसे न देखें तो शीघ्र बालक मरजावै अथवा पापग्रह केंद्रमें शनि लग्न वा त्रिकोणमें और पापग्रह ६ । ८ । १२ भावोंमें होवै तो शीघ्र मरे ॥२७॥ क्षीण चंद्रमा लग्नमें पापदृष्ट होवै तो शीघ्र बालकका नाश होवै इन्हीं स्थानोंमें चंद्रमा मेष वृष कर्कसे अन्य राशियोंका राहुयुक्त होवै तौभी वही फल करता है ॥ २८ ॥

लग्नात्स्वांत्यौ पापयुक्तौ यदि स्तः सप्तस्वांत्यौ वा विनश्येत्क्षणेन ॥ लग्नाद्बालश्चाष्टमे पापचारैः सोमे क्षीणे त्वष्टमाब्दं च जीवेत् ॥ २९ ॥ केन्द्रे चन्द्रात्पापयुक्तैरसौम्यैः स्वर्गं याति प्रोच्यते वत्सरेण ॥ जन्माधीशे लग्नगे क्रूरयुक्ते पश्यत्यार्किश्चाष्टमे जीववर्जे ॥ ३० ॥

लग्नसे २ । १२ स्थान पापयुक्त होवैं अथवा सप्तमसे २ । १२ अर्थात् ६ । ८ भावोंमें पापग्रह होवैं तो बालक तत्काल मरे लग्नसे ५।८ में पापग्रहयुक्त क्षीण चन्द्रमा होवै तो बालक ८ वर्ष जीवै ॥ २९ ॥ चंद्रमासे केंद्रमें पापग्रह हों शुभग्रह न हों तो एकवर्षमें स्वर्ग चला जावै, लग्नेश लग्नमें क्रूरयुक्त शनिसे दृष्ट होवै तो ८ वर्ष जीवै, परन्तु तहां बृहस्पति होवै तो यह फल नहीं होता ॥ ३० ॥

षष्ठे वष द्वादशे वाष्टमे वा संधौ राशेर्जातको मृत्युमेति ॥ षष्ठे रंध्रे शीतरश्मिश्च यस्य क्षीणे रिष्फे पापयुक्तेऽथ वापि ॥

सौम्यैर्दृष्टे त्वष्टमाब्दं च जीवेत्पापैः सौम्यैर्मिश्रितैस्तद्दलाख्यम् ॥३१॥जीवे विलग्ने मिथुने तुलायां शुक्रेण शुक्रे शशिसूनुनापि ॥ ३२ ॥ पापैर्दृष्टे मृत्युराशिस्थितैर्वा जीवेद्वर्षं चाष्टमं चैव बालः ॥ ३३ ॥

(राशिसंधि) गंडांतमें जन्महो और ६ । ८ । १२ भावमें पापयुक्त चंद्रमा होवै तो बालक मरजावै यदि उसे शुभग्रह देखे तो ८ वर्ष बचे यदि पाप शुभ दोनों देखें तो ८ का आधा ४ वर्ष जीवै ॥ ३१ ॥ मिथुन तुलाका बृहस्पति लग्नमें शुक्र वा बुधसेभी युक्त होवै ॥ ३२ ॥ और उसे पापग्रह देखे अथवा अष्टमभावमें होवै तो बालक आठवर्ष जीवै॥ ३३॥

लग्ने क्षीणे शशिनि निधनं रन्ध्रकेन्द्रेषु पापैः पापांतःस्थैर्निधनहिबुकद्यूनसंस्थे च चन्द्रे ॥ एवं लग्ने भवति मदनाच्छिद्रसंस्थैश्च पापैर्मात्रा सार्द्धं यदि न च शुभैर्वीक्षितः शक्तिमद्भिः ॥ ३४ ॥ राहुग्रस्ते शीतरश्मौ विलग्ने क्रूरैर्युक्ते चाष्टमे भूमिपुत्रे ॥ मात्रासार्द्धं चन्द्रवद्भास्करेपि शस्त्रैः पातेनाशु मृत्युं प्रयाति ॥ ३५ ॥

लग्नमें क्षीण चंद्रमा अष्टमभाव तथा केंद्रोंमें पापग्रह होवैं तो बालक मरे ८ । ४ । ७ भावोंमें चंद्रमा पापग्रहोंके बीचमें होवै तौभी वहीफल होगा, ऐसे लग्नमें पापांतस्थ चंद्रमा ७ । ८ भावोंमें पापग्रह होवैं तो मातासहित बालक मरे, परन्तु इनको यदि बलवान् शुभग्रह न देखें तब यह फल होगा ॥ ३४ ॥ ग्रहणसमयका चंद्रमा लग्नमें पापयुक्त अष्टममें मंगल होवै तो मातासहित बालक मरे, ऐसेही चंद्रमाके तरह सूर्य होवै तो शस्त्रसे वा गिरनेसे शीघ्र मरे ॥ ३५ ॥

अस्तंगते दिनपतौ रविजे विलग्ने भौमेऽथ वा निधनगे व्रजति तृतीयात् ॥ एवं स्थितेऽपि हिमगावशुभैरदृष्टे राहुग्रहे च निधनं भवतीह चाष्टौ ॥ ३६ ॥ बृहस्पतिर्भौमगृहेऽष्टमस्थः सूर्येन्दुभौमार्कजदृष्टमूर्तिः ॥ अब्दैस्त्रिभिर्भार्गवदृष्टिहीनो लोकान्तरं प्राप- याति प्रसूतम् ॥ ३७ ॥

सप्तम सूर्य लग्नमें शनि अथवा अष्टममें मंगल होवै तो तीसरे वर्ष बालक मरे ऐसे योगमें चन्द्रमापर पापग्रह दृष्टि न हो राहुपरभी पापदृष्टि न होवै तो आठ वर्षमें मृत्यु होतीहै ॥ ३६ ॥ बृहस्पति भौमराशि१ । ८ का अष्टम भावमें हो उसे सूर्य चन्द्रमा मंगल शनि देखें शुक्रकी दृष्टि उसपर न होवै तो बालकको तीन वर्षमें लोकान्तर भेजताहै ॥ ३७ ॥

वक्री शनिर्भौमगृहं प्रपन्नश्छिद्रे च षष्ठे च चतुष्टये वा ॥ कुजेन संप्राप्तबलेन दृष्टो वर्षद्वयं जीवयति प्रजातम् ॥ ३८ ॥ सौरे स्मरस्थे यदि वा विलग्ने जन्मस्थलग्ने शशिनि त्वलौ वा ॥ सौम्येषु केन्द्रोपगतेषु सद्यो जातस्य मृत्युर्यवनोपदिष्टः ॥३९॥ नीचस्थे देवपूज्ये तु भौमक्षेत्रगतेऽथ वा ॥ संधित्रयेपि जातस्तु मासान्मृत्युं प्रगच्छति ॥ ४० ॥

वक्रगतिवाला शनि मंगलकी राशिका छठे आठवैं वा केन्द्रस्थानमें होवै उसे बलवान् मंगल देखे तो बालकको दो वर्ष जीवित रखताहै ॥ ३८ ॥ शनि सप्तममें वा लग्नमें हो तथा जन्मलग्नमें अथवा वृश्चिकमें चन्द्रमा होवै और शुभ केन्द्रोंमें होवैं तो बालक तत्कालही मरे यह योग यवनाचार्यका कहाहै ॥ ३९ ॥ नीचका बृहस्पति हो अथवा मंगलके घर १ । ८ का हो तीन प्रकारकी राशि संधियोंमें किसीमें जन्म होवै तो एक महिनेमें मृत्यु होती है ॥ ४० ॥

क्षेत्रस्य सन्धौ तिथिराशिसंधौ एकत्रता तत्प्रसवस्त्रिधा स्यात् ॥ जातस्तु मृत्युं समुपैति सद्यः शुक्रेऽह्नि जीवेदिति नन्दिकोक्तम् ॥ ॥४१॥ षष्ठ्यां जातश्चार्कलग्ने कुजे वा गण्डान्ते वा मृत्युयोगेथ वापि ॥ भौमो हन्ति प्राणिनं तत्क्षणेन जीवेक्षितश्चेन्न भवेत्प्रजातः ॥ ४२ ॥ भौमोदये तद्दिवसे कृशेन्दौ होरास्वामी लग्नकेन्द्राद्बहिष्ठः ॥ जातो योसौ क्षिप्रमेवैति मृत्युं भौमः सौरोप्येवमेवं विधत्ते ॥ ४३ ॥

भावसंधि तिथिसंधि राशिसंधिमेंसे एक वा दो तीनके एक साथही आय पडनेमें प्रसव होवै तो बालककी मृत्यु होवै यदि उस दिन शुक्रवार होवै मृत्यु नहीं होगी यह नंदीश्वरका मत है ॥ ४१ ॥ षष्ठीमें जन्महो लग्नमें सूर्य वा मंगल होवै और तीन प्रकारमें से कोई गंडांत होवै अथवा मृत्युयोग होवै उस दिन मंगलवार होवै तो उसी क्षणमें मृत्यु होती है यदि बृहस्पतिकी दृष्टि होवै तो बालककी मृत्यु नहीं होगी ॥ ४२ ॥ मंगलवार हो मंगलही लग्नमें हो चंद्रमा क्षीण हो लग्नेश लग्न वा केंद्रोंसे बाहर होवै तो जो जन्मा है उसको मंगल शीघ्रही मृत्यु देताहै ऐसाही शनिभी करताहै ॥ ४३ ॥

सुतमदननवान्त्यलग्नरंध्रेष्वशुभयुतो मरणाय शीतरश्मिः ॥ भृगुसुतशशिपुत्रदेवपूज्यैर्यदि बलिभिर्न विलोकितो युतो वा ॥ ४४ ॥

पंचम सप्तम नवम द्वादश लग्न अष्टमभावमें चंद्रमा पापयुक्त होवै तो मृत्यु देता है यदि शुक्र बुध बृहस्पतिसे दृष्ट वा युक्त न हो इनसे युक्त दृष्ट होनेमें अरिष्ट नहीं होता ॥ ४४ ॥

होरास्ताष्टमगेष्वसत्सु हिमगौ क्षीणे तु जातः शिशुः स्वर्गं गच्छति सौम्यकेन्द्ररहितो जीवो न चेद्वीक्षते ॥ लग्नांत्याष्टमधर्मभेषु सहिताश्चंद्रार्कभौमार्कजाः क्षिप्रं गच्छति चांतकं सुरपतेर्मंत्री न चेद्वीक्षते ॥ ४५ ॥

पापयुक्त चन्द्रमा १ । ७ । ८ भावोंमें हो और क्षीण भी होवै तो ऐसेमें उत्पन्न हुआ बालक स्वर्ग जाता है यदि केन्द्रोंमें शुभग्रह न हों तथा चंद्रमाको बृहस्पति न देखे और १ । १२ । ८ । ९ भावोंमें चंद्रमा सूर्य मंगल शनि होवें इनको गुरु न देखै तो शीघ्र बालक मरता है ॥ ४५ ॥

लग्ने चन्द्रे भास्करे वा बलिष्ठे पापैः केन्द्रे नैधने च त्रिकोणे ॥ शुक्रः सूर्यः शीतगुश्चैकसंस्था नाशं गच्छेद्योगमवैति जातः॥४६॥ मेषे विंशतिभागे स्यान्मृत्युं दद्यान्निशाकरः ॥ एकविंशतिभागस्तु सिंहे तत्वैस्तु गोवृषे ॥ ४७ ॥

लग्न चंद्रमा अथवा सूर्य बलवान् होवे पापग्रह केंद्रमें हों अष्टम वा त्रिकोणमें शुक्र सूर्य चंद्रमा एकसाथ हों तो इस योगमें बालकका नाश होवै ॥ ४६ ॥ मेषके २० वीसवे अंश सिंहके २१ में वृषके २५ अंशमें चन्द्रमा बालको मृत्यु देताहै ॥ ४७ ॥

वृश्चिके च तथा चन्द्रस्त्रयोविंशतिभागकः ॥ द्वाविंशतिकुलीरे तु तुलायां वेदभागकः ॥ ४८ ॥ विंशतिर्मकरे चंद्रः कन्यायां प्रथमांशकः ॥ धनुरष्टादशो भागो मीने दशमभागयुक् ॥ ४९ ॥ द्वाविंशतिर्नृयुग्मे तु चन्द्रोप्येवं मृतिप्रदः॥ कुंभे पंचेंदुभागे च मृत्युं दद्यात्तथैव च ॥ ५० ॥ ये ये निशाकरांशास्तु मृत्युभागव्यवस्थिताः ॥ तावद्भिर्वत्सरैर्जातो मृत्युमेति न संशयः ॥ ५१ ॥ लग्नजन्मपयोर्यस्तु शत्रुर्लग्नगतः शुभः ॥ करोति मृत्युं जातस्य स्वस्य धातोः प्रभावतः ॥ ५२ ॥

तैसेही वृश्चिकके २३ वें अंशमें कर्कके २२ में तुलाके ४ में ॥ ४८ ॥ मकरके २० में कन्याके १ में धनके १८ में मीनके १० में ॥ ४९ ॥ मिथुनके २२ में चंद्रमा मृत्यु देने-

वाला होताहै तथा कुंभके १५ वें भी मृत्यु करताहै ॥ ५० ॥ जो जो चंद्रमाके अंश मृत्युभागमें हैं उतने वर्षोंमें मनुष्य निस्संदेह मरण पाता है ॥ ५१ ॥ लग्नेश वा चंद्रराशिका शत्रुग्रह लग्नमें शुभग्रहभी होवै तोभी अपने पूर्वोक्त धातुदोषसे बालककी मृत्युकरताहै ॥ ५२ ॥

रन्ध्रे धरासूनुदिनेशसौरा जातस्तु मृत्युं समुपैति मासात् ॥ केतुश्च यस्मिन्नुदितेत्र जातो मासद्वयेनैव यमं प्रयाति ॥ ५३ ॥ भूपालयोगा यवनैः प्रदिष्टा राज्ञः कुले जातनरे धरेशाः ॥ तेतिप्रयोगास्तु तदन्यजाताः सद्यो यमं यांति नरास्तथैवम् ॥ ५४ ॥ भानुर्नभस्थो यदि पापदृष्टो धरासुतर्क्षे शशिनश्च गेहे ॥ जातस्तु मृत्युं समुपैति शीघ्रं शुभैर्न दृष्टो वियुतोपि चैवम् ॥ ५५ ॥

अष्टम स्थानमें मंगल सूर्य शनि होवैं तो एक महीनेमें बालक मरे जिस लग्नमें केतुका उदय है उसमें जन्म होवै तो दो महीनेमें मरे ॥ ५३ ॥ जो राजयोग यवनाचार्यने कहेहैं उनमें राजकुलका बालक तो राजा होता है ऐसे योगोंमें अन्यका बालक जन्में तो अतिप्रयोग (असंभव) होनेसे वह बालक तत्काल यमको प्राप्त होता है ॥ ५४ ॥ यदि पापदृष्ट सूर्य दशम भावमें मंगल वा चंद्रमाकी राशिका होवै शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट न होवै तो शीघ्र बालक मरे ॥ ५५ ॥

लग्ने ये द्रेष्काणा निरर्गला हि विहंगपाशधरसंज्ञाः ॥ मरणाय सप्तवर्षैः क्रूरयुताश्चापि संदृष्टाः ॥ ५६ ॥ रविचंद्रभौमगुरुभिः कुजगुरुसौरेन्दुभिस्तथैकस्थैः ॥ रविशनिभौमशशांकैर्मरणं खलु पञ्चभिर्वर्षैः ॥ ५७ ॥ रविणा युक्तः शशिजः सौम्यैर्दृष्टो विनाशयति नूनम् ॥ एकादशभिर्वर्षैर्देवांकेपि स्थितं जातम् ॥ ५८ ॥

जो लग्नमें पक्षि सर्प पाशधर द्रेष्काण क्रूरग्रहोंसे युक्त दृष्ट होवैं तो सात वर्षमें मृत्यु देते हैं ॥ ५६ ॥ सूर्य चंद्रमा मंगल गुरु अथवा मंगल गुरु सूर्य चंद्रमा यद्वा सूर्य शनि मंगल चंद्रमा एकस्थानमें होवें तो निश्चय पांचवर्षमें मृत्यु देतेहैं ॥ ५७ ॥ सूर्यसे युक्त बुध शुभग्रहोंसे दृष्ट होवै तो बालक देवताके गोदमेंभी बैठा हो तौभी ग्यारहवें वर्षमें मारही देताहै यह योग अन्यग्रंथोंमें नहीं देखा गयाहै ॥ ५८ ॥

लग्ने रविशनिभौमैः शुक्रगृहे वा शशी क्षीणः ॥ दृष्टो न देवगुरुणा सप्तभिरब्दैर्विनाशयति ॥ ५९ ॥ केन्द्रे रविमुषितततनुः क्षितिजो मन्दावलोकितोथ युतः ॥ वर्षचतुष्केणाशु मारयति

किमत्र गणितेन ॥ ६० ॥ लग्नाधिपतेश्चन्द्रो मरणपदस्थोपि कृष्णतां याति॥क्रूरैः सकलैर्दृष्टो न शुभैर्वर्षैस्त्रिभिस्तु मारयति ६१॥

लग्नमें सूर्य, शनि, मंगल हों क्षीण चंद्रमा शुक्रकी राशिका होवै उसे गुरु न देखे तो ७ वर्षमें मारता है ॥५९॥ केन्द्रमें अस्तंगत मंगल शनिसे दृष्ट वा युक्त होवै तो चार वर्षमें मारताहै इसमें गणितायुकाभी प्रयोजन नहीं है॥ ६०॥ लग्नेशसे चंद्रमा अष्टम होवै कृष्णपक्षका जन्म हो सभी पापग्रह उस चंद्रमाको देखें शुभग्रह न देखें तो ३ वर्षमें मारताहै ॥ ६१ ॥

पापो विलग्नाधिपतिः शशांकादंत्यस्थितः क्रूरनिरीक्षितश्चेत् ॥ चन्द्रांशकस्थो यदि वा तदीशो जातः शिशुः प्रेतपुरीं नवाब्दैः॥ ॥ ६२ ॥ दृश्ये भागे संयुताः सौम्यखेटाः पापाः सर्वे यस्य जन्मन्यदृश्ये ॥ राहौ लग्ने पापयुक्तेथ दृष्टे जातो मृत्युं याति पंचाब्दसंख्यैः ॥ ६३ ॥

लग्नेश पापग्रह चन्द्रमासे बारहवें भावमें पापदृष्ट होवैं अथवा ऐसे योगमें चंद्रराशीश पापांशकमें होवै तो बालक ९ वर्षमें यमपुरी पहुंचे ॥ ६२ ॥ जिसके जन्ममें शुभग्रह दृश्यार्ध ४ से १० पर्यंत और पापग्रह अदृश्य भागमें हों राहु लग्नमें पापयुक्त वा दृष्ट होवै तो बालक पांचवेंमें मरजावै ॥ ६३ ॥

राहुः सप्तमभवने शशिसूर्यनिरीक्षितो न शुभदृष्टः॥दशभिर्द्वाभ्यां सहितैरब्दैर्जातं विनाशयति नूनम् ॥ ६४ ॥ घटालिसिंहे फणिनाथयुक्ते तस्मिन्विलग्ने सति पापदृष्टे ॥ जातो यमं सप्तदशे प्रयाति वर्षैन्द्रपूज्येन युतो न दृष्टः ॥ ६५ ॥

सप्तम भावमें राहु सूर्य चन्द्रमासे दृष्ट हो शुभग्रह उसे न देखें तो बालकको १२ वर्षमें नाश करे यह निश्चय है ॥ ६४ ॥ राहु ११।८।५ राशिका लग्नमें हो उसे पापग्रह देखें और उसको बृहस्पति न देखे न उसके साथ होवै तो बालक १७ वें वर्षमें मरे ॥ ६५ ॥

क्षीणेन्दुः पापसंदृष्टो राहुदृष्टो विशेषतः ॥ जातो यमपुरं याति दिनैः कतिपयैः किल ॥ ६६ ॥ जन्मेशलग्नाधिपती विलग्नात्षष्ठाष्टमांत्येषु दिनेशयुक्तौ ॥ जातो यमं द्वादशभिश्च वर्षैः प्रयाति सौम्येन युतौ न दृष्टौ ॥ ६७ ॥ होराधिपतिर्द्यूने पापजितो मरणमेव विदधाति ॥ राशिं त्रिगुणीकृत्वा वर्षे मासे न संदेहः ॥ ६८॥

क्षीण चन्द्रमा पापदृष्ट हो विशेषतः राहुदृष्ट होवै तो निश्चय कुछेक दिनोंमें बालक मरे ॥ ६६ ॥ जन्मलग्नेश तथा चन्द्रराशीश लग्नसे ६।८।१२ भावोंमें सूर्यसे युक्त होवैं शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट न हों तो १२ वर्षमें यमपुर जावै ॥ ६७ ॥ लग्नेश सप्तम स्थानमें (पापजित) पापग्रहसे युद्धमें पराजित होवै तो जिस राशिमें है उसको त्रिगुण करके जो अंक हो उतनवें महीने वा वर्षमें निःसंदेह मरण करताहै ॥ ६८ ॥

तरणीन्दुकुजाः पुत्रस्थाने युक्ता न सौम्यगाः ॥ जातो यमपुरं याति नवमेब्दे न संशयः ॥ ६९ ॥ लग्नेश्वरे विलग्नस्थे पापैः सर्वैरदृश्यगैः ॥ चतुर्थे मासि मरणं याति बालो न संशयः॥७०॥ चन्द्रलग्नाधिपः सूर्यः स्वपुत्रेण समन्वितः ॥ लग्नादष्टमराशिस्थो द्वादशाब्दे मृतिप्रदः ॥ ७१ ॥ षष्ठाष्टमे पापयुते सौम्ये दृष्टिविवर्जिते॥ आपोक्लिमे विलग्नेशे षोडशे निधनं व्रजेत् ॥ ७२ ॥

सूर्य चंद्रमा मंगल पंचमभावमें शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट न होवैं तो नवमवर्षमें निस्संदेह यमालय जाता है ॥ ६९ ॥ लग्नेश लग्नमें और सभी पापग्रह (अदृश्यार्द्ध) ११ से ३ भावपर्यंत होवैं तो निस्संदेह बालक चौथे महीने मरजावै ॥ ७० ॥ चंद्रराशीश सूर्य शनिसे युक्त अष्टम भावमें होवै तो १२ वें वर्ष मृत्यु करताहै ॥ ७१ ॥ वही सूर्य पापयुक्त ६।८ भावमें शुभग्रह दृष्टिरहित हो तथा लग्नेश आपोक्लिमें ३।६।९।१२ में से किसीमें होवै तो १६ वर्षमें मृत्यु होवै ॥ ७२ ॥

परस्परक्षेत्रसमास्थितौ वा लग्नेशरन्ध्राधिपती न सौम्ये॥ रिष्फारिभे वागधिपेन युक्ते त्वष्टादशाब्दे निधनं प्रयाति ॥७३॥ केन्द्रेषु पापेषु निशाकरेण सौम्यग्रहैर्वीक्षणवर्जितेषु ॥ षष्ठाष्टमे वा यदि वा शशांके जीवेच्छिशुर्विंशातिवर्षमात्रम् ॥ ७४ ॥

लग्नेश अष्टमेश अन्योन्य राशियोंमें शुभग्रह योग रहित होवें अथवा ६।१२ भावमें पंचमेशसे युक्त होवें तो १८ वर्षमें मृत्यु होवै ॥ ७३ ॥ केन्द्रोंमें पापग्रह चंद्रमा शुभग्रहोंकी दृष्टिसे वर्जित होवै अथवा केंद्रोंमें पापग्रह हुयेमें चंद्रमा ६।८ भावमें होवै तो बालक वीस २० ही वर्ष जीवै ॥ ७४ ॥

जीवेन सहितः सूर्यो लग्नस्थः कीटराशिगः ॥ अष्टमाधिपतौ केन्द्रे द्वाविंशे मरणं ध्रुवम् ॥ ७५ ॥ राहुणा सहित चन्द्रे जामित्रे चाष्टमेपि वा ॥ देवेज्ये लग्नगेहेस्मिन् द्वाविंशे मरणं भवेत्॥७६॥

पापद्वयांतरस्थे तु होरानाथे न सौम्यगे ।। पितृजन्मनि जातस्तु पंचविंशे यमं व्रजेत् ।।७७।। मंदोदये शत्रुराशौ सौम्यैरापोक्लिमो-पगैः ।। षड्विंशे सप्तविंशे वा मरणं भवति ध्रुवम् ।। ७८ ।।

बृहस्पतिसहित सूर्य कीट ४ राशिका लग्नमें होवै अष्टमेश केन्द्रमें होवै तो २२ वें वर्ष मृत्यु होवै ॥ ७५ ॥ राहुसहित चन्द्रमा सप्तम वा अष्टमभावमें होवै बृहस्पति लग्नमें होवै तो २२ वर्षमें मृत्यु होवै ॥ ७६ ॥ लग्नेश दो पापग्रहोंके बीचमें शुभग्रहरहित होवै और पिताके जन्मलग्नमें जन्म होवै तो २५ वर्षमें मरे ॥ ७७ ॥ लग्नमें शनि शत्रुराशिका होवै शुभग्रह आपोक्लिम ३।६।९। १२ में हों तो २६ वा २७ वर्षमें निश्चय मरे ॥ ७८ ॥

चन्द्रो मन्दसहायस्तु सूर्यश्चाष्टमसंयुतः ।। एकोनत्रिंशके वर्षे जातो यमपुरं व्रजेत् ॥ ७९ ॥ पापा जन्माष्टमार्गस्थाः सौम्याः केन्द्रबहिस्थिताः ।। अस्मिन् योगे समुत्पन्ने त्वष्टाविंशे मृतिर्भवेत् ।। ८० ।। जन्मरन्ध्रपयोर्मध्ये निशानाथे व्यये गुरौ ।। सप्तविंशतिवर्षे वा त्रिंशद्वर्षेऽपि वा मृतिः ।। ८१ ।। रन्ध्रेशे जीवसंदृष्टे पापे पापनिरीक्षिते ॥ रन्ध्रस्थे जन्मपे वापि अष्टाविंशे मृतिर्भवेत् ॥ ८२ ॥ अष्टमाधिपतौ केन्द्रे लग्ने तु बलवत्तरे ॥ त्रिंशद्वर्षाण्यसौ जीवेद्द्वात्रिंशद्वाथ जातकः ॥ ८३ ।। लग्नादष्टमराश्यंशे भानुपुत्रसमन्विते ॥ पापे बलाधिके लग्ने केन्द्राद्बाह्ये शुभे तथा ॥ ८४ ॥ अन्योन्यसंगतौ क्रूरौ लग्नस्थौ पापवीक्षितौ ॥ द्वादशे शीतरश्मौ च परमायुस्तथैव हि ॥ ८५ ॥

चंद्रमा शनिसे संबंधी होकर अष्टमभावमें होवै सूर्यभी अष्टमभाधमें होवै तो २९ वें वर्ष यमपुरमें जावै ॥ ७९ ॥ पापग्रह १ । ८ । ७ भावोंमें होवें शुभग्रह केन्द्रोंसे बाहर होवें इस योगमें जो उत्पन्न हो उसकी मृत्यु २८ वर्षमें होवै ॥ ८० ॥ चन्द्रमा लग्न तथा अष्टमेशके बीचमें हो बृहस्पति बारहवां होवै तो २७ वा ३० वर्षमें मृत्यु होवै ॥८१॥ अष्टमेशपर बृहस्पतिकी दृष्टि होवै अष्टमेशभी पापग्रह हो पापग्रह उसे देखे अथवा लग्नेश अष्टममें होवै तो २८ वर्षमें मृत्यु होवै ॥ ८२ ॥ अष्टमेश केन्द्रमें अथवा लग्नमें बलवान् होवै तो वह ३० वर्ष अथवा ३२ वर्ष जीवै ॥ ८३ ॥ लग्नसे अष्टम राशि वा उसके अंशक-में शनि होवै बलाधिक पापग्रह लग्नमें होवै तथा केंद्रोंसे बाहर शुभग्रह होवें तोभी वही फल होगा ॥ ८४ ॥ अन्योन्य राशिगत पापग्रह पापदृष्ट होकर लग्नमें हों चंद्रमा बारहवां होवै तो भी उतनीही आयु होगी ॥ ८५ ॥

जन्माष्टमेशौ यदि केन्द्रयुक्तौ रन्ध्रे तु यः कश्चन खेचरेन्द्रः ॥ द्वाविंशके तन्मरणं शुभैस्तु केन्द्रेषु हीनेष्वहितैर्ग्रहेन्द्रैः ॥ ८६ ॥ क्षीणे शशांके दिवसेशयुक्ते रन्ध्राधिपे केन्द्रगतेऽष्टमेपि ॥ पापान्विते लग्नगते विहीने द्वात्रिंशदब्दे निधनं प्रयाति ॥ ८७ ॥ लग्नरन्ध्रपयोर्योगे स्फुटं तत्कृत्यसंयुतः ॥ शुभैरयुक्तः पापश्चेन्मृत्युः स्यात्सप्तविंशतौ ॥ ८८ ॥

यदि लग्नेश अष्टमेश केन्द्रमें होवें तथा अष्टमभावमें कोई ग्रह होवै और केन्द्रोंमें शुभग्रह न हों पापग्रह होवें तो २२ वर्षमें उसकी मृत्यु होवै ॥ ८६ ॥ क्षीण चन्द्रमा सूर्ययुक्त होवै अष्टमेश केन्द्रमें पापग्रह अष्टमभावमें हो हीनबली ग्रह पापयुक्त लग्नमें होवै तो ३२ वर्षमें मृत्यु को प्राप्तहोवै ॥ ८७ ॥ लग्नेश अष्टमेश एकसाथ पापग्रह हों शुभग्रहोंसे युक्त न होवैं तो २७ वर्षमें मृत्यु होवै ॥ ८८ ॥

लग्नाद्विलोमे ससुतश्च चन्द्रो रन्ध्रेश्वरे केन्द्रगते ससौम्यैः ॥ दृष्टे युते वा परमायुरत्र त्रिंशत्परं नास्ति बलैर्विहीनः ॥ ८९ ॥ रन्ध्रेश्वरे भाग्यधनात्मयुक्ते लग्नाधिपे रन्ध्रयुते त्वसौम्यैः ॥ जातश्चतुर्विंशतिवर्षमात्रं जीवत्यसौ शोभनदृष्टियुक्ते ॥ ९० ॥

लग्नसे बारहवें भावमें बुधसहित चन्द्रमा होवै अष्टमेश किसी केन्द्रमें निर्बल शुभग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त होवे तो उसकी परमायु ३० वर्षसे अधिक न होवै ॥ ८९ ॥ अष्टमेश ९ । २ । १ भावोंमेंसे किसीमें हो लग्नेश अष्टमस्थानमें पापयुत वा दृष्ट होवै उसपर शुभदृष्टिभी हो तौभी २४ वर्षमात्र जीवै ॥ ९० ॥

अष्टमाधिपतौ लग्ने लग्नेशे बलवर्जिते ॥ त्रिंशद्वर्षाण्यसौ जीवेत्त्रिंशन्नातीव वर्तते ॥९१॥ आपोक्लिमगते चंद्रे लग्नेशे च तथैव हि ॥ पापेक्षिते बलैर्हीने जीवत्यायुस्तथैव च ॥ ९२ ॥ गुरुशुक्रौ च केन्द्रस्थौ लग्नेशे पापसंयुते ॥ आपोक्लिमस्थे संध्यायामायुः षट्त्रिंशदेव हि ॥ ९३ ॥

अष्टमेश लग्नमें लग्नेश बलरहित होवै तो ३० वर्ष बचे उपरात आयु न पावै ॥ ९१ ॥ चंद्रमा आपोक्लिम ३ । ६ । ९ । १२ भावमें से किसीमें हो ऐसाही चन्द्रमाभी आपोक्लिममें पापदृष्ट तथा बलहीन होवै तौभी उतनीही आयु होगी ॥ ९२ ॥ गुरु शुक्र केन्द्रमें हो लग्नेश पापयुत आपोक्लिममें हो और संध्याकालका जन्म होवै तो ३६ की परमायु होवै ॥ ९३ ॥

लग्नस्थिते वासरनायके तु पापान्तरे शत्रुगते विहीने ॥ षट्त्रिंशदंतं परमायुरस्य शुभैर्न दृष्टे सति सत्यमेतत् ॥ ९४ ॥ भूसूनुचन्द्रौ तनुगौ शुभास्तु केन्द्राष्टमस्था न भवेयुरत्र ॥ जातो यदा मान्द्युदये शिशुः स्यात्षट्त्रिंशकेऽब्दे निधनं प्रयाति ॥ ९५ ॥ होराशास्त्राभ्यासबलात्संगृह्य विदुषां मुदे ॥ परं त्यक्त्वा त्वसारं तु कृतं व्यङ्कटशर्मणा ॥ ९६ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिन्तामणावरिष्टयोगनिरूपणं नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

सूर्यलग्नमें पापग्रहोंके बीच शत्रुराशिमें एवं निर्बल होवै और शुभग्रह उसे न देखे तो ३६ वर्ष उसकी परमायु होगी ॥ ९४ ॥ मंगल चन्द्रमा लग्नमें हों शुभग्रह केन्द्र तथा अष्टम स्थानमें न होवें और केतु लग्नमें होवै तो बालक ३६ छत्तीस वें वर्षमें मरे ॥ ९५ ॥ यह बाल्यारिष्टाध्याय होराशास्त्रके अभ्यासबलसे व्यंकटेश्वरने असारको दूर छोडके सारसंग्रह कियाहै ॥ ९६ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिंतामणौ माहीधरभाषाटीकायामरिष्टाध्यायो दशमः ॥ १० ॥

एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

अथारिष्टभङ्गाध्यायः ।

लग्नस्थितो देवगुरुर्विशेषात्खेटान्निहन्याद्विबलांस्तथैव ॥ एकोपि बालेन्दुधरप्रणामः समस्तपापं शमयेत्तथैव ॥१॥ अत्यंतसत्वे यदि लग्ननाथे सौम्यान्विते तादृशदृष्टिमार्गे॥केंद्रस्थिते पापदृशा विहीने स भाग्यवान् जीवति दीर्घमायुः ॥ २ ॥

बाल्यारिष्टहारक ग्रहोंमें विशेषतः लग्नका बृहस्पति अरिष्टकर्ता निर्बल ग्रहोंके फलोंको नाश करदेताहै जैसे एक शिवजीको प्रणाम करना समस्तपापोंको नाश करदेताहै ॥ १ ॥ लग्नेश अतिबलवान् होवै शुभग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त होकर केन्द्रमें बैठा होवै पापदृष्टिरहित होवै तो वह बालक भाग्यवान् एवं दीर्घायु होताहै ॥ २ ॥

शशांको रन्ध्रनाथस्तु सौम्यद्रेष्काणसंयुतः ॥जातं शिशुं प्रयत्नेन रक्षयेद्रात्रिवासरम् ॥३॥ चन्द्रः संपूर्णगात्रस्तु सौम्यक्षेत्रांशगोपि

वा।।सर्वारिष्टनिहन्ता स्याद्विशेषाच्छुक्रवीक्षितः ।।४।। जीवभार्गवसौम्यानामेकः केन्द्रगतो बली ।। पापदृग्योगहीनश्चेत्सद्योरिष्टस्य भंगकृत् ।। ५ ।। चन्द्रोपि शत्रुराशिस्थो जीवशुक्रविदां यथा ।। द्रेष्काणं शमयत्येवारिष्टं पापं हरिर्यथा ।। ६ ।।

अष्टमेश चन्द्रमा शुभग्रहके द्रेष्काणमें होवै तो दिनरात यत्नसे बालककी रक्षा करनी अर्थात् दिनरात यह बालक क्लेशी रहकर बच जाताहै॥ ३ ॥पूर्णचन्द्रमा शुभग्रहके राशिमें अथवा अंशकमें होवै तो समस्त बालारिष्टोंका नाश करताहै विशेषतः शुक्रसे दृष्ट यह फल करताहै ॥ ४ ॥ बृहस्पति शुक्र बुधमेंसे एकभी केन्द्रमें बलवान् होवै पापग्रहोंसे युक्त दृष्ट न होवै तो तत्काल अरिष्टभंग करताहै ॥ ५ ॥ चन्द्रमा शत्रुराशिमें भी होवै परंतु बृहस्पति शुक्र बुधके द्रेष्काणमें होवै तो अरिष्टको शमित करदेताहै जैसे श्रीहरि पापको शमन करतेहैं ॥ ६ ॥

शुक्लेऽपि पक्षे यदि रात्रिजन्म चन्द्रोपि षष्ठाष्टमराशियुक्तः ॥ शुभेक्षितः सन्निह कृष्णपक्षे दृश्यः स पापैरवति प्रसूतम् ।।७।। निशाकरे शोभनखेचरांशे शुभेक्षिते पूरितदीप्तिजालः।। जातस्य निःशेषमरिष्टमाशु यथा विषं हन्तिच वैनतेयः ।।८।। प्रकाशमानो गगनेन्द्रपूज्यः केन्द्रस्थितो रक्षति जातसूनुम् ।। सौम्यांशका जीवशशांकशुक्रसौम्या विनिघ्नन्ति समस्तदोषम् ।। ९ ।। जन्माधिपः केन्द्रगतः शुभश्चेज्जातं शिशुं रक्षति सौम्यदृष्टः ।। स्वांशस्थितैः शोभनखेचरेन्द्रैर्दृष्टस्तदान्यो विनिहंत्यरिष्टम् ।। १० ।।

शुक्लपक्षमें रात्रिका जन्म हो चंद्रमा छठे वा आठवें भावमें शुभदृष्ट होवै और कृष्णपक्षमें दिनका जन्म चद्रमा ६ । ८ भावमें पापदृष्टभी हो तौभी बालककी रक्षा करताहै ॥ ७ ॥ चंद्रमा शुभग्रहके अंशकमें शुभदृष्ट पूर्णमण्डल होवै तो बालकके संपूर्ण अरिष्टोंको नाश करताहै जैसे गरुड विषका नाश करताहै ॥ ८ ॥ उदयी बृहस्पति केन्द्रमें होवै तो बालककी रक्षा करताहै गुरु शुक्र चंद्रमा बुध शुभांशकौंमें होवैं तौभी संपूर्ण अरिष्टयोग फलको नाश करतेहैं ॥ ९ ॥ जन्मलग्नेश शुभग्रह केन्द्रमें शुभदृष्ट होवै तो बालककी रक्षा करताहै लग्नेश शुभ पापोंसे कोई हो उसे अपने अंशकस्थित शुभग्रह देखें तो वहभी अरिष्टहंता होताहै ॥ १० ॥

लग्नात्तृतीयारिभवे च राहुः पापैर्विमुक्तः शुभदृश्यमानः।।विनाशयत्याशु समस्तरिष्टं तूलं यथा वायुबलस्य वेगः ॥ ११ ॥ शीर्षोदयस्थाः सकला ग्रहेन्द्रा रिष्टं हरन्त्याशु शुभांशकस्थाः ॥

पूर्णेन्दुरन्यैर्वियुतः शुभैस्तु दृष्टो हरत्याशु समस्तरिष्टम् ॥१२॥ सर्वग्रहेन्द्रैः परिपूर्णचन्द्रो दृष्टो हरत्याशु समस्तदोषान् ॥ नयैः स्वकीयैः प्रहरेत् क्षितीशो यथा तथा जन्मनि दोषजालम् ॥ ॥ १३ ॥ सौम्यग्रहैरतिबलैर्विबलैश्च पापैर्लग्ने च सौम्यभवनं शुभदृष्टियुक्तम् ॥ सर्वापदां विहरतो भवति प्रसूतिः पूजापरे खलु यथा पठनैर्ग्रहाणाम् ॥ १४ ॥

राहु लग्नसे तीसरा छठा ग्यारहवां पापरहित शुभग्रह दृष्ट होवै तो समस्त बाल्यारिष्ट शीघ्र नाश करताहै. जैसे वायुका बल वेग रुईका गल्ला उडादेताहै ॥ ११ ॥ समस्तग्रह शीर्षोदय ५ । ६ । ७ । ८ । ११ । ३ राशियोंमें शुभ ग्रहोंके अंशकोंमें होवै तो अरिष्टको नाशतेहैं पूर्ण चंद्रमा पापग्रहराहित तथा शुभदृष्ट होवै तौभी संपूर्णदोष दूर करताहै ॥ १२ ॥ पूर्ण चंद्रमापर सभी ग्रहोंकी दृष्टि होवै तौभी वही फल होगा जैसे राजा अपने न्यायोंसे समस्त प्रजाके दोषोंके दूर करताहै ॥ १३ ॥ शुभग्रह अतिबलवान् होवै पापग्रह निर्बल होवैं तथा लग्नमें शुभग्रहकी राशि शुभग्रहसे दृष्ट होवै ऐसे समयमें जन्म होवै तो संपूर्ण आपत्तियोंसे रहित होवै. जैसे ग्रहौंकी पूजामें ग्रहौंके स्तोत्रादि पाठमें तत्पर मनुष्योंकी आपत्ति दूर होतीहै ॥ १४ ॥

उदयोगस्त्यमुनेः सप्तर्षीणां मरीचिपूर्वाणाम् ॥ सर्वारिष्टं नश्यति तम इव सूर्य्योदये प्रबलम् ॥ १५ ॥ अजवृषकर्किणि लग्ने रक्षति राहुः समस्तपीडाभ्यः ॥ पृथिवीपतिः प्रसन्नः कृतापराधं यथा पुरुषम् ॥ १६ ॥ चंद्रः शुभवर्गस्थः क्षीणोपि शुभेक्षितो हरति रिष्टम् ॥ जलमिव हंत्यतिसारं ज्ञातीफलवल्कलक्कथितम् ॥ १७ ॥ सप्ताष्टमषष्ठस्थाः शशिनः सौम्या हरंति कष्टफलम् ॥ युवतिजनस्य कटाक्षा ललिता यूनां यथा नूनम् ॥ १८ ॥

जन्म समयमें अगस्त्य मुनिका उदय तथा मरीचि आदि सप्तर्षियोंका उदय समस्त अरिष्ट नाश करता है जैसे प्रबल अंधकारको सूर्योदय नाश करता है ॥१५॥ मेष वृष कर्क राशिका राहु लग्नमें होवै तो समस्त पीडाओंसे रक्षा करताहै जैसे अपराधी पुरुषको प्रसन्न हुआ राजा बचाय देताहै ॥ १६ ॥ चंद्रमा क्षीणभी हो परन्तु शुभग्रहोंके राश्यादि वर्गमें होवै तो अरिष्ट हरण करताहै जैसे अतिसारको जातीफलके बकलोंमें पकाया पानी हर लेताहै ॥ १७ ॥ चंद्रमासे ७ । ८ । ६ स्थानौंमें शुभग्रह होवैं तो कष्टफलका हरण करतेहैं जैसे जवान स्त्रियोंके सुहाउने कटाक्ष युवाजनोंके कष्ट दूर करतेहैं ॥ १८ ॥

पापराशिगते चंद्रे तदीशेन निरीक्षिते ॥ सौम्यग्रहाणां वर्गस्थे कृपणेन धनं यथा ॥ १९ ॥ चंद्राधिष्ठितराशीशे लग्नस्थे शुभवीक्षिते ॥ भृगुणा वीक्षिते चंद्रे स्वोच्चे रिष्टं हरेत्तदा ॥ २० ॥ स्वोच्चस्थे स्वगृहेथ वापि सुहृदां वर्गे स्वकीयेथ वा संपूर्णः शुभवीक्षितः शशधरो वर्गेषु सौम्येषु वा ॥ शत्रूणामवलोकनेन रहितः पापैरयुक्तेक्षितो रिष्टं हंति सुदुस्तरं दिनमणिः प्रालेयनाशं यथा ॥ २१ ॥ अध्यायोरिष्टभंगाख्यः प्रोक्तश्चिंतामणौ मया ॥ मधुवृत्त्या गृहीत्वा तु व्यंकटेश्वरशर्मणा ॥ २२ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिंतामणावरिष्टभङ्गनिरूपणो नाम एकादशोध्यायः ॥ ११ ॥

चंद्रमा पापराशिमें हो उस राशिका स्वामी उसे देखे और शुभग्रहोंके अंशादिमें होवे तो बालककी रक्षा करताहै जैसा कृपण मनुष्य धनकी रक्षा करताहै ॥ १९ ॥ चंद्रमा राशीश लग्नमें शुभग्रह दृष्ट होवै तथा चंद्रमाको शुक्र देखे उच्चमें होवै तो आरिष्टको हरताहै ॥ २० ॥ पूर्णचंद्रमा शुभग्रहोंसे दृष्ट होकर अपने उच्च वा स्वगृहमें हो अथवा मित्रके वर्गमें हो अथवा अपने वर्गमें हो यद्वा मित्रके वर्गमें हो शत्रुदृष्टिसे रहित पापयोगदृष्टि रहित होवै तो कठिन अरिष्टको भी दूर करताहै जैसे सूर्य बर्फका नाश करताहै ॥ २१ ॥ मुझ व्यंकटेशने माधुकरीवृत्तिसे अनेक ग्रंथोंका सार लेकर यह अरिष्टभंगाध्याय कहा ॥ २२ ॥

इति स० चिं० म० माहीधरभाषाटीकायामरिष्टभङ्गाध्याय एकादशः ॥ ११ ॥

द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अथ मध्यमायुर्योगविचाराध्यायः ।

द्वात्रिंशदूर्ध्वमर्वाक्तः सप्तत्या मध्यमायुर्योगान् ॥ तावत्कालनियमितान् योगविशेषानहं वक्ष्ये ॥ १ ॥ चंद्रे कुजर्क्षे तनुगे प्रहृष्टे क्रूरग्रहैः शोभनखेचरेन्द्रैः ॥ केन्द्राद्बहिष्ठैर्निधनं प्रयाति वर्षैस्त्रयस्त्रिंशसमानकैस्तु ॥ २ ॥ पापग्रहे रंध्रपतौ सचंद्रे केंद्रस्थिते वा यदि वा त्रिकोणे ॥ निरीक्षिते पापखगैर्नभस्थैर्जातस्त्रयस्त्रिंशदुपैति वर्षम् ॥ ३ ॥

अब मध्यमायुयोग कहतेहैं कि ३२ वर्षसे ऊपर ७० वर्षके भीतर आयुके योगविशेषमें ग्रंथकर्त्ता कहताहै॥ १॥ चंद्रमा मंगलकी राशिका लग्नमें पापग्रहोंसे दृष्ट होवै शुभग्रह केंद्रमें न होवें तो ३२ वर्ष आयु होवै॥ २॥ अष्टमेश पापग्रह चंद्रमा सहित केन्द्र अथवा त्रिकोणमें होवै उसे पापग्रह दशम भावमें बैठकर देखें तो मनुष्यकी ३२ वर्ष आयु होवै ॥ ३ ॥

लग्ने शनौ रात्रिकरेण युक्ते भौमे घटस्थे सुरसंख्यवर्षैः ॥ क्रूरांतरे लग्नगते तदीशे युग्मस्थिते देवगुरौ पुरस्थे ॥ ४ ॥ जातस्तु मृत्युं मुनिवह्निवर्षैः प्रयाति शास्त्रप्रवरैः प्रदिष्टम् ॥ सभूमिजे रंध्रपतौ विलग्ने राशौ स्थिरे वा यदि वा धराजे ॥ ५ ॥ रिष्फेष्टमे मृत्युमुपैति जातस्त्वब्दैर्द्विपाथोधिसमानकैर्वा ॥ केन्द्रे गुरौ कर्मणि सूर्यपुत्रे लग्ने चरे वेदयुगैः समानैः ॥ ६ ॥

लग्नमें चंद्रमासहित शनि होवै मंगल कुम्भका होवै तो ३३ वर्ष आयु होवै लग्न पापांतर हो लग्नेश मिथुनका होवै और बृहस्पति चतुर्थ होवै ॥४॥ तो जातक ३७ वर्षमें मृत्युको माप्त होताहै यह शास्त्रज्ञोंने कहाहै, लग्नमें मंगल सहित अष्टमेश होवै यद्वा मंगल स्थिरराशिमें अष्टम वा बारहवें भावमें होवै तो ४२ वर्षमें मृत्यु होवै बृहस्पति केंद्रमें शनि दशम होवै लग्नमें चरराशि होवै तो ४४ वर्ष आयु होवै ॥ ५ ॥ ६ ॥

गुरुशुक्रौ च केन्द्रस्थौ लग्नेशे पापसंयुते॥ आपोक्लिमस्थे संध्यायामायुः षट्त्रिंशदेव हि ॥ ७ ॥ स्वोच्चे विलग्ने रविनंदने च जीवेस्तगे कर्मणि सूर्यपुत्रे ॥ जातो धनाढ्यो बहुशास्त्रवेत्ता वेदाब्धिवर्षैर्निधनं प्रयाति ॥ ८ ॥ लग्नेश्वरे रंध्रगते सपापे केंद्राद्बहिष्ठे यदि सौम्यखेटे ॥ चत्वारिंशद्वत्सरे मृत्युमेति जातः पुत्रो नान्यथा शास्त्रमेतत् ॥ ९ ॥

गुरु शुक्र केन्द्रमें हों लग्नेश पापयुक्त होकर २ । ५ । ८ । १२ भावमें से किसीमें हों और संध्याकालका जन्म होवै तो ३६ वर्ष आयु होवै॥७॥ उच्चका शनि लग्नमें बृहस्पति सप्तम शनि दशम होवै तो मनुष्य धनवान् तथा बहुत शास्त्र जाननेवाला होवै ४४ वर्षमें मरजावै ॥ ८ ॥ लग्नेश पापयुक्त अष्टमस्थानमें हो शुभग्रह केंद्रोंमें न हों तो ऐसे योगमें जन्मवाला पुत्र ४४ वर्षमें मृत्युको माप्त होताहै यह शास्त्राज्ञा झूठी नहींहै ॥ ९ ॥

जन्माधिपे रंध्रगते सपापे पापान्विते रंध्रपतौ रिपुस्थे ॥ बलान्विते वा शुभदृग्विमुक्ते पंचाब्धिवर्षैर्निधनं प्रयाति ॥ १० ॥

मेषे शशांके तनुगे सुपूर्णे सौम्येक्षिते भूपतिरत्र जातः॥ पापग्रहाणां च दृशा विहीने नागाब्धिवर्षैर्निधनं प्रयाति ॥ ११ ॥

लग्नेश पापयुक्त अष्टमभावमें अष्टमेश पापयुक्त छठे स्थानमें बलवान् वा शुभदृष्टिरहित होवै तो ४५ वर्षमें मरणको प्राप्त होवै ॥ १० ॥ पूर्णचंद्रमा मेष राशिका लग्नमें शुभदृष्ट होवै तो ऐसे योगमें उत्पन्न मनुष्य राजा होवै परंतु उसे पापग्रह न देखते हों और ४८ वर्ष में मृत्युको प्राप्त होताहै ॥ ११ ॥

शनैश्चरो लग्नगतः सहायस्त्वन्येन चन्द्रो व्ययभेष्टमे वा॥ वेदांतविज्ञानसुशीलवृत्तो जातस्तु मृत्युं नयनेषु वर्षे ॥ १२ ॥ चापे गुरौ लग्नगतेष्टमस्थे भौमे सराहौ मुनिबाणवर्षे ॥ रन्ध्रेश्वरे कामगते शशांके पापान्विते षण्मृतिगेष्टबाणे ॥ १३ ॥ संरध्रपे देवगुरौ विलग्ने कुंभे सपापे यदि केन्द्रराशौ॥ शास्त्रार्थवेत्ता खलु पुण्यवांश्च जातस्तु षष्ट्या निधनं प्रयाति ॥ १४ ॥

शनि किसी ग्रहके साथ लग्नमें होवै चंद्रमा ८ वा १२ भावमें होवै तो वेदांतके ज्ञानसे उत्तम स्वभाव एवं चारितवाला होव और ५२ वर्षमें मृत्यु पावै॥ १२॥ धनका बृहस्पति लग्नमें अष्टममें मंगल राहुसहित होवै तो ५७ वर्षमें और अष्टमेश सप्तम चंद्रमा पापयुत ६।८ भावमें होवै तो ५८वर्षमें मरे॥ १३॥ गुरु लग्नमें अष्टमेश सहित होवै अथवा कुंभका गुरु पापग्रह सहित केन्द्रमें होवै तो शास्त्रोंका अर्थ जाननेवाला तथा पुण्यवान् होवै और ६० वर्षमें मृत्यु पावै ॥ १४ ॥

केन्द्रे सपापे तनुपे व्ययस्थे लग्नेश्वरे रन्ध्रगते हि वह्नौ ॥ लोकान्तरं प्रापयति स्म जातं कुशीलवृत्तं कुलपांसनं तम् ॥ १५ ॥ सौरो विलग्ने हिबुके शशांके कुजे कलत्रे गगने दिनेशे॥ कवीज्यसौम्येष्विहतैर्युतेषु नरेश्वरो जीवति वर्षषष्ट्या ॥ १६ ॥

केंद्रमें पापसहित लग्नेश हो अथवा सपाप लग्नेश व्ययभावमें हो अष्टमभावमें होवै तो वह मनुष्य दुष्ट स्वभाव चारित्र तथा कुलनाश करनेवाला होवै और अग्निमें जलकर मरे ॥ १५ ॥ लग्नमें शनि, चतुर्थ चन्द्रमा, सप्तममें मंगल, दशममें सूर्य होवै शुक्र बुध गुरुमें से किसीसे युक्त होवै तो राजा होवै६० वर्ष जीवै ॥ १६ ॥

लग्नाभिधाने विबुधारिपूज्ये बुधेज्यचंद्रैः परिदृश्यमाने॥ जातं नरं भूमिपतिं धनाढ्यं करोति षष्ट्या सुतभेन्द्रपूज्ये ॥ १७ ॥ सिते

विलग्ने बुधभास्करात्मजौ चतुष्टयस्थाः परमोच्चखेचराः ॥ तृती-
यलाभर्क्षगतास्तु योगे महीपतिः स्यान्निधनं च षष्ट्या ॥ १८ ॥

लग्नमें शुक्र चंद्र बुध गुरुसे दृष्ट होवै तथा गुरु पंचममें होवै तो मनुष्यको राजा एवं धनाढ्य करताहै और ६० वर्ष आयु होतीहै ॥ १७ ॥ शुक्र लग्नमें होवै बुध शनि केन्द्रमें होवैं और परमोच्च राशिगत ग्रह ३।११ भावमें होवैं तो ऐसे योगमें मनुष्य राजा होताहै और ६० वर्ष आयु होतीहै ॥ १८ ॥

होराजन्माधिनाथौ निधनमुपगतौ मृत्युनाथे च केंद्रे योगे जातो
नरोऽस्मिन् जनयति नरपं कीर्तिवित्तान्वितं च ॥ षष्ट्यां षड्-
भिर्युतायां निधनमभिहितं नंदकोक्ते द्विनिघ्नम् ॥ वर्षे त्रिंशेऽथ वा
स्यात्खिलमिति खचरैर्जायते पार्थिवेन्द्रः ॥ १९ ॥ नक्षत्रना-
थसहितः सविता नभस्थः सौरिर्विलग्नसहितो हिबुके सुरेज्यः ॥
अस्मिन् योगे जायते यो मनुष्यः क्षोणीपतिर्नैधनमष्टषष्ट्या
॥ २० ॥ जीवे विलग्ने बुधसूर्ययुक्ते मीने शनौ द्वादशगे हिमांशौ
॥ जातो योगे चार्थवान्सौख्यभाक् च जीवेत् षष्ट्या षट्सहा-
येन जातः ॥ २१ ॥

लग्नेश तथा तत्काल होरेश अष्टम स्थानमें होवैं अष्टमेश केंद्रमें होवै ऐसे योगमें जिसका जन्म होवै तो वह कीर्ति एवं धनयुक्त राजा होताहै ६६ वर्षमें उसकी मृत्यु होतीहै नंदकोक्त मतसे ६० वर्ष आयु इस योगमें कहीहै राजा होना उसके मतसे भी है ॥ १९ ॥ सूर्य चंद्रमा सहित दशम भावमें शनि लग्नमें गुरु चौथा होवै इस योगमें जो मनुष्य जन्मे वह राजा होताहै तथा ६८ वर्ष आयु होतीहै ॥ २० ॥ लग्नमें गुरु बुध सूर्यसहित होवे मीनका शनि किसी भावमें हो चंद्रमा द्वादश होवे इस योगमें उत्पन्न मनुष्य धनवान् सुखी होताहै और ६६ वर्षपर्यंत जीता रहे ॥ २१ ॥

चंद्रे विलग्ने स्वगृहं प्रयाते नीचे शनौ सप्तमगे च सूर्ये ॥ अस्मिन्
जातो मानुषो ज्ञानिमुख्यो जीवेत्षष्टिः पंचभिः संप्रयुक्तः ॥ २२ ॥
नीचे मंदे केन्द्रगे वा त्रिकोणे सौम्ये केंद्रे भास्करे वा ससौम्ये ॥
योगे जातः पंडितो धर्मशीलो ज्ञानी प्राज्ञः सप्ततेर्वत्सराणाम् ॥ २३ ॥

चंद्रमा कर्कका लग्नमें नीचका शनि सप्तम सूर्य हो इस योगमें उत्पन्न मनुष्य ज्ञानियोंमें श्रेष्ठ होवै और ६५ वर्ष आयु होवै ॥ २२ ॥ नीचका शनि केन्द्र वा त्रिकोणमें, शुभग्रह

केंद्रमें अथवा बुधसहित सूर्य केन्द्रमें होवै तो इस योगमें उत्पन्न मनुष्य धर्म करनेवाला पंडित एवं ज्ञानी होताहै और ७० वर्षपर्यंत जीताहै ॥ २३ ॥

प्रबले केंद्रगे सौम्ये निधने सौम्यवर्जिते ॥ लग्नाधिपेन दृष्टश्चेत्पापैर्जीवति सप्ततिम् ॥२४॥ पंचमस्थे धरासूनौ नीचे मंदेस्तगे रवौ ॥ अस्मिन् जातो मनुष्यस्तु सप्तत्या निधनं व्रजेत् ॥२५॥ इत्येवं बहुधा मया निगदिता योगास्त्वसंख्या इमे ये प्रोक्ता यवनादिभिर्मुनिगणैर्निश्चित्य योगान् स्थितान् ॥ ज्ञात्वा सम्यगुदाहरंति मनसा ते यांति कीर्तिम्परामेवं प्रश्नविधौ सुजन्मसमये वैवाहिके कर्मणि ॥ २६ ॥

बलवान् शुभग्रह केंद्रमें होवै धनस्थानमें शुभग्रह न होवै लग्नेशसे दृष्ट न हो पापदृष्ट होवै तो ७० वर्ष बचे ॥ २४ ॥ मंगल पंचमभावमें शनि नीचराशिमें सूर्य सप्तमभावमें होवै इस योगमें उत्पन्न मनुष्य ७० वर्षमें मरे ॥ २५ ॥ ग्रंथकर्ताका कथन है कि इसप्रकार योग मैंने कहेहैं परंतु ऐसे योग असंख्य हैं जो यवनाचार्यादि मुनिगणोंने कहेहैं उनमें जो वर्त्तमान योग हैं उनको मनमें निश्चय करके जो फल कहतेहैं वह परम कीर्त्तिको प्राप्त होतेहैं ऐसे योगोंका विचार जन्ममें प्रश्नमें और विवाहमें भी करना ॥ २६ ॥

अथ दीर्घायुर्योगाः ।

दीर्घायुराप्नोति खगाः समस्ताः शुभाशुभाः षड्भवनांतरस्थाः ॥ लग्नात्तथैवापरभागयुक्ताः शुभाशुभास्तद्विपरीतमन्यत् ॥ २७ ॥ लग्नादिषट्के शुभखेचरेन्द्राः सर्वे बलाढ्यास्त्वपरे तु पापाः ॥ प्रदीप्तियुक्तो गुणवान् सुशीलः श्रीमानशीत्या निधनं प्रयाति ॥ २८ ॥

अब दीर्घायुयोग कहतेहैं- शुभाशुभ सभी ग्रह लग्नसे छठे भावपर्यंत हों अथवा सप्तमसे व्ययपर्यंत होवैं तो दीर्घायु ७० से ऊपर आयु मिलतीहै और प्रकार होनेमें विपरीत फल होताहै ॥ २७ ॥ यदि लग्नसे छठे भावपर्यंत बलवान् शुभग्रह और दूसरे भाग ७ से १२ पर्यंत बलवान् पापग्रह होवैं तो गुणवान् उत्तम स्वभाव लक्ष्मीवान् होताहुआ ८० वर्षमें मरताहै ॥ २८ ॥

लग्ने केन्द्रे शशिसुते कोणे चंद्रे शुभे शनौ ॥ जातस्तु देवमुनिभिर्वर्षैः क्लिश्यत्यतः सुखम् ॥ २९ ॥ ओजराशिगताः सर्वे पूर्णच-

न्द्रसमन्विताः ॥ ओजलग्ने परं भाग्यं दीर्घमायुरुपैति सः ॥ ३० ॥ समराशिगताः सर्वे पूर्णचंद्रसमन्विताः ॥ स्त्रीयास्तु जननं युग्मलग्ने भाग्यमुपैति सा ॥ ३१ ॥ भाग्ययोगेषु दीर्घायुर्वदन्ति यवनाद्यः ॥ तत्पथक् पृथगेवाहुर्वराहमिहिरादयः ॥ ३२ ॥

लग्नमें वा अन्यकिसी केन्द्रमें बुधहो ५ । ९ भावमें चंद्रमा दशममें शनि होवै तो मनुष्य ४० वर्षपर्यंत क्लेशी उपरांत सुखी रहे ॥ २९ ॥ पूर्णचंद्रमा सहित सभी ग्रह विषम राशियोंमें होवैं लग्नमेंभी विषमराशि होवै तो परम ऐश्वर्य तथा दीर्घायु मिलतीहै ॥ ३० ॥ समस्त ग्रह पूर्ण चंद्रमासहित समराशियोंमें होवैं समराशिही लग्नमें होवै तो ऐसे योगमें स्त्रियोंका जन्म भाग्य एवं आयु देनेवाला होताहै ॥ ३१ ॥ भाग्ययोगोमें दीर्घायुभी होनी यवनादि कहतेहैं परंतु वराहीमिहिरादि उनको अलग २ कहतेहैं क्योंकि कोई धनहीनभी दीर्घायु होतेहैं ॥ ३२ ॥

यत्र तत्र तयोर्योगस्तदिष्टं मम संमतम् ॥ कदाचित् कांतयोर्योगः सर्वथा न भवेत्तदा ॥ ३३ ॥

ग्रंथकर्ताकी संमति है कि जहां कहीं भाग्य और दीर्घायु योग मिलतेहैं तहां ऐश्वर्य और दीर्घायुभी होतेहैं परंतु ऐसे योग कदाचित् मिलतेहैं सर्वथा नहीं होते राजयोग जुदेहैं दीर्घायु जुदेहैं जहां धनैश्वर्य सहित दीर्घायु कहीहै तहांही दोनोंकी प्राप्ति है और राजयोग एककाही फल होताहै इसीलिये पहिले और आधेभी वैसे योग पृथक् इस ग्रंथमें लिखेहैं ॥ ३३ ॥

जीवे सचंद्रे केन्द्रस्थे सौम्यदृष्टे परे ग्रहाः ॥ दशमात्परतो युक्तास्त्वशीत्या निधनं भवेत् ॥ ३४ ॥ चतुष्टयगताः सौम्याः पापाश्चाष्टभवर्जिताः ॥ चंद्रो विलग्नात्षष्ठस्थः षडशीत्या यमं व्रजेत् ॥ ३५ ॥ पापास्त्रिलाभषष्ठस्थाश्चंद्रः षष्ठाष्टमं गतः ॥ केंद्रे गुरौ त्रिसाहस्रग्रामनाथश्चिरायुषः ॥ ३६ ॥

गुरु चंद्रमासहित केन्द्रमें शुभदृष्ट होवै और सभी ग्रह दशमभावसे ऊपर ११ । १२ में होवैं तो ८६ वर्षमें मृत्यु होवै ॥ ३४ ॥ शुभग्रह केन्द्रमें होवैं पापग्रह अष्टमभावमें न होवैं चंद्रमा लग्नसे छठे भावमें होवै तो ८६ वर्षमें यमपुर जावै ॥ ३५ ॥ पापग्रह ३ । ११ । ६ भावोंमें चंद्रमा ६ । ८ में और गुरु केन्द्रमें होवै तो तीनहजार ग्रामके अधिपति और दीर्घायु भी होतेहैं ॥ ३६ ॥

लग्नात्त्रिकोणे निधनायकेंद्रे ग्रहास्त्रयः पंच पयोधिसंख्याः ॥ जातः स्त्रियं प्राप्य जितेंद्रियस्तु जीवेत्स यत्नान्नृपतिः परे हि ॥ ३७ ॥

जीवे लग्नेश्वरात्केन्द्रे केन्द्रकोणविवर्जिताः ॥ पापाः सुखानि सत्वात्तु जीवेद्वर्षशतं नरः ॥ ३८ ॥ जीवे लग्नेश्वरात्केन्द्रे नियतिः सप्ततिः परा ॥ ३९ ॥

लग्नसे ५। ९। ८। १। ४। ७।१० भावमेंसे किसीमें तीन चार वा पांच ग्रह होवें तो मनुष्य स्त्री पायकेभी जितेंद्रिय होवै दीर्घजीवीभी होवै कोई आचार्य ऐसे योगमें रा। होना भी कहतेहैं ॥ ३७ ॥ गुरु लग्नेशसे केन्द्रमें होवै, पापग्रह केन्द्रकोणमें न होवें तो सुखस पुष्टिसहित सौवर्ष जीवै ॥ ३८ ॥ केवल गुरु लग्नेशसे केंद्रमें ७० वर्ष जिलाताहै ॥ ३९ ॥

केन्द्रे गुरौ लग्नगते दिनेशे भूसूनुयुक्ते यदि वा मृतिस्थे ॥ जातः श्रियं प्राप्य गुणाधिकारी शतं तु जीवेच्छरदां विशेषात् ॥ ॥ ४० ॥ मीनांत्यलग्ने खचरैश्चतुर्भिः केंद्रस्थितैर्नागशतं स जीवेत् ॥ निशाकरे लग्नगते स्वभागे मीनस्थिते वा यदि वा कुलीरे ॥ ४१ ॥ ग्रहैर्विहीने खचरैश्चतुर्भिः केंद्रस्थितैर्नागशतं स जीवेत्॥सिंहे विलग्ने खचरैश्चतुर्भिस्त्रिकोणगैर्जीवतितावदेव ॥४२॥

गुरु केन्द्रमें सूर्य लग्नमें मंगलसहित अथवा सूर्य मंगल अष्टममें होवें तो मनुष्य लक्ष्मी पायके गुणोंका अधिकारी होवै विशेषतः ८ सौ वर्षपर्यंत जीवै ॥ ४० ॥ लग्नमें मीन राशि अंत्यांश होवै और केंद्रमें चार ग्रह होवें तो सौ वर्ष बचे, चंद्रमा लग्नमें कर्कांशकी मीन वा कर्कका होवै ॥ ४१ ॥ उसके साथ कोई ग्रह न होवै और केन्द्रमें चार ग्रह होवें तो सो वर्ष बचे, अथवा सिंहलग्नसे ४ ग्रह त्रिकोण ५।९ में होवें तोभी वही फल होगा॥४२॥

त्रिभिर्ग्रहैः स्वोच्चगतैर्विलग्ने वृषे कुलीरे सगुरौ तथैव ॥ मृगे कुजे कर्किणि देवपूज्ये केंद्रेषु शेषाः परमायुरत्र ॥ ४३ ॥ भृगौ चतुर्थे सगुरौ विलग्ने सेन्दौ शनौ कर्मणि पापहीने ॥ जातो नरोऽस्मिन् समुपैति दीर्घमायुश्च विद्यां यशसा समेताम् ॥ ४४ ॥

लग्नमें वृष वा कर्क राशि गुरुसहित होवै और तीन ग्रह उच्चके हों अथवा मकरका मंगल कर्कका गुरु होवै अन्यग्रह केन्द्रोंमें होवें तो यहां भी परमायु होती है ॥ ४३ ॥ शुक्र चतुर्थ होवै, लग्न गुरुसहित होवै और चंद्रमासहित शनि दशम भावमें पापरहित होवै ऐसे योगमें उत्पन्नभया मनुष्य विद्या तथा यशसहित दीर्घायु होताहै ॥ ४४ ॥

लग्ने मृगापरार्द्धे तु पूर्वार्द्धे भौमसंयुते ॥ लग्ने शशांकसहिते गुरौ केंद्रे परं वयः ॥ ४५ ॥ नृयुग्मपूर्वार्द्धगते भौमे लग्ने परार्द्धके ॥

चापपूर्वार्द्धगे जीवे लग्ने त्वपरभागगे ॥ ४६ ॥ सौरौ केन्द्रे भृगाः पुत्रे सचंद्रे त्वपरं वयः ॥ कन्यापूर्वार्द्धगे सौम्ये परार्द्धे लग्नभागते ॥ ४७ ॥ ग्रहैस्त्रिभिर्वा स्वोच्चस्थैः शतवर्षात्परं वयः ॥ पापास्त्रिषष्ठलाभस्थाः सौम्ये लग्नांत्यभागके ॥ ४८ ॥ लग्ने सौरौ गुरौ केंद्रे भृगौ वा त्वपरं वयः ॥ ४९ ॥

लग्न मकरका परार्द्ध १५ अंशसे ऊपर होवै उसीके पूर्वार्द्ध १५ अंशसे भीतर मंगल लग्नमें होवै और चंद्रमासहित गुरु केंद्रमें होवै तो परम आयु १२० वर्षकी होवै ॥ ४५ ॥ मंगल मिथुनलग्नके पूर्वार्द्धमें हो,लग्न मिथुनका उत्तरार्द्ध हो, यद्वा धनके पूर्वार्द्धमें गुरु उत्तरार्द्धमें लग्न होवै ॥ ४६ ॥ शनि केंद्रमें शुक्र चंद्रमासहित होवै तो परमायु होवै कन्याका उत्तरार्द्ध लग्न पूर्वार्द्धमें बुध होवै ॥ ४७ ॥ अथवा तीन ग्रह उच्चमें होवैं तो सौसे अधिक आयु होवै पापग्रह ३ । ६ । ११ भावोंमें हों बुध लग्नके अंत्यभागमें हो ॥ ४८ ॥ लग्नमें शनि केंद्रमें गुरु अथवा शुक्र होवै तो परमायु भोगे ॥ ४९ ॥

नृयुग्मपूर्वार्द्धगते धरात्मजे लग्ने परार्द्धे सगुरौ विशेषात् ॥ केंद्रेच्छविद्र्यां सहितेत्र जातः शतात्परं जीवति पुण्यभाक् च ॥५०॥ अनिमिषपरमांशके विलग्ने शशितनये गवि पंचवर्गलिप्ते ॥ भवति हि परमायुषः प्रमाणं यदि सहिताः सकलाः स्वतुंगभेषु ॥५१॥

मिथुनके पूर्वार्द्धमें मंगल उत्तरार्द्धमें लग्न गुरुसहित होवै विशेषतः केन्द्रमें शुक्र बुध होवैं तो मनुष्य सौवर्षसे ऊपर जीवै पुण्यवान् भी होवै ॥ ५० ॥ मीन मीनांशकलग्नमें हो वृषका चंद्रमा पांचवर्ग होरा द्रेष्काणादियोंमें अपने वर्गका हो अन्य सभीग्रह उच्चराशियोंमें होवैं तब परमायु १२० का प्रमाण दशागणितसे होताहै ॥ ५१ ॥

अथाऽमितायुर्योगाः ।

गुरुशशिसहिते कुलीरलग्ने शशितनये भृगुजे च केंद्रयाते ॥ भवरिपुसहजोपगैश्च शेषैरमितमिहायुरनुक्रमाद्विना स्यात् ॥ ५२ ॥

जिस योगमें आयु प्रमाणसेभी अधिक होजातीहै उसे कहतेहैं कि गुरु चंद्रमा सहित कर्कलग्न हो बुध शुक्र केंद्रमें हों अन्य ग्रह सूर्य मंगल शनि ३ । ६ । ११ । मेंसे किसीमें हों तो आयुप्रमाण जो केवल गणितके लिये १२० वर्ष कहाहै उससेभी अधिक आयु मिलेगी आयुका न्यूनाधिक करना मनुष्यके हातमें है यदि आचारवान् संयमी योगाभ्यासी पुण्यवान् भी रहे तो गणितागत आयुसेभी अधिक जी सकताहै यदि अनाचारी व्यभिचारी असंयमी दुष्टकर्मा पापी रहे तो गणितागत आयुको भी नहीं भोग सकता "परदारानायुष्यन्त" यह श्रुति है कि परस्त्रीगमन करनेवाले पूरी आयु नहीं भोगते इत्यादि अनेक प्रमाण ग्रंथांतरोंमें हैं ॥ ५२ ॥

लग्ने घटे देवगुरौ झषस्थे व्यये भृगौ वासरपे विलग्ने ॥ जातः परं ब्रह्मपरं प्रयाति रसायनाद्यैर्दशवर्धितं तत् ॥ ५३ ॥ सिंहे विलग्ने सगुरौ भृगौ तु कुलीरगे सोमसुते धनस्थे ॥ पापग्रहैः षट्त्रिद-शायगैश्च सहस्रवर्षं समुपैति जातः ॥ ५४ ॥

लग्न कुंभ बृहस्पति मीनका शुक्र व्ययभावमें और सूर्य लग्नमें होवै तो रसायन सेवन आदिसे गणिनागत आयुसे दशगुणी आयु होतीहै ॥ ५३ ॥ सिंहलग्नमें बृहस्पति कर्कका शुक्र चंद्रमा धनस्थानमें और पापग्रह ६ । ३ । ११ में होवैं तो मनुष्य एकहजार वर्ष जीवेगा ॥ ५४ ॥

दिनेशभौमौ हिबुके विलग्ने मंदान्विते भोगिपतौ व्ययस्थे ॥ शेषग्रहैर्मृत्युगृहोपपन्नैः सहस्रवर्षद्वयमत्र जातः ॥ ५५ ॥ अजे विलग्ने च रवौ सुखस्थे माने यमे भूमिसुते कलत्रे ॥ रिष्फे शशांके परिपूर्णवीर्ये रसायनाद्यैर्द्विसहस्रमायुः ॥ ५६ ॥ वृषे शशांके तनु-गे विशेषात्समन्विते सौम्यसुरासुरेज्यैः ॥ जातस्तु देवेन्द्रपदं प्रयाति शेषग्रहैरर्थसमन्वितैर्वा ॥ ५७ ॥

सूर्य मंगल चौथे शनि लग्नमें राहु व्ययभावमें हो शेष ग्रह अष्टमस्थानमें होवैं तो मनुष्य दो सहस्रवर्ष जीवै ॥ ५५ ॥ मेष लग्न चौथा सूर्य दशम शनि सप्तम मंगल बारहवां चंद्रमा पूर्ण-बली होवै तो रसायन तथा आदिपदसे संयम योगाभ्यास सत्यव्रतादिसे दो हजारवर्ष आयु होवै ॥ ५६ ॥ चंद्रमा वृषका विशेषतः लग्नमें होवै बुध गुरु शुक्रसे युक्त होवै शेषग्रह धनभावमें होवैं तो मनुष्य इंद्रपदको प्राप्त होवै ॥ ५७ ॥

जीवे विलग्ने स्वगृहं प्रपन्ने शून्ये नृयुग्मे भृगुजे च केन्द्रे ॥ रसायनाद्यैर्बहुवर्षजीवी जातस्तु देवेन्द्रपदं प्रयाति ॥ ५८ ॥एक-र्क्षगैर्व्योमचरैरशेषैस्त्रिकोणगैः केंद्रचतुष्टयस्थैः ॥ जातः शिशुर्न-श्यति जातमात्रो जीवेद्युगांतं यदि मंत्रसिद्ध्या ॥ ५९ ॥

बृहस्पति अपने घरका लग्न वा दशमभावमें हो तथा मिथुनका शुक्र केन्द्रमें होवै तो मनुष्य रसायनादिप्रयोगोंसे बहुत वर्ष बचे और इंद्रपदकोभी प्राप्त होताहै ॥ ५८ ॥ समस्त ग्रह एकही राशिमें केंद्र वा त्रिकोणमें होवैं तो बालक जन्मतेही मरे, यदि मंत्रसिद्धिसे न मरे तो युगांतायु होवै ॥ ५९ ॥

त्रिकोणे पापनिर्मुक्ते केंद्रे सौम्यविवर्जिते॥निधने पापरहिते जा-तस्त्वमरसन्निभः ॥ ६० ॥ लग्ने वृषे शुक्रयुते गुरौ तु केन्द्रान्विते

षट्त्रिदशायसंस्थैः ॥ रसायनाद्यैरिह मंत्रसिद्ध्या जातस्तु देवेन्द्रपदं प्रयाति ॥ ६१ ॥ शनौ तुलायां मकरे गुरौ च लग्ने कुलीरे वृषभे शशांके ॥ जातः सुखी ब्रह्मपदं प्रयाति प्रसाधनाद्यैरिह मंत्रसिद्ध्या ॥ ६२ ॥

त्रिकोण ५ । ९ में पापग्रह न हों केंद्रोंमें शुभग्रह न हों अष्टम भावमेंभी पापग्रह न होवें तो मनुष्य देवताके तुल्य होगा ॥ ६० ॥ वृषलग्नमें शुक्र हो गुरु केन्द्रमें तथा अन्यग्रह ६ । ३ । १० । ११ भावोंमें होवें तो मनुष्य रसायनादिसे अथवा मंत्रसिद्धिसे इन्द्रपदको प्राप्त होवै ॥ ६१ ॥ शनि तुलाका गुरु मकरका चंद्रमा वृषका और लग्न कर्कट होवै तो मनुष्य योगादिसाधन एवं मंत्रसिद्धिसे ब्रह्मपदको प्राप्त होताहै ॥ ६२ ॥

वर्गोत्तमे लग्नगते कुलीरे केन्द्रे गुरौ भूमिसुते कलत्रे ॥ सिंहासनांशे भृगुजे विशेषाद्रसायनाद्यैरमितायुरेति ॥ ६३ ॥ कन्यांत्यलग्ने सबुधे कलत्रे जीवे यदा गोपुरभाग्ययुक्ते ॥ मृद्वंशके वा दिननाथपुत्रे जातस्त्वसंख्यायुरुपैति सूनुः ॥ ६४ ॥

लग्न कर्क कर्कांशक होवै गुरु केन्द्रमें मंगल सप्तममें होवै विशेषकरिके शुक्र सिंहासनांशकमें होवै तो रसायन आदिसे अमित आयु होतीहै ॥ ६३ ॥ कन्यालग्न (अंत्यांशक) वर्गोत्तममें बुध होवै सप्तम गुरु गोपुरांशकमें अथवा शनि मृद्वंशकमें होवै तो मनुष्य असंख्य आयु भोगताहै ॥ ६४ ॥

देवलोकांशगे शुक्रे केन्द्रस्थे धरणीसुते ॥ सिंहासनांशके जीवे केन्द्रे जातस्त्वसंख्यकः ॥ ६५ ॥ उत्तमांशे बुधे केन्द्रे शुक्रे पारावतांशके ॥ स्वर्गलोके गुरौ केन्द्रे त्वौषधाद्यैरसंख्यकः ॥ ६६ ॥ गोपुरेशे भृगौ केन्द्रे गुरौ पारावतांशके ॥ त्रिकोणे कर्किलग्ने तु युगांतं सतु जीवति ॥ ६७ ॥

शुक्र देवलोकांशकमें मंगल केन्द्रमें गुरु सिंहासनांशमें केन्द्रगत होवै तो असंख्य आयु होवै ॥ ६५ ॥ उत्तमांशगत बुध केन्द्रमें हो शुक्र पारावतांशकमें हो गुरु स्वर्गलोकांशकमें होवै तो रसायन औषधादिसे असंख्यायु होवै ॥ ६६ ॥ शुक्र गोपुरांशगत केन्द्रमें होवै गुरु पारावतांशकमें त्रिकोणगत हो लग्न कर्क होवै तो युगांत आयु होवै ॥ ६७ ॥

चापांशे कर्किलग्ने च तस्मिन्देवेन्द्रपूजिते ॥ त्रिचतुर्भिर्ग्रहैः केन्द्रे जातो ब्रह्मपदं लभेत् ॥ ६८ ॥ तृतीयैकादशे शुक्रे गोपुरांशकान्विते ॥ वृषे वर्गोत्तमे लग्ने ब्रह्मणः परमं पदम् ॥ ६९ ॥ लग्ने

शुक्रे गुरौ कामे कन्यायामुडुनायके ॥ चापे मेषांशके लग्ने जातो याति परं पदम् ॥ ७० ॥ पंचमे बुधसंयुक्ते गोपुराद्यंशकान्विते ॥ गुरौ घटे विलग्नेऽस्मिन् जातो ब्रह्मपदं लभेत् ॥ ७१ ॥

कर्कलग्नमें धनुरंशक हो तहां गुरु बैठाहो और ३ । ४ ग्रह केंद्रमें होवें तो मनुष्य ब्रह्मपद पावै ॥ ६८ ॥ तीसरा वा ग्यारहवां शुक्र गोपुरादि शुभांशकमें होवै वर्गोत्तम वृषलग्न होवै तो मनुष्य ब्रह्मके परमपदको प्राप्त होवै ॥ ६९ ॥ लग्नमें शुक्र गुरु सप्तम कन्यामें चंद्रमा हो धन लग्नमें मेषांशका होवै तो मनुष्य परमपदको प्राप्त होवै ॥ ७० ॥ पंचम बुध गोपुरादि अंशकमें होवै गुरु कुंभका लग्नमें होवै तो मनुष्य ब्रह्मपदको प्राप्त होवै ॥ ७१ ॥

केन्द्रे गुरौ लाभगतेऽर्कपुत्रे धने रवौ मांदियुते कलत्रे॥भाग्ये धरासूनुयुतेऽत्र जातो युगांतकालं समुपैति मंत्रैः ॥ ७२ ॥ त्रिकोणगौ जीवबुधौ विशेषाल्लग्ने वृषे तत्र युते धराजे ॥ निशाकरे गोपुरभागयुक्ते जातः सहस्रद्वयवर्षमेति ॥ ७३ ॥ पक्षे सिते जन्म यदाह्निकाले केन्द्रे गुरौ वा शशिभे विलग्ने ॥ दारे कुजे भानुसुते सुखस्थे जातस्तु जीवेदयुताब्दसंख्यम् ॥ ७४ ॥

गुरु केन्द्रमें शनि लाभस्थानमें सूर्य धनस्थानमें केतु सप्तममें मंगल नवमस्थानमें होवै तो मंत्रबलसे युगांत पर्यंत आयु होवै ॥ ७२ ॥ गुरु बुध त्रिकोणमें होवैं वृषलग्न हो उसमें मंगल होवै और चंद्रमा गोपुरांशमें होवै तो दो सहस्रवर्षकी आयु होवै ॥ ७३ ॥ शुक्लपक्षमें दिनका जन्म हो गुरु केन्द्रमें अथवा कर्कका लग्नमें होवै सप्तम मंगल चौथा सूर्य होवे तो दसहजार वर्ष बचे ॥ ७४ ॥

जीवमंदारशुक्राणामन्योन्यं केन्द्रसंभवे ॥ त्रिकोणे वा यदा याते जातस्त्वयुतवत्सरः ॥ ७५ ॥ शुभैर्युक्ते चतुष्केंद्रे पापैः षट्त्रिभवान्वितैः ॥ सिंहे लग्ने यदा जातो जीवेत्षडयुतानि सः ॥ ७६ ॥

गुरु शनि शुक्रका अन्योन्य केन्द्रस्थिति संबंध होवै अथवा त्रिकोणमें होवै तो एक अयुतवर्ष जीवै ॥ ७५ ॥ चारों केंद्रोंमें शुभग्रह होवैं पापग्रह ६ । ३ । ११ भावोंमें हों लग्न सिंह होवै तो छः अयुतवर्ष आयु होवै ॥ ७६ ॥

अथ मुनियोगः।

कक्ष्यादिस्थैर्ग्रहैः सर्वैर्गुरुचंद्रादिभिर्यदा ॥ शून्यं तैः परमोच्चस्थैर्मुनितुल्यो भवेन्नरः ॥ ७७ ॥ शन्यादिभौमपर्यंते लग्नादौ खेचराः शुभाः ॥ वैशेषिकांशकयुता जातास्त्वमरसन्निभाः ॥ ७८ ॥

कर्कसे मकरपर्यंत सभी ग्रह गुरु चंद्रादि होवैं इस बीच जिनके उच्च हैं वे उच्चराशियोंमें होवैं तो मनुष्य मुनितुल्य होवै ॥ ७७ ॥ लग्नसे लेकर क्रमसे शनि सूर्य चंद्रमा मंगल होवैं वैशेषिकांशकोंमें भी होवैं तो मनुष्य देवताओंके तुल्य होवै ॥ ७८ ॥

आकल्पं जीवति नरो मृगे लग्ने कुजादिकाः ॥ रव्यन्ताः खेचराः सर्वे सोत्थे जीवेह्नि जन्मनि ॥ ७९ ॥ मेषांत्यलग्ने सगुरौ भृगौ वा निशाकरे गोधनुमध्यमांशे ॥ सिंहासनांशे यदि वा धराजे जातस्त्वसंख्याब्दमुपैति मंत्रैः ॥ ८० ॥ स्थिरे रवौ सोमसुतेन युक्ते चंद्रे वृषस्थे मिथुने च शुक्रे ॥ गुरौ कुलीरे यदि वा विलग्ने शनौ तुलायां मुनिसाम्यमेति ॥ ८१ ॥

मंगलसे लेकर सूर्यपर्यंत ग्रह मकर लग्नमें होवैं तीसरे बृहस्पति और दिनका जन्म होवै तो मनुष्य कल्पपर्यंत बचता है ॥ ७९ ॥ मेषके अंत्यांश लग्नमें गुरु अथवा शुक्र होवैं चंद्रमा वृषके वा धनके मध्यमांशमें होवै अथवा मंगल सिंहासनांशमें होवै तो मनुष्य मंत्रबलसे असंख्य वर्षपर्यंत बचताहै ॥ ८० ॥ सूर्य बुधसहित स्थिरराशिमें चंद्रमा वृषका शुक्र मिथुनका गुरु कर्कटका लग्नमें शनि तुलाका होवै तो मुनितुल्य होवै ॥ ८१ ॥

देवलोकांशके चंद्रे भौमे पारावतांशके ॥ सिंहासने रवौ लग्ने जातो मुनिसमो भवेत् ॥ ८२ ॥ मेषलग्ने रवौ माने जीवे स्वोच्चसमन्विते ॥ त्रिषडायगते पापे जातो मुनिसमो भवेत् ॥ ८३ ॥ चिंतामणौ मया प्रोक्तं संख्यायुश्च मनीषिणाम् ॥ यदुक्तं पूर्वकैः सर्वं तत्तदेव मयाधुना ॥ ८४ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिंतामणावायुस्संख्यानिरूपणो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

चंद्रमा देवलोकांशकमें मंगल पारावतांशमें सूर्यसिंहासनांशमें लग्नगत होवै तो मनुष्य मुनि तुल्य होवै ॥ ८२ ॥ मेष लग्न सूर्य दशम बृहस्पति उच्चका और ३ । ६ । ११ । भावोंमें पापग्रह होवैं तो मनुष्य मुनितुल्य होवै ॥ ८३ ॥ जो यहां आयुसंख्या कहीहै यह विद्वानोंके तुष्ट्यर्थ जो पूर्वाचार्योंने कही है वही समस्त मैंनें यहां कहीहै ॥ ८४ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिंतामणौ माहीधरभाषाटीकायामायुस्संख्यानिरूपणाध्यायो द्वादशः ॥ १२ ॥

त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

अथ दीप्ताद्यवस्थाफलविचाराध्यायः।

दशानुरोधेन फलं वदंति मुनीश्वरा जातशुभाशुभं तत् ॥ सारं समुद्धृत्य तदेव वक्ष्ये भेदं यथा विस्तरतो दशानाम् ॥ १ ॥ दीप्तः स्वस्थस्तु मुदितः शांतो हीनोतिदुःखितः ॥ विकलश्च खलः कोपी नवधा खेचरो भवेत् ॥ २ ॥ उच्चस्थः खेचरो दीप्तः स्वस्थः स्वक्षेत्रमित्रभे ॥ मुदितो मित्रभे शांतस्त्वपरो हीन उच्यते ॥ ३ ॥ शत्रुभे दुःखसंयुक्तो विकलः पापसंयुतः ॥ खलः पराजितो ज्ञेयः कोपी स्यादर्कसंयुतः ॥ ४ ॥ पृथक्पृथक् फलं तेषां दशाकालविशेषतः ॥ तत्र नामानुरोधेन परिपाके वदंति हि ॥ ५ ॥

अब दशाफलके लिये दीप्तादि अवस्था कहतेहैं कि मुनीश्वर दशाके अनुरोधसे शुभाशुभ फल कहतेहैं उनमें सार लेकर विस्तारसे यहां वही विचार कहताहूं ॥ १ ॥ दीप्त १, स्वस्थ २, मुदित ३, शांत ४, हीन ५, अतिदुःखित ६, विकल ७, खल ८, कोपी ९, ऐसे नौ प्रकार यह होते हैं ॥ २ ॥ अब इनके लक्षण कहते हैं ॥ उच्चस्थित ग्रह दीप्त १, अपनी राशिमें स्वस्थ २, मुदित ३, शुभराशिगत शुभयुत शांत ४, नीच राशिमें हीन ५, ॥ ३ ॥ शत्रुराशिमें दुःखी ६, पापयुक्त विकल ७, युद्धमें पराजित खल ८, सूर्ययुक्त अस्तंगत कोपी ९ ॥ ४ ॥ इनके पृथक् फल विशेषकरके दशासमयमें नामके गुणानुसार परिणाममें कहते हैं ॥ ५ ॥

पाके प्रदीप्तस्य धराधिपत्यमुत्साहशौर्यं धनवाहनं च ॥ स्त्रीपुत्रलाभं सुखबंधुपूजे क्षितीश्वरान्मानमुपैति विद्याम् ॥ ६ ॥ स्वस्थस्य खेटस्य दशाविपाके स्वास्थ्यं नृपाल्लब्धधनादिसौख्यम् ॥ विद्यायशःप्रीतिमहत्त्वतां च दारार्थभूम्यात्मजधर्ममेति ॥ ७ ॥ मुदान्वितस्यापि दशाविपाके वस्त्रादिभूगंधसुतार्थधैर्यम् ॥ पुराणधर्मश्रवणादिगानदानादियानांबरभूषणाप्तिम् ॥ ८ ॥

दीप्तादियोंके पृथक् फल कहतेहैं प्रदीप्त ग्रहके दशामें राजत्व, उत्साह, शौर्य (वीरता), धन, वाहन, स्त्रीपुत्र लाभ, सुख, बंधु वर्गमें सन्मान, विद्या और राजासे सन्मान मिलतेहैं

॥ ६ ॥ स्वस्थ ग्रहकी दशामें आराम मिले, राजासे मिले धनादिका सुख, विद्या, यश, प्रसन्नता, बड़प्पन, स्त्री, धन, भूमि, पुत्र और धर्म मिलतेहैं ॥ ७ ॥ मुदितावस्थावाले ग्रहकी दशामें वस्त्रादि, भूमि, सुगंधि वस्तु, पुत्र, धन, धैर्य, पुराणधर्म सुनना आदि, गायन, दान, सवारी, वस्त्र, भूषणादि मिलतेहैं ॥ ८ ॥

दशाविपाके सुखधैर्यमेति शांतस्य भूपुत्रकलत्रयानम् ॥ विद्या-
विनोदान्वितधर्मशास्त्रं बह्वर्थदेशाधिपपूज्यतां च ॥ ९ ॥ स्थान-
च्युतिं बंधुविरोधितां च हीनस्य खेटस्य दशाविपाके॥ जीवत्यसौ
कुत्सितहीनवृत्त्या त्यक्तो जनै रोगनिपीडितः स्यात् ॥ १० ॥
दुःखान्वितस्यापि दशाविपाके नानाविधं दुःखमुपैति नित्यम् ॥
विदेशगो बंधुजनैर्विहीनश्चौरादिभूपैर्भयमाभिशस्तः ॥ ११ ॥

शांत ग्रहकी दशामें सुख, धैर्य, भूमि, पुत्र, स्त्री, वाहन, विद्या, चर्चायुक्त, धर्मशास्त्र-वाध, बहुत प्रकार प्रयोजनसिद्धि, और राजासे पूज्यता मिलती है ॥ ९ ॥ हीनग्रहकी दशामें स्थानहानि, बंधुविरोध होतें हैं तथा निंद्य और हीन वृत्तिसे आजीवन मिलताहै अपने मनुष्योंसे त्यक्त और रोगपीडित रहताहै ॥ १० ॥ दुःखयुक्तकी दशामें अनेक प्रकारके दुःख नित्य मिलते हैं विदेशगमन बंधुजनसे हीन नर रहे चौर आदि वा राजासे भय एवं अपवाद पावे ॥ ११ ॥

वैकल्यखेटस्य दशाविपाके वैकल्यमायाति मनोविकारम् ॥
पित्रादिकानां मरणं विशेषात्स्त्रीपुत्रयानांबरचोरपीडाम् ॥ १२ ॥
दशाविपाके कलहं वियोगं खलस्य खेटस्य पितुर्वियोगम् ॥
शत्रुं जनानां धनभूमिनाशमुपैति नित्यं स्वजनैश्च निंदाम् ॥ १३ ॥
कोपान्वितस्यापि दशाविपाके पापं समायाति बहुप्रकारैः ॥
विद्यायशःस्त्रीधनभूमिनाशं राज्ञां च वित्तं हरतेऽत्र योगी ॥ १४ ॥

विकल ग्रहकी दशामें विकलता मनमें विकार पिता आदियोंका मरण स्त्री पुत्र वाहन हानि चोरसे पीडा मिले ॥ १२ ॥ खलग्रहकी दशामें कलह, अपने मनुष्योंका वियोग पिताका वियोग अनेक शत्रु, धन भूमिका नाश और अपने मनुष्योंसे निन्दा मिले ॥ १३ ॥ कोपयुक्तकी दशामें बहुत प्रकारसे पाप आताहै विद्या यश स्त्री धन भूमिका नाश राजासे वित्तहरण यद्वा राजाओंकाभी धन योगी हरण करे ॥ १४ ॥ इति दीप्तादिग्रहफलविचारः ॥

अथ दशाफलानि।

भानोर्दशायां परमोच्चगस्य भूम्यर्थदारात्मजकीर्तिशौर्य्यम् ॥
संमाननं भूमिपतेः सकाशादुपैति संचारविनोदगोष्ठीम् ॥ १ ॥
उच्चान्वितस्यापि रवेर्दशायां गोवृद्धिधान्यार्थपरिश्रमं च ॥ संचा-
रयुग्बंधुजनैर्विरोधं देशाद्विदेशं चरति प्रकोपात् ॥ २ ॥ प्रच-
ण्डवेश्यागमनं क्षितीशादुपैति वृत्तिं रतिकेलिमानम् ॥ मृदंगभेरी-
रवयुक्तयानमन्योन्यवैरं लभते मनुष्यः ॥ ३ ॥ आरोहिणी
वासरनायकस्य दशा महत्त्वं कुरुतेतिसौख्यम् ॥ परोपकारं सुत-
दारभूमिगोवाजिमातंगकृषिक्रियादीन् ॥ ४ ॥

उच्चराशिके परमांश १० अंशपर सूर्य होवै तो उसकी दशामें भूमि, धन, स्त्री, कीर्ति, शौर्य राजासे सन्मान और टहलने घूमने आदि शुभ संचार (सगल) मंत्रणाकी गोष्ठी (सभा) प्रवेश इतने मिलतेहैं ॥ १ ॥ केवल उच्चराशिमात्रमें होवै तो उसकी दशामें गौकी वृद्धि अन्नधन श्रम गमागमादि होवै इधर उधर फिरना पडे बंधु जनोंसे विरोध होवै कोपसे एकदेशसे दूसरे देशको चला जाताहै ॥ २ ॥ दुष्ट वेश्याका गमन होवै राजासे आजीवन मिले कामक्रीडा तथा मान मिले, मृदंग तुरही आदि बाजे जिसके आगे बजते हों ऐसी सवारी मिले आपुसमें परस्पर वैरभी मनुष्य पाताहै ॥ ३ ॥ यदि सूर्य (आरोही) उच्चमें चढ़रहा होवै तो उसकी दशामें बडप्पन मिलताहै सुख बहुत करताहै दूसरेका उपकार होताहै पुत्र स्त्री भूमि गौ घोडा हाती और कृषि कर्म आदि मिलतेहैं ॥ ४ ॥

दशावरोहाद्दिननायकस्य कृषिक्रिया वित्तगृहेष्टनाशम् ॥ चोरा-
ग्निपीडां कलहं विरोधं नरेशकोपं कुरुते विदेशम् ॥ ५ ॥
नीचस्थितस्यापि रवेर्विपाके मानार्थनाशं क्षितिपालकोपात् ॥
स्वबंधुनाशं सुतमित्रदारैः पित्रादिकानामपकीर्तिमेति ॥ ६ ॥
अत्यंतनीचान्वितसूर्यदाये विपत्तिमाप्नोति गृहच्युतिं च ॥
विदेशयानं मरणं गुरूणां स्त्रीपुत्रगोभूमिकृषेर्विनाशम् ॥ ७ ॥

सूर्यकी दशा (अवरोही) उच्चसे उतरकर नीचमें जानेवालीमें कृषिकर्म अन्न, धन, घर, प्रियवस्तुका नाश करतीहै चोरकी अग्निकी पीडा कलह वैर राजकोप और विदेशगमन करतीहै ॥ ५ ॥ नीच राशिगत सूर्यकी दशामें राजकोपसे मान एवं धनका नाश अपने बंधु-

का नाश, पुत्र, मित्र, स्त्रीसे हानि, पिता आदियोंकी अपकीर्ति पाताहै ॥ ६ ॥ अत्यंत नीच तुलाके १० अंश पर स्थित सूर्यकी दशामें विपत्ति पाताहै घरबार छूट जाताहै विदेश गमन पिताआदि गुरुजनोंका मरण और स्त्री, पुत्र, गौ, भूमि, कृषिका नाश होताहै ॥ ७ ॥

मूलत्रिकोणस्थरवेर्विपाके क्षेत्रार्थदारात्मजबंधुसौख्यम् ॥ राजा-
श्रयं गोधनमित्रलाभं स्वस्थानयानादिकमेति राज्यम् ॥ ८ ॥
स्वक्षेत्रगस्यापि रवेर्दशायां स्वबंधुसौख्यं कृषिवित्तकीर्तिम् ॥
विद्यायशःप्रार्थितराजपूजां स्वभूमिलाभं समुपैति विद्याम् ॥ ९ ॥

अपने मूलत्रिकोणमें स्थित सूर्यकी दशामें खेती, धन स्त्री, पुत्र, बंधुसे सुख राजाके आश्रय गौ, धन, मित्र, अपनास्थान वाहनादि और स्वकुलानुमान राज्य पाताहै ॥ ८ ॥ अपने क्षेत्रगत सूर्यकी दशामें अपने बंधुजनोंसे सौख्य कृषि, धन, कीर्ति, विद्या, यश, मांगी-हुई राजासे पूजा अपनी भूमि एवं विद्याको पाताहै ॥ ९ ॥

दशाविपाके ह्यधिशत्रुगस्य रवेः प्रनष्टार्थकलत्रपुत्रः ॥ गोमित्र-
पित्रादिशरीरकष्टं शत्रुत्वमायाति जनैः समंतात् ॥ १० ॥ सप-
त्नराशिस्थितसूर्यदाये दुःखी परिभ्रष्टसुतार्थदारः ॥ नृपाग्निचौरै-
र्विपदं विवादं पित्रोर्विरोधं च दशांतमेति ॥ ११ ॥

अधिशत्रु राशिगत सूर्यकी दशामें धन, स्त्री, पुत्र नष्ट होवैं गौ, मित्र, पिता आदिके शरीरमें कष्ट होवै सभी ओरसे मनुष्योंके साथ शत्रुता होवै ॥ १० ॥ शत्रु राशिगत सूर्यकी दशामें दुःखी रहे पुत्र, धन, स्त्री नष्ट होवैं राजा, अग्नि, चोरसे विपत्ति मिले विवाद होवै इस दशामें माता पितासे विरोध पावै ॥ ११ ॥

स्वमित्रराशिस्थितसूर्यदाये स्वभृत्यपित्रात्मजराजपूजाम् ॥ स्वगेः
हवासं स्वजनस्य संगं यानादिभूषांबरताम्रलाभम् ॥ १२ ॥
अत्यंतमित्रर्क्षगतस्य भानोर्दशाविपाके ह्यतिसौख्यमेति ॥ स्त्री-
पुत्रधान्यार्थमनोविलासरथादियानांबरभूषणानि ॥ १३ ॥

मित्रराशिगत सूर्यदशामें अपने सेवक पिता पुत्र राजासे सम्मान पूजा मिले अपने घरमें रहै अपने मनुष्योंका संग मिले सवारी आदि तथा भूषण वस्त्र तांबेका लाभ होवै ॥ १२ ॥ अधिमित्र राशिगत सूर्यकी दशामें अतिसुख मिले स्त्री, पुत्र, अन्न, धन, मनका विलास रथ आदि सवारी और वस्त्र भूषण मिलें ॥ १३ ॥

समक्षगस्यापि रवेर्दशायां समंजनैः स्यात्कृषिभूमिधान्यम् ॥
गोवाजियानांबरदेहसौख्यं स्त्रीपुत्रदोषं रणपीडितः स्यात् ॥१४॥
नीचान्वितस्यापि रवेर्दशायां नीचानुवृत्त्या कुनखी कुशीलः ॥
स्त्रीपुत्रधान्यार्थपशुक्रियादिमनोविकारं समुपैति हेयम् ॥ १५ ॥
उच्चान्वितस्यापि रवेर्दशायां मनोभिलाषं लभते स्ववृत्त्या ॥
तीर्थाभिषेकं हरिकीर्तनं च प्राकारकूपादिपुराणशास्त्रम् ॥ १६ ॥

सम ग्रहके राशिगत सूर्यकी दशामें मनुष्योंके साथ समता रहे कृषि, भूमि, अन्न, गौ, घोडे, सवारी, वस्त्र मिलें शरीर सुख मिले स्त्रीपुत्रोंको दोष उत्पन्न होवै रणसे पीडित रहे ॥ १४ ॥ नीचगत ग्रहसे युक्त सूर्यकी दशामें नीचवृत्तिसे आजीवन होवै कुनखी होवै दुष्टस्वभाव रहे स्त्री, पुत्र, अन्न, धन पशुक्रिया आदिमें मनोविकार रहे इनका त्याग होवै ॥ १५ ॥ उच्चगत ग्रह-युक्त सूर्यकी दशामें अपनी वृत्तिसे मनोभिलाष पावै तीर्थस्नान मिले हरिका कीर्त्तनभी होवै परिखा कूप आदिका बनाना पुराण शास्त्रकी चर्चा मिलै ॥ १६ ॥

पापान्वितस्य द्युमणेर्दशायां नित्यं मनः क्लिश्यति देयबुद्ध्या ॥
कुभोजनं कुत्सितवस्त्रपाने कुशीलवृत्त्या त्वधनं कृशत्वम् ॥१७॥
दिनाधिनाथस्य शुभान्वितस्य पाके सुखं भूमिधनादिवस्त्रम् ॥
इष्टैर्विलासं स्वजनैः समाजं कल्याणवाग्जालविनोदगोष्ठीम् ॥१८॥

पापयुक्त सूर्यकी दशामें बहुत व्ययकी बुद्धि यद्वा त्यागबुद्धीसे सर्वदा मनमें क्लेश रहै कुभो-जन कदन्न आदि कुवस्त्र आदि निषिद्धपान मिलें दुष्टशील दुष्टवृत्तिसे निर्द्धनता और कृशत्व होवै ॥ १७ ॥ शुभयुक्त सूर्यकी दशामें सुख मिले भूमि धन वस्त्रादि मिलें मनोनुकूल मनुष्योंसे विलास अपने मनुष्योंका समाज मंगल वाणीवाणीके जालके विनोद और सभ्यत्व मिले॥ १८॥

करोति भानुः शुभवीक्षितश्चेद्विद्यायशःस्त्रीसुतवाग्विलासम् ॥
कांतिप्रतापं रतिकेलिसौख्यं पित्रोः सुखं भूपतिमाननं च ॥१९॥
पापेक्षितस्यापि सहस्रभानोर्दशाविपाके परमं तु दुःखम् ॥ पित्रो-र्विनाशं सुतदारकष्टं चौराग्निभूपालकृतं कृशत्वम् ॥ २० ॥

शुभ ग्रहदृष्ट सूर्यकी दशामें विद्या, यश, स्त्री, पुत्र मिलैं बातचीतमें विलास होवै कांतिबढे प्रताप बढे कामक्रीडाका सुख मिले ॥ १९ ॥ पापदृष्ट सूर्यकी दशामें परमदुःख मिले मातापिताका विनाश स्त्री पुत्र कष्ट चोरसे अग्निसे भय राजासे भय मिले और शरीरमें कृशता आवै॥२०॥

केन्द्रान्वितस्यापि दिवाकरस्य दशाविपाके नृपदंडमुग्रम् ॥ स्थानच्युतिं बंधुवियोगमेति भंगः कृषेर्वित्तपरिश्रमं च ॥ २१ ॥ त्रिकोणसंयुक्तरवेर्दशायां बुद्धिभ्रमं राजविमाननं च ॥ सौख्यादिहानिं निधनं पितुश्च कर्मादिवैकल्यमुपैति काले ॥ २२ ॥

केन्द्रगत सूर्यकी दशामें राजासे दण्ड पावै दुःख मिले स्थान छूटे बंधुका वियोग होवे कृषि भंग होवे धनमें गडबडी होवै ॥ २१ ॥ त्रिकोणमें स्थित सूर्यकी दशामें बुद्धिभ्रम होवै राजासे अपमान मिले सुखादिकी हानि पिताका मरण कार्यादियोंमें विकलता रहै ॥२२॥

उच्चांशकस्य च दशा विदधाति वृत्तिं नित्यं प्रतापजनितां महतीं श्रियं च ॥ नानाविनोदललितं रतिकेलिसौख्यं स्त्री वस्त्रलाभमनिशं पितृवर्गनाशम् ॥ २३ ॥ नीचांशयुक्तस्य रवेर्दशायां भार्यार्थभूहानिविदेशयानम् ॥ त्यक्तो जनैर्बंधुविकुत्सितस्तु मनोविकारं ज्वरमेहरोगम् ॥ २४ ॥

उच्चांशगत सूर्यकी दशा नित्य अपने प्रताप (पराक्रम) से जीतीहुई वृत्ति बडी शोभा वा लक्ष्मीभी देतीहै नानाप्रकारके रमणीय खेल काम क्रीडाका सुख स्त्रीलाभ वस्त्रलाभ नित्य होवै पितृवर्ग (पितृ पितृव्यादिक) का नाश होवै ॥ २३ ॥ नीचांशगत सूर्यकी दशामें स्त्री, धन भूमि की हानि विदेशगमन होवै अपने मनुष्योंसे त्यक्त रहे बंधुजनोंसे निंदा पावै मनमें विकार रहे ज्वर प्रमेह रोग रहै ॥ २४ ॥

आदौ सूर्यदशायां दुःखं पितृरोगकृत्क्षयश्चाधिः ॥ मध्ये पशुधनहानिश्चान्ते विद्यां महत्त्वञ्च ॥ २५ ॥ दशाविपाके धनहानिमेति षष्ठस्थभानोरतिदुःखजालम् ॥ गुल्मक्षयोद्भूतपवित्ररोगं मूत्रादिकृच्छ्रं त्वथ वा प्रमेहम् ॥ २६ ॥ रन्ध्रस्थभानोरपि वा दशायां देहस्य कष्टं त्वथ वाग्निभीतिम्॥ चातुर्थिके नेत्रविकारकासं ज्वरातिसारं स्वपदच्युतिं च ॥ २७ ॥

समुच्चय फल है कि सूर्यकी दशाके आदिमें दुःख पिताको रोगसे उत्पन्न क्षय एवं मानसी व्यथा होतीहै मध्यमें पशुधन हानि और अंतमें विद्या तथा बड़प्पन मिलतीहै ॥ २५ ॥ छठें भावमें स्थित सूर्यकी दशामें धनहानि अति दुःखोंका जाल गुल्म क्षय से उत्पन्न अतिसार रोग मूत्रकृच्छ आदि अथवा प्रमेहरोग होताहै ॥ २६ ॥ अष्टमभावगत सूर्यकी दशामें शरीरका कष्ट अथवा अग्निभय चौथिया ज्वरनेत्रविकार कासज्वरसहित अतिसार और अपने पदकी हानि भी पाताहै ॥ २७ ॥

भानोर्द्वादशगस्य चेद्यदि दशा क्लेशार्थहानिं कृशं स्त्रीबंध्वात्मज भूमिनाशमथ वा पित्रोर्विनाशं कलिम् ॥ स्थानात्स्थानपरिभ्रमं विषकृतं राज्ञो भयं पादरुग्विद्यावादविनोदगोष्ठिकलहं गोवाजि-संपीडनम् ॥ २८ ॥

द्वादशगत सूर्यकी दशामें क्लेश धनहानि, कृशता, स्त्री, बंधु, पुत्र, भूमिका नाश अथवा माता पिताकी हानि कलह एकजगहसे दूसरे जगह भ्रमण जहरसे भय राजासे भय पैरोंमें रोग विद्याके शास्त्रार्थकी विनोदसभामें कलह गौ हाथीसे पीडा मिले ॥ २८ ॥

पुत्रोत्पत्तिविपत्तिमत्र कुरुते भानोर्धनस्थस्य वा क्लेशं बंधुवियोग-दुःखकलहं वाग्दूषणं क्रोधनम् ॥ स्त्रीनाशं धननाशनं नृपभयं भूपुत्रयानांबरं सर्वं नाशमुपैति तत्र शुभयुग्वाच्यं न चैतत्फलम् ॥ २९ ॥ भानोर्विक्रमयुक्तस्य दशा धैर्यं महत्सुखम् ॥ नृपमाननम-र्थाप्तिं भ्रातृवैरविपत्तथा ॥ ३० ॥

द्वितियस्थानगत सूर्यकी दशामें पुत्रकी उत्पत्ति और पुत्रहानिभी होतीहै क्लेश बंधुजनवियोग दुःख कलह वाणीका दूषण क्रोध पावै स्त्रीनाश धननाश राजासे भय भूमि, पुत्र, सवारी, वस्त्र सब नष्ट होतेहैं यदि तहां शुभयुक्त होवै तो यह फल न कहना पूर्वोक्त शुभयुक्तका ही फल प्रबल रहताहै ॥ २९ ॥ तीसरे सूर्यकी दशामें धैर्य बडा सुख राजमान धनागम होतेहैं तथा भाईयोंसे वैर और उनकी विपत्तिभी होतीहै ॥ ३० ॥

सुखस्थितस्यापि रवेर्दशायां भोगार्थभूभृत्यकलत्रहानिम् ॥ क्षेत्रादिनाशं स्वपदच्युतिं वा यानच्युतिं चोरविषाग्निभीतिम् ॥ ३१ ॥ दारान्वितस्यापि रवेर्दशायां कलत्ररोगं त्वथ वा मृतिं च ॥ कुभोजनं कुत्सितपाकजातं क्षीरादिदध्याज्यविहीनमन्नम् ॥ ३२ ॥ कर्मस्थितस्यापि रवेर्दशायां राज्यार्थलाभं समुपैति धैर्यम् ॥ उद्योगसिद्धिं यशसा समेतं जयं विवादे नृपमाननं च ॥ ३३ ॥

चतुर्थस्थित सूर्यकी दशामें भोगपदार्थ भूमि, धन, भृत्य, स्त्रीकी हानि खेती आदिका नाश अपने अपने अधिकारसे गिरना अथवा सवारीसे गिरना चोर विष अग्निकी भय इतने फल होतेहैं ॥ ३१ ॥ सप्तमगत सूर्यकी दशामे स्त्रीको रोग अथवा मरणभी मारक दारहा ग्रह संबंधसे होजाताहै तथा कुभोजन(निकम्मे पकाये स्वाद रहित और दही घृतसे हीन)मिलें ॥ ३२ ॥

दशम सूर्यकी दशामें राज्यलाभ धनलाभ होवै धैर्य मिले उद्यम सफल यशसहित होवै विवादमें जय राजासे मान मिले ॥ ३३ ॥

आयस्थितस्यापि दशाविपाके भानोर्धनाप्तिं शुभकर्मलाभम् ॥
उद्योगसिद्धिं सुतदारसौख्यं यानादिभूषांबरदेहसौख्यम् ॥ ३४ ॥
संज्ञाध्याये यस्य यद्द्रव्यमुक्तं कर्माजीवे यस्य यच्चोपदिष्टम् ॥
भावस्थानालोकयोगोद्भवं च तत्तत्सर्वं तस्य योज्यं दशायाम् ॥ ३५ ॥

ग्यारहवें सूर्यकी दशामें धनप्राप्ति अच्छे कार्यका लाभ उद्यम सफल स्त्री पुत्र सुख वाहन आदि तथा भूषण वस्त्र लाभ शरीर सुख मिलतेहैं ॥ ३४ ॥ अन्य फलके लिये कहतेहैं कि संज्ञाध्यायमें जिसग्रहका जो द्रव्य कहाहै तथा कर्माजीवोमें जिस ग्रहकी जिस प्रकार आजीविका कहीहै उन्ही फलोंको भावमें स्थान वीर्य दृष्टि योगके कारणसे उसी प्रकार सब फल उसकी दशामें लगाना ॥ ३५ ॥

सूर्ये स्थानबलाधिके कृषिधनं गोभूमियानांबरं सौख्यं राजसुमाननं परधनैः संयुज्यते कांतिमान् ॥ तत्पाके शयनांबरादि लभते सर्वोपकारं महाकीर्तिं भूषणमिष्टबंधुसहितं तीर्थाभिषेकं महत् ॥ ३६ ॥ रवौ यदा स्थानबलेन हीने तत्पाककाले बलमर्थनाशम् ॥ स्थानच्युतिं बंधुविरोधतापं देशाद्विदेशं समुपैति दुःखम् ॥ ३७ ॥

स्थानबलाधिक सूर्यकी दशामें खेती वारी धन, गौ, भूमि सवारी, वस्त्रोंका सुख मिले राजासे सन्मान मिले पराया धन मिले कांति बढे शय्या वस्त्रादि मिलें सबका उपकार होवै बडी कीर्ति होवै भूषण मिले इष्ट मित्र सहित बडे तीर्थोंका स्नान मिले ॥ ३६ ॥ स्थान बलसे रहित सूर्य होवै तो उसकी दशामें बल एवं धनका नाश होवै स्थानहानि बंधुजन विरोध-संताप देशसे विदेश गमन और दुःख पाताहै ॥ ३७ ॥

दिग्वीर्ययुक्ते दिवसेश्वरे तु दिगंतराक्रांतधनोपि सौख्यम् ॥ तत्तदिशः प्राप्तयशोर्थभूमिर्नोचेत्तथा तादृशमत्र नास्ति ॥ ३८ ॥ तत्कालमानात्तनुते बलिष्ठे रवौ विपाके कृषिभूमिवित्ते ॥ उद्योगसिद्धिं नृपमाननं च हीने रवौ कालबलेन नाशम् ॥ ३९ ॥

दिग्बलयुक्त सूर्यकी दशामें इतना धनवान् होवें कि धनसे दिगंतभी दबनावे सुखभी होवै उन्ही उन्ही दिशाओंसे प्राप्त यश, धन, भूमि मिलें यदि दिग्बली न होवै तो अन्य

बली होनेमें ऐसा फल नहीं मिलता ॥ ३८ ॥ सूर्यकाल बलीके दशामें खेतीके कृत्यमें लाभ भूमि धन लाभ उद्यम सफल राजासे मान मिले सूर्यकाल बलरहित होवै तो उक्त वस्तुओंका नाश होवै ॥ ३९ ॥

निसर्गतः सर्वमुपैति काले रवौ तु नैसर्गिकवीर्ययुक्ते ॥ यानार्थभूषांबरदेहसौख्यं हीने रवौ चोरनृपाग्निभीतिम् ॥ ४० ॥ रवौ तु चेष्टाधिकवीर्ययुक्ते स्वचेष्टितार्थागममेति सौख्यम् ॥ नृपस्य मानं सुतदारसौख्यं कृष्यादियानं न च हीनचेष्टे ॥ ४१ ॥ रवौ खगानां बलदृष्टियुक्ते त्वचिंतयित्वा सकलं च सौख्यम् ॥ तज्जायते तत्परिपाककाले तेनैव हीने सकलं विनाशम् ॥ ४२ ॥

नैसर्गिक बली सूर्यकी दशामें वाहन, धन, भूषण, वस्त्र, देहसौख्य समयपर स्वाभाविकही मिल जातेहैं इस बलसे हीन होवै तो चोर राजा और अग्निकी भय होवै ॥ ४० ॥ चेष्टा बली सूर्यकी दशामें अपनी चेष्टा (क्रियाविशेष) से धन आवै सुख मिले राजासे मान मिले पुत्र कलत्र कृषि आदि तथा वाहन लाभ होवै, चेष्टा बलहीन होवैतो ऐसे फल न होंगे बलके विपरीत होंगे ॥ ४१ ॥ सूर्य दृष्टि बलसे युक्त होवै तो विना विचारे हुये भी समस्त सुख मिलें दृष्टि बलहीन होवै तो सब सुख नष्ट होवैं ॥ ४२ ॥

क्रूरादिषष्ट्यंशरवेर्दशायां स्थानच्युतिं वा नृपचौरभीतिम् ॥ कोपाधिकं तत्र शिरोरुजं च पित्रादिनाशं त्वथ वा तदीयम् ॥ ४३ ॥ मृद्वंशषष्ट्यंशरवेर्दशायां मृद्वंशपादबरभूषणाप्तिम् ॥ नामद्वयं राजसुपूज्यतां च वेदांतशास्त्रागमधर्मशास्त्रम् ॥ ४४ ॥ पारावतांशयुतस्य भानोर्दशाविपाके महतीं च कीर्तिम् ॥ बंध्वर्थदेशाधिपमाननं च पुत्रादिसन्मित्रकलत्रलाभम् ॥ ४५ ॥

क्रूर षष्ट्यंशगत सूर्यकी दशामें स्थानहानि वा राजा अथवा चौरकी भय होवै गुस्सा अधिक होवै शिरमें रोग होवै अथवा उसके पिता आदिका नाश होवै ॥ ४३ ॥ मृद्वंश षष्ट्यंशगत सूर्यकी दशामें मृद्वंशेश ग्रहानुरूप वस्त्र भूषण मिलें दो नाम अर्थात् दूसरा उपाधिनाम यद्वा अधिकारी नाम मिले राजासे पूज्यता मिले वेदांत वेद धर्मशास्त्रका ज्ञान मिलै ॥ ४४ ॥ सूर्य पारावतादि अंशकमें होवै तो उसकी दशामें बडी किर्त्ति मिले बंधुवृद्धि धनागम राजासे मान पुत्रादिलाभ अच्छे मित्र अच्छी स्त्रीका लाभ होवै ॥ ४५ ॥

स्वोच्चादिजन्यं फलमाहुरादौ पश्चात्फलं खेचरदृष्टिजन्यम् ॥ मध्ये फलं स्थानभवं तथैव पापग्रहाणामिह योजयन्ति ॥ ४६ ॥ शु-

जंगमत्र्यंशयुतस्य भानोर्दशाविपाके हि भयं विषाद्वा ॥ नृपाग्निपातित्यमनेकदुःखं पाशादिभृत्यंशयुतस्य चैवम् ॥ ४७ ॥ स्वोच्चस्थोपि दिनेशो नीचांशे चेत्कलत्रधनहानिः ॥ स्वकुलजबंधुविरोधः पित्रादीनां तथैव मुनिवाक्यम् ॥ ४८ ॥ उच्चांशकयुतो भानुर्नीचस्थोपि महत्सुखम् ॥ करोति राज्यभारं च दशांते विपदं कृशाम् ॥ ४९ ॥ इति रविदशाफलानि ॥

जहां दशेश सूर्य या कोई ग्रह उच्चादिमें हो तथा ग्रहदृष्टि बलयुक्त भी हो तो प्रथम उच्चादिफल प्रबल होगा तब दृष्टि आदिका होगा बीचमें स्थानफल होगा ऐसे प्रकारसे पापग्रहोंके फलकी विधि लगातेहैं ॥ ४६ ॥ सर्पद्रेष्काणगत सूर्यकी दशामें विषसे अथवा राजासे अग्निसे पतित होनेसे अनेक दुःख मिलतेहैं, पाशभृत् द्रेष्काणगत सूर्यकी दशामें भी ऐसेही फल होतेहैं ॥ ४७ ॥ सूर्य उच्चराशिका भी नीचांशकमें होवै तो स्त्रीकी तथा धनकी हानि करताहै तथा अपने कुलोत्पन्न बंधुजनसे विरोध तथा पिता आदियोंकी भी विरुद्धता होवै ऐसा मुनिवाक्य है ॥ ४८ ॥ जो सूर्य उच्चांशकमें नीचराशिका भी होवे तो बडा सुख मिले और राजभार भी करताहै परंतु दशाके अंतमें थोडी विपत्तिभी करताहै ॥ ४९ ॥ इति सूर्यदशाफलानि ॥

अथ चंद्रदशाफलानि ।

अत्युच्चगस्यापि निशाकरस्य दशाविपाके कुसुमांबरं च ॥ महत्त्वमाप्नोति कलत्रलाभं धनायतिं पुत्रमनोविलासम् ॥ १ ॥ उच्चस्थितस्यापि निशाकरस्य प्राप्तो दशायां सुतदारवित्तम् ॥ मिष्टान्नपानांबरभूषणाप्तिं विदेशयानं स्वजनैर्विरोधम् ॥ २ ॥

परमोच्चगत चंद्रमाकी दशामें उत्तम पुष्प वस्त्र और बडप्पन स्त्री धनसंचय पुत्रप्राप्ति मनके विलास मिलते हैं ॥ १ ॥ उच्चगत चंद्रमाकी दशामें पुत्र, स्त्री, धन, मिष्टान्न, पान, वस्त्र, भूषणोंका लाभ तथा विदेशगमन अपने मनुष्योंसे ।विरोध होताहै ॥ २ ॥

आरोहिणी चन्द्रदशा प्रपन्ना स्त्रीपुत्रवित्तांबरकीर्तिसौख्यम् ॥ करोति राज्यं सुखभोजनं च देवार्चनं भूसुरतर्पणं च ॥ ३ ॥ निशाकरस्याप्यवरोहकाले स्त्रीपुत्रमित्रांबरसौख्यहानिम् ॥ मनोविकारं स्वजनैर्विरोधं चौराग्निभूपैः पतनं तडागे ॥ ४ ॥ नीचांशगस्यापि

निशाकरस्य प्राप्तौ दशायां विविधार्थहानिम् ॥ कुभोजनं कुत्सितराजसेवां मनोविकारं समुपैति निद्राम् ॥ ५ ॥

आरोही (उच्चाभिगामी) चन्द्रमाकी दशा स्त्री, पुत्र, धन, वस्त्र, कीर्ति, सुख, राज्य, सुखपूर्वक भोजन देतीहै देवताका पूजन ब्राह्मणोंकी तृप्ति करातीहै ॥ ३ ॥ अवरोही (उच्चसे उतरके नीचाभिगामी) चन्द्रमाकी दशामें स्त्री, पुत्र, मित्र, वस्त्र और सुखकी हानि होती है मनमें विकार अपने मनुष्योंसे विरोध चोर अग्नि राजासे भय तालावमें गिरना ऐसे फल होतेहैं ॥ ४ ॥ नीचांशकगत चंद्रमाकी दशामें अनेकप्रकार अर्थहानि कुभोजन कुराजाकी सेवा मनका विकार और निद्रा पाताहै ॥ ५ ॥

मूलत्रिकोणस्थितचन्द्रदाये नृपाद्धनं भूमिसुतार्थदारान् ॥ प्राप्नोति भूषांबरमानलाभं सुखं जनन्या रतिकेलिलोलम् ॥ ६ ॥ स्वक्षेत्रगस्यापि निशाकरस्य नृपाद्धनप्राप्तिमुपैति सौख्यम् ॥ प्रचण्डवेश्यागमनं क्षितीशात्संमाननं स्त्रीसुतबंधुसौख्यम् ॥ ७ ॥

मूलत्रिकोणस्थ चंद्रमाकी दशामें राजासे धन मिले भूमि, पुत्र, धन स्त्री, भूषण, वस्त्र मिलतेहैं माताका सुख मिलताहै तथा पूर्वोक्त दाराओंसे चंचलरति क्रीडा मिलती है ॥ ६ ॥ अपनी राशिगत चंद्रमाकी दशामें राजासे धन मिले सुखमिले प्रचंड वेश्याका गमन होवै राजासे सन्मान मिले स्त्री पुत्र बंधुजन सुख मिलें ॥ ७ ॥

निशाकरस्याप्यतिशत्रुराशिं गतस्य दाये कलहार्थनाशम् ॥ कुवस्त्रतां कुत्सितभोजनं च क्षेत्रार्थदारात्मजतापमेति ॥८॥ यानांबरालंकरणादिहानिं विदेशयानं परिचारकत्वम् ॥ देशांतरे गच्छति बन्धुहीनो दुःखी परिक्लिश्यति शत्रुदाये ॥ ९ ॥

अतिशत्रु राशिगत चंद्रमाकी दशामें कलह धनहानि कुवस्त्र निंद्य अन्न खानेको मिलते हैं खेती, धन, स्त्री, पुत्रपक्षसे संताप मिलताहै ॥ ८ ॥ शत्रुराशिगत चंद्रदशामें सवारी वस्त्र भूषणोंकी हानि विदेशगमन परायी सेवा मिलती है देशांतर जाताहै बंधुसे हीन होताहै दुःखी होकर सब ओरसे क्लेशित रहताहै ॥ ९ ॥

मित्रर्क्षगस्यापि निशाकरस्य पाकेर्थलाभं क्षितिपालमैत्रीम् ॥ उद्योगसिद्धिं जलवस्तुलाभं चित्रांबराभूषणवाग्विलासम् ॥ १० ॥ सुधाकरस्याप्यतिमित्रराशिं गतस्य दाये त्वतिसौख्यमेति ॥ विद्याविनोदांकितराजपूजां क्षेत्रार्थदारात्मजकामलाभम् ॥ ११ ॥

मित्रराशिगत चंद्रमाकी दशामें धनलाभ राजासे मैत्री उद्यम सफल जलोत्पन्न वस्तुका लाभ रंगविरंगे वस्त्र भूषण और वाणीका हास विलास मिलताहै ॥ १० ॥ अतिमित्र राशिगत चंद्रमाकी दशामें बडा सुख विद्याविनोदसे राजपूजा, खेती, धन, स्त्री, पुत्र और इच्छापूर्ति मिलतीहै ॥ ११ ॥

दशाविपाके समराशिगस्य कलानिधेः कांचनभूमिलाभम् ॥ किंचित्सुखं बांधवरोगपीडां विदेशयानं लभते मनुष्यः ॥ १२ ॥ नीचस्थितस्य दशया विपदं महार्तिं क्लेशार्थदुःखवनवासमुपैति काले ॥ कारागृहं निगडपादकृशान्नहीनो चौराग्निभूपतिभयं सुतदारशेषम् ॥ १३ ॥ क्षीणेन्दुपाके सुकलाविहीनो राजार्थभूपुत्रकलत्रमित्रम् ॥ उन्मादचित्तं स्वजनैर्विरोधमृणत्वमायाति कुशालवृत्त्या ॥ १४ ॥

समराशिगत चंद्रमाकी दशामें सुवर्णभूमि लाभ थोडा सुख बांधवोंको रोगपीडा विदेशगमन मनुष्य पावताहै ॥ १२ ॥ नीच राशिगत चंद्रमाकी दशामें विपत्ति बडी पीडा क्लेश वनका दुःख और किसी समयमें वनवासभी पावताहै कैद बेडी कृशता मिलतीहै अन्नहिनता चौर अग्नि राजासे भय स्त्री पुत्रकी समाप्ति होतीहै ॥ १३ ॥ क्षीण चंद्रमाकी दशामें उत्तमकलासे हीनता राज्य, धन, भूमि, पुत्र, स्त्री, मित्रोंसे हीनता चित्तमें उन्माद अपने मनुष्योंसे विरोध होतेहैं दुष्टस्वभाव दुष्टवृत्तिसे ऋण होजाताहै ॥ १४ ॥

पूर्णेंदुपाके परिपूर्णमेति विद्याविनोदांकितराजपूजाम् ॥ स्त्रीपुत्रभृत्यार्थमनोविलासं विशेषतः शोभनकर्मलाभम् ॥ १५ ॥ केनापि स्वोच्चस्थवियच्चरेण युक्तस्य चंद्रस्य दशाविपाके ॥ मनःप्रसादं मदनाभिरामं स्त्रीपुत्रभृत्यादिविनोदगोष्ठीम् ॥ १६ ॥

पूर्ण चंद्रमाके दशामें विद्याविनोदसे भूषित राजपूजा मिले; स्त्री, पुत्र, भृत्य, धन और मनके हासविलास मिलें शुभ कर्मोंका लाभ होवै ॥ १५ ॥ किसी उच्चराशिगत ग्रहके साथ रहते चंद्रमाकी दशामें मन प्रसन्न रहे कामदेवजन्य सुख मिले स्त्री पुत्र नौकर आदियोंके साथ खुसी हंसीसे बैठक होवै ॥ १६ ॥

पापान्वितस्यापि निशाकरस्य पाकेऽग्निचौरक्षितिपालकोपैः ॥ दुःखं सुतस्त्रीसुखबंधुहानिं विदेशयानं त्वशुभादिकर्म ॥ १७ ॥

चंद्रस्य सौम्यग्रहसंयुतस्य प्राप्तौ दशायां शुभकर्मलाभम् ॥ गोभू-हिरण्यांबरभूषणानि तीर्थाभिषेकं परदारसौख्यम् ॥ १८ ॥ पा-पेक्षितस्यापि निशाकरस्य दशाविपाके विफलं सुकर्म ॥ कोपा-धिकं कुत्सितभोजनं च मातुर्वियोगं त्वथ वा तदीयम् ॥ १९ ॥

पापयुक्त चन्द्रमाकी दशामें अग्नि चोर राजाके कोपसे दुःख मिले पुत्र स्त्री सुख और बंधुजनकी हानि होवै, विदेशगमन अशुभ आदि कर्म होवैं ॥ १७ ॥ शुभग्रह युक्त चन्द्र-माकी दशामें शुभकर्म मिले गौ, भूमि, सुवर्ण, वस्त्र,भूषण मिले तीर्थस्नान मिले और परस्त्रीसे सुख मिले ॥ १८ ॥ पापदृष्ट चन्द्रमाकी दशामें शुभकर्म निष्फल होवैं कोप अधिक रहै निकम्मा भोजन मिले माताका वियोग होवै ॥ १९ ॥

निशाकरस्यापि शुभेक्षितस्य परोपकारं महतीं च कीर्तिम् ॥ इ-ष्टार्थबंध्वागमभूपमानं जलक्रियावस्त्रमनोविलासम् ॥ २० ॥ मूलत्रिकोणभेन्दोर्दशां प्रपन्नो नरः सुबहुकोशः ॥ बहुपुत्रवान् वि-नीतो बंधुविरोधं प्रधानतां याति ॥ २१ ॥ सुखस्थितस्यापि निशाकरस्य मातुर्वियोगं सुखयानभूमिम् ॥ कृषेर्धनाप्तिं ग्रहकर्म-लाभं कीर्तिस्वनामांकितपद्यलाभम् ॥ २२ ॥

शुभग्रहदृष्ट चंद्रमाकी दशामें पराया उपकार बडीकीर्ति मनोवांछित वस्तुलाभ बंधुजनका आगम राजमान और जलकर्मसे लाभ मनका विलास मिले ॥ २० ॥ मूलत्रिकोणगत चंद्र माकी दशामें मनुष्य बहुत खजाना बहुत पुत्र वाला होताहै, नम्रता मिलतीहै, और बंधुविरोध होताहै प्रधान (मुख्य) ता मिलतीहै ॥ २१ ॥ चतुर्थभावगत चंद्रमाकी दशामें माताका वियोग होवै सुख मिले वाहन भूमि मिलें कृषिसे धन आवै घरके काममें लाभ होवै कीर्ति एवं अपने नामसहित पद (खिताब) मिलें ॥ २२ ॥

दारान्वितस्यापि निशाकरस्य पाके कलत्राप्तिमुदाहरंति ॥ सुपु-त्रसौख्यं शयनांबरं च प्रमेहमूत्रादिकृशं तथाधिम् ॥ २३ ॥ क-र्मस्थितस्यापि दशाप्रपन्ना चंद्रस्य कीर्तिं लभते सुविद्याम् ॥ यज्ञादिकर्माप्तिमनेकसौख्यं भूपुत्रयानांबरबंधुपूज्यम् ॥ २४ ॥

सप्तमचंद्रमाकी दशामें स्त्री प्राप्ति कहतेहैं सुपुत्रका सुख शय्या वस्त्र मिलें प्रमेह मूत्रकृच्छ्र आदि रोग तथा मानसी रोग होवे ॥२३॥ दशमगत चंद्रमाकी दशामें कीर्ति उत्तमविद्या मिले यज्ञादि काम मिलें अनेक प्रकारके सुख भूमि पुत्र वाहन वस्त्र और बंधुजन पूज्यता मिले॥ २४॥

नीचांशगतस्यापि ददाति रोगं महत्तरं चेन्दोः ॥पादाक्षिरोगपीडां युद्धेषु पराजयं गतोत्साहम् ॥२५॥ उच्चांशगस्यापि दशा ददाति सौख्यं महत्तरं चेंदोः ॥ नानाविधधनलाभं भूपतिसन्मानतां सुपुष्टिं च ॥२६॥ चंद्रदशायामादौ नरपतिसन्मानकीर्तिसौख्यं च॥ मध्ये स्त्रीसुतनाशं गृहधनसौख्यांबरं चांते ॥ २७ ॥ षष्ठस्य चंद्रस्य दशा प्रपन्ना करोति दुःखं कलहं वियोगम् ॥ चोराग्निभूपालभयं जलेन मूत्रादिकृच्छ्रं धननाशमाहुः ॥ २८ ॥

नीचांशकगत चंद्रमाकी दशामें बडा रोग होताहै पैर नेत्रोंमें पीडा लडाइयोंमें हार उत्साह भंग होताहै ॥ २५ ॥ उच्चांशक चंद्रमाकी दशामें बडा सुख अनेक प्रकारके लाभ राजसन्मान शरीर पुष्टि होतीहै ॥ २६ ॥ चंद्रदशाके आदिमें राजसन्मान कीर्ति सुख तथा मध्यमें स्त्री पुत्र हानि अंत्यमें घर तथा धनका सुख होताहै ॥ २७ ॥ छठे चंद्रमाकी दशामें दुःख कलह वियोग चोर अग्नि राजासे भय जलसे हानि मूत्रकृच्छ्र आदि रोग और धननाश कहतेहैं ॥२८॥

रंध्रस्थितस्यापि दशा प्रपन्ना देहस्य कार्श्यं जलभीतिदुःखम् ॥ विदेशयानं सकलैर्विरोधं कुभोजनं मातृजनेषु कष्टम् ॥ २९ ॥ रिष्फगचंद्रदशायां संप्राप्तो भृतिनाशनं कुरुते ॥ राज्ञोनृतधनभाग्यं स्थानविनाशं महत्परं दुःखम् ॥ ३० ॥ चंद्रस्य वित्तस्थितपाककाले वित्तात्मजस्त्रीसुखभोगभाग्यम् ॥ मिष्टान्नपानांबरकेलिसौख्यं धनागमं पुण्यजलाभिषेकम् ॥ ३१ ॥ तृतीयराशिस्थनिशाकरस्य दशा महत्सौख्यमनेकवित्तम् ॥ मनोदृढं भ्रातृजनादिसौख्यं कृष्यन्नपानांबरभूषणाप्तिम् ॥ ३२ ॥

अष्टम चंद्रमाकी दशा शरीरमें कृशता जलकी भय दुःख विदेश गमन सबके साथ विरोध कुभोजन मातृजनोंको कष्ट देतीहै ॥ २९ ॥ अष्टम चंद्रमाकी दशा आजीवनका नाश राजद्वारमें झूठापन धन तथा ऐश्वर्यका नाश बडा और परम दुःख देतीहै ॥ ३० ॥ धनस्थानगत चंद्रमाकी दशामें धन, पुत्र, स्त्री सुख, भोग ऐश्वर्य तथा उत्तम अन्न, जल, वस्त्र, मिलतेहैं कामकेलि सुख होताहै धनका आगम पुण्यजलका स्नान मिलताहै ॥ ३१ ॥ तीसरे चंद्रमाकी दशा बडा सौख्य बहुत धन मनकी दृढता भाई आदियोंका सुख कृषिकर्म अन्न, जल, भूषण, वस्त्रकी प्राप्ति करतीहै ॥ ३२ ॥

लाभस्थितस्यापि निशाकरस्य प्राप्तौ दशायां विविधार्थलाभम्॥ मृद्वन्नपानांबरकेलिलोलं स्त्रीपुत्रलाभं च मनोविलासम् ॥३३॥ दिनेश्वरस्याहतचंद्रदाये प्राप्नोति दुःखं स्वजनैर्विरोधम् ॥ भार्याक्षयं भीतिनृपाग्निचौरैर्मातुर्वियोगं कृषिधान्यनाशम्॥३४॥

लाभगत चंद्रमाकी दशामें अनेक प्रकार धनलाभ कोमल अन्न पान वस्त्र कामकेलिकी चपलता स्त्री पुत्र लाभ होवैं मनमें विलास हासादि प्रसन्नता रहे ॥ ३३ ॥ सूर्यके साथ अस्तंगत चंद्रमाकी दशामें दुःख अपने मनुष्योंसे विरोध स्त्रीका क्षय राजा अग्नि चोरसे भय माताका वियोग और कृषिकर्म अन्नका नाश होवै ॥ ३४ ॥

चंद्रे स्थानबलाधिके धनसुखं कीर्तिं च विद्यागमं देवब्राह्मणतर्पणं नृपधनान्याप्नोति भूमिं धनम् ॥ स्त्रीरत्नांबरभूषणं कृषिधनं गोविक्रयं सेवनं मिष्टान्नादिरसायनं फलयुतं दध्याज्यमाल्यांबरम् ॥ ३५ ॥ निशाकरे स्थानबलेन हीने स्थानार्थनाशं स्वपदच्युतिं च ॥ स्वबन्धुनाशं त्वथ वा वियोगं कृषेर्विनाशं समुपैति काले ॥ ३६ ॥

चंद्रमा स्थानबलमें अधिक होवै तो उसकी दशामें कीर्त्ति होतीहै विद्याका आगमन देवताओंका पूजन ब्राह्मणोंकी तृप्ति राजद्वारसे धन प्राप्त होतेहैं भूमि धन स्त्री रत्न वस्त्र भूषण कृषि अन्न मिलतेहैं गौका व्यापार गौकी सेवा मिष्टान्नादि रसीले पदार्थ मीठे फलौं सहित तथा दही, घृत, पुष्प, वस्त्र मिलतेहै॥ ३५॥स्थान बलहीन चंद्रमाकी दशामें स्थान धनका नाश अपने पदसे उतरना अपने बंधुजनोंका नाश अथवा उनका वियोग होताहै समयपर खेतीकाभी नाश होताहै ॥ ३६॥

निशाकरे दिग्बलसंयुतेस्मिन्दिगंतरादागतवस्तुचित्रम्॥विद्यागमं भूपतिमित्रतां च स्वबन्धुपूज्यं गजवाजिसौख्यम् ॥ ३७॥ चन्द्रे तथा कालबलान्वितेस्मिन् तुरंगयानं कृषिगोमहीश्च ॥ विद्यादिघोषं नखकेशदंतचर्मांबरालंकृतवाहनं च ॥ ३८ ॥ निसर्गवीर्यान्वितचंद्रदाये निसर्गतश्चापि करोति सौख्यम् ॥ अयत्नतो वाहनदेशलाभं नृपालपूज्यं बहुवाहनं च ॥ ३९ ॥

चंद्रमा दिग्बलयुक्त होवें तो उसकी दशामें देशदेशांतरोंसे अनेक प्रकारकी वस्तु आवें विद्या आवे राजासे मित्रता होवै बंधुवर्गमें पूज्यता मिले हाथी घोडेका सुख मिले ॥ ३७ ॥ कालबलयुक्त चंद्रमाकी दशामें घोडेकी सवारी कृषि गौ भैंस मिलै, विद्या आदिका प्रचार रहे,

नख, केश, दांत और चमडेके बने उत्तम कारीगरीके वस्तुजात वस्त्रादि और अलंकारयुक्त वाहन मिलें ॥ ३८ ॥ निसर्ग बलयुत चंद्रमाकी दशामें स्वभावहीसे सुख मिले, विनाही प्रयत्नकिये वाहन मिले देश मिले राजासे पूज्यता और बहुत वाहन मिलें ॥ ३९ ॥

चन्द्रो यदा दिग्बलवीर्ययुक्तः कृपाकटाक्षेण नरेश्वरस्य ॥ समस्तभाग्यं समुपैति सौख्यं परोपकारं च मनोभिलाषम् ॥ ४० ॥ क्रूरादिषष्ट्यंशसमन्वितस्य दाये शशांकस्य बहुत्वदुःखम् ॥ स्त्रीपुत्रनाशं क्षितिपालकोपं विद्याविवादं कलहं जनैश्च ॥ ४१ ॥

दिग्बली चंद्रमाकी दशामें राजाकी कृपादृष्टिसे संपूर्ण ऐश्वर्य मिलें सुख तथा पराया उपकार अपने हाथसे होवै मनोभिलाष पूर्ण होवै ॥ ४० ॥ क्रूर आदि षष्ट्यंशगत चंद्रमाकी दशामें दुःख बहुतायतसे होवै स्त्री पुत्र हानि राजाका कोप विद्याका विवाद (शास्त्रार्थ) और लोगोंके साथ कलहभी होवै ॥ ४१ ॥

मृद्वंशषष्ट्यंशसमन्वितस्य चन्द्रस्य दाये बहुपुत्रलाभम् ॥ भृत्यार्थलाभं विजयं सुखं च कीर्तिं च विद्यां लभते विशेषात् ॥ ४२ ॥ पारावताद्यंशसमन्वितस्य चंद्रस्य दाये महतीं च कीर्तिम् ॥ विद्याविनोदं लभते च सौख्यं देवार्चनं पुण्यजलाभिषेकम् ॥ ४३ ॥ क्रूरद्रेष्काणसंयुक्तश्चन्द्रो दिशति रोगिताम् ॥ कार्यं पापसमायुक्तं गोब्राह्मणनिपीडनम् ॥ ४४ ॥ आदौ भावफलं प्रोक्तं स्थानजन्यं ततः परम् ॥ अंशोद्भवफलं पश्चाद्ग्रहजातफलं तथा ॥ ४५ ॥ इति चंद्रदशाफलम् ॥

इति श्रीसर्वार्थचिन्तामणौ ग्रहदीप्ताद्यवस्था—सूर्यचन्द्रदशाफलनिरूपणो नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

षष्ट्यंशमें मृद्वंशगत चंद्रमाकी दशामें बहुत पुत्रोंका लाभ होवै नौकर, धन, विजय, सुख, कीर्ति, विद्या विशेषसे मिलैं ॥ ४२ ॥ पारावतादि अंशकगत चन्द्रमाकी दशामें बडी कीर्ति होवैं विद्याका विनोद रहै सुख पावै देवताका पूजन पुण्यजल स्नान मिले ॥ ४३ ॥ क्रूर द्रेष्काणगत चंद्रमाकी दशामें रोग होताहै, पापयुक्त कार्य गौ ब्राह्मणको पीडा करे ॥ ४४ ॥ प्रथम भावफल तब स्थानका तब अंशका तब ग्रहयोगका फल कहाहै यही क्रम फल कहनेका जानना ॥ ४५ ॥ इति चंद्रदशाफलविचारः ॥

इति श्रीसर्वार्थचिंतामणौ माहीधरभाषाटीकायां ग्रहदीप्ताद्यवस्था—सूर्य्यचन्द्रदशाफलनिरूपणाध्यायस्त्रयोदशः ॥ १३ ॥

चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अथ भौमादिदशाफलविचाराध्यायः ।

अत्युच्चभूनंदनदायकाले क्षेत्रार्थलाभं समरे जयं च ॥ आधिक्यमन्वेति नरेशमानं सहोदरस्त्रीसुतवाग्विलासम् ॥ १ ॥ उच्चंगतस्य च दशासमये कुजस्य प्राप्नोति राज्यमथवा क्षितिपाच्चवित्तम् ॥ भूमध्यदारसुतबंधुसमागमं च यानादिरोहणविशेषविदेशयानम् ॥ २ ॥ आरोहिणी भूमिसुतस्य सौख्यं दशा तनोत्यत्र नरेन्द्रपूज्यम् ॥ प्रधानतां धैर्यमनोभिलाषं भाग्योत्तरं गोगजवाजिसंघम् ॥ ३ ॥

उच्चराशिके पूरे उच्चांशकगत चंद्रमाकी दशामें खेती धनका लाभ युद्धमें विजय बहुत मनुष्योंमें अधिकता राजासे मान मिले, भाई स्त्री पुत्रोंसे वाणीका विलास अर्थात् हंसी खुशीकी बातचीत होवै ॥ १ ॥ उच्चराशिगत मंगलकी दशामें राज्य अथवा राजासे धन मिले भूमि स्त्री, पुत्र, मित्रोंका समागम सवारीमें चढना मिले विशेषतः परदेशगमन भी होवै ॥ २ ॥ उच्चमें चढ़तेहुये मंगलकी दशामें सुख राजपूज्यता श्रेष्ठता, धैर्य, मनोभिलाषसिद्धि, भाग्यवृद्धि और गौ हाथी घोडाओंका समूह मिलेहैं ॥ ३ ॥

धरासुतस्याप्यवरोहकाले स्थानार्थनाशं कलिकोपदुःखम् ॥ विदेशवासं स्वजनैर्विरोधं चौराग्निभूपैर्भयमेति कष्टम् ॥ ४ ॥ नीचस्थितस्यापि धरासुतस्य दाये कुवृत्त्या स्वजनादिरक्षा ॥ कुभोजनं गोगजवाजिनाशं स्वबन्धुनाशं नृपवह्निचौरैः ॥ ५ ॥

अवरोही (उच्चसे उतरकर नीचाभिमुख) मंगलकी दशामें स्थान एवं धनका नाश, कलह, क्रोध, दुःख, परदेशवास, अपने मनुष्योंसे विरोध चोर अग्नि राजासे भय और कष्ट पाताहै ॥ ४ ॥ नीचराशिगत भौमदशामें कुवृत्तिसे अपने कुटुंब आदिकी रक्षा करे कुत्सित भोजन मिले गौ, हाथी, घोडाओंकी हानि होवै अपने बंधुजनोंकी हानि तथा राजा अग्नि चोरोंसे हानि होतीहै ॥ ५ ॥

मूलत्रिकोणस्थितभौमदाये मिष्टान्नपानांबरभूषणाप्तिम् ॥ पुराणधर्मश्रवणं मनोज्ञं भ्रात्रादिसौख्यं कृषिलाभमेति ॥ ६ ॥ स्वक्षे-

त्रगस्यापि धरासुतस्य दशाविपाके लभतेऽर्थभूमिम् ॥ स्थानाधिपत्यं सुखवाहनं च नामद्वयं भ्रातृसुखं सुखाप्तिम् ॥ ७ ॥ धरासुतस्याप्यतिशत्रुराशिं गतस्य दाये कलहादिदुःखम् ॥ नरेशकोपं स्वजनैर्विरोधं भूम्यर्थदारात्मजमित्ररोगम् ॥ ८ ॥

मूलत्रिकोणगत भौमकी दशामें मीठे अन्नपान वस्त्र भूषण मिलें पुराण धर्म आदि सुननेमें आवें भाई आदियोंका सुख खेतीका लाभ पावताहै ॥ ६ ॥ अपनी राशिगत भौमदशामें धन भूमि लाभ स्थानका आधिपत्य सुख वाहन मिलें, २ नाम अर्थात् दूसरा उपाधिनाम मिले भाइयोंका सुख तथा अनेकों सुख मिलें ॥ ७ ॥ अतिशत्रुराशिगत मंगलकी दशामें कलह आदि दुःख मिलें राजाका कोपहोवै अपने मनुष्योंसे विरोध होवै भूमि, धन, स्त्री, पुत्र, मित्र संबंधी क्लेश तथा कष्ट होवै ॥ ८ ॥

भूनंदनस्याप्यरिराशिगस्य दशाविपाके समरे च पीडाम् ॥ शोकाग्निभूपालविषैः प्रमादं पीडातिकृच्छ्रादिगुदाक्षिरोगम् ॥ ९ ॥ मित्रर्क्षजस्यापि कुजस्य दाये मित्रत्वमायाति सपत्नसंघैः ॥ चौराग्निमांद्याक्षिविपादभूमिं कृषेर्विनाशं कलिकोपदुःखम् ॥ १० ॥ कुजस्य दाये त्वतिमित्रराशि गतस्य भूपालकृतार्थभूमिम् ॥ वस्त्रादियज्ञादिविवाहदीक्षामुपैति देशांतरलब्धभाग्यम् ॥ ११ ॥

शत्रुराशिगत मंगलकी दशामें संग्राममें पीडा शोक, अग्नि, राजा, विषसे पीडा प्रमाद अतिकृच्छ्रादि गुदारोग नेत्ररोग होवै ॥ ९ ॥ मित्रराशित चंद्रमाकी दशामें शत्रुसमूहसे मित्रता होजावै चोरभय अग्निभय दृष्टि मंदता भूमि कृषिका नाश कलह क्रोध और दुःख होवै ॥१०॥ अतिमित्र राशिगत मंगलकी दशामें राजाकी कृपासे धन एवं भूमि मिले वस्त्रादि मिलें यज्ञादिकर्म होवै विवाहदीक्षा पावै देशांतरमें ऐश्वर्य मिले ॥ ११ ॥

धरासुतस्यापि समर्क्षगस्य गृहोपकार्यं त्वधनप्रमाणात् ॥ स्त्रीपुत्रभृत्यात्मसहोदराणां शत्रुत्वमाप्नोति नृपाग्निपीडाम् ॥ १२ ॥ नीचग्रहेणापि समन्वितस्य धरासुतस्यातिमनोविकारम् ॥ प्रेष्यत्ववृत्तिं परकीयमन्नं स्त्रीपुत्रनाशं नृपवह्निचौरैः ॥ १३ ॥ किंचित्सुखं भोजनवस्त्रपानं कृच्छ्रेण वृत्तिं नृपपूजनं च ॥ उच्चान्वितेनापि समन्वितस्य भौमस्य दाये सुतदारपीडा ॥ १४ ॥

सम राशिगत मंगलकी दशामें निर्धनताके कारण घरका उपकरण (मरम्मत) आदिभी न होसके, स्त्री, पुत्र, नौकर, अपने भाईयोंसे शत्रुता होवै राजा तथा अग्निसे पीडा मिले॥ १२॥ नीचगत ग्रहसे युक्त भौमकी दशामें मनका विकार बहुत होवै (प्रेष्य) दूसरेकी चाकरीसे आजीवन होवै पराया अन्न खाना मिले स्त्रीपुत्रनाश राजा अग्नि चोरसे भय होवै ॥ १३ ॥ उच्चवर्ती ग्रहसे युक्त मंगलकी दशामें अल्पसुख भोजन वस्त्र पानमें तथा बड़ी कठिनतासे आजीविका होवै राजासे पूजा मिले स्त्री पुत्रोंको पीडा होवै ॥ १४ ॥

पापान्वितस्यापि कुजस्य दाये पापानि कर्माणि करोति नित्यम् ॥ देवद्विजानां च सहोदराणां कुमार्गवृत्त्या ह्यपकारणं च॥१५॥ शुभान्वितस्यापि कुजस्य दाये किंचित्सुखं देहकृशांगरोगम् ॥ भूपैर्विवादं समरे जयं च विद्या विवादं परदेशवासम् ॥ १६ ॥ शुभेक्षितधरासूनोर्दाये भूम्यर्थनाशनम् ॥ तस्मिन् गोचरसंयुक्ते त्वत्यंतं शोभनं भवेत् ॥ १७ ॥

पापयुक्त मंगलकी दशामें नित्य पापकर्मोंको करताहै देवता ब्राह्मण तथा भाइयोंका कुमार्गवृत्तिसे अपकार करता है ॥ १५ ॥ शुभयुक्त भौमकी दशामें अल्पसुख शरीर कृशता अंगोंमें रोग राजाओंसे कलह संग्राममें विजय विद्या संबंधी विवाद और परदेशवास होवै ॥ १६ ॥ शुभग्रह दृष्ट मंगलकी दशामें भूमि धनका नाश होवै यदि उसी अवसरमें गोचरसे भी राशिमें आवै तो अतिशुभ फल होवै ॥ १७ ॥

आरस्य पापग्रहवीक्षितस्य प्राप्तौ दशायां बहुदुःखकष्टे ॥ जनः परित्यक्तकलत्रमित्रो देशांतरस्थः क्षितिपालकोपात् ॥ १८ ॥ केंद्रगतभौमदाये चोरविषाभ्यामुपैति दुःखानि ॥ कलहो वा स विरोधं लभते देशांतरं याति ॥ १९ ॥ चतुर्थराशिस्थितभौमदाये स्थानच्युतिं बंधुविरोधतां च॥ चोराग्निपीडां नृपतेः सकाशाद्भीतिं परे दुर्गपदे प्रयाति ॥ २० ॥ कलत्रयुक्तस्य कुजस्य दाये कलत्रहानिर्गुदमूत्रकृच्छ्रम् ॥ अगोचरस्थस्य च तादृशैव तदन्यथा चेत्फलमन्यथैव ॥ २१ ॥

पापदृष्ट कुजकी दशामें अतिदुःख हो, राजकोपसे स्त्री मित्र छोड विदेशमें रहै ॥ १८ ॥ केंद्रगत भौमकी दशामें चोर तथा जहरसे दुःख पावै कलह वैरसहित होवै विदेश गमन करे ॥ १९ ॥ चौथे भौमकी दशामें स्थानहानि बंधुविरोधता और चोर अग्नि राजासे भय परमकठिन पदमें पहुंचे ॥ २० ॥ सप्तम मंगलकी दशामें स्त्रीहानि गुदामें रोग मूत्रकृच्छ्र यह फल अगोचरमें है यदि गोचरमें आवै तो फलभी अन्य होतेहैं ॥ २१ ॥

कर्मस्थितस्यापि कुजस्य पाके कर्मादिवैकल्यमुपैति दुःखम् ॥ उद्योगभंगं त्वपकीर्तिमेति विद्यासुतस्त्रीधनमानहानिम् ॥ २२ ॥ अर्कगभौमदशायां दधाति शोकं स्त्रिया विरोधं च ॥ राज्याच्युतिं विपक्षाद्देशाद्देशांतरं याति ॥ २३ ॥ वित्तगभौमदशायां संप्राप्तौ तस्य वृद्धिमुपयाति ॥ स्वकुलाढ्यत्वं लभते नृपहृतचित्तं मुखाक्षिरोगं च ॥ २४ ॥

दशमगत मंगलकी दशामें कर्म आदिमें विकलता, दुःख, उद्यमभंग, अपयश, विद्या, पुत्र, स्त्री, धन और मानकी हानि पाताहै ॥ २२ ॥ सूर्ययुक्त मंगलकी दशा शोक मरण करतीहै स्त्रीसे विरोध राज्यसे परिभ्रष्ट शत्रुसे देशसे देशांतर चला जावै ॥ २३ ॥ धनस्थानगत चन्द्रमाकी दशामें धन वृद्धिको प्राप्त होवै अपने कुलमें संपन्नताको प्राप्त होताहै राजा मनहरण करे मुख नेत्रमें रोगभी होवै ॥ २४ ॥

भ्रातृस्थानगतश्च सौख्यफलदो भूनंदनोऽरातिहा धैर्यं वित्तसुतार्थदारसहजैः संगं नृपात्पूज्यताम् ॥ पुत्रस्थानगतस्य पुत्रमरणं बुद्धिभ्रमं जाड्यतां शत्रुक्षेत्रगतस्य भूमिसहजैर्दुःखं महारोगभाक् ॥२५॥ पंचमस्थधरासूनोर्दायः कीर्तिविवेकताम् ॥ नेत्ररोगं त्वर्थनाशं दद्यात्कलहमेव वा ॥२६॥ मरणपदस्थो भौमः करोति दुःखं महद्भयं पाके ॥ स्फोटकमन्नविरोधं स्थानविनाशं विदेशयानं च ॥ २७ ॥ नवमस्थधरासूनोर्दशापाकः पदच्युतिम् ॥ गुरूणां च तथा कष्टं तपोविघ्नं महद्भयम् ॥ २८ ॥

दूसरा मंगल अपनी दशामें सुखफल देताहै तथा शत्रुहंता होताहै धैर्य पुत्र, धन, स्त्री, भाईयोंसे संग राजासे पूज्यता देताहै पंचम मंगल पुत्रमरण बुद्धिभ्रम जडता देताहै शत्रुभावगत भूमि भाईपक्षसे दुःख देताहै महारोगवाला करताहै ॥ २५ ॥ पंचम मंगलकी दशाका फल औरभी है कि कीर्ति विवेक (समझ) नेत्ररोग धननाश अथवा कलह देताहै ॥ २६ ॥ अष्टम मंगल अपनी दशामें दुःख बडीभय विस्फोटक रोग अन्नकी अरुचि स्थान हानि विदेशगमन करताहै ॥ २७ ॥ नवमगत मंगलकी दशामें पदकी हानि गुरु (श्रेष्ठ) जनोंको कष्ट तप आदिमें विघ्न और बडीभय होतीहै ॥ २८ ॥

आयस्थभौमदायः करोति राज्यार्थभूपसन्मानम् ॥ समरे जयप्रतापं वाप्युपकारं मनोजवं कीर्तिम् ॥ २९ ॥ व्ययगतभौमद-

शायां प्राप्तौ धनहर्तिं नृपाद्भीतिम् ॥ स्थानसुतदारनाशं भ्रातॄणा-
मन्यदेशवासं च॥ ३० ॥ उच्चांशसंयुक्तधराजकाले मनोभिला-
षं विजयं सुखं च ॥ प्रचण्डदासीगमनं नृपस्य प्रधानतां याति
सुधर्मकीर्तिम् ॥ ३१ ॥

ग्यारहवें मंगलकी दशामें राज्यधन राजासे सन्मान संग्राममें विजय वाणीसे दूसरेका उपकार बहुत फैलनेवाली कीर्ति मिले ॥ २९ ॥ बारहवें मंगलकी दशामें धनहरण राजासे भय स्थान, पुत्र, स्त्रीका नाश और भाइयोंका परदेशवास होवै ॥ ३० ॥ उच्चांशगत मंगल की दशामें मनोभिलाषासिद्धि विजय सुख मिलतेहैं ॥ तथा प्रचण्ड स्वभाववाली दासीका गमन राजाके प्रधानताको प्राप्त होताहै धर्म और कीर्तिभी होती है ॥ ३१ ॥

नीचांशभौमदाये नीचयुते कर्मवैकल्यम् ॥ धनहानिभूपदण्डः
शिश्नोदरपरायणोऽशीलः॥ ३२ ॥ भौमदशायामादौ लभते
विविधार्थमानहानिं च ॥ मध्येऽग्निभूपचौरैर्भीतिं तत्र विनिर्दिशे-
न्मतिमान् ॥३३॥अंत्ये भ्रातृवियोगं सुतदाराग्निगुल्ममूत्रादिम् ॥
भौमेप्येवं न भवेद्गोचरयुक्ते विशेषतः कथयेत् ॥ ३४ ॥

नीचराशि नीचांशकगत भौमदशामें कार्योंमें विकलता होवै धनहानि होवै राजासे दंड मिले पेटभरनेमें तथा मैथुनसुखमें तत्पर रहे शीलसे वर्जित रहै ॥ ३२ ॥ भौमकी दशामें प्रथम अनेकप्रकारधन तथा मानहानि मध्यमें राजा चोरकी भय बुद्धिमानने कहनी॥३३॥ अंत्यदशामें भाइयोंको वियोग पुत्र धन स्त्री आदियोंको कष्ट गुल्मरोग मूत्ररोगादि रोग होतेहैं यदि गोचरमें भी भौम उसी अवस्थामें आवै तो उक्त फलविशेषतासे होतेहैं अन्यथा पूरे नहीं होते ॥ ३४ ॥

भौमस्य संस्थानबलान्वितस्य दशाविपाकेर्थकलत्रसौख्यम् ॥
स्थानादिलाभं सुखकीर्तिशौर्यमुद्योगसिद्धिं त्वनयादुपैति॥३५॥
स्थानवीर्यविहीनस्तु कुरुते स्वपदच्युतिम् ॥ कुजः कुसीदवृत्त्या
च करोति ध्रुवजीवनम् ॥ ३६ ॥

स्थानबलयुत भौमदशामें धन तथा स्त्रीका सुख स्थानादिका लाभ सुख, कीर्ति, शौर्य उद्यमसफलता न्यायसे पाताहै ॥ ३५ ॥ स्थानबलहीन भौमदशामें अपने पदकी हानि कुसीद (सूद) आदिवृत्तिसे निश्चल आजीविका होवै ॥ ३६ ॥

दिग्वीर्ययुक्तस्य कुजस्य दाये नृपात्सुलब्धार्थरणप्रतापम् ॥
गोभूहिरण्यांबरयानलाभं दिगंतराक्रांतयशःप्रतापम् ॥ ३७ ॥
कालवीर्ययुतभौमदशायां काम्यलब्धिरतिसौख्यमुपैति ॥ पट्टव-
स्त्रमणिमौक्तिकलाभं चित्रवस्त्रकृषिगोगजलाभम् ॥ ३८ ॥ निस-
र्गवीर्यान्वितभौमदाये कृपाकटाक्षेण महीपतीनाम् ॥ समस्तभा-
ग्यात्मजमित्रबंधूगोभूमिभूषांबरदेहसौख्यम् ॥ ३९ ॥

दिग्बली भौमकी दशामें राजासे धन रणमें प्रताप गौ, भूमि, सुवर्ण, वस्त्र, सवारी मिलें यश एवं प्रतापसे दिगंत दबे रहैं ॥ ३७ ॥ कालबली मंगलकी दशामें मनोभिलाषप्राप्ति अतिसुख, रेशमीवस्त्र, मणि, मोती मिलतेहैं तथा रंगबिरंगे वस्त्र, कृषि, गौ, हाथीका लाभ होताहै ॥ ३८ ॥ निसर्गबली मंगलकी दशामें राजाओंके कृपादृष्टिसे संपूर्ण ऐश्वर्य मिलतेहैं तथा पुत्र मित्र, बंधु, गौ, भूमि, भूषण, वस्त्र और देहसुख मिलतेहैं ॥ ३९ ॥

निसर्गतः स्थानधनाक्षिनाशं पित्ताधिकं कुत्सितभाजनं च ॥
कुजस्य दाये कुनखी पितृघ्नः सहोदराणामपि देहपीडा॥ ४० ॥
वक्रान्वितस्य भौमस्य दशाकाले महद्भयम् ॥ चौराग्निसर्पपीडां
च वनवासं पदच्युतिम् ॥ ४१ ॥ दिग्वीर्ययुक्तस्य कुजस्य दाये
कृपाकटाक्षेण महीपतीनाम् ॥ समस्तभाग्यात्मजमित्रबंधूगोभू-
मिभूषांबरदेहसौख्यम् ॥ ४२ ॥

निसर्गबलयुत भौमकी दशामें स्थान धनका नाश नेत्रविकार पित्तधातुकी अधिकता निन्द्य भोजन मिले कुनखित होवै पितृपक्षघात करे भाइयोंके देहपीडा होवै ॥ ४० ॥ वक्री भौमकी दशामें बडीभय चोर अग्नि राजासे पीडा वनवास और पदसे च्युति (गिरना) होवै ॥ ४१ ॥ दिग्वीर्ययुक्त भौमकी दशामें राजाओंके कृपादृष्टिसे संपूर्ण ऐश्वर्य, पुत्र, मित्र, बंधुजन, भूमि, भूषण, वस्त्र और देहसौख्य बढतेहैं ॥ ४२ ॥

क्रूरषष्ट्यंशसंयुक्तभौमदायेतिपीडनम्॥कारागृहप्रवेशं च समस्त-
विभवक्षयम् ॥ ४३ ॥ सौम्यषष्ट्यंशसंयुक्तभौमदाये महत्सुख-
म् ॥ भूम्यर्थदारसंपत्तिधनवाहनभोजनम् ॥ ४४ ॥ पारावतादि-
संयुक्तभौमदाये शुभं भवेत् ॥ विवाहदीक्षायज्ञं च सर्वेषामुपका-
रकम् ॥ ४५ ॥ क्रूरद्रेष्काणसंयुक्तकुजदाये मनोव्यथा ॥ निगडं
विषभीतिं च पाशबंधनमेव च ॥ ४६ ॥

क्रूरषष्ट्यंशगत मंगलकी दशामें अतिपीडन कैदखानेमें निवास संपूर्ण ऐश्वर्यका क्षय होताहै ॥ ४३ ॥ सौम्य षष्ट्यंशगत भौमदशामें बडासुख, भूमि, धन स्त्री, संपत्ति, कार्यसिद्धि, वाहन और उत्तम भोजन मिलतेहैं ॥ ४४ ॥ पारावतादि अंशगत भौमदशामें शुभफल मिलतेहैं विवाहदीक्षा यज्ञदीक्षा और सबका उपकार करना मिलताहै ॥ ४५ ॥ क्रूर द्रेष्काणगत भौमकी दशामें मनमें व्यथा कैद आदि बंधन विषकी भय अथवा मुस्के बँधें ॥ ४६ ॥

उच्चस्थोपि धरासूनुर्नीचांशकसमन्वितः ॥ तत्पाके भ्रातृमरणं नृपवह्निविषाद्भयम् ॥ ४७ ॥ भूमिपुत्रोऽपि नीचस्थः स्वोच्चभागसमन्वितः ॥ तत्पाके भूमिदारार्थपुत्रमित्रविवर्द्धनम् ॥ ४८ ॥ इति कुजदशाफलम् ॥

उच्चराशिगत मंगल यदि नीचांशकमें होवै तो उसकी दशामें भाइयोंका मरण राजा अग्नि और विषसे भय होवै ॥ ४७ ॥ यदि मंगल नीचराशिमें उच्चांशका होवै तो उसकी दशामें भूमि, स्त्री, धन, पुत्र और मित्रोंकी वृद्धि होतीहै ॥ ४८ ॥ इति भौमदशाफलम् ॥

अथ बुधदशाफलम् ।

अत्युच्चसोमात्मजदायकाले धनान्वितः ख्यातिमुपैति सौख्यम् ॥ ज्ञानं च कीर्तिं जननायकत्वं स्त्रीपुत्रभूम्यर्थमहोत्सवं च ॥ १ ॥ उच्चास्थितस्यापि शशांकसूनोर्दशा महत्त्वं कुरुतेर्थसौख्यम् ॥ देहस्य पुष्टिं धनधान्यपुत्रगोवाजिमत्तेभमृदंगनादम् ॥ २ ॥ आरोहिणी सौम्यदशा प्रपन्ना यज्ञोत्सवं गोवृषवाजिसंघम् ॥ मृद्वन्नभूषांबरयानलाभं वाणिज्यभूम्यर्थपरोपकारम् ॥ ३ ॥

परमोच्चगत बुधकी दशामें धर्मयुक्त ख्याति मिलतीहै सुख ज्ञान कीर्ति बहुत मनुष्योंमें आधिपत्य स्त्री, पुत्र, भूमि, धन और बडे उत्सव होतेहैं ॥ १ ॥ उच्चराशिगत बुधदशामें बडप्पन, धनसुख, शरीरपुष्टि, धन, अन्न, पुत्र, गौ, घोडे, उन्मत्तहाती मिलतेहैं नित्य खुशीमें मृदंगका शब्द सुननेमें आताहै ॥ २ ॥ उच्चमें आनेवाले बुधकी दशा यज्ञका उत्सव गौ बैल घोडाओंका समूह कोमल अन्न भूषण वस्त्र सवारीका तथा भूमि एवं धनका लाभ देतीहै, अपनेसे पराया उपकार होताहै ॥ ३ ॥

शशांकसूनोस्त्ववरोहिणी या दशा महत्कष्टतरं च दुःखम् ॥ विज्ञानहीनं परदारसंगं नृपाग्निचौरैर्भयमत्र कष्टम् ॥ ४ ॥ नीच-

स्थचन्द्रात्मजदायकाले ज्ञानेन हीनं स्वजनैर्वियुक्तम् ॥ पदच्युतिं बंधुविरोधतां च विदेशयानं वनवासदुःखम् ॥ ५ ॥

अवरोहिणी (ऊच्चसे उतरके नीचेमें जानेवाले) बुधकी दशा महत्कष्ट दुःख विज्ञानहीनता परस्त्रीसंग राजा अग्नि चोरसे भय और कष्ट देतीहै ॥ ४ ॥ नीचगत चंद्रमाके पुत्रकी दशामें ज्ञानसे हीन अपने मनुष्योंसे वियोग पदहानि बंधुजनसे विरोध विदेशगमन वनमें वास और दुःख देतीहै ॥ ५ ॥

मूलत्रिकोणान्वितसौम्यदाये राज्यं महत्सौख्यकरं च कीर्तिम् ॥
विद्याविलासं निगमार्तिशीलं पुराणधर्मश्रवणादिपूतः ॥ ६ ॥
स्वक्षेत्रगस्यापि शशांकसूनोः प्राप्तौ दशायां धनधान्यसंपत् ॥
वाणिज्यगोभूमिसुतार्थदारमृद्वन्नपानांबरभूषणाप्तिः ॥ ७ ॥

मूलत्रिकोणगत बुधदशामें राज्य बडासौख्य कीर्ति विद्याविलास वेदाऽभ्यास पुराणधर्म आदि सुननेसे पवित्रताभी मिलतीहै ॥ ६ ॥ अपनी राशिगत बुधकी दशामें अन्नधनकी संपत्ति व्यापारमें लाभ गौ, भूमि, पुत्र, धन, स्त्री, कोमल अन्न; पान, वस्त्र, भूषणोंका लाभ होताहै ॥ ७ ॥

शशांकसूनोस्त्वरिराशिगस्य शत्रोर्भयं भूपतिकोपजातम् ॥ विद्याविहीनं कुलहीनसेवां कुभोजनं दारसुतार्थनाशम् ॥ ८ ॥ शशांकसूनोरतिशत्रुराशिं गतस्य पाके विपदं च दुःखम् ॥ उद्योगभंगं स्वजनैर्विरोधं यज्ञादिविघ्नं शुभकर्मनाशम् ॥ ९ ॥

शत्रुराशिगत बुधकी दशामें शत्रुसे भय राजकोपसे भय विद्याका विस्मरण हीन कुलवालेकी सेवा·कुभोजन स्त्री पुत्र धन नाश होतेहैं ॥ ८ ॥ अतिशत्रुराशिगत बुधकी दशामें उद्यमभंग अपने मनुष्योंसे विरोध यज्ञादिकर्ममें विघ्न और शुभकर्मका नाश होताहै ॥ ९ ॥

मित्रक्षेत्रदशायां शशांकसूनोर्धनायतिः सौख्यम् ॥ नामद्वयसम्प्राप्तिःस्वनामांकितगद्यपद्यानि ॥ १० ॥ अतिमित्रराशिगस्य दशां प्रपन्नोमहत्त्वतां याति ॥ भूपातिमैत्रं सौख्यं धनसुतदारांश्च बंधुसन्मानम् ॥ ११ ॥ समर्क्षगस्यापि शशांकसूनोर्दशा सुखं धान्ययुतांबराणि ॥ करोति राज्यच्युतिमत्र विघ्नं विज्ञानहीनं पिडकादिरोगम् ॥ १२ ॥

मित्रराशिगत बुधकी दशामें धनकी वृद्धि सुख उपाधि नामकी प्राप्ति अपने नामयुक्त कविताके गद्य और अपनेनामके पद्य (श्लोकछंदादि) होवैं ॥ १० ॥ अतिमित्रराशिगत बुधकी दशामें वडप्पनको प्राप्त होताहै राजासे मित्रता सुख, धन, पुत्र, स्त्री और बंधुवर्गसे सन्मान

मिले ॥ ११ ॥ समराशिगत बुधकी दशामें सुख धन वस्त्र मिलतेहैं तथा राज्यहानि वित्त विज्ञानहानि फुनसी फोडे शीतला आदि रोगभी होतेहैं ॥ १२ ॥

नीचखेचरसंयुक्तसौम्यदायेतिकष्टताम् ॥ पदभ्रमं बंधुनाशं कर्मनाशं मनोरुजम् ॥ १३ ॥ उच्चखेचरसंयुक्तसौम्यदाये महत्सुखम् ॥ भाग्योत्तरं सुविद्यां च वाणिज्यं गोकृषिक्रियाः ॥ १४ ॥ विदः पापान्वितस्यापि दाये पापमुपैति च ॥ क्षेत्रार्थदारपुत्रादिकृषिगोभूमिनाशनम् ॥ १५ ॥ विदः सौम्ययुतस्यापि परिपाके महत्सुखम् ॥ राज्ययोगं सुखं कीर्तिं दारपुत्रनृपात्सुखम् ॥ १६ ॥

नीचगत ग्रह युक्त बुधकी दशामें अतिकष्टता पदमें संदेह बंधुनाश कर्मनाश और मनमें रोग होताहै ॥ १३ ॥ उच्चराशिगत ग्रहसे युक्त बुधकी दशामें बहुत सुख ऐश्वर्यवृद्धि उत्तमविद्या व्यापारसे लाभ गौ तथा कृषिकर्ममें लाभादि होतेहैं ॥ १४ ॥ पापयुक्त बुधकी दशामें पाप मिलताहै खेती धन स्त्री पुत्रादि तथा कृषि गौ भूमिका नाश होताहै ॥ २५ ॥ शुभग्रहयुक्त बुधकी दशामें बडासुख राज्यसंबंधी सुख कीर्ति और स्त्री पुत्र एवं राजासे मिलताहै ॥ १६ ॥

सौम्येक्षितस्यापि शशांकसूनोर्दशाविपाके महतीं च कीर्तिम् ॥ विद्याविलासोद्भवराजपूजां कांतिप्रतापं यशसा समेतम् ॥ १७ ॥ पापेक्षितस्यापि शशांकसूनोर्धान्यक्षयं बंधुजनैर्वियुक्तिम् ॥ विदेशयानं स्वपदच्युतिं च प्रेष्यानुवृत्त्या कलहोत्र कृच्छ्रम् ॥ १८ ॥ केंद्रोपगस्य हि दशा शशिनंदनस्य भूपालमित्रधनधान्यकलत्रपुत्रान् ॥ यज्ञादिकर्मनृपमानयशःप्रलब्धिं मृद्वन्नपानशयनांबरभूषणानि ॥ १९ ॥

शुभग्रहदृष्ट बुधकी दशामें बडीकीर्ति स्त्री, पुत्र, सुख, विद्यासंबंधी हर्ष राजासे पूज्यता कान्ति और यशसहित प्रताप मिलताहै ॥ १७ ॥ पापदृष्ट बुधकी दशामें अन्नक्षय बंधुजनसे अलगहोना, विदेशगमन अपने पदकी हानि, पराये प्रेष्यतासे आजीवन कलह और कष्टरोग होतेहैं ॥ १८ ॥ केंद्रगत बुधदशा राजासे मित्रता, धन, अन्न, स्त्री पुत्र यज्ञआदि कर्म राजमान यश कोमल अन्न, पान, शय्या, वस्त्र, भूषण देतीहै ॥ १९ ॥

लग्नं गतस्य च दशा शशिनंदनस्य भूपालमानकृषिनाहनलब्धभाग्यम् ॥ भेरीरवादिपरिघोषितयानमार्गे तीर्थाभिषेकमथ मा-

जगति प्रसिद्धिम् ॥ २० ॥ वित्तगसौम्यदशायां विद्याप्राप्तिं महत्प्रकीर्तिं च ॥ भूपतिभाग्यसमानां राजस्थाने प्रधानतां याति ॥ ॥ २१ ॥ तृतीराशिस्थितचंद्रसूनोर्दशाविपाके जडतां समेति ॥ उद्गानमाजीवनगुल्मरोगमन्नार्तियोगे नृपमाननं च ॥ २२ ॥

लग्नस्थित बुधकी दशामें राजमान कृषि वाहनसे ऐश्वर्य मिलें, भेरीशब्दआदिसे युक्त सवारीमें मार्ग चलना होवै अथवा तीर्थ फिरना होवै संसारमें प्रख्याति मिलें ॥ २० ॥ धनस्थानगत बुधकी दशामें विद्याप्राप्ति बडी कीर्ति राजासे ऐश्वर्य मिले राजदर्बारमें श्रेष्ठता मिले ॥ २१ ॥ तीसरे बुधकी दशामें जडता पाताहै गायनसे आजीवन होवै गुल्मरोग अन्नसे पीडा और राजमान होवै ॥ २२ ॥

शशांकसूनोर्हिबुकस्थितस्य दशा प्रपन्ना गृहधान्यनाशम् ॥ सौख्यादिहानिं हिबुके समृत्युमुद्योगभंगं च पदच्युतिं वा ॥२३॥ पंचमस्थशशिनंदनस्य वा क्रूरबुद्धिरतिकष्टता भवेत् ॥ हीनवृत्तिरपि राजसेवया कृच्छ्रलब्धधनमेति संपदम् ॥२४॥ षष्ठाष्टमांत्यस्थितसौम्यदाये त्वग्दोषजातं बहुरोगमेति ॥ विचर्चिका पैत्तिकपांडुरोगं नृपाग्निचौरैर्मरणं कृशत्वम् ॥ २५ ॥

चतुर्थगत बुधकी दशामें गृह और अन्नकी हानि सुखादिसे हीनता मातृकष्ट वा मृत्यु उद्यमभंग अथवा पदसे उतरना होवै ॥ २३ ॥ पंचम बुधकी दशामें क्रूरबुद्धि तथा अतिकष्टता होवै निंद्यकर्मसे आजीवन तथा राजसेवामें बड़ी कठिनाईसे धन एवं संपत्ति मिले ॥ २४ ॥ छठे आठवें बारहवें बुधकी दशामें त्वचा (चमड़े) में बहुतप्रकारके रोग मिलतेहैं वमन विरेक पित्तजन्य पांडुरोग और राजा अग्नि चोरसे भय कृशता वा मृत्यु होतीहै ॥ २५ ॥

देहांगवैकल्यकलत्रबंधुविद्वेषणं भूपतिदत्तकोपम् ॥ आकस्मिकं मृत्युभयं प्रमादं रिष्फस्थितस्यापि शशांकसूनोः ॥ २६ ॥ दारस्थितस्यापि शशांकसूनोर्दशाविपाके सुतदारवित्तम् ॥ विद्याविनोदं विमलांबरं च नामद्वयं भूपतिमित्रतां च ॥ २७ ॥

बारहवें बुधकी दशाका विशेषफल कहतेहैं कि शरीर तथा अंगोंमें विकलता अर्थात् अंग अपने २ कामोंसे निकम्मे होवैं स्त्री तथा बंधुजनसे वैर राजासे कोप अकस्मात् मृत्युभय प्रमाद

होतेहैं ॥ २६ ॥ सप्तम बुधकी दशामें पुत्र स्त्री धन विद्याका विनोद निर्मलवस्त्र अधिकारी दूसरा नाम और राजाकी मित्रता मिले ॥ २७ ॥

भाग्यस्थितस्यापि शशांकसूनोर्भाग्योत्तरं दारसुतार्थलाभम् ॥ तीर्थाभिषेकं जपहोमदानं यज्ञादिकर्माणि लभेन्मनुष्यः ॥ २८॥ कर्मस्थितस्यापि शशांकसूनोर्दशाविपाके नृपतौल्यमेति॥सौख्यं स्वनामांकितगद्यपद्यं नामद्वयं दारसुतार्थलाभम् ॥ २९ ॥

नवम भावगत बुधकी दशामें ऐश्वर्यवृद्धि स्त्री पुत्र धनलाभ तीर्थस्नान जप हवन दान यज्ञ-आदि कर्म मनुष्य पाताहै ॥ २८ ॥ दशमभावगत बुधकी दशामें राजाके तुल्य अपने कुलानु-मान होवै सुख अपने नामयुक्त कविता श्लोकादि उपाधिनाम और स्त्री पुत्र धनलाभ होतेहैं२९॥

प्रपूजनं देवमहीसुराणां साम्राज्यलाभं जननायकत्वम् ॥ कवित्व-मार्गं समुपैति काले यज्ञादिदीक्षां स्वजनैर्विशेषात् ॥ ३० ॥ उ-पांत्यराशिस्थितसौम्यदाये त्वनेकधा वित्तमुपैति काले ॥ दानेन वा भूपतिमाननाद्वा कृषेश्च वाणिज्यविचारतो वा ॥ ३१ ॥ उच्चां-शसंयुक्तशशांकसूनोर्दशाविशेषे सुतभूषणाप्तिम् ॥ मनोविलासं मदनाभिराममुत्साहधैर्यं च जलाभिषेकम् ॥ ३२ ॥

ग्यारहवें बुधकी दशामें देव ब्राह्मणपूजन राजाधिराजता मनुष्योंमें आधिपत्य कविताकी राह यज्ञआदिकी दीक्षा विशेषतः अपने मनुष्योंकरिके समयपर पावै ॥ ३० ॥ द्वादशगत बुधकी दशामें अनेकप्रकार धन पावै राजाके देनेसे अथवा राजाके माननेसे कृषिसे व्यापारसे अथवा विचारमंत्रणा आदिसे धन पावै ॥ ३१ ॥ उच्चांशगत बुधकी दशामें पुत्रलाभ भूषणलाभ मनके विलास हाव कामदेवका सुख उत्साह धैर्य तीर्थस्नान मिलतेहैं ॥ ३२ ॥

नीचांशकयुतः सौम्यो नीचवृत्त्यानुजीवनम् ॥ प्रेष्यत्वं परिहारं च दशायां च करोति तत ॥ ३३ ॥ सौम्यदशायामादौ लभते धनधान्यसंपदं पुरुषः ॥ अंत्ये स्वजनविरोधं मध्ये दाये नरेशस-न्मानम् ॥ ३४ ॥ अर्कगसौम्यदशायां लभते विविधापदं मनो-दुःखम् ॥ स्वकुलजनविरोधं निंदाभीवांक्षिकर्णरोगं च ॥ ३५ ॥

नीचांशकगत बुधकी दशामें नीचवृत्तिसे आजीवन (गुजारा) होवै पराये चाकरीमें नानाप्रके निंदा लाचारीभी करताहै ॥ ३३ ॥ बुधकी दशाके आदिमें पुरुष धन धान्यकी संपत्ति पाताहै

अंत्यमें अपने मनुष्योंसे वैर मध्यमें राजसन्मान मिलताहै ॥ ३४ ॥ सूर्ययुक्त विशेषतः अस्तंगतकी दशामें नानाप्रकारकी आपत्ति मानसी दुःख अपने कुलवाले मनुष्योंसे विरोध निंदा भय अथवा नेत्र कानके रोग पाताहै ॥ ३५ ॥

स्थानवीर्ययुते सौम्ये तत्पाकः कीर्तिराज्यदः ॥ मनोधैर्यं मनोत्साहं यज्ञदीक्षाशुभप्रदः ॥ ३६ ॥ तद्विहीनबुधे स्थानदारपुत्रमहद्भयम् ॥ विदेशवासं दुःखं च नानापरिभवक्रियाः ॥ ३७ ॥ दिग्वीर्यसहिते सौम्ये दिगंताद्धनिकः सुधीः ॥ सामंतराजमित्रत्वं गंधमाल्यस्य लेपनम् ॥ ३८ ॥

स्थानबलयत बुधकी दशामें कीर्तिबढे राज्यमिले मनमें धैर्य उत्साह होवै यज्ञ करनेकी दीक्षा मिले शुभकर्म होवै ॥ ३६ ॥ स्थानबल हीन बुधकी दशामें स्त्रीपुत्रोंको बडीभय होवै विदेशमें निवास होवै दुःख मिले नानाप्रकार अपमानके काम होवैं ॥ ३७ ॥ दिग्बलयुत बुधकी दशामें देशदेशांतरोंसे धनवान् होवै सुंदर बुद्धिहोवै छोटे राजासे मित्रता होवै सुगंध द्रव्य पुष्पादि लेपनादि होवैं ॥ ३८ ॥

कालवीर्ययुतसौम्यदशायां देहसौख्यमतुलं रिपुहानिः ॥ दारपुत्रनृपमानमेति गांगतोयपरिपूततनुः स्यात् ॥ ३९ ॥ निसर्गवीर्यान्वितसौम्यदाये निसर्गतश्चापि शुभादिकर्म ॥ विद्याविवादं स्वजनैर्विरोधं मातुर्वियोगं त्वथ वा च कष्टम् ॥ ४० ॥

कालबली बुधकी दशामें बहुतसा शरीरसुख शत्रुहानि स्त्रीपुत्रवृद्धि राजमान मिलताहै गंगाजलसे शरीर पवित्र होवै ॥ ३९ ॥ निसर्गबली बुधकी दशामें स्वभावहीसे शुभकार्य होवैं तथा विद्याका विवाद (शास्त्रार्थ) अपने मनुष्योंसे विरोध माताका बियोग वा कष्ट मिले॥ ४० ॥

वक्रचेष्टान्विते सौम्ये भाग्यदारसुतार्थभाक् ॥ तथा पुराणदानादिसमुद्रस्नानमाचरेत् ॥ ४१ ॥ दिग्बलेन युते सौम्ये सर्वभूतेषु सौम्यताम् ॥ करोति रतिकेलिं च राज्यभाग्यसमन्विताम् ॥ ४२ ॥ क्रूरषष्ट्यंशसौम्यस्य दशापाके महद्भयम् ॥ चौराग्निभूपैर्भीतिः स्याच्छुभदृग्योगवर्जिते ॥ ४३ ॥

बुध वक्री चेष्टाबलयुक्त होवै तो उसकी दशामें ऐश्वर्य , स्त्री, पुत्र, धन बढे, पुराणश्रवण दान और समुद्रस्नान करे ॥ ४१ ॥ दृग्बलयुत बुधकी दशामें सब प्राणियोंमें सौम्यता कर-

तीहै कामक्रीडा सुख राज्य ऐश्वर्यसे युक्त रहताहै ॥ ४२ ॥ क्रूरषष्ट्यंशगत बुधकी दशामें बडीभय चौर अग्नि राजासे भय होतीहै यदि बुध शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट न हो ॥ ४३ ॥

मृद्वंशादियुते सौम्ये राज्यलाभं महत्सुखम् ॥ मार्दवं सर्वभूतेषु कृषिपुत्रार्थसंपदम् ॥ ४४ ॥ सौम्ये वैशेषिकांशस्थे विशेषाद्राजपूज्यताम् ॥ सुगंधांबरमाल्यं च विद्यागोष्ठीरहस्यताम् ॥ ४५ ॥ क्रूरद्रेष्काणसंयुक्तश्चंद्रसूनुर्यदा तदा ॥ चौराग्निभूपतिभयं स्थाननाशं महद्भयम् ॥ ४६ ॥

मृद्वंशादियुत बुधकी दशामें राज्यलाभ बडासुख सब जीवोंमें दयाभाव कृषि पुत्र धनकी संपत्ति होतीहै ॥ ४४ ॥ वैशेषिकांशगत बुधदशामें विशेषकरके राजपूज्यता मिलतीहै सुगंध वस्त्र पुष्प विद्या कौन्सिल् गुप्तमंत्रणा होतीहै ॥ ४५ ॥ बुध क्रूर द्रेष्काणमें होवै तो उसकी दशामें चोर अग्नि राजासे भय स्थाननाश बडी भय होवै ॥ ४६ ॥

उच्चराशिगतः सौम्यो नीचभागगतो यदि ॥ राज्यं सुखं च कीर्तिं च विनाशयति तत्क्षणात् ॥ ४७ ॥ चंद्रात्मजोपि नीचस्थः स्वोच्चभागसमन्वितः ॥ अशुभं फलमादौ तु शुभमंते प्रयच्छति ॥ ॥ ४८ ॥ इति बुधदशाफलानि ॥

इति श्रीसर्वार्थचिन्तामणौ भौमबुधदशाफलनिरूपणो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

उच्चराशिका बुध यदि नीचांशकमें होवै तो उसकी दशा राज्य सुख कीर्तिका तत्काल नाश करती है ॥ ४७ ॥ बुध नीचराशिगत उच्चांशकमें होवै तो प्रथम अशुभफल पीछे शुभफल देताहै ॥ ४८ ॥ इति बुधदशाफलानि ॥

इति श्रीसर्वार्थचिंतामणौ माहीधरभाषाटीकायां भौमबुधदशाफल-निरूपणाध्यायश्चतुर्दशः ॥ १४ ॥

पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

अथ गुर्वादिदशाफलविचाराध्यायः ।

गुरोर्दशायां परमोच्चगस्य राज्यं महत्सौख्यमुपैति कीर्तिम् ॥
मनोविलासं गजवाजिसंघनृपाभिषकं स्वकुलाधिपत्यम् ॥ १ ॥
कुलीरगस्यापि गुरोर्दशायां भाग्योत्तरं भूपतिमाननाद्वा ॥
विदेशयानं महदाधिपत्यं दुःखैः परिक्लिन्नतनुर्मनुष्यः ॥ २ ॥

परमोच्चगत गुरुकी दशामें राज्य, बडासुख और कीर्तिको प्राप्त होताहै, मनके विलास हाथी घोडाओंकी बहुतायत, राजाभिषेकानंद, अपने कुलमें आधिपत्य मिलताहै ॥ १ ॥ कर्क (उच्चराशि) गत गुरुदशामें ऐश्वर्यवृद्धि राजमानसे होवै, अधिकारी काममें विदेशगमन बडा अधिकार होवै और मनुष्य दुःखोंसे खिन्नमन भी रहै ॥ २ ॥

आरोहिणी देवगुरोर्महत्त्वं दशा प्रपन्ना कुरुतेर्थभूमिम् ॥ गानक्रि-
या स्त्रीसुतराजपूज्यं स्ववीर्यतः प्राप्तयशः प्रतापम् ॥ ३ ॥ जीव-
दशायामारोहिण्यामीशो मण्डलादिनाथो वा ॥ द्विजभूपालल-
ब्धधनो मेधावी कांतिमान् विनीतिज्ञः ॥ ४ ॥

आरोहिणी (उच्चमें जानेवाले) गुरुकी दशामें बड़प्पन, धन, भूमि, गायनक्रिया, स्त्री, पुत्र राजपूज्यता मिलतीहैं, और अपने बलसे यश एवं प्रताप होताहै ॥ ३ ॥ औरभी फल आरोहिणी गुरुदशाके हैं कि राजा वा माण्डलिक (कुछेक गांवका राजा) होताहै ब्राह्मण राजासे धन मिले, बुद्धिमान् कांतिमान् नीतिज्ञ होताहै ॥ ४ ॥

देवेन्द्रपूज्यस्य दशावरोही करोति सौख्यं सकृदेव नाशम् ॥ सकृ-
द्यशः कांतिविशेषजालं नरेश्वरत्वं सकृदेव याति ॥ ५ ॥ अति-
नीचभागभाजो गुरोर्दशायां प्रभग्नगृहपुंजः ॥ अन्योन्यहृदयवैरं
कृषिनाशं याति परभृत्यः ॥ ६ ॥

अवरोही (उच्चसे उतरके नीचगामी) गुरुकी दशा कभी सुख कभी सुखका नाश कभी यश कभी विशेष कांति कभी राजा कभी अराजा करतीहै ॥ ५ ॥ नीच नीचांशकगत गुरुदशामें घर फटें टूटें आपसमें मनोंमें वैर रहे कृषिका नाश होवै पराई नौकरी करनीपडे ॥ ६ ॥

मूलत्रिकोणनिलयस्य गुरोर्दशायां राज्यार्थभूमिसुतदारविशेष-सौख्यम् ॥ यानाधिरोहणमपि स्वबलाप्तवित्तं यज्ञादिकर्मजन-पूजितपादपीठम् ॥ ७ ॥ गुरोर्दशायां स्वगृहं गतस्य राज्ञोर्थभू-धान्यसुखांबरं च ॥ मिष्टान्नदो वाजिमनोविलासं काव्यादिपुण्या-गमवेदशास्त्रम् ॥ ८ ॥

मूलत्रिकोणगत गुरुकी दशामें राज्य, धन, स्त्री, पुत्रोंका विशेष सुख मिले सवारीमें भी चढे अपने बलसे धनादिक पावै यज्ञादिकर्म करे बहुत मनुष्योंसे उसके पैर पूजेजावें ॥ ७ ॥ स्वगृहगत गुरुदशामें राजासे धन, भूमि, अन्न, सुख, वस्त्र मिलें, मीठे भोजन घोडे मनका विलास काव्यादि विलास पुण्यागम वेदशास्त्र ज्ञान देतीहै ॥ ८ ॥

गुरोर्दशायामतिशत्रुराशिं गतस्य दुःखं समुपैति शोकम् ॥ विषा-दभूम्यर्थकलत्रनाशं नृपाग्निचौरैर्बहुदुःखपीडाम् ॥ ९ ॥ गुरोर्द-शायामरिराशिगस्य क्षेत्रादिवित्तं शयनांबरं च ॥ नरेशसन्मा-नमुपैति नित्यं स्त्रीपुत्रभृत्यात्मसहोदरार्तिम् ॥ १० ॥

अतिशत्रुराशिगत गुरुदशामें दुःख शोक विषाद मिलते हैं भूमि, धन, स्त्रीनाश, राजा, अग्नि, चोरसे बहुत दुःख तथा पीडा मिलतीहै ॥ ९ ॥ शत्रुराशिगत गुरुदशामें खेती आदि धन शय्या वस्त्र और राजासे सन्मान नित्य मिलतेहैं, स्त्री पुत्र नौकर और भाइयोंको पीडा होतीहै ॥ १० ॥

प्राप्तौ दशायामतिमित्रराशिं गतस्य जीवस्य नरेन्द्रपूज्यम् ॥ मृदंगभेरीरवयानघोषं दिगंतराक्रांतसमस्तभाग्यम् ॥ ११ ॥ मित्र-क्षंगस्यापि गुरोर्दशायां नरेशमैत्रीं समुपैति कीर्तिम् ॥ विद्यावि-वादे जयमन्नसौख्यं सुगंधमृद्वस्त्रपरोपकारम् ॥ १२ ॥ समर्क्षग-स्यापि गुरोर्दशायां सामान्यतो भूपतिदत्तभाग्यम् ॥ कृष्यर्थगो-भूमिमनोविलासं मित्रांबरालंकृतिभूषणाप्तिम् ॥ १३ ॥

अतिमित्रराशिगत गुरुकी दशामें राजपूज्यता मिले मृदंग भेरी आदिके शब्द युक्त सवारी में चले ऐश्वर्यसे दिगंतपर्यंत आक्रांत करे संपूर्ण ऐश्वर्य होवै ॥ ११ ॥ मित्रराशिगत गुरुकी दशामें राजासे मैत्री कीर्ति विद्यासंबंधि विवादमें विजय अन्नसुख सुगंधिद्रव्य मृत्तिकाके पदार्थ वस्त्र और परोपकार करना मिले ॥ १२ ॥ समराशिगत गुरुदशामें सामान्यतासे राजाका दिया ऐश्वर्य कृषि, धन, गौ भूमि, मनकी प्रसन्नता विलासादि मित्र, वस्त्र, अलंकार, भूष-णोंकी प्राप्ति होवै ॥ १३ ॥

नीचखेचरसंयुक्तजीवदाये मनोरुजम् ॥ परप्रेष्यापवादं च पुत्राणां च विरोधिताम् ॥ १४ ॥ उच्चखेचरसंयुक्तगुरुदाये महत्सुखम् ॥ अनेकगोपुरादीनां निर्माणं नृपपूज्यताम् ॥ १५ ॥

नीचराशिगत ग्रहसंयुक्त गुरुदशामें मानसीरोग पराये कहेसे सफर करनापडे पुत्रोंके साथ विरोध होवै ॥ १४ ॥ उच्चराशिगत ग्रहसंयुक्त गुरुकी दशामें बडा सुख मिले अनेक अट्टालिकावाले गृह बनावै राजासे पूज्यता मिले ॥ १५ ॥

पापान्वितस्यापि गुरोर्दशायां करोति पापं हृदयांतरस्थम् ॥ गूढं बहिः पुण्यफलं विशेषाद्भूम्यर्थदारात्मजसौख्यमेति ॥ १६ ॥ शुभान्वितस्यापि गुरोर्दशायां नरेशयानं मृदुलांबरं च ॥ दानेन वित्तं नृपमाननाद्वा यज्ञादिसन्मार्गविशेषलाभम् ॥ १७ ॥

पापयुत गुरुकी दशामें मनमें पाप करताहै बाहर छिपाय रक्खे तथा दिखावेंमें पुण्यफल कहे और भूमि, धन, स्त्री, पुत्र, सुख भी पाताहै ॥ १६ ॥ शुभग्रह युक्त गुरु दशामें राजासे सवारी कोमल वस्त्र मिलें दान मिलनेसे वा राजाके सन्मान करनेसे धन मिले यज्ञादि पुण्यमार्गका विशेष लाभ होवै ॥ १७ ॥

पापेक्षितस्यापि गुरोर्दशायां प्राप्तं सुखं किंचिदुपैति धैर्यम् ॥ क्वचिद्यशः कुत्रचिदाप्तसौख्यं क्वचिद्धनं नाशमुपैति चांते ॥१८॥ शुभेक्षितस्यापि गुरोर्दशायां देशांतरे वित्तमुपैति भूपात् ॥ देवार्चनं भूसुरतर्पणं च तीर्थाभिषेकं गुरुपूज्यतां च ॥ १९ ॥ केन्द्रगतजीवदाये राज्यं भूदारराजसन्मानम् ॥ विविधसुखानन्दकरं बहुजनरक्षां प्रधानतां याति ॥ २० ॥

पापदृष्ट गुरुकी दशामें थोडा सुख धैर्य कभी यश कभी सुख मिले अंत्यमें धननाशभी होवे ॥ १८ ॥ शुभग्रह दृष्ट गुरुकी दशामें देशांतरमें राजासे धन पावै देवताका पूजन ब्राह्मणोंकी तृप्ति तीर्थस्नान और गुरुका पूजन होवै ॥ १९ ॥ केन्द्रगत बृहस्पतिकी दशामें राज्य, भूमि, स्त्री और राजसन्मान मिले अनेक प्रकार सुख आनंद करताहै बहुत मनुष्यों की रक्षा अपनेंसे होतीहैं प्रधानताको प्राप्त होताहै ॥ २० ॥

लग्नं गतस्य हि दशा पुरुषे करोति जीवस्य सौख्यममलांबरभूषणाप्तिम् ॥ यानाधिरोहणमृदंगपणारवैश्च मत्तेभवाजिभटसं-

घयुत करोति ॥ २१ ॥ चतुर्थकेन्द्रस्थितजीवदाये यानत्रयं भूपतिमित्रभावम् ॥ भूपालयोगे यदि भूपतित्वं नोचेत्तथा तत्सदृशं करोति ॥ २२ ॥ कलत्रराशिस्थितजीवदाये दारार्थपुत्रार्थसुखं प्रयाति॥विदेशयानं समरे जयं च ध्यानं परब्रह्मणि पुण्यकर्म॥२३॥

लग्नगत गुरुकी दशा सुख निर्मलवस्त्रभूषणोंकी प्राप्ति मृदंग नगारोंके शब्दसहित सवारीमें चढना और उन्मत्त हाथी घोडे योद्धाओंसे युक्त कराती है ॥ २१ ॥ चौथे गुरुकी दशामें तीन प्रकार अर्थात् चतुष्पद मनुष्य निर्जीव सवारी मिलें राजासे मित्रभाव हों राजयोगभी मनुष्यको होवै तो ऐसी दशामें राजाही होजावै राजयोग न होवै तो राजाके तुल्य तोभी होजाताहै ॥ २२ ॥ सप्तमगत जीवकी दशामें स्त्री धन पुत्रोंका सुख विदेशगमन संग्राममें जय परब्रह्ममें ध्यान लगे पुण्यकर्म होवै ॥ २३ ॥

कर्मस्थितस्यापि गुरोर्विपाके राज्याप्तिमाहुर्मुनयस्तदानीम् ॥ भूपालयोगे त्वथ वार्थपुत्रकलत्रसत्कर्मसुराजयोगम् ॥ २४ ॥ पंचमस्थगुरोदाय मंत्रोपास्ति महत्सुखम् ॥ सुताप्तिं राजपूजां च वेदांतश्रवणादिकम् ॥ २५ ॥ त्रिकोणसंस्थस्य गरोर्दशायां स्त्रीपुत्रधान्यार्थविवेकबुद्धिम् ॥ मृद्वन्नपानांबरपट्टवस्त्रयानादिलाभं भवनेशसौख्यम् ॥ २६ ॥ उच्चांशसंयुक्तगुरोर्दशायां भाग्योत्तरं राजसमानमेति ॥ प्रवालमुक्तामणिरत्नलाभं सर्वेषु सख्यं समुपैति सौख्यम् ॥ २७ ॥

दशमगत गुरुदशामें मुनिलोग राज्यप्राप्ति कहतेहैं यदि राजयोगभी होवे तब यह फल है अथवा धन पुत्र स्त्रीलाभ सत्कर्म राजप्रसाद तो विना राजयोगभी होतेहीहैं ॥ २४ ॥ पंचम गुरुकी दशामें मंत्रकी उपासना बड़ासुख पुत्रप्राप्ति राजासे पूजा और वेदांतश्रवण आदि उत्तम काम होवैं ॥ २५ ॥ त्रिकोणगत गुरुकी दशामें स्त्री, पुत्र, अन्न, धन, विवेक बुद्धि, कोमल अन्न, पान, वस्त्र, रेशमीवस्त्र, सवारी आदिका लाभ गृहपतिसे सुख मिलतेहैं ॥ २६ ॥ उच्चांशकगत गुरुकी दशामें ऐश्वर्यवृद्धि राजासे सन्मानता, मूंगा, मोती, मणि, रत्नोंका लाभ सबके साथ मित्रता और सुख होतेहैं ॥ २७ ॥

नीचांशसंयुक्तगुरोर्विपाके भूपाद्भयं गुल्मविचर्चिकादीन् ॥ स्थानच्युतिं बंधुविरोधितां च नृपाग्निचौरैः स्वकुलोद्भवैश्च ॥ २८ ॥ अर्कंगजीवदशायां सहसा ज्वरपीडितो भवेत् क्षीणः ॥ ऊर्ध्वी-

गरोगतप्तो दुःशीलत्वं भ्रमभ्रसंसारः ॥ २९ ॥ आदौ गुरुदशाकाले नृपपूजां महत्सुखम् ॥ मध्ये स्त्रीपुत्रलाभादि चांते कष्टं विनिर्दिशेत् ॥ ३० ॥ धनस्थितस्यापि गुरोर्विपाके धनार्यतिं भूपतिमाननं च ॥ विद्याविवादांकितराजगोष्ठीं सर्वोपकारं विजयं सुखं च ॥ ३१ ॥

नीचांशगत गुरुकी दशामें राजासे भय गुल्म अरुचि आदि रोग होवैं, स्थान छूट जावै, बंधुजनोंमें विरोध होवै, राजा अग्नि चोर और अपने कुलवालोंसे भी भय होवै ॥ २८ ॥ अस्तंगत गुरुकी दशामें एकाएकी ज्वरसे पीडित तथा क्षीण होजावै, ऊपरके अंगमें रोग होनेसे संतप्त रहे, शील नष्ट होजावै, सारा संसार निरर्थक मालूम पडे ॥ २९ ॥ गुरुकी दशामें पहिले तो राजपूज्यता तथा सुख मिलता है बीचमें पुत्रादिलाभ और अंतमें कष्टफल कहना ॥ ३० ॥ दूसरे भावगत गुरुकी दशामें धनकी वृद्धि राजासे मान विद्याकी चर्चावाली राजसभामें प्रवेश अपनेसे सबका उपकार विजय और सुख इतने फल होते हैं ॥ ३१ ॥

नृपकृतबहुमानं भ्रातृभिर्भूमिलाभं परयुतविजनैर्वा दत्तगोभूमिवित्तम् ॥ अशनवसनभूषागंधमाल्यांवराणि परकृतमुपकारं विज्ञतामेति शौर्य्यम् ॥ ३२ ॥ तृतीयस्थगुरोर्दाये भ्रातॄणां च सुखं भवेत् ॥ नृपदत्तं धनं सौख्यं गंधमाल्यांवरादिकम् ॥ ३३ ॥ नीरोगता पुत्रकलत्रलाभं लग्नाद्रिपुस्थस्य गुरोर्दशायाम् ॥ आदौ भवेदेवमथांत्यपाके दारार्थचौरादिभयं सरोगम् ॥ ३४ ॥ जीवो मरणपदस्थः करोति सौख्यं स्वबंधुजनहानिम् ॥ स्थानच्युतिं विदेशं प्रांते स्त्रीराजपुत्रसन्मानम् ॥ ३५ ॥

धनस्थानगत गुरुकी दशाका फल औरभी कहतेहैं कि राजाका किया बहुत मान, भाइयोंसे भूमिका लाभ, शत्रुसे वा अन्य किसी मनुष्योंके दिये गौ भूमि धन मिलें, भोजन, वस्त्र, भूषण, चंदन, पुष्प, उत्तमवस्त्र मिलें, दूसरेसे अपना उपकार उत्तम बुद्धिमत्त्व और सामर्थ्य मिलें ॥ ३२ ॥ तीसरे गुरुकी दशामें भाईयोंका सुख राजाका दिया धन सुख और चंदन सुगंधित पुष्प वस्त्रादि मिलते हैं ॥ ३३ ॥ छठे गुरुकी दशामें प्रथम निरोगता पुत्र स्त्री लाभ अंतमें स्त्री धनहानि चोर आदिकी भय होतीहै ॥ ३४ ॥ अष्टमस्थ गुरुकी दशा सुख तथा अपने बंधुजनोंकी हानि करतीहै स्थानहानि विदेशगमन कराती है अतमें स्त्री राजसन्मान पुत्रादिलाभ यद्वा राजपुत्रसे सन्मान दिलातीहै ॥ ३५ ॥

लाभगजीवदशायां संप्राप्तौ राज्यलाभमुपयाति ॥ बह्वर्थदारपुत्रान् भूपविरोधं स्वबंधुविद्वेषम् ॥ ३६ ॥ व्ययगतजीवदशायां प्राप्तौ वाहनादि समुपयाति ॥ लभते विदेशयानं नानाक्लेशैश्च परिभूतः ॥ ३७ ॥

ग्यारहवें गुरुकी दशामें राज्यलाभको प्राप्त होताहै धन स्त्री पुत्र बहुत होतेहैं, राजा तथा अपने बंधुजनोंमें द्वेष होताहै ॥ ३६ ॥ बारहवें गुरुकी दशामें वाहन आदि मिलतेहैं तथा अनेक प्रकारके क्लेशोंसे दबकर विदेशगमन मिलताहै ॥ ३७ ॥

पाके स्थानबलान्वितस्य च गुरोः क्षेत्रार्थदारात्मजान्संप्राप्नोति गजांश्च वस्त्रकनकं चित्रांबरं भूषणम् ॥ दिग्वीर्यान्वितदेवनायकगुरौ लोके प्रसिद्धिं तथा जीवे कालबलाधिके नृपवधूसन्मानतां याति सः ॥ ३८ ॥ निसर्गवीर्यान्वितजीवदाये निसर्गतश्चातिसुखं महत्त्वम् ॥ विद्याविलासं रतिकेलिसौख्यं भागीरथीतोयकृताभिषेकम् ॥ ३९ ॥ वक्रं गतस्यापि गुरोर्दशायां महार्थतां याति सुतार्थदारान् ॥ युद्धे जयं भूपतिमित्रतां च सुगंधजातांबरवाग्विलासम् ॥ ४० ॥

स्थानबली गुरुकी दशामें खेती, धन, स्त्री, पुत्र मिलतेहैं हाथी, घोडे, वस्त्र, सुवर्ण, अनेक रंगके वस्त्र भूषणोंका लाभ होताहै दिग्वीर्ययुक्त गुरुकी दशामें लोकमें ख्याति, कालबलयुत गुरुकी दशामें राजरानियोंसे सन्मानताको प्राप्त होताहै ॥ ३८ ॥ निसर्गबलयुत गुरुकी दशामें सुख बड़प्पन विद्याका विलास कामक्रीडाका सुख और गंगाका स्नान मिलताहै ॥ ३९ ॥ वक्रगति गुरुकी दशामें धनसंपन्नता स्त्री पुत्र धनलाभ संग्राममें विजय राजासे मित्रता सुगंध द्रव्य उत्तम वस्त्र और वाणीका विलास मिलतेहैं ॥ ४० ॥

दृग्वीर्ययुक्तस्य गुरोर्विपाके कृपाकटाक्षेण महीपतीनाम् ॥ समस्तभाग्यं समुपैति नित्यं देशान्तरे भ्राम्यति किंचिदेव॥४१॥ क्रूरषष्ट्यंशसंयुक्तगुरोर्दायेतिकष्टताम् ॥ राजकोपावमानादीन् लभते नात्र संशयः ॥ ४२ ॥

दृग्बली गुरुकी दशामें राजाओंकी कृपासे संपूर्ण ऐश्वर्य नित्य पावै तथा थोडा, देशांतर भ्रमणभी करे ॥ ४१ ॥ क्रूरषष्ट्यंशयुक्त गुरुकी दशामें अतिकष्ट राजाका कोप अपमान आदि निस्संदेह पाताहै ॥ ४२ ॥

सौम्यषष्टयंशसंयुक्तगुरोर्दायेतिसौख्यताम् ॥ वाहनं बन्धुसन्मानं यज्ञवैवाहिकं शुभम् ॥ ४३ ॥ पारावतांशयुक्तस्य गुरोर्दाये मह-त्सुखम् ॥ मृद्वन्नपट्टवस्त्रं च हेमविक्रयभूषणम् ॥ ४४ ॥ पाश-द्रेष्काणयुक्तस्य गुरोर्दाये च बंधनम् ॥ कारागृहप्रवेशं च निगडं दारविग्रहम् ॥ ४५ ॥ उच्चस्थोपि गुरुर्नीचराश्यंशकसमन्वितः ॥ महाभाग्ये तु संप्राप्ते तत्क्षणादेव नश्यति ॥ ४६ ॥ नीचस्थो देवपूज्योपि स्वोच्चांशकसमन्वितः ॥ भाग्यक्षयेपि संप्राप्ते भाग्यं याति तदा नरः ॥ ४७ ॥ इति गुरुदशाफलम् ॥

शुभषष्टयंशगत गुरुकी दशामें अतिसुख वाहन बंधुवर्गमें सन्मान यज्ञ तथा विवाहकर्म होतेहैं ॥ ४३ ॥ पारावतांशगत गुरुकी दशामें बडासुख कोमल अन्न रेशमी वस्त्र सुवर्णसे रंजित भूषण मिलतेहैं ॥ ४४ ॥ पाशद्रेष्काणगत गुरुकी दशामें बंधन कैदघरमें प्रवेश कठिन स्थानमें बंदी होना और स्त्रीके साथ कलह होतेहैं ॥ ४५ ॥ उच्चराशिका बृहस्पति नीचां-शकमें होवै तो उसकी दशामें बडा ऐश्वर्यभी नष्ट होजाताहै ॥ ४६ ॥ नीचराशिका उच्चांशकमें हो तो ऐश्वर्य क्षयभी होगयाहो तोभी पुनः पूर्ण होजाताहै ॥ ४७ ॥ इति गुरुदशाफलम् ॥

अथ शुक्रदशाफलम् ।

अत्युच्चभृगुदशायां मत्तविलासप्रियार्थभोगी स्यात् ॥ माल्या-च्छादनभोजनशयनस्त्रीपुत्रधनयुक्तः ॥ १ ॥ स्वोच्चस्थितस्यापि भृगोर्दशायां स्त्रीसंगनष्टार्थविरुद्धधर्मम् ॥ पित्रोर्विनाशं समुपैति दुःखं शिरोरुजं भूपतिमाननं च ॥ २ ॥

अब शुक्रदशाके फल कहतेहैं परम उच्चगत शुक्रकी दशामें मौढ हासविलास मिलें प्रिय वस्तुका भोगवाला होवै सुगंधित पुष्प, वस्त्र, भोजन, शय्या, स्त्री, पुत्र और धनसे युक्त रहे ॥ १ ॥ उच्चराशिगत शुक्रकी दशामें स्त्रीसंगसे धन नष्टहो विरुद्धधर्म होवै मातापि ताकी हानि दुःख शिरमें रोग और राजासे मानभी पावै ॥ २ ॥

आरोहिणी शुक्रदशा प्रपन्ना धान्यांबरालंकृतिकांतिपूजाम् ॥ प्रवृत्तिसिद्धिं स्वजनैर्विरोधं मात्रादिनाशं परदारसंगम् ॥ ३ ॥ भृगोः सुतस्याप्यवरोहकाले प्रचंडवेश्यागमनं धनाप्तिम् ॥ स्त्रीपुत्रबंध्वार्तिमनोविकारं हृच्छूलरोगं मदनार्तिमेति ॥ ४ ॥

उच्चमें जानेवाले शुक्रकी दशामें अन्न, वस्त्र, भूषण, उत्तमकांति लोकमें पूज्यता उद्यम-सफल तथा अपने मनुष्योंसे विरोध माताआदिका नाश पराई स्त्रीसे संग होवै ॥ ३ ॥ नीचमें जानेवाले शुक्रकी दशामें प्रचण्डवेश्याका गमन धनप्राप्ति स्त्री पुत्र बंधुजनोंको पीडा मनमें विकार हृदयमें शूलरोग और कामदेवकी पीडा पाताहै ॥ ४ ॥

उद्वेगरोगतप्तः कर्मसु विफलेषु सर्वदाभिरतः ॥ अतिनीचगस्य-दाये शुक्रस्यात्मार्थदारपुत्रार्तिम् ॥ ५ ॥ मूलत्रिकोणभाजो भृगोर्दशायां महाधिपत्यं स्यात् ॥ क्रयविक्रयेषु कुशलो धनकी-र्तिसमन्वितो विधिज्ञश्च ॥ ६ ॥

परमनीचगत शुक्रकी दशामें उद्वेग रोगसे संतप्त रहे सर्वदा निष्फल कामोंमें तत्पर रहे अपने शरीर स्त्री पुत्रोंको पीडा होवै ॥ ५ ॥ मूलत्रिकोण ७ तुलाके शुक्रकी दशामें बडा आधिपत्य (अफसरी:) होवै व्यापारमें निपुण धन तथा कीर्तिसे युक्त और विधि जाननेवाला भी होवै ॥ ६ ॥

शुक्रक्षेत्रदशायां लभते स्त्रीपुत्रमित्रधनशौर्यम् ॥ नित्योत्साहं द्वेषं परोपकारं महत्त्वं च ॥ ७ ॥ भृगोर्दशायामतिशत्रुराशि गतस्य पुत्रार्थकलत्रहानिम् ॥ प्रभग्नसंसारविशीर्णदेहं गुल्माक्षि-रोगं ग्रहणीप्रकोपम् ॥ ८ ॥

वृषराशिगत शुक्रकी दशामें स्त्री, पुत्र, मित्र, धन और पराक्रम पाताहै नित्य उत्साह द्वेष पराया उपकार और बडप्पन भी मिलताहै ॥ ७ ॥ अतिशत्रुराशिगत शुक्रकी दशामें पुत्र धन स्त्रीकी हानि संसारसे विरक्ति शरीर शिथिल गुल्मरोग नेत्ररोग और संग्रहणी रोगका कोप होवै ॥ ८ ॥

शत्रुक्षेत्रिदशायां भृगोरपत्यार्थदारहानिः स्यात् ॥ भूपतिरोषं कु-रुते मत्तविलासार्थपापकर्माणि ॥ ९ ॥ मित्रक्षेत्रदशायां परोप-कारी कलाविधिज्ञश्च ॥ पूगारामकृषिः स्यादेवमनुष्यैश्चवोद्धृता-र्थैश्च ॥ १० ॥ अतिमित्रशुक्रदाये भूपतिसन्मानसौख्यं च ॥ गोधनवाजिसमेतं गजपतिसंघैर्निरस्तदोषैश्च ॥ ११ ॥

शत्रुराशिगत शुक्रकी दशामें पुत्र, धन, स्त्रीकी हानि होवै, बढे विलासादिकी हानि और पापकर्म होतेहैं ॥ ९ ॥ मित्रराशिगत शुक्रदशामें पराया उपकार करे, ६४ कला जाने, विधि वा ज्योतिष जाने, सुपारी आदिका बाग खेती देवता एवं मनुष्योंके काममें उसका धन आवै

॥ १० ॥ अतिमित्रराशिगत शुक्रकी दशामें राजासे सन्मान होवै, सुखमिले, गौ आदि पशु-धन घोडे तथा निर्दोष श्रेष्ठ हाथियोंसे युक्त रहे ॥ ११ ॥

समर्क्षगस्यापि भृगोर्विपाके प्रमेहगुल्माक्षिगुदप्ररोगः ॥ किंचित्सुखं भूपतिवह्निचौरैर्भयं स्वनामांकितगद्यपद्यम् ॥ १२ ॥ नीचखेचरसंयुक्तभृगोर्दाये महद्भयम् ॥ अपवादकृतं दोषं लभते पापकर्मभिः ॥ १३ ॥ स्वोच्चस्थितेन सहितस्य भृगोर्विपाके राज्यं महत्त्वसमराधिपतित्वमेव ॥ हेमांबरादिमणिभूषणयानलाभं भेरीमृदंगपणवारववाद्यघोषैः ॥ १४ ॥

समराशिगत शुक्रकी दशामें प्रमेह गुल्मरोग नेत्ररोग गुदद्वारमें रोग होवैं, सुख थोडा मिले राजा अग्नि चोरसे भय होवै, अपने नामसे चिह्नित गद्य पद्य होवैं ॥ १२ ॥ नीचगत ग्रहसे युक्त शुक्रकी दशामें बडी भय होवै, झूठा कलंक पाप कर्मोंसे मिले ॥ १३ ॥ उच्चगत ग्रहसे युक्त शुक्रकी दशामें राज्य बड़प्पन युद्धमें नायकता सुवर्णवस्त्रादि तथा मणियों सहित भूषण मिलें, भेरी मृदंग नकारे आदि बाजाओंके शब्दसहित गमन करे ॥ १४ ॥

पापान्वितस्यापि भृगोर्दशायां स्थानच्युतिं बंधुजनैर्विरोधम् ॥ आचारहानिं कलहप्रियत्वं कृष्यर्थभूम्यात्मजदारनाशम् ॥ १५ ॥ शुभान्वितस्यापि भृगोर्दशायां सौभाग्यमित्रात्मजधान्यलाभम् ॥ नरेशपूजां गजवाजिसंघं प्रवालमुक्तामणियानलाभम् ॥ १६ ॥

पापयुक्त शुक्रदशामें स्थानहानि, बंधुजनोंसे विरोध, आचारहीनता, झगडामें प्रेम, खेती, धन, भूमि, पुत्र, स्त्रीकी हानि होवै ॥ १५ ॥ शुभग्रहयुक्त शुक्रदशामें (सौभाग्य) उत्तम ऐश्वर्य, मित्र, पुत्र, अन्न, धनका लाभ, . राजपूज्यता, हाथी घोडाओंके समूह, मूंगा, मोती, मणि, वाहन मिलें ॥ १६ ॥

पापेक्षितस्यापि भृगोर्दशायां मानार्थहानिं समुपैति दुःखम् ॥ स्त्रिया विरोधं स्वपदच्युतिं च विदेशवासं निजकर्महीनम् ॥ १७ ॥ शुभेक्षितस्यापि भृगोर्विपाके धनांबरं भूपतिपूजनं च ॥ जनाधिपत्यं स्वशरीरकांतिं कलत्रमित्रात्मजसौख्यमेति ॥ १८ ॥

पापदृष्ट शुक्रकी दशामें मान धन हानि और दुःख पाताहै, स्त्रीसे विरोध अपने पदकी हानि विदेशमें निवास और अपने कर्मसे हीनता मिलतीहै ॥ १७ ॥ शुभग्रहदृष्ट शुक्रदशामें धन वस्त्र राजासे पूजा बहुत मनुष्योंमें नायकता अपने शरीरमें उत्तमकांति स्त्री मित्र पुत्रोंका सुख मिलताहै ॥ १८ ॥

केन्द्रे गतस्य हि दशा भृगुनन्दनस्य यानांबरादिमणिभूषित-देहकांतिम् ॥ राज्यार्थभूमिकृषिवाहनवस्त्रशस्त्रदुर्गाधियानवनवा-सजलाभिषेकम् ॥ १९ ॥ लग्नगशुक्रदशायां संप्राप्तो राजमाननं लभते ॥ मणिगोधनकृषिलाभं परापवादं महोत्साहम् ॥ २० ॥ चतुर्थराशिस्थितशुक्रदाये राज्यं महत्सौख्यमुपैति यानम् ॥ कृ-षिक्रियावित्तपशुप्रजानां वृद्धिं प्रतापान्वितकीर्तिजालम् ॥ २१ ॥

केन्द्रगत शुक्रकी दशामें सवारी वस्त्रादि मिलें, मणियोंसे भूषित शरीरकी कांति बढ़े, राज्य, धन, भूमि, कृषिकर्म, वाहन, वस्त्र, शस्त्र मिलें, किलामें गमन बनवास बन्यजल स्नान मिलें ॥ १९ ॥ लग्नगत शुक्रकी दशामें राजमान पाताहै, मणि, गौ, धन, कृषिका लाभ, बडा उत्साह और अपवाद मिलतेहैं ॥ २० ॥ चौथे शुक्रकी दशामें राज्य बडासौख्य वाहन पावै कृषिकर्म धन पशु सन्तानकी वृद्धि होती है प्रतापसे युक्त कीर्तिजाल फैलताहै ॥ २१ ॥

कलत्रराशिस्थितशुक्रदाये कलत्रनाशं त्वथ वा विदेशम् ॥ प्रमे-हगुल्मादिशरीररोगं प्रभग्नवित्तात्मजबंधुराज्यम् ॥ २२ ॥ कर्म-स्थशुक्रस्य दशाविपाके विद्याधनप्राप्तिनरेशपूजा ॥ भाग्योत्तरं पालितदेहकांतिं दिगंतरप्राप्तयशःप्रतापम् ॥ २३ ॥ त्रित्रिकोण-गतः शुक्रः करोति नपपूज्यताम् ॥ यज्ञकर्मादिलाभं च गुरुपित्रोः सुखं यशः ॥ २४ ॥ पंचमस्थभृगोर्दाये पुत्रावाप्तिं विनिर्दिशेत् ॥ कीर्तिं च राजपूजां च सर्वेषामुपकारकम् ॥ २५ ॥

सप्तमगत शुक्रदशामें स्त्रीनाश अथवा विदेशगमन होवै, प्रमेह गुल्म आदि रोग शरीरमें होवैं, धन पुत्र बंधुजन और राज्य भग्न होवैं ॥ २२ ॥ दशम शुक्रकी दशामें विद्याधनकी प्राप्ति राजासे पूजा ऐश्वर्यवृद्धि शरीरमें शृंगारादि कांति बढे और यश प्रताप दिगंतरोंमें फैले ॥ २३ ॥ नवमगत शुक्रकी दशा राजपूज्यता यज्ञकर्मादि लाभ गुरु एवं पिताका सुख तथा यश देती है ॥ २४ ॥ पंचम शुक्रकी दशामें पुत्रप्राप्ति कहनी तथा कीर्ति राजपूज्यता और अपने हाथसे सबका उपकार करना मिले ॥ २५ ॥

वित्तगशुक्रदशायां धनहानिमाहुर्धनार्यातिं चापि ॥ अन्नसुखं वा-ग्विलासं परोपकारं नरेशसन्मानम् ॥ २६ ॥ तृतीयराशिस्थित-शुक्रदाये धैर्यं महोत्साहमदीनसत्त्वम् ॥ चित्रांबरालंकृतवाहनाप्तिं

सहोदराणां बहुभाग्यलाभम् ॥ २७ ॥ भृगोर्विपाकेऽरिगतस्य नाशं धान्यार्थबह्वात्मजसोदराणाम् ॥ रोगं महत्कार्यविनाशनं च शत्रो-र्भयं भूपतिवह्निचौरैः ॥ २८ ॥

धनस्थानगत शुक्रकी दशामें प्रथम धनहानि तब वृद्धिभी होतीहै, अन्नका सुख वाणीका विलास पराया उपकार तथा राजासे सन्मान मिलताहै ॥ २६ ॥ तीसरे शुक्रकी दशामें धैर्य मनका उत्साह बडा जहीन वा प्रताप विचित्र वस्त्रोंसे शोभित वाहनकी प्राप्ति और भाइयोंका भी बहुत ऐश्वर्य लाभ होवै ॥ २७ ॥ छठे शुक्रकी दशामें अन्न, धन, पुत्र, भाईयोंका नाश होवे बडारोग उत्पन्न होवै कार्यहानि और शत्रु, राजा, अग्नि, चोरसे भय होवै ॥ २८ ॥

रंध्रे स्थितस्यापि भृगोर्विपाके शस्त्राग्निचौरक्षतमित्रविभ्रमम् ॥ क्वचि-त्सुखं किंचिदुपैति वित्तं क्वचिन्नरेशाप्तयशः प्रतापम् ॥ २९ ॥ लाभस्थितस्यापि भृगोर्विपाके सुगंधमाल्यांबरराजपूजाम् ॥ पुत्रार्थसौख्यं कृषिविक्रयं च दानं स्वनामांकितपद्यजालम् ॥ ३० ॥ व्ययगतशुक्रदशायां लभते धान्यार्थराजसन्मानम् ॥ स्थानच्युतिं प्रवासं मातृवियोगं मनोविलासं च ॥ ३१ ॥

अष्टमगत शुक्रकी दशामें शस्त्र अग्नि चोरसे भय होवै, चोट लगे, विघ्न होवै, कभी सुखभी होवै, कभी धन पावै, कभी राजासे यश मिले, कभी प्रताप बढे ॥ २९ ॥ लाभगत शुक्रकी दशामें सुगंध पुष्प वस्त्र राजासे पूजा मिले, पुत्र तथा धनका सुख कृषिकर्ममें लाभ दानादि देना और अपने नामसे युक्त श्लोकादियोंके समूह होवैं ॥ ३० ॥ बारहवें शुक्रकी दशामें अन्न धन राजासे सन्मान मिले, तथा स्थानहानि परदेशगमन माताका वियोग होवै और मनका विलास भी होवै ॥ ३१ ॥

जीवर्क्षगतस्य भृगोः स्त्रीपुत्रभूमिनाशनं कुरुते ॥ कर्मसु नित्योद्वि-ग्नो जननीक्लेशान्वितो मनोदुःखी ॥ ३२ ॥ अर्कगशुक्रदशायां जी-र्णगृहौकाः शुभावरोधश्च ॥ लभते दारविनाशं भ्रातृवियोगं च क-लहं च ॥ ३३ ॥ सिंहगशुक्रदशायां लभते विविधापदं मनो-दुःखम् ॥ उद्योगरोगततः कर्मसु विफलेषु सर्वदाभिरतः ॥ ३४ ॥

गुरुराशिगत शुक्रदशा स्त्री पुत्र भूमिका नाश करतीहै, कार्योंमें सर्वदा उद्विग्न रहताहै, माताको क्लेश मिलताहै मनमें दुःखी रहताहै ॥ ३२ ॥ अस्तंगत शुक्रकी दशामें पुराने घरमें निवास

मिलताहै, भलेकाम रुकजातेहैं, स्त्रीहानि भाइयोंका वियोग और कलहभी होताहै ॥ ३३ ॥ सिंहराशिगत शुक्रकी दशामें अनेकप्रकार आपत्ति पाताहै मनमें दुःख उद्यमसे तथा रोगसे संतप्त और निष्फल होनेवाले कामोंमें सर्वदा तत्पर रहे ॥ ३४ ॥

शुक्रे स्थानबलाधिके नरपतेः सन्माननं भूषणं विद्यावादविवादगोष्ठिरसिकं नामद्वयं संभ्रमम् ॥ तस्मिन् दिक्प्रबलान्विते बहुयशः पुत्रार्थदारांबरं शुक्रे कालबलान्विते सुखधनं कीर्तिः स्वनामांकिता ॥ ३५ ॥ निसर्गवीर्ययुक्तस्य भृगोर्दाये महत्सुखम् ॥ कृषिगोभूमिवित्तादिभ्रातृमातृसुखं भवेत् ॥ ३६ ॥

स्थानबली शुक्रकी दशामें राजासे सन्मान भूषण मिलें, विद्याके विवादवाली सभामें प्रवेश रसिकता बढे उत्साहसे दो नाम अर्थात् दूसरा अधिकारी नाम मिले, दिग्बली शुक्रकी दशामें बहुत यश बढे पुत्र, धन, स्त्री, वस्त्र मिलतेहैं कालबलयुक्त शुक्रदशामें सुख धन और अपने नामयुक्त कीर्ति मिलतीहै ॥ ३५ ॥ निसर्गबली शुक्रदशामें बडा सुख मिलताहै, कृषि भूमि धनादि बढतेहैं, तथा भाई एवं माताका सुख होताहै ॥ ३६ ॥

वक्रंगतस्यापि भृगोः सुतस्य दशाविपाके त्वतिराजपूज्यम् ॥ मृदंगभेरीरवयुक्तयानं विचित्रवस्त्राभरणानि राज्यम् ॥ ३७ ॥ दृग्वीर्ययुक्तस्य भृगोर्विपाके यज्ञादिकर्माणि करोति काले ॥ विद्याविलासं शयनाम्बरं च नृपाभिषेकं कलहं विरोधम् ॥ ३८ ॥ क्रूरषष्ट्यंशयुक्तस्य भृगोर्दाये विपद्भयम् ॥ चौराग्निराजभीतिश्च कृषिगोभूमिनाशनम् ॥ ३९ ॥ सौम्यषष्ट्यंशयुक्तस्य भृगोर्दाये महत्सुखम् ॥ कूपारामतडागानां निर्माणं देवपूजनम् ॥ ४० ॥

वक्रगतशुक्रकी दशामें बहुतसी राजपूज्यता मिले, मृदंग भेरी आदियोंके शब्दसहित उसकी सवारी निकले, अनेक प्रकारके वस्त्र भूषण और राज्य मिलें ॥ ३७ ॥ दृग्बली शुक्रकी दशामें समयपर यज्ञादिकर्म करताहै, विद्याका विलास मिले, शय्या वस्त्र मिलें, राजाका अभिषेक देखे और कलह विरोधभी होवें ॥ ३८ ॥ क्रूरषष्ट्यंशगत शुक्रकी दशामें विपत्ति भय चोर अग्नि राजासे भय कृषि गौ भूमिका नाश होवै ॥ ३९ ॥ शुभषष्ट्यंशगत शुक्रदशामें बडा सुख मिले कुंवां बगीचा तालाव बनावे, देवपूजन करे ॥ ४० ॥

वैशेषिकांशयुक्तस्य भृगोर्दाये महत्सुखम् ॥ वाहनं भूपसन्मानं भ्रातृस्त्रीधनसंपदः ॥ ४१ ॥ क्रूरद्रेष्काणसंयुक्तभृगोर्दायेऽरिभीतयः ॥ कारागारमहत्कष्टमनलं चौरपीडनम् ॥ ४२ ॥

वैशेषिकांशगत शुक्रकी दशामें बहुत सुख मिले, वाहन राजसन्मान भाई स्त्री धनकी संपत्ति होवै ॥ ४१ ॥ क्रूरद्रेष्काणगत शुक्रकी दशामें शत्रुसे भय कैदमें रहनेसे बडा कष्ट और अग्नि चोरसे पीडा मिले ॥ ४२ ॥

उच्चक्षेत्रेपि नीचांशयुक्तः शुक्रोतिकष्टदः ॥ करोति राज्यनाशं च स्थाननाशमथापि वा ॥ ४३ ॥ उच्चांशयुक्तशुक्रोपि नीचराशिसमन्वितः ॥ कृषिगोभूमिवाणिज्यं धनधान्यविवर्द्धनम् ॥ ४४ ॥ इति शुक्रदशाफलम् ॥

उच्चराशिगतभी शुक्र नीचांशमें होवै तो उसकी दशा अतिकष्ट देतीहै राज्यनाश अथवा स्थाननाश करतीहै ॥ ४३ ॥ यदि नीचराशिमेंभी उच्चांशकी होवै तो कृषि, गो, भूमि व्यापार, धन, अन्नको वढातीहै ॥ ४४ ॥ इति शुक्रदशाफलम् ॥

अथ शनिदशाफलविचारः ।

मन्दोत्युच्चदशायां ग्रामसभामण्डलाधिपत्यं स्यात् ॥ लभते विनोदशीलं पितृनाशं बंधुकलहं च ॥ १ ॥ स्वोच्चदशायां कुरुते देशभ्रंशं मनोरुजं दुःखम् ॥ वाणिज्यसत्त्वहानिं कृषिहानिं नृपविरोधं च ॥ २ ॥

अब शनिकी दशाका फल कहतेहैं परमोच्चगत शनिकी दशामें गांवसभा (मण्डल) परगन्नाका आधिपत्य मिले, खुशीकी वार्तालाप और पिताका नाश बंधुजनसे कलहभी होताहै ॥ १ ॥ उच्चगत शनिकी दशा दांत गिरातीहै, मनका रोग दुःख व्यापारमें हानि, तेजकी हानि कृषिहानि और राजासे विरोधभी करातीहै ॥ २ ॥

आरोहिणी वासरनाथसूनोर्दशाविपाके नृपलब्धभाग्यम् ॥ वाणिज्यलाभं कृषिभूमिलाभं गोवाजियानं सुतदारलाभम् ॥ ३ ॥ दिनेशसूनोस्त्ववरोहकाले राज्यच्युतिं दारसुतार्थनाशम् ॥ भाग्यक्षयं भूपतिकोपयुक्तं प्रेष्यत्वमायाति गुदाक्षिरोगम् ॥ ४ ॥ नीचस्थितस्यापि दिनेशसूनोर्दाये कलत्रात्मजसोदराणाम् ॥ नाशं महत्कष्टतरां कृषिं च नीचानुवृत्त्या समुपैति वृत्तिम् ॥ ५ ॥

उच्चराशिमें जानेवाले शनिकी दशामें राजासे ऐश्वर्य मिलें, व्यापारमें लाभ गौ घोडे सवारी पुत्र स्त्रीका लाभ होवै ॥ ३ ॥ नीचराशिमें जानेवाले शनिकी दशामें राज्यहानि स्त्री पुत्र धनका नाश ऐश्वर्यका क्षय राजाके कोपसहित तथा पराया प्रेष्यत्व (दूतकर्म) और गुदा

एवं नेत्रमें रोग होवै ॥ ४ ॥ नीचराशिगत शनिकी दशामें स्त्री पुत्र भाईयोंका नाश कृषि बड़े कष्टसे और आजीवन नीच वृत्तिसे होवै ॥ ५ ॥

मूलत्रिकोणनिलयस्य शनेर्दशायां देशान्तरादिवनवासमुपैति काले ॥ नामद्वयं यदि सभानगराधिपत्यं विद्वेषणं सुतकलत्रधनादिभिर्वा ॥ ६ ॥ स्वक्षेत्रगस्य च दशा दिवसेशसूनोर्द्वेषं करोति बलपौरुषकीर्तिजालम् ॥ राजाश्रयं कनकभूषणभूमिलाभं धैर्यं स्वनामसदृशानुगुणं च सौख्यम् ॥ ७ ॥

मूलत्रिकोण ११ राशिगत शनिकी दशामें देशांतरगमन वनमें वास पावै तथा उपाधिनाम सभा एवं नगरका आधिपत्य पावै और पुत्र स्त्री अथवा धनसे विद्वेतिता पावै ॥ ६ ॥ अपनी राशिगत शनिकी दशा द्वेष करातीहै तथा बल पुरुषार्थ कीर्तिजाल राजाका आश्रय सुवर्णके भूषण भूमि धैर्यता मिलतेहैं अपने नाम गुणोंके सदृश सुखभी मिलताहै ॥ ७ ॥

शनेर्दशायामतिशत्रुगस्य स्थानच्युतिं बंधुविरोधतां च ॥ चौरादिभूपैर्भयमत्रविघ्नो भृत्यार्थदारात्मजकोपमेति ॥ ८ ॥ दिनेशसूनोस्त्वरिराशिगस्य वैश्याद्धनं प्राप्यति भूमिनाशम् ॥ कृषेर्विनाशं स्वपदच्युतिं च वैरं समायाति शरीरकृच्छ्रम् ॥ ९ ॥

अतिशत्रुराशिगत शनिकी दशामें स्थानहानि बंधुजनमें वैर चौरादिभय राजाओंसे भय कार्यमें विघ्न नौकर धन स्त्री पुत्रोंका कोप पावै ॥ ८ ॥ शत्रुराशिगत शनिकी दशामें बनियेंसे धन पावै, भूमिका नाश कृषिका नाश पदकी हानि वैर शरीर कष्ट पावै ॥ ९ ॥

मित्रक्षेत्रदशायां मंदस्य तु शिल्पकर्मगुणवेत्ता ॥ ज्ञानबलं च प्रतापं ददाति दुःखं महत्त्वं च ॥ १० ॥ अधिमित्रमंददाये ददाति सौख्यं नरेशसन्मानम् ॥ सुतधनदारविशेषात् पशुकृषिमहिषादिवाणिज्यम् ॥ ११ ॥ समर्क्षगस्यापि शनेर्दशायां समानबुद्धिः सुतदारमित्रे ॥ भृत्यापदं बंधुजनेषु वैरं देहस्य कष्टं क्षयवातपित्तैः ॥ १२ ॥

मित्रराशिगत शनिकी दशा शिल्पकर्म कारीगरीके गुण जाने, ज्ञान बल पताप तथा दुःख और बड़पनभी देतीहै ॥ १० ॥ अधिमित्रराशिगत शनिकी दशा सुख राजासे सन्मान पुत्र धन स्त्रीसे विशेषतः कृषि महिष आदिके व्यापारसे धन देतीहै ॥ ११ ॥ समराशिगत शनिकी दशामें पुत्र स्त्री मित्रोंमें समान बुद्धि रहती है, सेवकको आपत्ति बंधुजनोंमें वैर तथा क्षय वात पित्तसे देहकष्ट होताहै ॥ १२ ॥

नीचखेचरसंयुक्तशनेर्दाये महद्भयम् ॥ विप्रलंभोपवासश्च नीच-
वृत्त्यानुजीवनम् ॥ १३ ॥ स्वोच्चखेचरसंयुक्तशनेर्दाये महत्सुखम्
किञ्चिद्राज्यं कृषेर्लाभं भृत्यवर्गार्थनाशनम् ॥ १४ ॥

नीचराशिगत ग्रहयुक्त शनिकी दशामें बडी भय होतीहै, कोई बात अंगीकार करके उसका संपादन न करना होवै निराहार रहना पडे, नीचवृत्तिसे आजीवन होवै ॥ १३ ॥ उच्चराशिगत ग्रहसे युक्त शनिकी दशामें बडा सुख मिले, थोडा राज्य कृषिसे लाभ होवै और सेवक तथा धनका नाशभी होवै ॥ १४ ॥

पापान्वितस्यापि शनेर्दशायां पापानि गूढानि करोति काले ॥
नीचस्त्रिया संगमनं विशेषाच्चौरादिनीचैः कलहं विदारम् ॥१५॥
शुभान्वितस्यापि शनेर्दशायां विशेषतो ज्ञानमुपैति काले ॥
परोपकारं नृपलब्धभाग्यं कृष्णानि धान्यान्ययशश्च लाभम् ॥१६॥

पापयुक्त शनिकी दशामें गुप्तपाप करताहै विशेषतः नीचस्त्रीका संगम करे चौरादि नीचोंसे कलह तथा स्त्रीहानि होवै ॥ १५ ॥ शुभग्रहयुक्त शनिकी दशामें विशेषकरिके ज्ञानपावै पराया उपकार करे राजासे ऐश्वर्य मिले कृष्णरंगके अन्न और लोहेका लाभ होवै ॥ १६ ॥

पापेक्षितस्यापि शनेर्दशायां भृत्यार्थदारात्मजसोदराणाम् ॥नाशं
समायाति परापवादं कुभोजनं कुत्सितगंधमाल्यम् ॥ १७ ॥
शुभेक्षितस्यापि शनेर्दशायां स्त्रीपुत्रभृत्यार्थमुपैति काले ॥ पश्चा-
दुपैत्यत्र महत्वकष्टं गोभूमिवाणिज्यकृषेर्विनाशम् ॥ १८ ॥

पापदृष्ट शनिकी दशामें सेवक, धन, स्त्री, पुत्र और भाइयोंका नाश होवै, झूठा कलंक लगे कुभोजन निंद्य चंदन पुष्पआदि मिलें ॥ १७ ॥ शुभग्रहदृष्ट शनिकी दशामें स्त्री पुत्र सेवकोंकी वृद्धि मिलतीहै, पीछे बढ़पन एवं कष्ट और गौ, भूमि, व्यापार, कृषिका नाश होताहै॥ १८॥

केन्द्रान्वितशनेर्दाये कलहायासपीडनम् ॥ पुत्रमित्रार्थदारादि-
बंधूनां मरणं ध्रुवम् ॥ १९ ॥ लग्नस्थितशनेर्दाये देहकृच्छ्रमु-
पैति च ॥ स्थानच्युतिं प्रवासं च राजकोपं शिरोरुजम् ॥ २० ॥
चतुर्थस्थशनेर्दाये मातृतद्वर्गनाशनम् ॥ गृहदाहं पदभ्रंशं चौरार्तिं
नृपपीडनम् ॥ २१ ॥

केन्द्रगत शनिकी दशामें कलह श्रम पीडा तथा पुत्र मित्र धनादिहानि बंधुजनमरण निश्चय होताहै ॥ १९ ॥ लग्नगत शनिकी दशामें देहमें कष्ट पावै, स्थानहानि विदेशवास राजाका

कोप और शिरमें रोग होताहै ॥ २० ॥ चौथे भावगत शनिकी दशामें माता तथा मातृवर्ग मांवसी ताई चाची दादी आदिका नाश, घरका जलना, पदसे भ्रष्ट होना और चोरसे राजासे पीडन मिलताहै ॥ २१ ॥

द्वारराशिगतस्यापि शनेर्दाये॑ऽरिपीडनम् ॥ मूत्रकृच्छ्रं महाद्वेषं स्त्रीहेतोर्मरणं च वा ॥ २२ ॥ दशमस्थशनेर्दाये कर्मनाशमुपैति च ॥ देशांतरं पदभ्रंशं निगडं राजपीडनम् ॥ २३ ॥ द्वितीयस्थशनेर्दाये वित्तनाशमथाक्षिरुक् ॥ राजकोपं मनस्तापमन्नद्वेषं मनोरुजम् ॥ २४ ॥ तृतीयस्थशनेर्दाये कृषिगोधनसंपदः ॥ मनोजाड्यं मनोत्साहं भ्रातृतद्वर्गनाशनम् ॥ २५ ॥

सप्तमगत शनिकी दशामें शत्रुसे पीडन मूत्रकृच्छ्र रोग बडा वैर अथवा स्त्रीके कारण मरण होवै ॥ २२ ॥ दशमगत शनिकी दशामें कर्मका नाश पावै, देशांतरगमन पदसे भ्रष्टता कैद राजासे पीडन इतने फल होतेहैं ॥ २३ ॥ दूसरे शनिकी दशामें धननाश तथा नेत्ररोग राजाका कोप मनमें संताप अन्नमें अरुचि मनमें रोग होतेहैं ॥ २४ ॥ तीसरे भावगत शनिकी दशामें कृषि गौ धनकी संपत्ति मनकी जडता (कुन्द) ता तथा मनका उत्साह और भाई भ्रातृवर्गका नाश होवै ॥ २५ ॥

पंचमस्थशनेर्दाये पुत्रनाशं मनोरुजम् ॥ राजकोपं भृत्यनाशं बंधुस्त्रीवित्तविभ्रमम् ॥ २६ ॥ षष्ठस्थरविसूनोस्तु दशाकालेऽरिपीडनम् ॥ व्याधिचौरविषैर्बाधां गृहक्षेत्रविनाशनम् ॥ २७ ॥ मरणपदस्थो मंदः करोति नित्यं सुतार्थदाराणाम् ॥ नाशं भृत्यजनानां गोमहिषभूमिदारनाशं च ॥ २८ ॥ नवमगतमंददाये पित्रोर्नाशं गुरोस्तथैवापि ॥ लभते विदेशयानं स्वकुलजातैर्विनाशमुपयाति ॥ २९ लाभगतमंददशायां लभते विविधार्थसौख्यसन्मानम् ॥ सुतदारभृत्यसौख्यं मनोविलासं कृषेश्च धनलाभः ॥ ३० ॥

पंचमगत शनिकी दशामें पुत्रनाश मानसी रोग राजाका कोप सेवकका नाश बंधुजन स्त्री धनका विभ्रम होवै ॥ २६ ॥ छठे शनिकी दशामें शत्रुपीडा रोग चोर और विषसे पीडा मिले वर खेतीका नाश होवै ॥ २७ ॥ अष्टमस्थानस्थित शनिकी दशा पुत्र, धन, स्त्रियोंका नाश, भृत्यहानि, गौ, भैंस, भूमि, स्त्रीनाश करतीहै ॥ २८ ॥ नवम शनिकी दशामें मातापि-

ताका नाश तथा गुरुका नाश परदेशगमन और अपने कुलवालोंसे नाशको प्राप्त होवै ॥ ॥ २९ ॥ ग्यारहवें शनिकी दशामें नानाप्रकार धन, सुख, सन्मान, पुत्र, स्त्री, सेवकोंका सुख, मनकी विलासता (खुसी खेल हंसीआदि) और कृषिसे धनलाभ होवै ॥ ३० ॥

व्ययगतमंददशायां भीतिं चौराग्निभूपसंघैश्च ॥ विविधापदं च दुःखं विदेशयानं स्वबंधुनाशश्च ॥ ३१ ॥ अर्कगमंददशायां स्वजनद्वेषं परस्त्रियं लभते ॥ भृत्यापत्यविरोधं महोद्यमं दोषपरिभूतम् ॥ ३२ ॥

व्ययभावगत शनिकी दशामें चोर अग्नि राजाओंसे भय नानाप्रकारकी आपत्ति दुःख परदेशगमन बंधुविनाश होताहै ॥ ३१ ॥ अस्तंगत शनिकी दशामें अपने मनुष्योंसे द्वेष परस्त्रीसंग सेवक तथा पुत्रोंसे विरोध होवै, बडे उद्यम होवैं परंतु दोषपूरित ॥ ३२ ॥

नीचांशमंददाये नीचाचारेण जीवनं लभते ॥ सर्वेषां प्रेष्यत्वं धनसुतदारैश्च विग्रहं दुःखम् ॥ ३३ ॥ उच्चांशमंददाये विविधसुखानन्दभोगभाग्यादीन् ॥ कुरुते विदेशयानं ग्रामसभामण्डलाधिपत्यं वा ॥ ३४ ॥ आदौ मंददशायामतिदुःखं मातृनाशनं कुरुते ॥ मध्ये विदेशयानं परगृहवासं परान्नभुक् चांते ॥ ३५ ॥

नीचांशगत शनिदशामें नीचकर्माचरणसे आजीवन मिलताहै, सबका प्रेष्य (दूतत्व) धन पुत्र स्त्रीसे कलह तथा दुःख मिलतेहैं ॥ ३३ ॥ उच्चांशगत शनिकी दशामें अनेकप्रकार सुख आनन्द भोग ऐश्वर्यआदि होतेहैं,वह परदेशगमन वा ग्राम. (सभा) कचहरी परगन्नाका मालिक बनाती है ॥ ३४ ॥ शनिकी दशा प्रथम अतिदुःख माताका नाश मध्यमें विदेशगमन अंतमें पराये घरमें निवास पराया अन्न भोजन करातीहै ॥ ३५ ॥

स्थानवीर्ययुतमंददशायां दारपुत्रधनकीर्तिमुपैति ॥ चोरशत्रुनृपवह्निभयं वा धान्यभूमिकृषिवाहनलाभम् ॥ ३६ ॥ मंदस्य दिग्वीर्ययुतस्य दाये दिगंतरादाप्तसुतार्थकीर्तिम् ॥ भूगूढदारात्मजसोदराणां विनाशनं बंधुजनैर्विरोधम् ॥ ३७ ॥ कालवीर्ययुतमंददशायां कालकूटविषभीतिमुपैति ॥ दारपुत्रनृपचौरभयं वा धान्यभूमिकृषिवाहनलाभम् ॥ ३८ ॥

स्थानबली शनिकी दशामें स्त्री पुत्र धन और कीर्ति पाताहै अथवा चोर, शत्रु, राजा, अग्निसे भय तथा अन्न, भूमि, कृषि, वाहनका लाभ होताहै ॥ ३६ ॥ दिग्वीर्ययुत शनिकी

दशामें दिगंतरसे कीर्ति आवै पुत्र धन मिलें भूमि गुप्तकी पुत्र भाईयोंकी हानि बंधुजनसे विरोध होवै ॥ ३७ ॥ कालबली शनिकी दशामें कालकूट विषकी भय अथवा स्त्री पुत्र भय राज चौर भय मिलती है, अन्न, भूमि, कृषि और वाहन लाभ होताहै ॥ ३८ ॥

वक्रचारयुतो मन्दः करोति विफलां क्रियाम् ॥ उद्योगभंगं दुःखं च सोदराणां च नाशनम् ॥ ३९ ॥ क्रूरषष्ट्यंशयुक्तस्य शनिदाये महद्भयम् ॥ नृपकोपं पदभ्रंशं कारागृहनिवेशनम् ॥ ४० ॥ सौम्यषष्ट्यंशसंयुक्तशनिदाये महत्सुखम् ॥ दारपुत्रार्थसंपत्तिं लभते बन्धुविग्रहम् ॥ ४१ ॥

वक्रगत मंगलकी दशा कार्यविफल उद्योगभंग दुःख और भाईयोंका नाश करतीहै ॥ ॥ ३९ ॥ क्रूरषष्ट्यंशगत शनिकी दशामें बडीभय राजकोप पदहानि और कैदघरमें निवास होताहै ॥ ४० ॥ शुभषष्ट्यंशगत शनिकी दशामें बडासुख स्त्री पुत्र धनकी संपत्ति मिले और बंधुवर्गमें कलह होवै ॥ ४१ ॥

वैशेषिकांशसंयुक्तः शनिः सौख्यं करोति च ॥ विशेषाद्राजसन्मानं विचित्रांबरभूषणम् ॥ ४२ ॥ क्रूरद्रेष्काणसंयुक्तशनिदाये महद्भयम् ॥ उद्बंधनं विषाद्भीतिं नृपचौराग्निजं भयम् ॥ ४३ ॥ नीचराशिगतो मंदः स्वोच्चांशकसमन्वितः ॥ दशादौ दुःखमापाद्य दशांते सुखदो भवेत् ॥ ४४ ॥ उच्चराशिगतो मंदो नीचांशकसमन्वितः ॥ दशादौ सुखमापाद्य दशान्ते कष्टदो भवेत् ॥ ४५ ॥ इति श्रीसर्वार्थचिंतामणौ गुर्वादिशन्यन्तदशाफलनिरूपणो नाम पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

वैशेषिकांशगत शनिकी दशा सुख करतीहै, विशेषतः राजासे सन्मान अनेकप्रकारके वस्त्र भूषण देतीहै ॥ ४२ ॥ क्रूरद्रेष्काणगत शनिकी दशामें बहुत भय फांसी लटकना विषसे भय राजा चौर अग्निसे भय होतीहै ॥ ४३ ॥ नीचराशिगत शनि यदि उच्चांशकमें होवै तो दशाके आदिमें दुःख देकर अंतमें सुख देनेवाला होताहै ॥ ४४ ॥ उच्चराशिगत शनि यदि नीचांशकमें होवै तो दशाके आदिमें सुख देकर अंतमें कष्ट देनेवाला होताहै ॥ ४५ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिन्तामणौ माहीधरीभाषाटीकायां गुर्वादिशन्यन्तदशाफलनिरूपणाऽध्यायः पञ्चदशः ॥ १५ ॥

षोडशोध्यायः ॥ १६ ॥

अथ राहुकेतुदशाफलविचाराध्यायः ।

राहोस्तु वृषभं केतोर्वृश्चिकं तुंगसंज्ञितम् ॥ मूलत्रिकोणं कुम्भं च प्रियं मित्रभमुच्यते ॥ १ ॥ एषां सप्तमराशिस्तु केतोर्मूलत्रिकोणभम् ॥ षष्ठाष्टरिष्फगो राहुः स्वदाये कष्टदो भवेत् ॥२॥ उच्चस्थः सैंहिकेयस्तु तत्पाके सुखदो भवेत् ॥ राज्यं करोति मित्राप्तिं धनधान्यविवर्द्धनम् ॥ ३ ॥

राहुका वृष,केतुका वृश्चिक उच्चसंज्ञक है, कुंभ मूलत्रिकोण मेष मित्रराशि है ॥ १ ॥ इनकी सातवीं राशि केतुका मूलत्रिकोण है, राहु ६ । ८ । १२ भावोंमें अपनी दशामें कष्ट देताहै ॥ २ ॥ उच्चगत राहु अपनी दशामें सुख देनेवाला होताहै, राज्य मित्रप्राप्ति और अन्न धनकी वृद्धि करताहै ॥ ३ ॥

राहुर्नीचस्थितो दाये चौराग्निनृपभीतिदः ॥ उद्बंधनं विषाद्भीतिं कुरुते सिंहिकासुतः ॥ ४ ॥ राहोर्दशायां संप्राप्तौ नृपचौराग्निपीडनम् ॥ विदेशयानं दुःखार्तिं वनवासाद्भयं ध्रुवम् ॥ ५ ॥ लग्नगतराहुदाये बुद्धिविहीनं विषाग्निशस्त्राद्यैः ॥ बंधुविनाशं लभते दुःखार्तिं च पराजयं समरे ॥ ६ ॥

नीचगत राहुदशामें चौर अग्नि राजासे भय देताहै, फांसी लटकना विषसे भय करताहै ॥ ४ ॥ राहुकी दशामें राजा चोर अग्निसे पीडन विदेशगमन दुःख पीडा और वनवाससे निश्चय भय होतीहै ॥ ५ ॥ लग्नस्थित राहुकी दशामें बुद्धिहीनता विष अग्नि शस्त्रादिसे भय बंधुविनाश दुःख पीडा मिलतीहै, युद्धमें हारभी मिलतीहै ॥ ६ ॥

राहोर्दशायां धनराशिगस्य राज्यं च वित्तं हरते विशेषात् ॥ कुभोजनं कुत्सितराजसेवा मनोविकारं त्वनृतं प्रकोपम् ॥ ७ ॥ तृतीयराशिस्थितराहुदाये पुत्रार्थदारात्मसहोदराणाम् ॥ सुखं कृषेर्बंधनमाधिपत्यं विदेशयानं नरपालपूज्यम् ॥ ८

दूसरे राहुकी दशामें राहु विशेषतः राज्य तथा वित्तभी हरण करताहै, कुभोजन मिले निन्द्य राजाकी सेवा मनमें विकार झूट और क्रोध होवैं ॥ ७ ॥ तीसरे राहुकी दशामें पुत्र धन अपने भाइयोंका सुख कृषिकर्मसे बंधन आधिपत्यता विदेशगमन पूज्यता मिले ॥ ८ ॥

चतुर्थराशिस्थितराहुदाये मातुर्विनाशं त्वथवा तदीयम् ॥ क्षेत्रार्थनाशं नृपतेः प्रकोपं भार्यादिपातित्यमनेकदुःखम् ॥ ९ ॥ चौराग्निबंधार्तिमनोविकारं दारात्मजानामपि रोगपीडा ॥ चतुर्थराशिस्थितराहुदाये प्रभग्नसंसारकलत्रपुत्रम् ॥ १० ॥ बुद्धिभ्रमं भोजनसौख्यनाशं विद्याविवादं कलहं च दुःखम् ॥ कोपं नरेन्द्रस्य सुतस्य नाशं राहोः सुतस्थस्य दशाविपाके ॥ ११ ॥

चौथे राहुकी दशामें माताका विनाश अथवा अपना विनाश होवै, खेती धनका नाश राजाका कोप स्त्री आदिको पतितता अनेक दुःख होतेहैं ॥ ९ ॥ औरभी फलहैं कि चोर अग्निभय बंधन पीडन मनका विकार स्त्रीपुत्रोंको भी रोग पीडा होवै, स्त्री पुत्र और संसारसे मन विविक्त रहे ॥ १० ॥ पंचमराहुकी दशामें बुद्धिका भ्रम भोजनका सुख नाश होवै, विद्यामें विवाद कलह दुःख राजकोप पुत्रनाश होताहै ॥ ११ ॥

दशाविपाके त्वरिराशिगस्य चौराग्निभूपैर्भयमाप्तनाशम् ॥ प्रमेहगुल्मक्षयपित्तरोगं त्वग्दोषरोगं त्वथवा मृतिं च ॥ १२ ॥ कलत्रराशिस्थितराहुदाये कलत्रनाशं समुपैति शीघ्रम् ॥ विदेशयानं कृषिभाग्यहानिं सर्पाद्भयं मृत्युसुतार्थनाशम् ॥ १३ ॥ राहोर्दशायां निधनस्थितस्य यमालयं याति सुतार्थनाशम् ॥ चौराग्निभूपैः स्वकुलोद्भवैश्च भयं भृगोर्वा वनवासदुःखम् ॥ १४ ॥

छठे राहुकी दशामें चोर अग्नि राजासे भय, लाभका नाश, अपने हितैषीका नाश, प्रमेह, गुल्म क्षय, पित्तरोग, त्वचाके दोषका रोग होवै अथवा मृत्यु होवै ॥ १२ ॥ सप्तमगत राहुकी दशामें स्त्रीनाश शीघ्र होताहै, परदेशगमन कृषि तथा ऐश्वर्यकी हानि सर्पसे भय, मृत्यु, पुत्र, धन नाश होवै ॥ १३ ॥ अष्टमगत राहुदशामें यमालय जाताहै, पुत्र धन हानि होतीहै, चोर अग्नि राजासे तथा अपने कुलवालोंसे भय होवै (मृग) सिंह भेडियाआदिकी भय होवै ॥ १४ ॥

राहोर्दशायां नवमस्थितस्य पित्रोर्विनाशं लभते मनुष्यः ॥ विदेशयानं गुरुबंधुनाशं स्नानं समुद्रस्य सुतार्थनाशम् ॥ १५ ॥ मानस्थितस्यापि दशाविपाके राहोः प्रवृत्तिं लभते मनुष्यः ॥ पुराणधर्मश्रवणादिभिश्च गांगेयतोयैरपि शुद्धदेहः ॥ १६ ॥ सौम्यर्क्षगश्चेत्फलमेवमेव पापर्क्षगश्चेन्न तथाभवेद्धि ॥ प्रोक्तं फलं यत्सकलं तदेव सौम्यर्क्षगश्चेत्फलमन्यथा स्यात् ॥ १७ ॥

नवमगत राहुकी दशामें मनुष्य माता पिताका नाश विदेशगमन गुरुजन बंधुजनका नाश पुत्र धननाश होवै तथा समुद्रस्नान मिले ॥ १५ ॥ दशमराहुकी दशामें मनुष्य कर्ममें प्रवृत्ति पावै पुराण धर्म श्रवणआदि करके धर्ममें प्रवृत्ति होवै गंगाजलसे देह शुद्ध होवै ॥ १६ ॥ राहु शुभराशिमें होवै तब ऐसा फल होताहै पापराशिमें होवै तो वैसा फल न होगा पापराशिमें होनेसे उक्तफल विपरीत होताहै ॥ १७ ॥

पापक्षेत्रगतो राहुः कर्मस्थः पापसंयुतः ॥ अभिशस्तस्तदा काले पुत्रदाराग्निपीडनम् ॥ १८ ॥ आयराशिगतो राहुस्तत्पाके नृपमाननम् ॥ धनाप्तिं दारलाभं च गृहक्षेत्रादिसंपदः ॥ १९ ॥ व्ययगतराहुदशायां देशभ्रंशं मनोरुजं कुरुते ॥ विच्छिन्नदारपुत्रं कृषिपशुधनधान्यसंपदां नाशम् ॥ २० ॥

दशमराहु पापराशिमें होवै तथा पापयुक्त होवै तो झूठा कलंक लगे पुत्र स्त्री अग्निसे पीडन मिले ॥ १८ ॥ लाभगत राहुकी दशामें राजमान धनप्राप्ति स्त्रीलाभ मकान खेती आदिसंपत्ति होवैं ॥ १९ ॥ बारहवें राहुकी दशामें देश छूटे मनमें रोग करताहै स्त्री पुत्र उच्छिन्न होवें कृषि धन अन्न संपत्तियोंका नाश होवै ॥ २० ॥

कुलीरगोमेषयुतस्य राहोर्दशाविपाके धनलाभमेति ॥ विद्याविनोदं नृपमाननं च कलत्रभृत्यात्मसुखं प्रयाति ॥ २१ ॥ पाथोनमीनाश्वयुतस्य राहोर्दशाविपाके सुतदारलाभम् ॥ देशाधिपत्यं नरवाहनं च दशावसाने सकलं विनाशम् ॥ २२ ॥ पापर्क्षसंयुक्तफणीन्द्रदाये देहस्य कार्श्यं स्वकुलस्य नाशम् ॥ भूपाद्भयं वञ्चनतोऽरिभीतिः प्रमेहकासक्षयमूत्रकृच्छ्रम् ॥ २३ ॥

कर्कवृषमेषगत राहुकी दशामें धनलाभ विद्याविनोद राजासे सन्मान मिलताहै स्त्री सेवक तथा शरीर सुखको प्राप्त होताहै ॥ २१ ॥ कन्यामीनधनके राहुकी दशामें पुत्र स्त्रीलाभ देशमें अधिपतिता नरवाहन मिलतेहैं परंतु दशाके अंतमें सब उक्तवस्तुका नाश होताहै ॥ ॥ २२ ॥ पापराशिगत राहुकी दशामें देहकृश अपने कुलका नाश राजासे भय ठगीसे शत्रुसे भय प्रमेह, खांसी, क्षय, मूत्रकृच्छ्र रोग होते हैं ॥ २३ ॥

शुभदृष्टियुतो राहुः करोति सफलक्रियाम् ॥ राजमाननमर्थाप्तिं बंधूनां मरणं ध्रुवम् ॥२४॥ पापदृष्टियुतो राहुः कर्मनाशं करोति च ॥ उद्योगभंगं देहार्तिं चौराग्निनृपपीडनम् ॥ २५ ॥

उच्चग्रहयुतो राहूराज्यलाभं करोति च॥ स्त्रीपुत्रधनसंपत्तिवस्त्राभरणलेपनम्॥ २६॥ नीचग्रहयुतो राहुर्नीचवृत्त्यानुजीवनम्॥ कुभोजनं कुदारं च कुपुत्रं लभते तदा॥ २७॥ दशादौ दुःखमाप्नोति दशामध्ये सुखं यशः॥ दशांते स्थाननाशं च गुरुपुत्रादिनाशनम्॥ २८॥ इति राहुदशाफलविचारः॥

शुभग्रहसे दृष्ट राहुकी दशा कार्यसफल राजमान धनागम और बंधुजनका मरण निश्चय करतीहै॥ २४॥ पापग्रहसे दृष्ट राहुकी दशा कार्यका नाश उद्यम भंग शरीरपीडा और चोर अग्नि राजासे पीडन करतीहै॥ २५॥ उच्चग्रहयुत राहुकी दशा राज्यलाभ स्त्री पुत्र धनकी संपत्ति वस्त्र भूषण चंदनादि लेपनद्रव्यकी प्राप्ति करतीहै॥ २६॥ नीचराशिगत ग्रहकी दशामें नीचवृत्तिसे आजीवन कुभोजन कुस्त्रीकी प्राप्ति और कुपुत्र मिलताहै॥ २७॥ राहुकी दशाके आदिमें दुःख मध्यमें सुख तथा यश और अंतमें स्थानहानि गुरु पुत्र आदियोंको पीडा होवै॥ २८॥ इति राहुदशाफलविचारः

अथ केतुदशाफलम्।

भार्यापुत्रविनाशनं नरपतेर्भ्रांतिर्महत्कष्टतां विद्याबन्धुधनाप्तिमित्ररहितं रोगाग्निमित्रैर्भयम्॥ यानारोहणपातनं विषजलैः शस्त्रादिभिर्वा भयं देशाद्देशविवासनं कलिरुचिं देहादिभिर्वा भयम्॥ १॥ केतोर्दशायां संप्राप्तौ दारपुत्रविनाशनम्॥ राजकोपं मनस्तापं चौराग्निकृषिनाशनम्॥ २॥

केतुदशाके फलहैं कि स्त्री पुत्र नाश राजासे भ्रांति बडा कष्ट विद्या बंधु धनागमन और मित्रोंसे रहितता रोग अग्नि मित्रोंसे भय सवारीसे गिरना विष जल शस्त्रादिसे भय एकदेशसे दूसरेदेश निकलना कलहमें रुचि अथवा रोगादिभय होताहै॥ १॥ केतुकी दशा प्राप्तहुयेमें स्त्री पुत्र नाश राजाका कोप मनमें संताप चोर अग्निसे भय कृषिका नाश होताहै॥ २॥

केन्द्रस्थस्य दशाकेतोः करोति विफलक्रियाम्॥ राज्यार्थसुतदाराणां नाशनं विपदं तथा॥ ३॥ लग्नकेंद्रगतस्यापि केतोर्दाये महद्भयम्॥ ज्वरातिसारमेहं च स्फोटकादिविषूचिकाः॥ ४॥ धनराशिगतस्यापि केतोर्दाये धनक्षयम्॥ वाक्पारुष्यं मनोदुःखं कुत्सितान्नं मनोरुजम्॥ ५॥ तृतीयराशिगस्यापि

केतोर्दाये महत्सुखम् ॥ मनोवैकल्यमायाति भ्रातृभिर्द्वेषणं परम् ॥ ६ ॥ चतुर्थराशिगस्यापि केतोर्दाये सुखक्षयम् ॥ प्रभग्नदारपुत्रादिगृहे धान्यप्रहर्षितः ॥ ७ ॥

केन्द्रगत केतुदशा कार्य व्यर्थ करतीहै राज्य, धन, पुत्र, स्त्रीका नाश तथा विपत्ति करतीहै ॥ ३ ॥ लग्नगत केतुदशामें बडीभय ज्वर अतिसार प्रमेह विस्फोटकादि रोग विषूचिका (हैजा) करतीहै ॥ ४ ॥ दूसरे भावस्थ केतुकी दशामें धनका क्षय कठोरवाणी मनमें दुःख और निन्द्य अन्न भोजन मनमें रोग होतेहैं ॥ ५ ॥ तीसरे केतुकी दशामें बडासुख मिलताहै मन विकल होताहै भाइयोंसे परमवैर होताहै ॥ ६ ॥ चौथे केतुकी दशामें सुखहानि स्त्री पुत्रादिसे अलग होवै घरमें अन्नसे हर्षित रहे ॥ ७ ॥

पंचमस्थस्य केतोस्तु दशाकाले सुतक्षयम् ॥ बुद्धिभ्रमं विशेषेण राजकोपं धनक्षयम् ॥ ८ ॥ केतोस्त्वरिगतस्यापि दशाकाले महद्भयम् ॥ चौराग्निविषभीतिश्च दशार्त्तिं समुपैति च ॥ ९ ॥ कलत्रराशिसंयुक्तकेतोर्दाये महद्भयम् ॥ दारपुत्रार्थनाशं च मूत्रकृच्छ्रं मनोरुजम् ॥ १० ॥ केतोरष्टमयुक्तस्य दशाकाले महद्भयम् ॥ पितृमृत्युश्वासकासग्रहण्यादिक्षयान्वितः ॥ ११ ॥ नवमस्थस्य केतोस्तु दशापाके पितुर्विपत् ॥ गुरोर्वा विपदं दुःखं शुभकर्मविनाशनम् ॥ १२ ॥

पंचम केतुकी दशामें पुत्रक्षय बुद्धिभ्रम विशेषतः राजाका कोप और धनका क्षय होताहै ॥ ८ ॥ छठे केतुकी दशामें बडीभय चोर अग्नि विषसे भय और फटे वस्त्रोंके किनारे पहरनेको मिलें ॥ ९ ॥ सप्तम केतुकी दशामें भी बहुतभय स्त्री पुत्र धननाश मूत्रकृच्छ्र रोग तथा मानसी रोग होताहै ॥ १० ॥ अष्टमभावगत केतुकी दशामें बडीभय पिताकी मृत्यु श्वास कास संग्रहिणीआदि तथा क्षयरोगसे युक्त होवै ॥ ११ ॥ नवम केतुकी दशामें पिताकी विपत्ति अथवा गुरुकी विपत्ति दुःख शुभकर्मका नाश होताहै ॥ १२ ॥

कर्मस्थकेतोः संप्राप्तौ दशायां सुखमेति च ॥ मानहानिं मनोजाड्यमपकीर्तिं मनोरुजम् ॥ १३ ॥ लाभस्थकेतोः संप्राप्तौ दाये सौख्यं करोति च ॥ भ्रातृवर्गादिसौख्यं च यज्ञदानादिवर्द्धनम् ॥ १४ ॥ रिष्फस्थकेतोः संप्राप्तौ दाये कष्टतरं भवेत् ॥ स्थानच्युतिं

प्रवासं च राजपीडाक्षिनाशनम् ॥ १५ ॥ दशादौ सुखमाप्नोति दशामध्ये महद्भयम् ॥ दशांते राजभीतिश्च देहजाड्यमथापि वा ॥ १६ ॥

दशमगत केतुकी दशा प्राप्तहुयेमें सुख पाताहै और मानहानि मनकी जडता अपयश मानसीरोगभी मिलतेहैं ॥ १३ ॥ लाभगत केतुकी दशामें सौख्य करताहै भ्रातृवर्गादिसे भी सुख मिलताहै यज्ञ दानादि पुण्य बढ़तेहैं ॥ १४ ॥ बारहवें केतुकी दशामें विशेषतर कष्ट होताहै स्थानहानि परदेशवास राजासे पीडा और नेत्रनाश होताहै ॥ १५ ॥ केतुकी दशाके आदिमें सुख, मध्यमें बडीभय और अंत्यदशामें राजासे भय अथवा शरीरमें जडता (शरीर जकडना) मिलता है ॥ १६ ॥

शुभवीक्षणसंयुक्तः केतुः सौख्यं करोति च ॥ राज्यार्थं गृहशांतिं च राजपूजां महादृढम् ॥ १७ ॥ पापेक्षितयुतो वापि केतुर्दुःखं करोति च ॥ ज्वरातिसारमेहाँश्च त्वग्दोषं राजपीडनम् ॥ १८ ॥

शुभग्रहदृष्ट केतु अपनी दशामें सुख करताहै राज्य धन घरमें शांति राजपूजा और दृढता देताहै ॥ १७ ॥ पापग्रहयुक्त वा दृष्ट केतु स्वदशामें दुःख करताहै ज्वर अतिसार प्रमेह तथा त्वचामें रोग और राजासे पीडनभी करताहै ॥ १८ ॥ इति केतुदशाफलानि ॥

अथान्तर्दशाफलानि ।

तेजस्विनमतिसुखिनं सुस्थिरविभवं नृपाच्च लब्धधनम् ॥ स्वनवांशकबलयुक्तः पुरुषं कुर्याद्धनान्वितं ख्यातम् ॥ १ ॥ शुभदर्शनफलयुक्तः करोति विख्यातिकं सधनम् ॥ सुभगप्रयासममलं सुरूपदेहं सुसौम्यं च ॥ २ ॥

नवांशबलसे युक्त ग्रह पुरुषको तेजस्वी अतिसुखी स्थिर ऐश्वर्यमान् राजासे प्राप्तधन अन्यधनसे युक्त और ख्यात करताहै ॥ १ ॥ शुभग्रहोंसे दृष्ट ग्रह ख्यातिवाला धनयुक्त उत्तम परिश्रमी निर्मलतायुक्त सुरूपदेहयुक्त और मृदु करताहै ॥ २ ॥

अन्योन्यषष्ठाष्टमदायकाले नृपाद्भयं भृत्यजनैर्विरोधम् ॥ स्त्रिया विरोधं सुतदारनाशं चौराग्निबंध्वार्तिमनोविकारम् ॥ ३ ॥ पाकेश्वरादंत्यगतस्य भुक्तौ स्थानच्युतिं बंधुजनैर्विरोधम् ॥ विदेशयानं स्वजनैर्विरोधं पादाक्षिहृद्रोगमुपैति काले ॥ ४ ॥

षष्ठेश अष्टमेशकी परस्परदशा अर्थात् एककी दशा दूसरेके अंतर्दशामें राजासे भय सेवकजनोंसे विरोध स्त्रीसे विरोध पुत्र दार नाश चोर अग्नि बंधुजनोंसे पीडा मनमें विकार होता

है॥३॥दशेशसे बारहवें ग्रहकी अंतर्दशामें स्थानहानि बन्धुजनोंसे विरोध विदेशगमन अपने मनुष्योंसे विरोध पैर नेत्र हृदयमें रोग मिलता है ॥ ४ ॥

दशाधिपेनापि युतस्य भुक्तौ स्त्रीपुत्रभृत्यार्थकृषेर्विनाशम् ॥ उद्योगभंगं स्वजनैर्विरोधमाकस्मिकं दूषणमेति काले ॥ ५ ॥ दशाधिपाद्वित्तगतस्य भुक्तौ मृद्वन्नपानांबरगंधमाल्यम् ॥ परोपकारं स्वजनस्य सख्यं स्त्रीपुत्रबंध्वात्ममनोविलासम् ॥ ६ ॥ दशाधिपात्सोदरराशिगस्य भुक्तौ नृपाद्वित्तमुपैति सख्यम् ॥ सुगंधमाल्यांबरभूषणं च सुहृद्भवं भोजनसौख्यपुष्टिम् ॥ ७ ॥

दशेशसे युक्त ग्रहकी अंतर्दशामें स्त्री, पुत्र, भृत्य, धन, कृषिका नाश, उद्यमभंग, अपने मनुष्योंसे विरोध, अचानक दूषण पावै ॥ ५ ॥ दशेशसे दूसरे ग्रहके अंतरमें मृदु अन्न, पान, वस्त्र, चंदन पुष्प मिलें, पराया उपकार होवै, अपने मनुष्योंमें सख्य बढ़े, स्त्री, पुत्र, बंधुजन, सुख, मनके विलास (खुसी) मिलतेहैं ॥ ६ ॥ दशेशसे तीसरे ग्रहके अंतरमें राजासे धन सख्यता सुगंधवस्तु, पुष्प, वस्त्र, भूषण, मित्रोंका दिया भोजन सुख और पुष्टि इतनें फल होतेहैं ॥ ७ ॥

दायेश्वरादंबुगतस्य भुक्तौ दारात्मजार्थगृहधर्मयानम् ॥ मिष्टान्नपानांबरभूषणं च शुभग्रहश्चेत्फलमन्यथा तत् ॥ ८ ॥ ॥ पापग्रहोऽपि शुभदः खलु दायनाथाद्बन्धुस्थितस्स्वभवनोच्चबलादियुक्तः ॥ सौम्यग्रहोप्यशुभदः सुखराशियुक्तो दायेश्वरात्स्वभवनोच्चबलादिहीनः ॥ ९ ॥ दशानाथात्सुतस्थस्य भुक्तौ पुत्रादिमादिशेत् ॥ शुभग्रहस्य सौख्यं च पापभुक्तौ सुतक्षयम् ॥ १० ॥

दशेशसे चतुर्थगत ग्रहके अंतरमें स्त्री, पुत्र, धन, गृहके धर्म वाहन मीठे अन्नजलादि तथा वस्त्र भूषण मिलतेहैं यदि वह शुभग्रह होवै तो यहफल विपरीत होताहै ॥ ८ ॥ दशेशसे चतुर्थगत ग्रह यदि अपनी राशि उच्चबलादिसे युक्त होवै तो पापग्रहभी शुभफल देताहै यदि राशिबल उच्चबलादिहीन होवै तो दशेशसे चौथा शुभग्रहभी अशुभफल देताहै ॥ ९ ॥ दशेशसे पंचमगत ग्रहके अन्तरमें पुत्रादि होवैं कहना यह शुभग्रहमें है पापग्रहमें पुत्रक्षय होताहै॥ १०॥

अन्तर्दशायां पापस्य षष्ठस्थस्य दशेश्वरात् ॥ चौरादिऋणदेहार्तिं लभते पदविभ्रमम् ॥ ११ ॥ तस्मात्षष्ठस्य सौम्यस्य दशेशात्सुखवर्द्धनम् ॥ लभते पुत्रमित्राप्तिं स्वोच्चमूलादिगस्य तु ॥ १२ ॥

दायेशात्सप्तमस्थस्य पापस्यापहृतौ तथा ॥ दारार्थपुत्रबंधूनां नाशं भूमिपतेर्भयम् ॥ १३ ॥ सप्तमस्थशुभस्यापि हृतौ सौख्यं दशाधिपात् ॥ नीचशत्रुविहीनस्य सद्रत्नांबरभूषणम् ॥ १४ ॥

दशेशसे छठे पापग्रहकी अंतर्दशामें चोरआदिकी भय ऋणकी भय देहपीडा और पदमें भ्रम पावै ॥ ११ ॥ दशेशसे छठा अंतरेश शुभग्रह होवै तो उक्तोंसे सुख बढे पुत्र मित्र मिलें यदि उच्च मूलत्रिकोणादिमें होवै ॥ १२ ॥ दशेशसे सप्तमगत पापग्रहके अंतरमें स्त्री, धन, पुत्र, बंधुका नाश तथा राजासे भय होवै ॥ १३ ॥ वह सप्तमस्थ शुभ होवै तो सुख देताहै यदि नीच शत्रु आदिमें न होवै तो अच्छे रत्न, वस्त्र, भूषण मिलतेहैं ॥ १४ ॥

पाकेशादष्टमस्थस्य सौम्यस्यापहृतौ सुखम् ॥ भुक्त्यादौ शोभनं प्रोक्तमंते कष्टं विनिर्दिशेत् ॥ १५ ॥ पाकेशादष्टमस्थस्य पापस्यापहृतौ भयम् ॥ निधनं कुत्सितान्नं च चौराग्निनृपपीडनम् ॥ १६ ॥ दायेशान्नवमस्थस्य पापस्यापहृतौ यदा ॥ अशुभं लभते कर्मस्थानभ्रंशो मनोरुजम् ॥ १७ ॥ प्रधानतः शुभस्थस्य सौम्यस्यापहृतौ यदा ॥ विवाहं यज्ञदीक्षां च दानादीन् लभते नरः ॥ १८ ॥

दशेशसे अष्टमगत पापग्रहके अंतरमें आदिमें शुभफल सुख और अंतमें कष्टफल कहना ॥ १५ ॥ दशेशसे अष्टमगत पापग्रहके अंतरमें भय, मृत्यु, निन्द्य अन्न, चोर, अग्नि, राजासे भय मिले ॥ १६ ॥ दशेशसे नवमगत पापग्रहके अंतरमें अशुभकर्म पावै, स्थानहानि मानसी रोग होवै॥१७॥यदि वह नवमस्थ शुभग्रह होवै, तो विवाह यज्ञ दानादि मनुष्य पाताहै॥१८॥

कर्मस्थपापखेटस्य हृतौ पाकेश्वराद्यदा ॥ कर्मनाशमवाप्नोति दुष्कीर्तिं विविधापदम् ॥ १९ ॥ तस्मात्कर्मस्थसौम्यस्य हृतौ सौख्यं विनिर्दिशेत् ॥ तडागगोपुरादीनां पुण्यकर्मादिसंग्रहः ॥ २० ॥ लाभस्थस्य दशानाथात्पापस्यापहृतौ धनम् ॥ लभते पुत्रमित्रार्थस्थानप्राप्तिं च शाश्वतीम् ॥ २१ ॥ पाकेशाल्लाभयुक्तस्य सौम्यस्यापहृतौ सुखम् ॥ भाग्योत्तरं नृपात्प्रीतिं दारपुत्रादिवर्द्धनम् ॥ २२ ॥ व्ययस्थस्य हृतौ दुःखं पापस्य तु दशाधिपात् ॥ अर्थनाशं नृपात्क्रोधं स्थाननाशं स्मृतिभ्रमम् ॥ २३ ॥

पाकेश्वराद्व्ययस्थस्य सौम्यस्यापहृतौ यदा ॥ वाहनं भोगभाग्यं च वस्त्राभरणभूषणम् ॥ २४ ॥

दशेशसे दशमगत अतरेश पापग्रहमें कर्मका नाश दुष्कीर्ति अनेक प्रकार आपत्ति पाताहै ॥ १९ ॥ दशेशसे दशमगत शुभग्रहके अंतरमें सौख्य तालाव नगर द्वार आदि पुण्य कर्मादियोंका संग्रह कहना ॥ २० ॥ दशेशसे लाभगत पापग्रहकी अंतर्दशामें धन पुत्र मित्रसे अर्थ पाताहै और नित्य स्थायी स्थानकी प्राप्ति होतीहै ॥ २१ ॥ दशेशसे लाभगत शुभग्रहके अंतरमें सुख ऐश्वर्यवृद्धि राजासे प्रसन्नता और स्त्री पुत्रादियोंकी वृद्धि होवै ॥ २२ ॥ दशेशसे व्ययगत पापग्रहके अंतरमें दुःख धननाश राजासे क्रोध स्थाननाश और यादगारीमें भ्रम (भूल) हो जातीहै ॥ २३ ॥ दशेशसे व्ययगत शुभग्रहके अंतरमें वाहन, भोग, ऐश्वर्य, वस्त्र, भूषण मिलतेहैं ॥ २४ ॥

तत्तद्दशायां संयोज्यमेवमेवं विशेषतः ॥ स्वर्क्षोच्चवर्गमित्रादि विना सर्वत्र कल्पयेत् ॥ २५ ॥ लग्नार्थसोत्थगस्यापि पापस्यापहृतौ तदा ॥ पाकेशाद्दुःखमाप्नोति सौम्यभुक्तौ शुभं भवेत् ॥ २६ ॥ अंतर्दशायां क्रूरस्य क्रूरदाये महद्भयम् ॥ स्थानाक्षिबन्धुपुत्रार्थदारनाशं नृपाद्भयम् ॥ २७ ॥

इसप्रकार पापदशा पापांतरमें सर्वत्र विना स्वराशि उच्चवर्ग मित्रराशिगतके वही पापफल कल्पना करने ॥ २५ ॥ लग्न द्वितीय तृतीयगत पापके अंतरमें दुःख शुभके अंतरमें शुभ होताहै ये फल दशेशसे लग्नादिगत अंतरेशके लिये हैं ॥ २६ ॥ क्रूरदशा क्रूरांतरमें बडी भय, स्थान, नेत्र, बंधु, पुत्र, धन, स्त्रीका नाश, राजासे भय होतीहै ॥ २७ ॥

शुभयुक्तौ शुभे दाये स्थानवाहनभूषणम् ॥ सौम्यभुक्तौ पापदाये त्वादौ सौख्यं परं भयम् ॥ २८ ॥ सौम्यदाये पापभुक्तौ त्वादौ कष्टं ततः शुभम् ॥ शीर्षोदयर्क्षगाः खेटास्त्वादौ चान्ते नृऋक्षगाः ॥ २९ ॥ यत्र संपादबाहुल्यं योजयित्वा फलं वदेत् ॥ अपि संवादकार्येषु यथोक्तं फलमादिशेत् ॥ ३० ॥

शुभग्रहकी दशा शुभग्रहके अंतरमें स्थान, वाहन, भूषण मिलतेहैं, शुभग्रहकी दशा पापग्रहके अंतरमें प्रथम सुख पीछे भय मिलतीहै ॥ २८ ॥ शुभग्रहकी दशा पापके अंतरमें प्रथम कष्ट पीछे सुख होतहै, शीर्षोदयराशिगत ग्रह प्रथम अन्यराशियोंके अंतमें शुभ फल देतेहैं ॥ २९ ॥ जहां शुभफल देनेवाले तथा अशुभवालेभी बहुतहों तहां बलाबल योजना करके फल कहना तुल्यतामें यथोक्तफल कहना ॥ ३० ॥ इति सामुदायिकांतर्दशाफलम् ॥

अथ ग्रहाणां लग्नादिस्थितभेदेन पुनरप्यं-
तर्दशाफलविशेषमाह ।

लग्नगस्य रवेः पाके भौमार्किशिखिभोगिनाम् ॥ अंतर्दशायां दुःखं च राज्यार्थगृहनाशनम् ॥ १ ॥ तेषामगोचरस्थानां दिनेशात्फलमीदृशम् ॥ गोचरस्थे फलं सौख्यं सर्वस्मिन् पाकपाद्गृहे ॥ २ ॥ "गोचरत्वं नाम" स्वर्क्षतुंगात्रिकोणस्थः षडष्टांत्यविवर्जितः ॥ अनस्तगो मित्रगस्तु गोचरस्थो भवेद्ग्रहः ॥३॥ अस्तगो नीचगो वापि स्वर्क्षमूलविवर्जितः ॥ षष्ठाष्टमव्ययस्थो वा यः खेटो यमगोचरः ॥ ४ ॥

लग्नगत सूर्यकी दशा मंगल, शनि, केतु, राहुकी अंतर्दशामें दुःख और राज्य, धन, घरका नाश होताहै ॥ १ ॥ यदि वे ग्रह सूर्यसे अगोचरमें होवैं, तब ऐसा फलहै, गोचरमें होवैं तो सौख्य फल देतेहैं यह सभी दशेशसे सभी स्थानोंमें करना ॥ २ ॥ गोचर अगोचर संज्ञा कहतेहैं कि अपने राशि उच्च मूल त्रिकोणगत ग्रह ६।८।१२ भावोंसे अन्यमें हों मित्रराशिमें हों अस्तंगत न हों वह गोचरस्थ कहातेहैं ॥ ३ ॥ अस्तंगत नीचगत अथवा स्वराशि मूल त्रिकोण रहित ६।८।१२ भावस्थित जो ग्रह हों वह अगोचरस्थ कहातेहैं ॥ ४ ॥

लग्नस्थवासरेशस्य दशायामिज्यशुक्रयोः ॥ शशांकसौम्ययोर्भुक्तौ कृषिगोसुतदारभूः ॥ ५ ॥ धनस्थवासरेशस्य पापभुक्तौ धनक्षयम् ॥ वाक्पारुष्यं मनोदुःखं नेत्ररोगं महद्भयम् ॥ ६ ॥ सौम्यभुक्तौ रवेः पाके धनस्थस्य महत्सुखम् ॥ विद्यालाभं नृपात्प्रीतिं वस्त्रवाहनभूषणम् ॥ ७ ॥ तृतीयस्थस्य तु रवेः पाके पापहृतौ यदा ॥ गोचरस्थे महत्सौख्यं नोचेत्पापफलं वदेत् ॥ ८ ॥

लग्नगत सूर्यकी दशामें गुरु शुक्रकी तथा चंद्रमा बुधकी अंतर्दशामें कृषि, गौ, पुत्र, स्त्री, भूमि मिलते हैं ॥ ५ ॥ धनस्थानगत सूर्यकी दशामें पापांतरमें धनक्षय वाणीकी कठोरता मानसी दुःख नेत्ररोग बडी भय होतीहै ॥ ६ ॥ धनस्थ सूर्यदशा शुभग्रहके अंतरमें बडा सुख, विद्यालाभ, राजकृपा, वस्त्र, सवारी और भूषण मिलतेहैं ॥ ७ ॥ तीसरे सूर्यकी दशा पापांतरमें गोचरमें होवै तो शुभ अन्यथा अशुभ फल कहना ॥ ८ ॥

तत्रस्थभानुपाके च शुभयुक्तौ महत्सुखम् ॥ धैर्यं वित्तं सुतांश्च समरे जयमाप्नुयात् ॥ ९ ॥ दिनेशस्य सुखस्थस्य दशायां पापिनां हृतौ ॥ मातृनाशं मनोदुःखं चौराग्निनृपपीडनम् ॥ १० ॥

रवेः सुखस्थितस्यापि शुभभुक्तौ महत्सुखम् ॥ राज्यार्थपुत्रदारादि वस्त्रमाल्यानुलेपनम् ॥ ११ ॥ पंचमस्थरवेः पाके शन्यारशिखि भोगिनाम् ॥ अंतर्दशायां पुत्रार्तिं चौरभूपाग्निपीडनम् ॥ १२ ॥ शुभग्रहाणां भुक्तौ च रवेः पंचमगस्य तु ॥ परिपाके सुतार्प्तिं च राज्यवाहनभूषणम् ॥ १३ ॥

तृतीयस्थ सूर्यकी दशा शुभग्रहोंके अंतरमें बडा सुख मिले धैर्यता, धन, पुत्रप्राप्ति और युद्धमें जय पावताहै ॥ ९ ॥ चतुर्थगत सूर्यकी दशा पापग्रहांतरमें माताका नाश मनमें दुःख चोर, अग्नि, राजासे पीडन मिलताहै ॥ १० ॥ चतुर्थगत सूर्यदशा शुभग्रहोंके अंतरमें राज्य धन, पुत्र, स्त्री आदि तथा वस्त्र, सुगंधितपुष्प, चंदनादि मिलतेहैं ॥ ११ ॥ पंचमगत सूर्यकी दशा शनि, मंगल राहु, केतुके अंतरमें पुत्रपीडा चोर, राजा, अग्निसे पीडा मिले ॥ १२ ॥ पंचम रविदशा शुभग्रहांतरमें पुत्रप्राप्ति राज्य वाहन भूषणोंकी प्राप्ति होतीहै॥ १३॥

षष्ठस्थसूर्यदायेऽस्मिन् पापदाहतिपापिनाम् ॥ ऋणचौराग्निभूपैस्तु भीतिरावश्यकी तथा ॥ १४ ॥ सौम्यानामपहारे तु भास्करस्यारिगस्य च ॥ परिपाके सुखं पूर्वं पश्चाद्दिष्टं विनिर्दिशेत् ॥ १५ ॥ सप्तमस्थरवेः पाके शुक्रेज्याब्जविदां हतौ ॥ दारलाभं मनोत्साहं यानांबरविभूषणम् ॥ १६ ॥ तथाविधरवेः पाके दुःखं स्यात्पापिनां हतौ ॥ ज्वरातिसारं पित्तं च मेहकृच्छ्रादि पीडनम् ॥ १७ ॥

छठे सूर्यकी दशा पापग्रहोंके अंतरमें ऋण, चोर, अग्नि, राजासे भय, अवश्य देतीहै तथा यह दशा पापभी देतीहै ॥ १४ ॥ ऐसे सूर्यमें शुभग्रहके अंतर पहिले सुख पीछे कष्ट देतेहैं कहना ॥ १५ ॥ सप्तम सूर्यकी दशा शुक्र, गुरु, चंद्रमा, बुधके अंतरमें स्त्रीलाभ मनका उत्साह सवारी, वस्त्र भूषण मिलतेहैं ॥ १६ ॥ ऐसे सूर्यकी दशा पापग्रहोंके अंतरमें ज्वर, अतिसार, पित्तप्रमेह, मूत्रकृच्छ्रादि पीडन मिलताहै ॥ १७ ॥

अष्टमस्थरवेः पाके शुभभुक्तौ शुभं वदेत् ॥ किंचिद्दुःखं शुभाधिक्यं शयनांबरभूषणम् ॥ १८ ॥ तथाविधरवेर्दाये पापभुक्तौ महद्भयम् ॥ मरणं व्याधिपीडा वा ॥ परप्रेष्यत्वमेव वा ॥ १९ ॥ शुभस्थानगतस्यापि रवेः पाके हृतौ यदा ॥ सौम्यानां शुभकर्माप्तिं दानयज्ञं महोत्सवम् ॥ २० ॥ नवमस्थरवेः पाके पापभुक्तौ यदा तदा ॥ करोति दुःखबाहुल्यं गुरुपित्रादिपीडनम् ॥ २१ ॥

अष्टमगत सूर्यकी दशा शुभग्रहोंके अंतरमें शुभफल कहना थोडा दुःख शुभफल अधिक तथा शय्या वस्त्र भूषण मिलतेहैं ॥ १८ ॥ ऐसेही सूर्यकी दशा पापांतरमें बडी भय वा मरण यद्वा रोगपीडा और पराया दौत्यकाम मिलताहै ॥ १९ ॥ नवमगत सूर्यकी दशा शुभग्रहोंके अंतरमें शुभकर्मकी प्राप्ति दान यज्ञ बडे उत्सवादि करने मिलतेहैं ॥ २० ॥ नवम सूर्यदशा पापांतरमें दुःखकी बाहुल्यता गुरु पिता आदियोंको पीडन मिलताहै ॥ २१ ॥

कर्मस्थरविदाये तु पापभुक्तिर्यदा तदा ॥ करोति कर्मशोकार्तिं चोराग्निनृपपीडनम् ॥ २२ ॥ तथाविधरवेः पाके शुभभुक्तिर्यदा तदा ॥ करोति विपुलं राज्यं कीर्तिश्चाचंद्रतारकम् ॥ २३ ॥ लाभराशिगतस्यापि रवेः पाके शुभेतरा ॥ भुक्तिर्यदा तदा दुःखं पश्चात्सौख्यं करोति च ॥ २४ ॥ तथाविधरवेः पाके शुभभुक्तिर्यदा तदा ॥ धनाप्तिं राजसंमानं दारपुत्रनृपात्प्रियम् ॥ २५ ॥ द्वादशस्थरवेः पाके पापभुक्तौ महद्भयम् ॥ स्थानच्युतिं प्रवासं च नृपकोपाद्विमानता ॥२६॥ तथाविधरवेः पाके शुभभुक्तौ महत्सुखम् ॥ गोभूमिवस्त्रधान्यादिमणिविद्रुमभूषणम् ॥ २७ ॥ इति रविपाकान्तर्दशाफलम् ॥

दशमगत सूर्यदशा पापांतर जब होवै तब शोकके कर्म करातीहै पीडा चोर अग्नि राजासें पीडन मिलताहै ॥ २२ ॥ ऐसेही सूर्यदशा शुभांतरमें बडाराज्य और जहांपर्यंत चंद्रमा तारागणहैं तहांलौं कीर्ति बढातीहै ॥ २३ ॥ लाभगत सूर्यदशा अशुभग्रहोंके अंतरमें दुःख भोगके पीछे सुखभी करतीहै ॥ २४ ॥ ऐसेही सूर्यदशा शुभांतर जब आवै तब धनप्राप्ति राजासे संमान स्त्री पुत्र तथा राजासे शुभत्व होवै ॥ २५ ॥ बारहवें सूर्यकी दशा पापांतरमें बडी भय स्थानहानि परदेशगमन और राजकोपसे मानहानि होवै ॥ २६ ॥ ऐसेही सूर्यकी दशा शुभग्रहोंके अंतरमें बडासुख मिले गो, भूमि, वस्त्र, अन्नादि, मणि, मूंगायुक्त भूषण मिलते हैं ॥ २७ ॥ इति रविपाकान्तर्दशाफलम् ॥

अथ चंद्रदशायामन्तर्दशामाह ।

मूर्तिस्थचन्द्रदाये तु शुक्रेज्याब्जविदां हृतौ ॥ देहारोग्यं नृपात्प्रीतिं वाहनांबरभूषणम् ॥ १ ॥ तथाविधस्य चाब्जस्य परिपाके शुभेतरा ॥ हृतिः करोति दुःखं च कृषिगोभूमिनाशनम् ॥ २ ॥ द्वितीयस्थनिशानाथपरिपाके शुभेतरा ॥ कलत्रपुत्रवै-

धूनां नृपाद्भीतिं करोति च ॥ ३ ॥ सौम्याहतौ द्वितीयस्थचंद्रदाये महत्सुखम् ॥ भोजनांबरपानं च मनोत्साहं करोति च ॥४॥

लग्नगत चंद्रदशा शुक्र, गुरु, चंद्र, बुधके अंतरमें देहमें निरोगिता, राजासे प्रसन्नता तथा वाहन वस्त्र भूषण मिलतेहैं ॥ १ ॥ ऐसे चन्द्रमाकी दशा पापग्रहोंके अंतरमें दुःख, कृषि, गो, भूमिका नाश करतीहै ॥ २ ॥ दूसरे चंद्रमाकी दशा पापग्रहोंके अंतरमें स्त्री, पुत्र, बंधुजनको, कष्ट, राजासे भय करतीहै ॥ ३ ॥ दूसरे चंद्रकी दशा शुभग्रहोंके अंतरमें बडासुख भोजन, वस्त्र, पान और मनका उत्साह करतीहै ॥ ४ ॥

तृतीयस्थनिशानाथपरिपाके महत्सुखम् ॥ शुभग्रहाणां भुक्तिस्तु करोति नृपमान्यताम् ॥ ५ ॥ तथाविधनिशानाथपरिपाके शुभेतरा ॥ हतिः करोति वैकल्यं भ्रातृधैर्यविनाशनम् ॥ ६ ॥ चतुर्थस्थनिशानाथपरिपाके महत्सुखम् ॥ शुभभुक्तौ नृपात्प्रीतिर्जायते गृहजं सुखम् ॥ ७ ॥ पापभुक्तौ महत्कष्टं गृहदारार्थनाशनम् ॥ चौराग्निनृपभीतिं च तादृगब्जदशांतरे ॥ ८ ॥

तीसरे चन्द्रमाकी दशा शुभांतरमें बडासुख तथा राजमान करतीहै ॥ ५ ॥ पापांतरमें विकलता भाई तथा धैर्यका नाश करतीहै ॥ ६ ॥ चौथे चंद्रमाकी दशा शुभग्रहोंके अंतरमें बडासुख राजासे हर्ष घरका सुख देतीहै ॥ ७ ॥ चौथे चंद्रमाकी दशा पापग्रहोंके अंतरमें मकान स्त्री, धनका, नाश, चोर, अग्नि, राजासे भय देतीहै ॥ ८ ॥

पंचमस्थनिशानाथपरिपाके महत्सुखम् ॥ सौम्यभुक्तौ कलत्रार्थपुत्रमित्रांबराणि च ॥ ९ ॥ तथाविधदशानाथदाये पापहतौ यदा॥ बुद्धिक्षोभं मनस्तापं पुत्रदारनृपाद्भयम् ॥ १० ॥ कृषिनाशमृणग्रस्तं षष्ठस्थितनिशाकरात् ॥ स्यात्पापिनां हतौ दुःखं प्रमेहक्षयपाण्डुभिः ॥११॥ रिपुस्थितदशानाथे सौम्यानां तु यदा हतिः॥ करोति सर्वतो मैत्रीं चौराग्निभयनाशनम् ॥ १२ ॥

पंचमचंद्रमाकी दशा शुभग्रहोंके अंतरमें बहुतसुख, स्त्री, धन, पुत्र, मित्र और वस्त्रभी देतीहै ॥ ९ ॥ ऐसे चंद्रदशा पापांतरमें बुद्धिमें क्षोभ (भय) मनमें संताप, पुत्र, स्त्री, राजासे भय देतीहै ॥ १० ॥ छठे चंद्रमाकी दशा पापांतरमें कृषिका नाश ऋणसे दबना, प्रमेह, क्षय, पाण्डुरोगसे दुःख देतीहै ॥ ११ ॥ षष्ठस्थचंद्रदशा शुभांतरदशा सबसे मैत्री तथा चोर, अग्नि, राजभयका नाश करती है ॥ १२ ॥

कलत्रस्थनिशानाथाद्यदा सौम्याहतिस्तदा ॥ कलत्रपुत्रसंपत्तिर्वाहनांबरभूषणम् ॥ १३ ॥ तथाविधदशानाथात्पापिनां तु हतिर्यदा ॥ विदेशयानं पुत्रार्थदारबंधुविनाशनम् ॥ १४ ॥ अष्टमस्थनिशानाथात्पापभुक्तौ महद्भयम् ॥ मरणं दारपुत्राणां कुत्सितान्नं पराजयम् ॥ १५ ॥ रंध्रस्थितनिशानाथपरिपाके महत्सुखम् ॥ सौम्यभुक्तौ महत्कीर्तिर्धैर्यवाहनभूषणम् ॥ १६ ॥

सप्तम चंद्रमासे जब शुभांतरआवैं तब स्त्री, पुत्र, संपत्ति, वाहन, वस्त्र, भूषण मिलतेहैं ॥ १३ ॥ ऐसे चंद्रमासे जब पापांतरदशा होवै तब परदेशगमन, पुत्र, धन, स्त्री, बंधुजनका विनाश होवै ॥ १४ ॥ अष्टमचंद्रमासे पापांतरमें बडीभय, स्त्री, पुत्र, मरण, निन्द्य अन्नका भोजन और युद्धादिमें पराजय, (हार) पावै ॥ १५ ॥ अष्टम चंद्रदशा शुभांतरमें बडा-सुख, बडीकीर्ति होवै, धैर्यता तथा वाहन, भूषण मिलें ॥ १६ ॥

धर्मस्थितदशानाथाच्छुभभुक्तौ पितुः सुखम् ॥ धर्मं यज्ञं विवाहं च राज्यस्त्रीधनसंपदः ॥ १७ ॥ तथाविधदशानाथात्पापिनां तु हतिर्यदा ॥ धर्महानिर्मनोदुःखं राज्यार्थगृहनाशनम् ॥ १८ ॥ कर्मस्थचन्द्रदाये च सौम्यभुक्तिः करोति हि ॥ स्वकर्मनिरतं शास्त्रधर्मदानपरायणम् ॥ १९॥ कर्मस्थितनिशानाथात्पापभुक्तिर्यदा तदा ॥ कर्मनाशं करोत्यत्र ह्यपकीर्तिं महद्भयम् ॥ २० ॥

नवमगत दशेश चंद्रमासे शुभांतरमें पिताका सुख, धर्म, यज्ञ, विवाहादि, तथा राज्य, स्त्री, धनकी संपत्ति होवै ॥ १७ ॥ ऐसे चंद्रमादशा पापांतर जब आवै तब धर्महानि, मनमें दुःख राज्य, धन, गृह, नाश होवैं ॥ १८ ॥ दशमगत चंद्रमाकी दशामें शुभग्रहोंकी अंतरदशा अपने कर्ममें तत्पर, धर्मशास्त्र, तथा दानमें तत्पर करतीहै ॥ १९ ॥ दशम चंद्रदशासे पापांतर जब आवै तब कर्मनाश, अपयश, औरबडीभय करतीहै ॥ २० ॥

लाभचन्द्रदशाभुक्तिर्धनधान्यांबराणि च ॥ वाहनं राज्यलाभं च करोति विविधं सुखम् ॥ २१ ॥ लाभचन्द्रे पापभुक्तौ धननाशमुपैति च ॥ कृषिधान्याक्षिदेहार्तिं नृपचौरादिपीडनम् ॥ ॥ २२ ॥ द्वादशस्थनिशानाथपरिपाकेऽर्थनाशनम् ॥ पापभुक्तौ-महत्कष्टं सर्वशत्रुत्वमेव च ॥ २३ ॥ शुभभुक्तौ व्ययस्थस्य वस्त्रमाल्यविभूषणम् ॥ दारार्थपुत्रमित्राणां वर्धनं वाहनं सुखम्॥२४॥ इति चंद्रपाकान्तर्दशाफलम् ॥

लाभगत चंद्रदशामें शुभांतर धन, अन्न, वस्त्र, वाहन, राज्यलाभ और अनेकप्रकार सुख करताहै ॥ २१ ॥ लाभगत चंद्रदशामें पापांतरदशा धननाश, कृषि, अन्न क्षय, नेत्र, तथा देहपीडा, राजा, चोर, अग्निसे पीडन देतीहै ॥ २२ ॥ द्वादशचंद्रमाकी दशा पापांतरमें बडा कष्ट मिलताहै तथा सर्वत्र शत्रुता होतीहै ॥ २३ ॥ व्ययगत चंद्रदशा शुभांतरमें स्त्री, धन, पुत्र, मित्रोंकी वृद्धि, वाहनलाभ और सुख मिलतेहैं ॥ २४ ॥ इति चंद्रपाकान्तर्दशाफलम् ॥

अथ भौमदशांतरफलानि ।

लग्नस्थितधरासूनोः परिपाके व्रणं क्षतम् ॥ पापभुक्तौ महत्कष्टमजीर्णादिमहद्भयम् ॥ १ ॥ शुभभुक्तौ नृपात्प्रीतिं भ्रातृवर्गभवं सुखम् ॥ तथाविधधरासूनोर्दशायां क्षेत्रवाहने ॥ २ ॥ धनस्थितधरासूनोः शुभभुक्तिर्यदा तदा ॥ भ्रातृसौख्यं मनोत्साहं विद्यावाहनभूषणम् ॥ ३ ॥ द्वितीयस्थधरासूनोः परिपाके शुभाहतिः ॥ पूर्ववित्तविनाशं च राजकोपं ज्वराग्निभीः ॥ ४ ॥

लग्नगत भौमकी दशा पापग्रहोंके अंतरमें व्रण घावसे बडा कष्ट अजीर्ण आदिसे बडे भय होवैं ॥ १ ॥ ऐसे भौमदशा शुभांतरमें राजासे प्रसन्नता, भ्रातृवर्गसे सुख और खेती, तथा वाहन मिलतेहैं ॥ २ ॥ दूसरे मंगलकी दशामें शुभग्रहोंका अंतर जब होवै तब भाइयोंका सुख, मनका उत्साह, विद्या, वाहन, भूषण मिलतेहैं ॥ ३ ॥ द्वितीय मंगलकी दशा शुभांतरमें पहिलेका संचित धन नाश, राजकोप, ज्वर, अग्निभय होवै ॥ ४ ॥

तृतीयस्थधरासूनोः पापभुक्तिर्यदा तदा ॥ मनोवैकल्यमायाति भ्रातृवर्गविनाशनम् ॥ ५ ॥ तृतीयस्थधरासूनोः पाके सौम्यहतिर्यदा ॥ भोजनांबरसौख्यं च कृषिभूषणवाहनम् ॥ ६ ॥ हिबुकस्थधरासूनोः क्रूरभुक्तौ महद्भयम् ॥ गृहक्षेत्रविनाशं च नृपचौराग्निपीडनम् ॥ ७ ॥ हिबुकस्थधरासूनोः पाके सौम्यहतिर्यदा ॥ क्षेत्रांबरसुखावाप्तिं पशुवाहनभूषणम् ॥ ८ ॥

तीसरे मंगलकी दशा पापांतरमें मनकी विकलता होवै भ्रातृपक्षका विनाश होवै ॥ ५ ॥ तृतीय मंगलकी दशा शुभांतरमें भोजन, वस्त्र, सुख, कृषि, वाहन, भूषण, मिलें ॥ ६ ॥ चौथे मंगलकी दशा पापांतरमें बडी भय, गृह, खेतीका विनाश, राजा, चोर, अग्निसे पीडन मिले ॥ ७ ॥ चौथे भौमकी दशामें शुभग्रहोंके अंतरमें खेती, वस्त्रके सुखकी प्राप्ति, पशु, वाहन और भूषणभी मिलतेहैं ॥ ८ ॥

पंचमस्थधरासूनोः पाके पापहतिर्यदा ॥ कृषिगोधनधान्यार्थसुतदारविनाशनम् ॥ ९ ॥ तथाविधकुजात्सौम्यभुक्तौ शोभन-

मादिशेत् ॥ राजपूज्यं सुताप्तिं च मंत्रावाप्तिमिहादिशेत् ॥ १० ॥ षष्ठस्थितकुजात्पापभुक्तौ कष्टं विनिर्दिशेत् ॥ चौराग्निनृपपीडां च स्फोटकक्षयमेहनम् ॥ ११ ॥ तथाविधकुजात्सौम्यभुक्तौ भूपालमित्रताम् ॥ बन्धुनाशं मनोदुःखं पश्चात्सौख्यं विनिर्दिशेत् ॥ १२ ॥

पंचम मंगल दशामें पापांतर जब होवै तब कृषि, गो, धन, अन्न, पुत्र, स्त्रीका विनाश होवे ॥ ९ ॥ ऐसे मंगलमें शुभांतर जब आवै तब शुभफल कहना राजासे पूज्यता, पुत्रप्राप्ति और मंत्रप्राप्ति कहनी ॥ १० ॥ छठे मंगलकी दशा पापांतरमें कष्ट कहना, चोर, अग्नि, राजासे पीडा, विस्फोटक, क्षय, मेह रोगभी होतेहैं ॥ ११ ॥ छठे मंगलदशा शुभांतरमें राजासे मित्रता, बन्धुनाश, मनमें दुःख और पीछे सुखकी कहना ॥ १२ ॥

कलत्रस्थकुजात्पापभुक्तौ स्त्रीसुतराजभीः ॥ शुभभुक्तौ महत्सौख्यं नृपवाहनभूषणम् ॥ १३ ॥ अष्टमस्थकुजाद्भुक्तौ पापिनां मरणं कृशम् ॥ सौम्यभुक्तौ महत्सौख्यं कृषिगोनृपपूजनम् ॥ १४ ॥ नवमस्थधरासूनोर्दाये पापहृतिर्यदा ॥ पित्रोर्नाशं गुरोर्नाशं धर्महानिं मनोरुजम् ॥ १५ ॥ तथाविधकुजात्सौम्यभुक्तौ गोधनसंपदः ॥ विवाहं यज्ञदीक्षां च देवभूसुरतर्पणम् ॥ १६ ॥

सप्तम मंगलकी दशा पापांतरमें स्त्री, पुत्र, राजासे भय शुभान्तरमें बडा सुख राजासे वाहन, भूषण मिलें ॥ १३ ॥ अष्टम मंगलकी दशा पापांतरमें अल्पमृत्यु, कृशता और शुभग्रहोंके अंतरमें बडासुख, कृषि, गौ लाभ, राजासे पूजन, मिलतेहैं ॥ १४ ॥ नवमगत मंगलकी दशामें पापांतर जब होवै तबमातापिताका नाश, गुरुका नाश, धर्मकी हानि, मनमें रोग होतेहैं ॥ १५ ॥ ऐसे मंगलकी दशा शुभांतरमें गोधनकी संपत्ति, विवाह, यज्ञकी दीक्षा, देवता ब्राह्मणोंकी तृप्ति, करनी मिलें ॥ १६ ॥

कर्मस्थितधरासूनोर्दुःखं स्यात्पापिनां हृतौ ॥ विदेशयानं दुष्कीर्तिं लभते हि पराजयम् ॥ १७ ॥ लाभस्थभूमिपुत्रस्य पाके पापहृतिर्यदा ॥ करोति विपुलं राज्यं गंधमाल्यादिभूषणम् ॥ १८ ॥ शुक्रेज्याब्जविदां भुक्तौ लाभराशिगतस्य तु ॥ परिपाके महत्सौख्यं दानधर्मादिसंग्रहम् ॥ १९ ॥ द्वादशस्थधरासूनोः पाके पापहृतिर्यदा ॥ करोति दुःखबाहुल्यं कारागृहनिवेशनम् ॥ २० ॥ शुभापहारे सौख्यं च यानांबरविभूषणम् ॥ भुक्त्यंते राजकोपं च पदभ्रंशं मनोरुजम् ॥ २१ ॥ इति भौमपाकान्तर्दशाफलम् ॥

दशम मंगलकी दशामें जब पापांतर होवै तब विदेशगमन, अपकीर्ति, पराजय (हार) पावताहै ॥ १७ ॥ लाभगत मंगलकी दशामें जब पापांतर आवै तब बहुतबडा राज्य, चंदन, पुष्प और भूषण मिलतेहैं ॥ १८ ॥ लाभगत मंगलमें शुक्र, गुरु, चंद्र, बुधकी अंतरदशा जब आवै तब बडासुख, दान, धर्म आदिका संग्रह होताहै ॥ १९ ॥ व्ययस्थ मंगलकी दशामें जब पापांतर आवै तब बहुतदुःख और कैद घरमें प्रवेश करताहै ॥ २० ॥ शुभग्रहोंके अंतरमें सुख, सवारी, वस्त्र, भूषण मिलतेहैं, दशाके अंतमें राजाका कोप पदसे च्युति और मानसी रोग होतेहैं ॥ २१ ॥ इति भौमपाकान्तर्दशाफलम् ॥

अथ राहुदशांतरफलानि ।

लग्नस्थसैंहिकेयस्य दाये पापहृतिर्यदा ॥ करोति दुःखबाहुल्यं नृपचौराग्निपीडनम् ॥ १ ॥ तत्रस्थभोगिनः पाके शुभभुक्तौ शुभं वदेत् ॥ गृहक्षेत्रादिवृद्धिश्च भोजनांबरभूषणम् ॥ २ ॥ षडष्टांत्यगतस्याहेः परिपाके शुभेतरा ॥ हृतिः कलहरोगाग्निनृपचौरविषाहिभीः ॥ ३ ॥ श्वासक्षयप्रमेहादिशूलनिद्रादिभाग्भवेत् ॥ कुभोजनं कुवस्त्रं च स्थाननाशं नृपाद्भयम् ॥ ४ ॥

लग्नगत राहुकी दशामें पापांतर जब आवै तब बहुत दुःख तथा नृप, चौर, अग्निसे पीडन करतीहै ॥ १ ॥ लग्नगत राहुकी दशा शुभांतरमें शुभफल कहना घर, खेतीकी वृद्धि, भोजन, वस्त्र, भूषणवृद्धि, होतीहै ॥ २ ॥ छठे, आठवें, बारहवें, भावगत राहुकी दशामें पापांतर जब हों तब कलह, रोग, अग्नि, राजा, चोर, विष, सर्पसे भय होतीहै ॥ ३ ॥ तथा श्वास, क्षय, प्रमेहादि शूल, निद्रा आदिवाला होवै कुभोजन, कुवस्त्र मिलें, स्थानका नाश होवै राजासे भय होवै ॥ ४ ॥

दुःस्थस्य चाहिनाथस्य परिपाके शुभा हृतिः ॥ आदौ शुभं महत्सौख्यं नृपमानं धनागमम् ॥ ५ ॥ अंते तु राजभीतिः स्यात्स्थाननाशं मनोरुजम् ॥ कृषिगोभूमिवस्त्रादिबंधुपुत्रार्थनाशनम् ॥ ६ ॥

दुष्टभावगत राहुकी दशामें जब शुभग्रहोंके अंतर आवैं तब प्रथम शुभफल, बडासौख्य, राजमान, धनागम होवै ॥ ५ ॥ अंतमें तो राजासे भय, स्थानका नाश, मनमें रोग, कृषि, गौ, भूमि, वस्त्रादि तथा बंधुजन, पुत्र, धनका नाश होवै ॥ ६ ॥

केन्द्रत्रयस्थितस्याहेः पापानां तु हृतिर्यदा ॥ गृहदाहाक्षिरोगादिदारपुत्रमहद्भयम् ॥ ७ ॥ स्थानच्युतिं मनोदुःखं निजाचारविवर्जितम् ॥ अकस्मात्कलहं चैव चौराग्निनृपपीडनम् ॥ ८ ॥ चतु-

ष्टयगतस्याहेः परिपाके शुभा हतिः ॥ क्वचित्सौख्यं क्वचित्कीर्तिं क्वचिद्धर्मं क्वचिन्न हि ॥ ९ ॥ एवमादौ तु भुक्त्यंते राजकोपाद्धन-क्षयम् ॥ युद्धे पराजयं चैव विद्यावादं महद्भयम् ॥ १० ॥

लग्नसे अतिरिक्त तीन केन्द्रोंमेंसे किसीमें स्थित राहुकी दशामें जब पापांतर आवै तब घर जले, नेत्ररोगादि होवैं, स्त्रीपुत्रोंको बडी भय होवै ॥ ७ ॥ स्थानहानि, मनमें दुःख, अपने आचारसे वर्जितता अकस्मात्कलह, तथा चोर, अग्नि, राजासे पीडन मिले ॥ ८ ॥ केन्द्रगत राहुदशामें शुभांतरका फल कभी सुख, कभी कीर्ति, कभी धर्म कभी न होवै ॥ ९ ॥ ऐसे फल दशादिमें होतेहैं दशाके अंत्यमें राजाके कोपसे धनका क्षय, युद्धमें पराजय, विद्यासंबंधी वाद और बडी भय होतीहै ॥ १० ॥

त्रिकोणस्थफणीन्द्रस्य दशापाके महत्कृशम् ॥ पापभुक्तौ महत्कष्टं पापाचारसमन्वितम् ॥ ११ ॥ अपकीर्तिं कुभोज्यं च कृषिगोभूमिनाशनम् ॥ नृपभीतिं च शौर्यं च मौल्यादिपतनं भवेत् ॥ १२ ॥ तथाविधफणीन्द्रस्य शुभभुक्तौ शुभक्रिया ॥ सुतदारधनाप्तिं च भुक्त्यंते फलमीदृशम् ॥ १३ ॥ किंचित्सुखं तदादौ तु विदेशगमनं तथा ॥ मंत्रोपास्तिं मनोत्साहं कलत्रात्म-जदूषणम् ॥ १४ ॥

त्रिकोण ५।९ गत राहुकी दशा पापांतरमें बहुत कृशत्व, महाकष्ट, पापाचारसहित होवै ॥ ११ ॥ अपकीर्ति, कुभोजन मिलें कृषि गौ भूमिका नाश राजासे भय, तथा पराक्रम करना मिले परंतु मौल्य आदिका पतन होवै अर्थात् कीमत (करामत) घटजावै ॥१२॥ त्रिकोणगत राहुमें जब शुभांतर होवै तब शुभकाम होवैं, पुत्र स्त्री धन प्राप्ति होवै, ऐसे फल दशाके अंतमें होतेहैं ॥ १३ ॥ दशादिमें तो थोडासुख तथा परदेश गमन मंत्रोपासना, मनका उत्साह, और स्त्रीपुत्रोंको दूषण मिले ॥ १४ ॥

तृतीयलाभगस्याहेः परिपाके महत्सुखम् ॥ पापभुक्तौ नृपप्रीतिं फलमीदृशमादितः ॥ १५ ॥ अंते कष्टं विनिर्देश्यं चौराग्निनृप-पीडनम् ॥ बन्धुद्वेषं मनोदुःखं भ्रातृवर्गविनाशनम् ॥ १६ ॥ धनराशिगतस्याहेः पापानां तु हतिर्यदा ॥ धननाशं मनोदुःखं भार्यापुत्रविनाशनम् ॥ १७ ॥ क्रयविक्रयवित्ताप्तिं वाग्दूषणम-थापि वा ॥ तथाविधफणीन्द्रस्य शुभभुक्तौ तु भोजनम् ॥१८॥

वस्त्रवाहनभूषाप्तिं क्रयविक्रयदूषणम् ॥उद्योगभंगं देहार्तिं गूढपापं लभेन्नरः ॥ १९ ॥ इति राहुपाकान्तर्दशाफलम् ॥

तीसरे वा ग्यारहवें राहुकी दशा पापांतरमें बडा सुख मिले; राजाकी प्रसन्नता होवै, ऐसे फल प्रथम मिलें ॥ १५ ॥ दशाके अंतमें कष्ट कहना तथा चोर, अग्नि, राजासे भय, बंधुजनसे वैर, मनमें दुःख भाइयोंका नाश होताहै ॥ १६ ॥ धनराशिगत राहुदशा पापांतरमें धननाश, मनमें दुःख, स्त्री पुत्र नाश ॥ १७ ॥ व्यापारमें धनहानि वा वाणीसे दूषण मिलतेहैं धनके राहुदशा शुभांतरमें उत्तम भोजन ॥ १८ ॥ वस्त्र, वाहन, भूषणोंकी प्राप्ति, व्यापारमें दूषण, उद्यमभंग, देहपीडा, तथा गुप्तपाप मनुष्य पावै ॥ १९ ॥ इति राहुपाकान्तर्दशाफलम् ॥

अथ जीवान्तर्दशाफलम्।

केन्द्रस्थितस्य जीवस्य दशायां देहपीडनम् ॥ पापाहतौ तथा दुःखं राजकोपं धनक्षयम् ॥ १ ॥ कृषिगोभूमिनाशं च विरोधं बंधुभिः सह ॥ उत्साहभंगं वैकल्यमादौ चांते शुभं वदेत् ॥ २ ॥ भुक्तौ शुभानां तत्काले गुरोः केन्द्रगतस्य तु ॥ राज्यलाभं मनोत्साहं वस्त्रवाहनभूषणम् ॥ ३ ॥ दानं होमं जपं धर्म्यं नृपलालनमानताम् ॥ सर्वोपकारं कल्याणं विचित्रांबरकाञ्चनम् ॥ ४ ॥

अब बृहस्पतिकी अन्तर्दशाका फल कहतेहैं केन्द्रगतगुरुकी दशा पापांतर्दशामें देहपीडा, तथा दुःख राजाका कोप, धनक्षय ॥ १ ॥ कृषि, गौ, भूमिका नाश, बंधुजनोंसे विरोध, उत्साहभंग, विकलता, इतने फल प्रथम होतेहैं दशांतमें शुभफल कहना ॥ २ ॥ केन्द्रगत गुरुदशा शुभग्रहोंके अंतरमें राज्यलाभ, मनका उत्साह, वस्त्र, वाहन, भूषण मिलतेहैं ॥ ३ ॥ दान, हवन, जपादि धर्म होतेहैं राजासे प्यार, एवं मान मिलताहै सबका उपकार होताहै मंगलकार्य होतेहैं नानाप्रकारके वस्त्र एवं सुवर्ण मिलताहै ॥ ४ ॥

त्रिकोणस्थगुरोः पाके शुभभुक्तौ महत्सुखम्॥प्राकारगोपुरादीनां निर्माणं देवतर्पणम् ॥ ५ ॥ भाग्योत्तरं महाकीर्तिं दारपुत्रार्थसंपदः॥विदेशयानादाप्तार्थं यशो विद्यां जयं सुखम् ॥ ६ ॥ तत्रस्थितगुरोः पाके पापानां च हतिर्यदा ॥ दारपुत्रनृपक्रोधं बंधूनां मरणं तथा ॥ ७ ॥ बुद्धिभ्रंशं पदभ्रंशं कार्यविघ्नकरं तथा॥ चौराग्निदारपीडां च कुरुते नात्र संशयः ॥ ८ ॥

त्रिकोण ५।९ गत गुरुकी दशा शुभग्रहोंके अंतरमें बडासुख होताहै सहरपनाह नगरद्वार आदि इमारत बनें देवताओंकी तृप्ति यज्ञ यजनादिसे करे ॥ ५ ॥ ऐश्वर्य बढे बडी कीर्ति

होवे स्त्री, पुत्र, धन, संपत्ति होवे परदेशगमनसे धनप्राप्ति, यश, विद्या, विजय, और सुख मिलें ॥ ६ ॥ त्रिकोणगत गुरुदशामें जब पापांतर आवे तब स्त्री, पुत्र, राजासे क्रोध, बंधुजन मरण ॥ ७ ॥ बुद्धिकी गलती, पदकी हानि, तथा कार्यमें विघ्न, करे चौर, अग्नि, स्त्रीसे पीडा, मिले इसमें संदेह नहीं ॥ ८ ॥

स्वकुलाचारहीनं च परदाराभिमर्शनम् ॥ चांचल्यं मानहानिं च मणिविद्रुमनाशनम् ॥ ९ ॥ षष्ठाष्टमव्ययस्थस्य गुरोः पाके शुभेतरा ॥ करोति स्वकुलाचारहीनं राज्यार्थनाशनम् ॥ १० ॥ आत्मार्थबन्धुमरणं विदेशान्नृपलालनम् ॥ भूमिवादं मनोदुःखं व्याधीनां भयमेव च ॥ ११ ॥

अपने कुलाचारसे हीनता, पराई स्त्रीको कुदृष्टिसे देखना, चंचलता, मानहानि, राज्य और धनका नाश मिलताहै ॥ ९ ॥ छठे, आठवें, बारहवें, भावगत गुरुकी दशा पापांतरमें अपने कुलाचारसे हीनता राज्य एवं धनका नाश ॥ १० ॥ अपने निमित्त बंधुजनका मरण, विदेशसे राजाका प्रेम, भूमिसंबंधी विवाद, मनमें दुःख, रोगोंकी भयभी होताहै ॥ ११ ॥

गुरोर्नाशं गतस्यापि परिपाके महत्सुखम् ॥ देशग्रामाधिपत्यं च शुभभुक्तौ महद्यशः ॥१२॥ देहारोग्यकरं किंचिद्गजाश्वाद्यंबराणि च॥ सुष्ठुभोजनमुल्लासं क्षीरदध्याज्यशर्कराः ॥ १३ ॥ तृतीयायगतस्यापि गुरोः पाके महद्यशः ॥ सौम्यानां भुक्तिकाले तु वस्त्रवाहनभूषणम् ॥ १४ ॥ मणिविद्रुममुक्तादिकांचनाद्यम्बराणि च॥देशाधिपत्यं मंत्रित्वं लभते नात्र संशयः ॥ १५ ॥ तादृशस्य गुरोर्दाये पापभुक्तौ महद्भयम् ॥ आचारहीनं कुरुते स्वकुलोद्भवनाशनम् ॥ १६ ॥ विदेशवासं कष्टं च नानादुःखपरिभ्रमम् ॥ एवमादौ दशांते तु सुखंवाहनभोजनम् ॥ १७ ॥

अष्टमगत गुरुकी दशा शुभांतरमें बडासुख देश गांवकी आधिपत्य (मालकी) और बडा यश मिले ॥ १२ ॥ तथा शरीरमें आरोग्यता, थोडी घोडे, हाथी आदि वस्त्र, उत्तम भोजन, हर्ष, दूध, दही, घृत, शक्कर मिलें ॥ १३ ॥ तीसरे, ग्यारहवें, गुरुकी दशा शुभांतरमें बडायश वस्त्र, सवारी, भूषण ॥ १४ ॥ मणि, मूंगा, मोतीआदि रत्न, सुवर्णआदि धातु, वस्त्र, देशकी अधिकारिता, मंत्रित्व, निस्संदेह पावताहै ॥ १५ ॥ ऐसेही गुरुकी दशा पापांतरमें बडीभय, आचारहीनता और अपने कुलवालेका नाश करतीहै ॥ १६ ॥ तथा परदेश वास, कष्ट, अनेकप्रकार दुःख, भ्रम, इत्यादिफल दशाके आदिमें और अंतमें सुख, वाहन, भोजन देतीहै ॥ १७ ॥

धर्मस्थितगुरोर्दाये शुभभुक्तौ धनागमम् ॥ विद्यालाभं जयं सौख्यं दारपुत्रनृपात्सुखम् ॥ १८ ॥ सर्वेषामुपकर्तृत्वं धनाधिक्यं महत्प्रियम् ॥ भोजनं पौष्टिकं चैव धर्मदारधनादिकम् ॥ १९ ॥ द्वितीयस्थगुरोः पाके पापभुक्तौ यदा तदा ॥ करोति दुःखबाहुल्यं राज्ञा हृतधनं तथा ॥ २० ॥ बंधुद्वेषं मनोद्विग्नं वाचिकन्दैन्यमेव च ॥ कुभोजनादिदुष्कर्मकुत्सितप्रेष्यभावताम् ॥ २१ ॥ इति गुरुपाकान्तर्दशाफलम् ॥

नवमगत गुरुकी दशा शुभांतरमें धनकी आमद विद्याका लाभ, विजय, सुख, स्त्री, पुत्र, राजासे सुख मिले ॥ १८ ॥ सबका उपकार अपनेसे होवै, धन अधिक होवै, बडी प्रियता, पौष्टिक भोजन, और धर्म, स्त्री, धनादि मिलतेहैं ॥ १९ ॥ दूसरे गुरुकी दशा पापांतर जब आवै तब बहुत दुःख करतीहै राजा धन हरण करताहै ॥ २० ॥ बंधुजनोंमें वैर, मनमें उद्विग्नता, जबानीदीनता, कुभोजनआदि तथा दुष्कर्म, निंद्य, दूतताका भाव मिलतेहैं ॥ २१ ॥ इति गुरुपाकान्तर्दशाफलम् ।

अथशनेरन्तर्दशाफलम् ।

केन्द्रस्थस्य शनेर्दाये यदा पापहतिस्तदा ॥ स्थानच्युतिं प्रवासं च नृपचौराग्निपीडनम् ॥ १ ॥ तथाविधशनेर्दाये शुभभुक्तौ महत्सुखम् ॥ नृपाभिषेकमर्थाप्ति देशग्रामाधिपत्यताम् ॥ २ ॥ फलमीदृशमादौ तु भुक्त्यंते रोगपीडनम् ॥ परापवादं बंधूनां मरणं धननाशनम् ॥ ३ ॥

केंद्रगत शनिकी दशामें जब पापग्रहोंका अंतर होवै तब स्थान हानि, परदेश वास, राजा, चोर, अग्निसे पीडन मिले ॥ १ ॥ ऐसे शनिकी दशा शुभांतरमें बडा सुख, राजकार्यमें अभिषेक, (अधिकारिता) धनप्राप्ति, देश, ग्रामका आधिपत्य (मालकी) मिले ॥ २ ॥ ऐसे फल दशाके आदिमें होतेहैं अंतमें रोग पीडा, झूठा कलंक, बंधुजनोंका मरण, धननाश होताहै ॥ ३ ॥

त्रिकोणस्थशनेर्दाये पितृपुत्रविनाशनम् ॥ पापभुक्तौ महत्कष्टं कर्मनाशमथापि वा ॥ ४ ॥ वाताक्षिमूलरोगं च स्वबंधुकलहं तथा ॥ उद्योगभंगं दुःखं च स्थलधान्यविनाशनम् ॥ ५ ॥ तथाविधशनेर्दाये शुभभुक्तौ महत्सुखम् ॥ राजपूज्यं कृषेर्लाभं धनधान्यविवर्द्धनम् ॥ ६ ॥ स्वबन्धुदारपुत्राणामारोग्यं भूषणादिकम् ॥ भृत्यमित्रार्थसंपत्तिं लभते धर्मसंग्रहम् ॥ ७ ॥

त्रिकोण ५ । ९ स्थित शनिकी दशा पापांतरमें पिताका तथा पुत्रका नाश, बडाकष्ट अथवा कर्मका नाश होवै ॥ ४ ॥ वातविकार, नेत्ररोग, मूलाधारमें रोग, अपने बांधवोंमें कलह, उद्योगभंग, दुःख और स्थलोत्पन्न अन्नका नाश होवै ॥ ५ ॥ त्रिकोणगत शनिकी दशा शुभांतरमें बडासुख, राजासे पूज्यता, कृषिकर्ममें लाभ, धन अन्नकी वृद्धि ॥ ६ ॥ अपने बांधव, स्त्री, पुत्रोंकी आरोग्यता, भूषणआदि मिलतेहैं तथा सेवक, मित्र, धनकी संपत्ति और धर्मका संग्रह मिलताहै ॥ ७ ॥

षष्ठाष्टमव्ययस्थस्य शनेर्दाये शुभेतरा ॥ हतिर्दुःखं महत्कष्टं स्थाननाशं धनक्षयम् ॥ ८ ॥ गुह्यरोगं विषार्तिश्च ज्वरवह्निनृपाद्भयम् ॥ अत्याप्तबन्धुमरणमुद्योगस्य विनाशनम् ॥ ९ ॥ षष्ठाष्टमव्ययस्थस्य शुभपाके महत्सुखम् ॥ आरोग्यं कान्तिवृद्धिं च देशग्रामाधिपत्यताम् ॥ १० ॥

छठे, आठवें, बारहवें, शनिकी दशा पापांतरमें दुःख, बडाकष्ट, स्थाननाश, धनका क्षय ॥ ८ ॥ गुह्यस्थानमें रोग, विषकी भय, ज्वर, अग्नि राजासे भय, अतिकृपा करनेवाले बंधुका मरण और उद्योगका नाश होताहै ॥ ९ ॥ ऐसे ६ । ८ । १२ गत शनिदशा शुभांतरमें बडा सुख, निरोगिता, कांतिकी वृद्धि और देश ग्रामकी मालकी मिलतीहै ॥ १० ॥

तृतीयलाभराशिस्थशनेः शुभहतिर्यदा ॥ पाके शुभफलं प्रोक्तं नृपलालनभूषणम् ॥ ११ ॥ तृतीयलाभराशिस्थशनेः पापहतिर्यदा ॥ पाके धनाप्तिं दुःखं च भ्रातृवर्गविनाशनम् ॥ १२ ॥ विदेशयानं कलहं वैकल्यं भृत्यनाशनम् ॥ कुभोजनं परप्रेष्यं कुस्त्रीसंगमनं लभेत् ॥ १३ ॥

तीसरे, ग्यारहवें, शनिकी दशामें पापांतर जब होवै तब शुभफल कहाहै राजासे (लाड) प्रेम तथा भूषण मिलें ॥ ११ ॥ ३ । ११ भावगत शनिदशा पापांतर जब होवै तब धनप्राप्ति और दुःख, भ्रातृवर्गका नाशभी होताहै ॥ १२ ॥ तथा विदेशगमन, कलह, विकलता, सेवकका नाश, कुभोजन, पराया दूतत्व, निंद्य स्त्रीका गमन मिले ॥ १३ ॥

धनस्थितशनेः पाके यदा पापहतिर्भवेत् ॥ राजदण्डं महाविघ्नं कारागृहनिरोधनम् ॥ १४ ॥ उत्साहभंगं देहार्तिं ज्वरातीसारपीडनम् ॥ राज्यनाशं गवाश्वानां मरणं वाहनाद्भयम् ॥ १५ ॥ द्वितीयस्थशनेः पाके शुभभुक्तौ मनोदृढम् ॥ उपकर्तृत्वमन्येषां

द्यूतविद्याविनोदनम् ॥ १६ ॥ गानकेलिरहस्यं च भोजनांबर-भूषणम् ॥ उद्योगसिद्धिं राज्याप्तिं मणिविद्रुमकांचनम् ॥ १७ ॥
इति शनिपाकान्तर्दशाफलम् ॥

धनभावगत शनिकी दशामें जब पापांतर होवै तब राजासे दण्ड मिले, बडा विघ्न होवै, कैदमें रोका जावै ॥ १४ ॥ उत्साहभंग होवै, देहमें पीडा, ज्वर अतिसारकी पीडा होवै॥ १५॥ दूसरे शनिकी दशा शुभांतरमें मन दृढ रहे, औरोंका उपकार, अपनेसे होवै, जुवाकी विद्याका विनोद होवै ॥ १६ ॥ गायन क्रीडाका रहस्य भी मिले, भोजन, वस्त्र, भूषण, उत्तम मिलैं उद्यम सकल होवै, राज्य मिले, मणि, मूंगा, सुवर्णका लाभ होवै ॥ १७ ॥ इति शनिपाकान्तर्दशाफलम् ॥

अथ बुधांतर्दशाफलम् ।

केन्द्रस्थितस्य सौम्यस्य दशायां पापिनां ह्रतौ ॥ कर्मविघ्नं महादुःखं मनश्चांचल्यमेव च ॥ १ ॥ उत्साहभंगं गोभूमिहिर-ण्याम्बरनाशनम् ॥ स्थानच्युतिं महाद्वेषं विद्यानाशं लभेत्तदा ॥२॥शुभभुक्तौ बुधस्याथ पापकेन्द्रगतस्य तु॥वैवाहिकं यज्ञकर्म दानधर्मजपादिकम् ॥ ३ ॥ ज्ञानाधिक्यं नृपात्प्रीतिं कृषिगोभूमि वर्धनम् ॥ मुक्तामणिप्रवालादिवाहनांबरभूषणम् ॥ ४ ॥

अब बुधदशांतरफल कहतेहैं केन्द्रगत बुधकी दशा पापग्रहोंके अंतरमें कर्ममें विघ्न, बडादुःख और मनचंचलभी होवै ॥ १ ॥ उत्साह भंग, गो, भूमि, सुवर्ण, वस्त्रका नाश स्थानसे च्युति महावैर और विद्याका नाशभी पावै ॥ २ ॥ केन्द्रगत निष्पाप बुधकी दशा शुभांतरमें विवाहकृत्य, यज्ञकर्म, दान, धर्म, जपादि होवैं ॥ ३ ॥ ज्ञानकी अधिकता होवै, राजासे प्रसन्नता, कृषि, गो, भूमिकी वृद्धि तथा मोती, मणि, मूंगा आदि और वाहन, वस्त्र, भूषण मिलैं ॥ ४ ॥

ज्ञस्य त्रिकोणयुक्तस्य दशायां पापिनां ह्रतौ ॥ दारपुत्रार्थनाशं च कर्मनाशं मनोरुजम् ॥ ५ ॥ कृषिवाणिज्यनाशं च बंधुनाश-मथापि वा ॥ पादभंगं महाद्वेषं बंधुद्वेषं लभेन्नरः ॥ ६ ॥ तथा विधज्ञस्य पाके शुभभुक्तौ नृपात्प्रियम् ॥ आरोग्यमतिसौख्यं च सोमपानादिकं सुखम् ॥ ७ ॥ स्वनामांकितपद्यानि नामद्व-यमथापि वा ॥ भोजनांबरभूषाप्तिं नरेशत्वं लभेन्नरः ॥ ८ ॥

त्रिकोणगत बुधदशा पापांतरमें, स्त्री, पुत्र, धननाश, कर्मनाश, मनमें रोग ॥ ५ ॥ कृषि व्यापारका नाश अथवा बंधुनाश, पैरोंका टूटना, बडा वैर मिलतेहैं ॥ ६ ॥ त्रिकोणगत बुधदशा शुभांतरमें राजासे प्रेम, आरोग्यता, अतिसौख्य, सोमपानादि सुख ॥ ७ ॥ अपने नामके श्लोक, कविता, अथवा उपाधि (अधिकारी) नाम भोजन, वस्त्र, भूषण और राजत्व, मनुष्य पाताहै ॥ ८ ॥

षष्ठाष्टमगतज्ञस्य परिपाके तु पापिनाम् ॥ इतौ चौरारिपीडां च ज्वरातीसारपीडनम् ॥ ९ ॥ स्वबंधुमरणं क्लेशं भृत्यस्त्रीपुत्रनाशनम् ॥ विवादं विग्रहं सर्वैर्बन्धुभिर्लभते नरः ॥ १० ॥ तथा विधाब्जपुत्रस्य शुभभुक्तौ महद्यशः ॥ आरोग्यं कांतिलाभं च देवभूसुरतर्पणम् ॥ ११ ॥ दशादौ फलमेवं स्याद्भुक्त्यंते सुखनाशनम् ॥ गोमहिष्यादिपीडां च वाक्पारुष्यं नृपाद्भयम् ॥ १२ ॥

छठे, आठवें, भागवत बुधकी दशा पापांतरमें चोरभय शत्रुभय, ज्वरातीसाररोग पीडन ॥ ९ ॥ अपने बंधुका मरण, क्लेश, सेवक, स्त्री पुत्रोंका नाश, कलह, युद्ध, सब बांधवोंके साथ मिलताहै ॥ १० ॥ छठे, आठवें, बुधकी दशा शुभांतरमें बडा यश, आरोग्यता, कान्तिलाभ, देवता, ब्राह्मणोंको तृप्त करना ॥ ११ ॥ ऐसे फल दशाके आदिमें होतेहैं अंतमें सुखका नाश, गो, भैंस आदिकी पीडा, वाणीकी कठोरता और राजासे भय होतीहै ॥ १२ ॥

तृतीयायगतज्ञस्य शुभभुक्तौ शुभं भवेत् ॥ मनोधैर्यं मनोत्साहं विदेशाद्द्रव्यसंचयम् ॥ १३ ॥ विद्याजयं नृपात्प्रीतिं भोजनं पौष्टिकं तथा ॥ यज्ञवैवाहिकं कर्म पुराणश्रवणादिकम् ॥ १४ ॥ तथाविधज्ञस्य पाके पापभुक्तौ महद्भयम् ॥ भ्रातृवर्गविनाशं च वैक्लव्यं नृपपीडनम् ॥ १५ ॥ चौरारिवह्निभीतिश्च कुस्त्रीभूतादिसेवनम् ॥ कर्महीनं कृषेर्नाशं गजाश्वानां च पीडनम् ॥ १६ ॥

तीसरे, ग्यारहवें, बुधकी दशा शुभांतरमें शुभफल होताहै मनको धैर्य, मनमें उत्साह, परदेशसे धनसंचय ॥ १३ ॥ विद्यासे विजय, राजासे प्रसन्नता. पौष्टिक भोजन, यज्ञ, विवाह आदि कर्म और पुराण श्रवण आदि फल होतेहैं ॥ १४ ॥ तथा ३ । ११ गत बुधदशापापान्तरमें बडीभय भ्रातृवर्गका विनाश नपुंसकता राजासे पीडा ॥ १५ ॥ चोर, शत्रु अग्नि भीति, निन्द्य स्त्री संग, भूत आदिका पूजन, कर्महीनता, कृषिका नाश, हाथी घोडाओंका पीडन, ऐसे फल होतेहैं ॥ १६ ॥

धनस्थिताब्जपुत्रस्य परिपाके शुभेतरा ॥ करोति राजदण्डं च बंधनं निगडं तथा ॥ १७ ॥ विषार्तिं बंधुविद्वेषं कृषिगोभूमिना-

शनम् ॥ शत्रुत्वं सकलैः सार्द्धं नित्याचारविवर्जनम् ॥ १८ ॥ द्वितीयस्थस्य सौम्यस्य परिपाकेऽर्थलाभभाक् ॥ शुभभुक्तौ महाप्रीतिं देवभूसुरतर्पणम् ॥ १९ ॥ अध्वरादिमहत्कर्म दानहोमजपादिकम् ॥ बंधुपूज्यं महोत्साहं विद्यालाभं च विन्दति ॥२०॥

इति बुधपाकान्तर्दशाफलम् ।

द्वितीय भावगत बुधदशा पापांतरमें राजासे दंड बंधन कैद ॥ १७ ॥ विषसे पीडा, बंधुजनके साथ वैर, कृषि, गो, भूमिका नाश, सबके साथ शत्रुता, नित्याचारसे राहित्य मिले ॥ १८ ॥ दूसरे बुधकी दशा शुभांतरमें धनलाभवाला होवै, बडी प्रसन्नता रहे. देवता ब्राह्मणोंकी तृप्ति करे ॥ १९ ॥ यज्ञआदि वडे कर्म, दान, हवन, जप आदि होवैं, बंधुवर्गसे पूज्यता बडा उत्साह और विद्यालाभ, मनुष्य पाताहै ॥ २० ॥ इति बुधपाकान्तर्दशाफलम् ॥

अथ केतोरंतर्दशाफलम् ।

केतोश्चतुष्टयस्थस्य यदा पापहतिस्तदा ॥मानभंगं महाद्वेषं नृपचौराग्निपीडनम् ॥ १ ॥ मातृनाशं तदीयं वा दारपुत्रविनाशनम् ॥ कर्मनाशं पदभ्रंशमकस्मात्कलहो भवेत् ॥ २ ॥ केतोस्तथाविधस्यापि शुभभुक्तौ नृपात्प्रियम् ॥ देहारोग्यकरं सौख्यं बंधुभिश्च समागमम् ॥ ३ ॥ भोजनांबरभूषाप्तिमादौ चांते मनोरुजम् ॥ उद्योगभंगं कामार्तिं स्वकुलोद्भवनाशनम् ॥ ४ ॥

अब केतुके अंतर्दशाफल कहतेहैं केन्द्रगत केतुदशा पापांतरमें मानहानि, बडा वैर, राजा, चोर, अग्निसे पीडा, ॥ १ ॥ माताका नाश, अथवा उसीका नाश, स्त्रीपुत्र विनाश, कर्मका नाश पदसे गिरना और अकस्मातकलह होवे ॥ २ ॥ केन्द्रगत केतुकी दशा शुभांतरमें राजासे प्रीति, देहमें नीरोगिता, सुख, बंधुवर्गसे मेलन ॥ ३ ॥ भोजन, वस्त्र, भूषणप्राप्ति, इतने फल दशाके आदिमें होतेहैं अंतमें मानसीरोग, उद्यमहानि, कामदेवकी पीडा, और अपने कुलवाले किसीका नाश होवै ॥ ४ ॥

त्रिकोणराशियुक्तस्य केतोर्दाये शुभेतरा ॥ हतिस्तदा मनस्तापं करोति विविधापदम् ॥ ५ ॥ पुत्रवर्गादिमरणं पित्रोर्नाशमथापि वा ॥ स्थानार्थयोस्तथा नाशं भृत्यबंधुविरोधनम् ॥ ६ ॥ शुभग्रहाणां केतोस्तु परिपाके हतिर्यदा ॥ कृषिगोभूमिलाभं च विद्याबंधुसमागमम् ॥ ७ ॥ भोजनांबरसौख्यं च भुक्त्यादौ फलमीदृशम् ॥ भुक्त्यंते स्थानचलनमकस्मात्कलहं वदेत् ॥ ८ ॥

त्रिकोणगत केतुदशा पापांतर होनेसे मनमें संताप अनेक प्रकार आपत्ति करतीहै ॥ ५ ॥ पुत्रवर्गादिका मरण अथवा माता पिताका नाश, स्थान धनका नाश, तथा परिश्रमालस्य सेवक वर्गसे विरोध होवै ॥ ६ ॥ त्रिकोणगत केतुदशा शुभांतर जब होवै तब दशादिमें कृषि, गो, भूमिका लाभ, विद्या, एवं बंधुजनका समागम ॥७॥ भोजन, वस्त्र, सुख होतेहैं, दशाके अंतयमें स्थानसे विचलित होना और अकस्मात्कलह कहना ॥ ८ ॥

षष्ठाष्टमव्ययस्थस्य केतोर्दाये शुभेतरा ॥ हतिः करोति मरणं विदेशं वा पदभ्रमम् ॥ ९ ॥ प्रमेहमूत्रगुल्मादिराजचौराग्निपीडनम् ॥ फलमादौ तदन्ते च यत्किंचित्सुखवर्द्धनम् ॥१०॥ भुक्तौ सौम्यग्रहाणां तु हतौ स्त्रीपुत्रवर्द्धनम् ॥ धान्यांबरविभूषाप्तिं मणिप्रवरकांचनम् ॥ ११ ॥ विप्रलंभं च शौर्यं च मौल्यादिपतनं तथा ॥ स्वबंधुजनशत्रुत्वं शिरोक्षिगुदपीडनम् ॥ १२ ॥

छठे, आठवें, बारहवें, केतुकी दशा पापांतरमें मरण, परदेश निवास, पदका भ्रम ॥९॥ प्रमेह, मूत्र, गुल्मादिरोग, राजा, चोर, अग्निसे पीडन, इतने फल दशाके आदिमें मिलतेहैं अंतयमें थोडा सुखभी बढताहै ॥१०॥ ऐसे केतुकी दशा शुभांतरमें स्त्री, पुत्रवृद्धि, अन्न, वस्त्र, भूषणोंकी प्राप्ति श्रेष्ठमणि, सुवर्णलाभ ॥ ११ ॥ अंगीकारका संपादन न करना शूरता, मूल्य आदि गिरना (बेकदरी) अपने बंधुजनोंमें शत्रुता और शिर, नेत्र, गुदामें, पीडन होवै ॥१२॥

तृतीयलाभयुक्तस्य केतोः पाके परं सुखम् ॥ शुभभुक्तौ नृपात्प्रीतिं विचित्रांबरभूषणम् ॥ १३ ॥ वाहनं भूमिलाभं च गंधमाल्यानुलेपनम् ॥ दूरात्करागमं चैव स्वबंधुजनपूज्यताम् ॥ १४॥ पापभुक्तौ तथा जंतोः पापकर्मसमाचरेत् ॥ सर्वेषां विघ्नकर्तृत्वं बंधुभिस्त्यक्तजीवनम् ॥ १५ ॥ परप्रेष्यं कुवस्त्रं च भुक्त्यादौ फलमीदृशम् ॥ भुक्त्यंते सुखमाप्नोति दारपुत्रधनागमम् ॥ १६ ॥

तीसरे ग्यारहवें भावगत केतुकी दशा शुभांतरमें परमसुख, राजाकी प्रसन्नता, अनेकप्रकारके वस्त्र भूषण ॥ १३ ॥ वाहन, भूमिका लाभ, चंदन, पुष्पादि सुगंधिलेपन, दूरसे करकी आमद, अपने बंधुवर्गसे पूज्यता मिलतीहै ॥ १४ ॥ पापांतरमें जीवकी हिंसा आदि पापकर्म करे सबका विघ्न करनेवाला होवै बन्धुजनसे परित्यक्तता ॥ १५ ॥ पराई दूतता, कुवस्त्र, इतने फल दशाके आदिमें मिलतेहैं दशांतरमें सुख, स्त्री, पुत्र, धनका आगम होवै ॥ १६ ॥

धनास्थितध्वजस्यापि परिपाके शुभेतरा ॥ करोति विविधं दुःखं भैक्ष्यमन्नं मनोरुजम् ॥ १७ ॥ पुत्रमित्रकलत्राणां नाशनं महदा-

पदम् ॥ राज्ञा चौरेण वा वित्तं ह्रियते बंधुनाशनम् ॥ १८ ॥ शुभभुक्तौ धनाप्तिं च विद्यावादजयावहम् ॥ परोपकारं सर्वेषां भोजनांबरभूषणम् ॥ १९ ॥ भुक्त्यादौ फलमेवं स्यादंते किंचिद्धनव्ययम् ॥ वाक्पारुष्यं मनोद्वेगं प्रवृत्तेर्भंगमेव वा ॥ २० ॥ इति केतुपाकान्तर्दशाफलम् ॥

द्वितीयभावगत केतुदशा पापांतरमें अनेक प्रकार दुःख, भिक्षाका अन्त, मनमें रोग ॥ १७ ॥ पुत्र मित्र स्त्रियोंका नाश, बडी आपत्ति मिले, राजासे चोरसे धन हरण होवै, बंधुनाशन होवै ॥ १८ ॥ शुभांतरमें धनप्राप्ति, विद्या, विवादमें जयमिले सबका उपकार होवै, भोजन, वस्त्र, भूषण मिलें ॥ १९ ॥ दशाके आदिमें ऐसे फल होतेहैं अंतमें थोडा धन व्यय होवै, वाणीकी कठोरता, मन उद्विग्न और कार्यप्रवृत्तिका भंग होवै ॥ २० ॥ इति केतुपाकान्तर्दशाफलम् ॥

अथ शुक्रांतर्दशाफलम्।

केन्द्रस्थितस्य शुक्रस्य सौम्यानां तु हतिर्यदा ॥ राज्याप्तिं राजसन्मानं यानांबरविभूषणम् ॥ १ ॥ उत्साहं कीर्तिसंपत्तिस्त्रीपुत्रधनसंपदः ॥ भाग्योत्तरं मनोधैर्यं राजद्वाराधिपत्यताम् ॥ २ ॥ तथाविधस्य वाऽच्छस्य पापभुक्तौ धनक्षयम् ॥ कुभोजनं कुवस्त्रं च शुभकर्मविनाशनम् ॥ ३ ॥ भुक्त्यादौ फलमेवं स्यादंते शोभनमादिशेत् ॥ गृहगोभूमिलाभं च दूरदेशाद्धनागमम् ॥ ४ ॥

अब शुक्रदशांतरफल कहतेहैं केन्द्रगत शुक्रदशा शुभग्रहोंके अंतर जब होवै तब राज्य, राजसन्मान, सवारी, वस्त्र, भूषण ॥ १ ॥ उत्साह, कीर्ति, संपत्ति और स्त्री, पुत्र, धनकी संपत्ति होवै ॥ २ ॥ केन्द्रगत शुक्र पापांतरमें धनहानि, कुभोजन, कुवस्त्र, शुभकर्मका नाश होताहै ॥ ३ ॥ इतनेफल दशाके आदिमें होतेहैं अंतमें शुभफल कहना कृषि, गो, भूमिलाभ, दूरदेशसे धनकी आमद होवै ॥ ४ ॥

त्रिकोणस्थस्य शुक्रस्य शुभभुक्तौ शुभक्रिया ॥ देवभूसुरभक्तिश्च सुतदारविवर्द्धनम् ॥ ५ ॥ यज्ञादिकर्मलाभं च गोभूषणमथो जयम् ॥ आरोग्यं देहकांतिं च चिंतितार्थमनोरथम् ॥ ६ ॥ तथाविधस्य शुक्रस्य पापभुक्तौ मनोरुजम् ॥ अनारोग्यममर्यादं नृपचौराग्निपीडनम् ॥ ७ ॥ कुस्त्रीसंगं कुवार्तां च बंधुद्वेषं मतिभ्रमम् ॥ दुःस्वप्नं मौलिपतनमपकीर्तिं लभेन्नरः ॥ ८ ॥

त्रिकोणगत शुक्रकी दशा शुभांतरमें शुभकार्य, देवता ब्राह्मणकी भक्ति, पुत्र, स्त्रीकी वृद्धि ॥ ५ ॥ यज्ञादिकार्यका लाभ गो, भूषण, संग्राममें विजय, निरोगिता, शरीरकी कांति वृद्धि, मनकी अभिलाषा पूर्ण होतीहै ॥ ६ ॥ त्रिकोणगत शुक्रदशा पापांतरमें मानसीरोग, तथा अनेकरोग, अमर्यादाके काम, राजा चोर, अग्निसे पीडन ॥ ७ ॥ निन्द्य स्त्रीका संग, निषिद्ध-वार्तामें प्रवृत्ति, बंधुजनसे वैर, बुद्धिभ्रम, दुष्टस्वप्न देखने, शिरोगत श्रेष्ठ मनुष्यका गिरना और अपयश होवै ॥ ८ ॥

पाके शुक्रस्य दुःस्थस्य शुभभुक्तौ महद्यशः ॥ राजसन्मानमर्थाप्तिं पुत्रस्त्रीधनसंपदः ॥ ९ ॥ वस्त्रवाहनभूषाप्तिमादौ चान्ते मनोरुजम् ॥ बन्धुद्वेषं गुरोर्नाशं स्वकुलोद्भवनाशनम् ॥ १० ॥ शुभग्रहाणां भुक्तौ तु देहारोग्यं महत्सुखम् ॥ परान्नं पट्टवस्त्राप्तिं गंधमाल्यविभूषणम् ॥ ११ ॥ भुक्त्यादौ फलमेवं स्यादंते क्लेशकरं भवेत् ॥ चौराग्निदेहपीडां च स्वबंधुजननाशनम् ॥ १२ ॥

दुष्टस्थान ६ । ८ । १२ गत शुक्रकी दशा शुभांतरमें बडायश, राजासे सन्मान, धनप्राप्ति, पुत्र, स्त्री, धनकी संपत्ति ॥ ९ ॥ वस्त्र, वाहन, भूषणप्राप्ति, ऐसे फल दशादिमें होतेहैं अंत्यमें मानसीरोग, बंधुजनसे वैर, गुरुजनका नाश, अपने कुलवालेका नाश होताहै ॥ १० ॥ ऐसे शुक्रदशा शुभांतरमें देहमें निरोगिता, बडासुख, परान्न, रेशमी वस्त्रोंकी प्राप्ति, चंदन, पुष्प, भूषण, मिलतेहैं ऐसे फल दशाके आदिमें होतेहैं अंतमें क्लेश करनेवाली होतीहै चोर, अग्नि, भय, शरीरपीडा, और अपने बंधुजनका नाश होताहै ॥ ११ ॥ १२ ॥

तृतीयायस्थशुक्रस्य परिपाके शुभेतरा ॥ हानिर्दुःखमवाप्नोति धनधान्यविनाशनम् ॥ १३ ॥ उद्योगभंगं क्लेशं च चौराग्निनृपपीडनम् ॥ भूमिवादं स्वबंधूनां नाशनं स्वपदस्य च ॥ १४ ॥ तथाविधस्य शुक्रस्य शुभभुक्तौ महत्सुखम् ॥ नृपपूजां मनोधैर्यं देशग्रामाधिपत्यताम् ॥ १५ ॥ वाहनं भूषणाप्तिं च पुत्रस्त्रीभृत्यसंपदः ॥ प्रपारामतडागानां निर्माणं धर्मसंग्रहम् ॥ १६ ॥

तीसरे ग्यारहवें शुक्रकी दशा पापांतरमें दुःख पाताहै धन अन्नका नाश ॥ १३ ॥ उद्यमभंग, क्लेश, चोर, अग्नि, राजासे पीडन, भूमिविषय विवाद, बंधुजनकी हानि और अपने पदकीभी हानि होतीहै ॥ १४ ॥ ऐसे ३ । ११ भावगत शुक्रकी दशा शुभांतरमें बडासुख, राजासे पूज्यता, मनमें धैर्य, देश, एवं गांवका आधिपत्य (मालकी) ॥ १५ ॥ वाहन, भूषणोंकी प्राप्ति, पुत्र, स्त्री, सेवकोंकी वृद्धि, प्याऊ बगीचा, तालाबका बनाना और धर्मका संग्रह होताहै ॥ १६ ॥

धनस्थस्यापि शुक्रस्य शुभभुक्तौ महत्प्रियम्॥दारपुत्रार्थलाभं च स्वबंधुजनरक्षणम्॥१७॥विद्याजयं मनोल्लासं देवभूसुरतर्पणम् ॥ यज्ञादिकर्मलाभं च लभेन्नामद्वयं तथा॥१८॥ धनस्थितस्य शुक्रस्य पापभुक्तौ भृशं वदेत्॥ राजदण्डं मनोदुःखं त्वद्रोगाक्षिप्रपीडनम्॥१९॥विद्यावादं कृषेर्नाशं कर्महानिं पदभ्रमम्॥ वह्निचौरारिभीतिं च लभते नात्र संशयः॥२०॥इति शुक्रपाकान्तर्दशाफलम् ॥

इति श्रीसर्वार्थचिंतामणौ राहुकेत्वादिदशान्तर्दशाफल निरूपणोनाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

धनभावगत शुक्रकी दशा शुभांतरमें बडी प्रसन्नता होवै स्त्री, पुत्र, धनलाभ, अपने बंधुजनोंकी रक्षा ॥ १७ ॥ विद्यासे विजय, मनके उत्साह, देवता, ब्राह्मणोंका पूजन, यज्ञ आदि कर्मका लाभ, तथा दो नाम (अधिकारी दूसरा नाम) पावै ॥ १८ ॥ धनगत शुक्रदशा पापांतरमें वारंवार राजदण्ड, मनमें दुःख, हृदय रोग, नेत्रपीडा ॥१९॥ विद्यासम्बंधि विवाद, कृषिका नाश, कर्मकी हानि, पदमें भ्रम, अग्नि चोर शत्रुका भय निःस्संदेह पाताहै ॥ २० ॥ इति शुक्रपाकान्तर्दशाफलम् ॥

इति श्रीसर्वार्थचिन्तामणौ माहीधरीभाषायां राहुकेत्वादिदशान्तर्दशाफलनिरूपणाध्यायःषोडशः १६

सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

अथ प्रकीर्णाध्यायः ।

यद्यज्जन्मनि नक्षत्रे वृद्धिभावमुपेयुषि ॥ तस्य श्रीरायुरारोग्यं भवत्येवं विनिश्चयः ॥ १ ॥ तिथ्यादिषु तथा वाच्यं क्षये तस्मिन् क्षयो भवेत् ॥ तिथिरेकगुणा प्रोक्ता ऋक्षं दशगुणं भवेत् ॥ लग्नं लक्षगुणं प्रोक्तं तत्समूहे फलादिकम् ॥ २ ॥

जिसके जन्ममें नक्षत्र वृद्धिगत, अर्थात् ६० घटी पूर्ण रहकर दूसरे दिनभी चलाजावै और जन्मसे पूर्वदिनमें उसका स्पर्श होजावै प्रकारान्तरसे घटिकाओंमें बढता जो नक्षत्र है उसकोभी वृद्धिभाव कहसकतेहैं ऐसेमें जिसका जन्म हो उसकी श्री, (शोभा) आयु नैरुज्यता, होतीहै यह निश्चयहै ॥ १ ॥ तिथ्यादियोंमें भी ऐसाही फल कहना ऐसे क्षय तिथि नक्षत्रादियोंमें जन्मवालेके उक्त श्री आदिका क्षय कहना, इसमें तिथिका फल एकगुण नक्षत्रका दशगुण लग्नका लक्षगुण कहाहै इन सबके समूहसे फलादि कहना ॥ २ ॥

केन्द्रस्थिता जन्मनि यस्य कस्य पापाश्च सर्वे विफलप्रदाः स्युः ॥ कुर्वंति दारिद्र्यमनेकदुःखं श्वासक्षयप्लीहगुदोदरार्तिम् ॥ ३ ॥ पापग्रहे कर्मगतेति नीचे वक्रान्विते पापखगैः प्रदृष्टे ॥ नाशं कलत्रस्य वदंति नूनं मुनीश्वरास्तद्वदनेकशास्त्रैः ॥ ४ ॥ दुःखी मूढो लोकविद्वेषकारी काणः पंगुर्निर्धनो मानहीनः ॥ अल्पायुः स्यात्केंद्रगाः पापखेटा ब्रह्मद्वेषी चापकीर्तिश्च सर्वे ॥ ५ ॥

जिस किसीके जन्ममें पापग्रह केंद्रोंमें होवें तो सब पाप शुभफल नहीं देते, दरिद्रता, अनेकदुःख, श्वास, क्षय, प्लीहा, गुदरोग उदररोग, करतेहैं ॥ ३ ॥ दशमस्थानमें अतिनीचगत पापग्रह वक्रगतियुक्त ग्रहोंसे दृष्ट होवें तो मुनीश्वर अनेक शास्त्रोंसे निश्चय स्त्रीका नाश करतेहैं ॥४॥ समस्त पापग्रह केंद्रोंमें शुभरहित होनेमें दुःखी, मूर्ख लोगोंमें विद्वेष करनेवाला, काणा, पंगु (खोडा) निर्धन, मानहीन, अल्पायु, ब्राह्मणोंका द्वेषी और अपकीर्तिवाला होताहै ॥ ५॥

शंकराचार्यमते तु–लग्ने माने सप्तमे चाथ बंधौ पापाः खेटा जन्मकाले तु सर्वे ॥ तिष्ठन्त्येते स्वल्पमायुष्प्रमाणं तेषामेको लग्नपो वा यदि स्यात् ॥ ६ ॥ तथापि तद्योगफलप्रमाणं तादृग्विधं स्यान्मनयो वदन्ति ॥ स्वनीचभागादि महीपयोगेप्येवं फलं दुःखितनिर्गतायुः ॥७॥ तथास्थिते जन्मनि यस्य कस्य बाल्ये च पित्रोर्मरणं च कष्टम् ॥ भिक्षाशनेनाप्युदरस्य पूर्तिस्तदा भवत्येव तदंगहानिः ॥ ८ ॥

शंकर नामा आचार्यका मतहै कि, लग्न दशम सप्तम और चतुर्थमें पापग्रह सभी जन्मकालमें होवैं तो आयुका प्रमाण थोडा होवै यदि उनमें एकग्रह लग्नेशभी हो ॥ ६ ॥ तोभी उस योगका फलप्रमाण मुनिजन उसी प्रकार कहते हैं यदि राजयोगभी होवै किन्तु राजयोगकारक ग्रह अपने नीचांशादिकोंमें होवैं तोभी वही फल और दुःखित, गतायु होताहै ॥ ७ ॥ ऐसे केन्द्रगत समस्त पापयोगमें जिस किसीका जन्म होवै तो बाल्यावस्थामें माता पिताका मरण और कष्टभी होवै भिक्षाका अन्न खायकरके पेटकी पूर्ति और उसकी अंगकी हानि होतीहै॥ ८॥

स्वनीचभागादिमहीपयोगे जातेपि यस्यापि नरस्य कस्य ॥ केन्द्रत्रिकोणेषु शुभो यदि स्यात्तद्राजयोगं सफलं वदंति ॥ ९ ॥ स्वांशेक्षिते लग्नगते क्रमांशे जीवेन दृष्टे धनराशिपेन ॥ स्वनीचभागादिमहीपयोगे जातोपि भूमेरधिपत्यमेति ॥ १० ॥ एवं

चिन्तामणौ प्रोक्तं वेंकटेशेन धीमता ॥ नीचभागादियोगार्थं राजयोगादिजं फलम् ॥ ११ ॥

यदि किसीका नीचांशकादिगत ग्रहजन्य राजयोग हुयेमें यदि केन्द्र त्रिकोणमें शुभग्रहभी होवै तो राजयोगका फल सफल होना कहतेहैं ॥ ९ ॥ अपने नवांशकमें शुभग्रहसे दृष्ट, लग्नमें स्थित, वह राजयोग कर्ता ग्रह गुरुदृष्ट, धनेश दृष्ट, होवै तो पूर्वोक्त स्वनीच भागादि राज्योगमें केंद्रस्थ पापग्रहोंमेंभी इनके फलको हटायके भूमिके आधिपत्यको प्राप्त होता है ॥ १० ॥ इसप्रकार सर्वार्थचिंतामणिमें धीमान् वेंकटेशने नीचांशकादि योगार्थ सहित राजयोगादिका फल कहाहै ॥ ११ ॥

अथ द्रेष्काणाः ॥ मेषद्वितीयो मिथुनः पूर्णः सिंहस्य प्रथमः खगद्रेष्काणः कर्कस्य द्वितीयतृतीयौ वृश्चिकस्य प्रथमतृतीयौ मीनतृतीयो व्यालः मकराद्यो निगडः ॥ १२ ॥

प्रथम फलादेशमें खगादि द्रेष्काण कहेहैं उनकी संज्ञा कहते हैं कि मेषका दूसरा मिथुनके तीनों और सिंहका प्रथम खग द्रेष्काण कर्कके दूसरे तीसरे वृश्चिकका प्रथम तीसरा और मीन का तीसरा व्याल (सर्प) मकरका प्रथम निगड द्रेष्काण होतेहैं ॥ १२ ॥

रविभौमार्कजाः शुष्काः सजलौ चन्द्रभार्गवौ ॥ बुधवाचस्पती ज्ञेयौ सजलौ जलराशिगौ॥१३॥ कुम्भकर्कटकौ मीनमकरालितुलाधराः ॥ सजला राशयः प्रोक्ता निर्जलाः शेषराशयः॥१४॥

इति श्रीसर्वार्थचिंतामणौ प्रकीर्णभावफलनिरूपणोनाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

सूर्य मंगल शनि शुष्क चंद्रमा शुक्र गीलेहैं बुध बृहस्पति जलराशियोंमे गीले अन्यराशियोंमें शुष्क हैं ॥ १३ ॥ कुंभ कर्क मीन मकर वृश्चिक तुला सजल अन्यनिर्जल राशिहैं ॥ १४ ॥

इति श्रीसर्वार्थचिंतामणौ माहीधरीभाषायां प्रकीर्णभावफलनिरूपणाऽध्यायः सप्तदशः ॥१७॥

अथ ग्रहफल-बाधककारकत्वम् ।

जन्मन्यर्को हिमकरसुतः सैंहिकेयः सुरेज्यः केतुश्चंद्रो दिनकरसुतो भार्गवो भूमिपुत्रः ॥ तापं कान्तिं क्षतिधृतिलयं कीर्तिहानिं प्रमोदं मृत्युं ताराबलमनुदिनं संचरंति क्रमेण ॥ १ ॥

जन्ममें तारा जन्म नक्षत्रसे ९ के स्वामि फलसहित ग्रह इस क्रमसेहैं कि सूर्यसे ताप बुधसे कांति राहुसे हानि गुरुसे धारण केतुसे लय चंद्रमासे कीर्ति शनिसे हानि शुक्रसे खुशी मंगलसे मृत्यु इस क्रमसे ताराहैं ॥ १ ॥

ग्रहाणां स्थानवशेन परस्परबाधकत्वमाह ॥ क्रमाच्च रागद्विश-
रीरभाजामुपांत्यधर्मस्मरगास्तदीशाः ॥ खरेशमांदिस्थितराशि-
नाथा अतीवबाधाकरखेचराः स्युः ॥२॥ द्युमणिरमरमंत्री भूसुतः
सोमसौम्यौ गुरुरिनतनयारौ भार्गवो भानुपुत्रः॥ दिनकरदिविजे-
ज्यो जीवभानुज्ञमंदाः सुरगुरुरिनसूनुः कारकाख्याविलग्नात् ॥३॥

स्थानवशसे परस्पर ग्रहोंका बाधकत्व कहतेहैं क्रमसे चरराशियोंके स्वामी ११ एकादशमें स्थिरोंके नवम ९ में द्विस्वभावोंके सप्तममें क्रमसे राहु केतुस्थित राशिस्वामी अतीव बाधाकारक ग्रह होतेहैं ॥२॥ अब कारक कहतेहैं. लग्नमें सूर्य दूसरा गुरु तीसरा मंगल पंच चंद्र बुध गुरु छटे शनि मंगल सप्तममें शुक्र अष्टममें शनि नवममें सूर्य गुरु दशममें गुरु सूर्य बुध शनि ग्यारहवेंमें गुरु बारहवेंमें शनि कारक होतेहैं ॥ ३ ॥ इति ग्रहफलबाधककारकत्वनिरूपणम्॥

अथ कारकसूत्राणि।

पितृप्रतापारोग्यमनःशुचिरुचिज्ञानोदयकारकः सूर्यः ॥ १ ॥
धवलचामरयशोदयामोदकांतिमुखलावण्यमातृमनःप्रसादकारक-
श्चन्द्रः ॥ २ ॥ पराक्रमविजयविख्यातिसंग्रामसाहससेनापत्य
दंडनेतृत्वखड्गपरश्वधकुंतकुठारशतघ्नीभिंदिपालधनुर्बाणनैपुण्य-
धृतिकांतिगांभीर्यकामक्रोधशत्रुवृद्धि आग्रहावग्रहपरापवादस्वंत-
त्रधातृभूकारकः कुजः ॥ ३ ॥ संततिशांतिविनयभक्तिमतिमातु-
लबांधवज्ञातिगोत्रसमृद्धिगणितप्रज्ञावेदांतविद्याकारको बुधः ॥
॥ ४ ॥ वाग्धोरणीमंत्रराजतंत्रनैष्ठिकगजतुरगयाननिगमावबोध-
कर्मपुत्रसंपज्जीवनोपायकर्मयोगसिंहासनकारको गुरुः ॥ ५ ॥
सगीतसाहित्यहास्यरसाद्भुतमदनयुवतिरतिकेलिविलासविचित्र-
कांतिसौंदर्यराजवशीकरणराजमुखवशीकरणगारुडेन्द्रजालमा-
लावैशद्यमहदणिमाद्यष्टैश्वर्यकाव्यकलासमभोगकलत्रकारकः
शुक्रः ॥ ६ ॥ लोभमोहविषमपरपीडानियातिनैष्ठुर्यदुर्मतिदारि-
द्र्यदुर्दशामयवातवंचनमहिषीयवागूकृष्णधान्यायुष्यजीवनोपा-
यकारकः शनिः ॥ ७ ॥ यशः प्रतिष्ठाछत्रकारको राहुः ॥ ८ ॥

पिता. प्रताप. आरोग्य. मनकी पवित्रता. रुचि-ज्ञानका उदय इतनेका कारक सूर्यहै ॥ १ ॥ श्वेत चामर. यश. दया. हर्ष. कांति. मुखकी कोमलता. माता. मनकी प्रसन्नताका चंद्रमा ॥ २ ॥ पराक्रम. विजय. ख्याति. संग्राम. साहस. सेनापति होना हाकिमी. खड्ग. फर्सा. कुंत. कुल्हाडा. तोप. भिंदिपाल. धनुष. बाण. निपुणता. धैर्य. गंभीरता. काम. क्रोध, शत्रुवृद्धि आग्रह अवग्रह. कलंक. स्वातंत्र्य. धाई. भूमिकारकमंगलहै ॥ ३ ॥ संतान. शांति. नम्रता. भक्ति. बुद्धि. मामा. बांधव (बिरादर) सगोत्र. समृद्धि. गणितबुद्धि. वेदांतविद्या कारक बुध ॥ ४ ॥ वाणी. सवारी. मंत्र, राजतंत्रनिष्ठा, हाथी, घोडा, पालकी, वेदशास्त्रज्ञान, कर्म, पुत्र, संपत्ति, जीवनका उपाय, कर्मयोग, सिंहासनकारक गुरु है ॥ ५ ॥ संगीत, काव्य, दासत्वरस, अद्भुतरस, कामदेव, स्त्री, कामक्रीडा, विलास, चित्रकांति, सुंदरता, राजा राजपुरुष वशीकरण, गारुडविद्या, इंद्रजालवाला, चातुरी, बडा छोटा होना आदि अष्टैश्वर्य, काव्यकला, समभोग, स्त्रीकारक शुक्र है ॥ ६ ॥ मोह लोभ, विषम, परपीडा, निर्घातशब्दादि, निष्ठुरता, दुर्मति, दरिद्रता, दुर्दशा, रोग, वातरोग, ठगी, भैंस, दलिया, कृष्णअन्न, आयु, जीवनका उपायकारक शनि है ॥ ७ ॥ यश प्रतिष्ठा और छत्र कारक राहुहै ॥ ८ ॥ इति सर्वार्थचिन्तामणौकारकसूत्राणि ॥

श्रीवैक्रमे क्षितिरसांककुसम्मिते द्वे धर्माधिकारि पदधारि महीधरेण ॥
गूढार्थबोधनकरी विवृतिः स्वबुद्ध्या सद्भाषया व्यरचि टीहरिराजधान्याम् ॥ १ ॥
कृतार्थयन्तु विद्वांसो होरामर्मविशारदाः॥दृष्ट्वा श्रमं स्वसौजन्यात्पूरयन्तु त्रुटिं मम॥ २ ॥
ये केचित्समदाः स्वीयाऽबोधेन विहसन्ति माम्॥ ते छिद्रान्वेषणपरास्तुष्यन्तु विहसन्तु च ३
ममाभीष्टन्तु सर्वेषामुपकारोत्र कारणम्॥श्रेष्ठिने खेमराजाय ग्रन्थोयं विनिवेदितः ॥ ४ ॥

॥ शुभमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो.
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS